अनिल मोहन
बबूसा और सोमाथ
देवराज चौहान सीरीज
नया उपन्यास
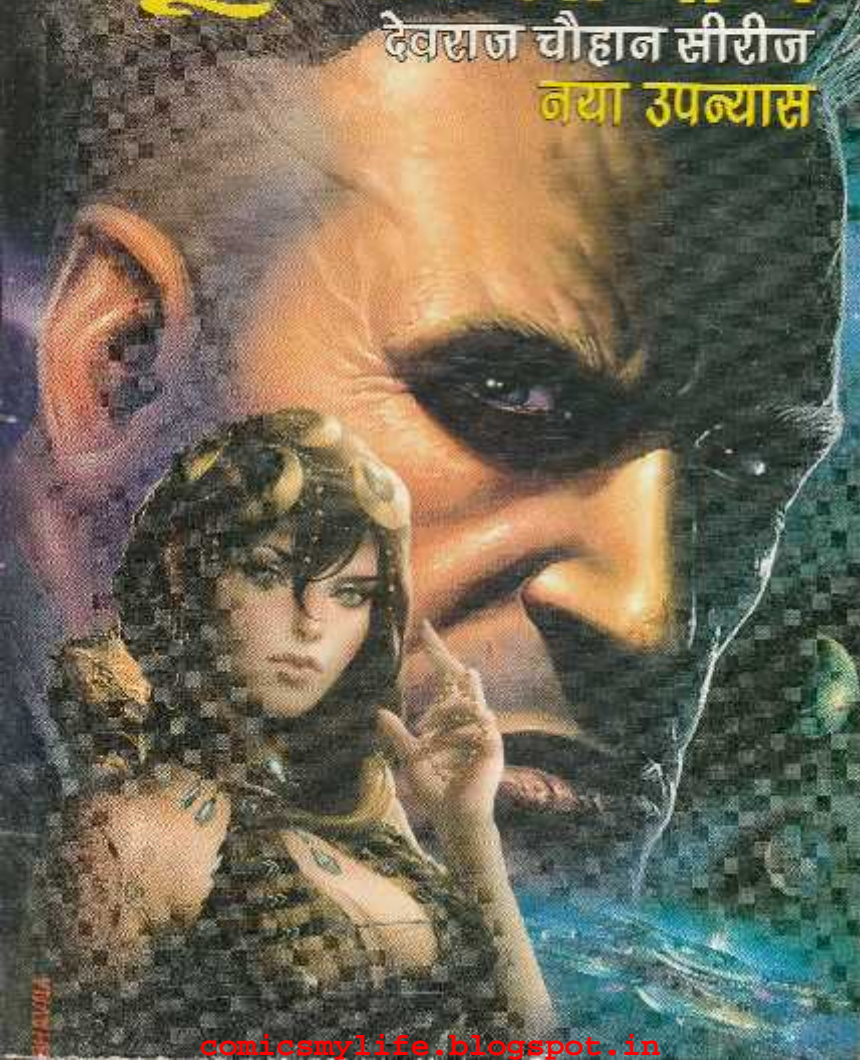
बबूसा और सोमाथ

ISBN : 978-93-324-2105-9

लेखक से बातचीत के लिए ई-मेल

anilmohan012@yahoo.co.in

Now Join me on Facebook:

facebook.com/anilmohan012

Join my page on Facebook:

facebook.com/anilmohanofficial

प्रस्तुत उपन्यास के सभी पात्र एवं घटनाएं काल्पनिक हैं। किसी जीवित अथवा मृत व्यक्ति से इनका कोई सम्बंध नहीं है। उपन्यास में स्थान आदि का वर्णन केवल कथ्य को विश्वसनीय बनाने के लिए किया गया है। उपन्यास का उद्देश्य मात्र मनोरंजन है।

•

प्रकाशक

राजा पॉकेट बुक्स

330/1, बुराड़ी, दिल्ली-110084

फोन : 27611410, 27612036, 27612039

•

वितरक

राजा पॉकेट बुक्स

112, फर्स्ट फ्लोर, दरीबा कलां,

दिल्ली 110006

फोन : 23251092, 23251109

•

मुद्रक

राजा ऑफसेट

1/51, ललिता पार्क

लक्ष्मी नगर, दिल्ली-110092

BABOOSA AUR SOMATH : DEVRAJ CHOUHAN SERIES

ANIL MOHAN

मूल्य : साठ रुपए

पोपा सदूर ग्रह पर जा पहुंचा। सबने सदूर ग्रह की जमीन पर पांव रखा। तभी हालात ऐसे पलटने लगे कि किसी से कुछ कहते न बना। धरा (खुंबरी) पोपा से निकलकर तेजी से अपनी राह पर बढ़ गई कि तभी डुमरा से उसकी मुलाकात हो गई। घटनाक्रम बहुत तेज गति से घूमा और धरा अपने गुप्त ठिकाने पर जा पहुंची थी जहां ताकतों ने अपने साये फैला रखे थे और डुमरा की पवित्र शक्तियां उस जगह को तलाश कर पाने में असफल रही थीं। धरा का अपने असली रूप खुंबरी को जीवित करना और आगे जो हुआ वो बेहद रोमांच से भरा हुआ था।

बबूसा और सोमाथ

शृंखला-5

अनिल मोहन

देवराज चौहान सीरीज का नया उपन्यास

देवराज चौहान सीरीज का आगामी नया उपन्यास...

बबूसा और खुंबरी

अनिल मोहन के

राजा पॉकेट बुक्स में उपलब्ध उपन्यास

देवराज चौहान सीरीज

- ● बबूसा और सोमाथ
- ● बबूसा का चक्रव्यूह
- ● बबूसा और राजा देव
- ● बबूसा
- ● मिस्ड कॉल
- ● मुखबिर
- ● जुआघर
- ● सावधान हिन्दुस्तान
- ❖ मैं पाकिस्तानी
- ○ डॉन जी
- ○ शिकारी
- ○ 100 माइल्स
- ❖ भूखा शेर
- ❖ आदमखोर
- ○ गोला-बारूद
- ○ निशानेबाज
- ○ जिंदा या मुर्दा
- ❖ डैथ वारंट
- ○ रॉबरी किंग
- ❖ खाकी से गद्दारी
- ○ ज्वालामुखी
- ○ जांबाज
- ○ खूंखार
- ○ डॉलर मामा
- ○ हाई जैकर
- ❖ माई का लाल
- ○ गिरोह
- ○ भगोड़ा
- ❖ हैवान
- ○ गुर्गा
- ○ मुखिया
- ❖ जिन्न
- ○ आतंक का पहाड़
- ○ अण्डरवर्ल्ड
- ○ गैंगवार
- ○ डंके की चोट
- ○ मिस्टर हीरो
- ○ दिल्ली का दादा
- ○ जैक पॉट
- ○ बारूद का ढेर
- ❖ पौ बारह
- ❖ दरिंदा
- ○ दौलत का ताज
- ○ गनमैन
- ○ एक रुपए की डकैती
- ○ डकैती के बाद
- ○ डकैती
- ○ टक्कर
- ○ घर का शेर
- ○ पहरेदार

देवराज चौहान और मोना चौधरी सीरीज

- ● वाहिद अली
- ● सबसे बड़ा हमला
- ● बंधक
- ○ पोतेबाबा
- ○ जथूरा
- ○ मंत्र
- ❖ सरगना
- ● गुड्डी
- ○ मास्टर
- ○ हमला
- ○ जालिम

मोना चौधरी सीरीज

- ○ खबरी
- ○ गिरगिट
- ○ सुरंग
- ❖ नागिन मेरे पीछे
- ○ दौलत दुरी बला
- ○ एक तीर दो शिकार
- ○ तू चल मैं आई
- ○ मोना चौधरी खतरे में
- ○ आ बैल मुझे मार
- ○ बुरे फंसे
- ○ एक म्यान दो तलवारें
- ○ जान बची लाखों पाए

अर्जुन भारद्वाज (प्राइवेट जासूस)

- ○ हिंसा का तांडव
- ○ खतरनाक आदमी
- ○ गैंगस्टर
- ○ खतरे का हथौड़ा

जुगलकिशोर सीरीज

- ○ दस नम्बरी
- ○ दहशत का दौर

थ्रिलर सीरीज

- ○ जुर्म का जहाज
- ○ सीक्रेट एजेंट

आर.डी.एक्स. सीरीज

- ○ आर.डी.एक्स.
- ○ डॉन का नंबी
- ○ गुरु का गुरु

○ इस निशान के उपन्यास का मूल्य 50/-
❖ इस निशान के उपन्यास का मूल्य 80/-
● इस निशान के उपन्यास का मूल्य 60/-

अपने नजदीक के पुस्तक विक्रेता, रेलवे/रोडवेज बुक स्टाल, ए.एच. व्हीलर एंड कंपनी व सभी रेलवे बुक स्टालों से खरीदें, न मिलने पर कोई भी दो उपन्यासों के मूल्य का मनीऑर्डर राजा पॉकेट बुक्स 330/1, बुराड़ी, दिल्ली-110084 के पते पर भेजकर घर बैठे प्राप्त करें। डाक व्यय माफ। कृपया M.O. पर अपना फोन नम्बर अवश्य लिखें।

दो शब्द—लेखक की कलम से

पाठकों को,

अनिल मोहन का नमस्कार,

इस वक्त आपके हाथों में बबूसा श्रृंखला का, देवराज चौहान सीरीज का नया उपन्यास **'बबूसा और सोमाथ'** है इससे पहले इसी श्रृंखला का उपन्यास **'बबूसा का चक्रव्यूह'** आपने पढ़ा था। मुझे ये कहते हुए बहुत खुशी हो रही है कि बबूसा श्रृंखला के उपन्यास आप सबको बहुत पसंद आ रहे हैं। एक पढ़ने के बाद अगले उपन्यास का बेताबी से इंतजार रहता है पाठकों को। जब मैं कभी उपन्यास पढ़ा करता था तो मुझे भी इसी तरह पार्ट्स के उपन्यासों का इंतजार होता था। आप सब को इस बात की खुशी है कि **राजा पॉकेट बुक्स** से इम्पोर्टिड पेपर पर उपन्यास छप रहे हैं। मैं उन्हीं बातों का जिक्र कर रहा हूं जो आप लोग मुझे फेसबुक या ई-मेल पर कहते हैं। मेरे खयाल में इस इम्पोर्टिड पेपर पर उपन्यास छपने से उपन्यासों की जिंदगी लम्बी हो गई है। पहले जो उपन्यास पढ़ने में परेशानी होती थी पेपर की वजह से, वो अब नहीं होती। सुरेश दापले ने कोल्हापुर से कहा कि इस कागज पर छपे उपन्यास पढ़ने से अब कहानी में और भी ज्यादा मजा आता है।

उपन्यास जगत में कुछ प्रकाशक कहते हैं कि उपन्यासों की दुनिया हर दिन छोटी होती जा रही है, परंतु मेरा कहना है कि ऐसा कुछ भी नहीं हो रहा। उपन्यासों की दुनिया पहले की तरह विस्तृत है। फैली हुई है। अब उपन्यास पढ़ने वालों का नजरिया बदल गया है। पढ़ने वाले चाहते हैं कि बेशक वो पैसे ज्यादा खर्च देंगे, परंतु उपन्यास का कागज और छपाई बेहतर ढंग से होनी चाहिए। ऐसे में अन्य प्रकाशकों से भी मेरा परामर्श है कि वो **राजा पॉकेट बुक्स** की प्रॉडक्शन की तरह अपने उपन्यासों को तैयार करें। सब ठीक है, सिर्फ उपन्यासों का रंग-रूप बदलने की जरूरत है। बदलाव की जरूरत है। क्योंकि आज का पाठक, पहले जैसा नहीं रहा।

अब मैं उन पाठकों की तरफ आता हूं जिन्होंने फेसबुक या ई-मेल पर अपने विचार भेजे हैं। उमेश यादव, मुम्बई से कहते हैं—बबूसा सीरीज पढ़ा, अच्छा लगा। खुमेश शर्मा, छिंदवाड़ा, म.प्र से कहते हैं—**'महामाया की माया'** के किरदारों को फिर से किसी उपन्यास में लूं। मैं बता दूं कि वे उपन्यास देवराज चौहान और मोना चौधरी एक साथ वाले, पूर्वजन्म पर आधारित थे। देवराज चौहान और मोना चौधरी के पूर्व जन्मों वाले उपन्यासों के पात्रों को दोबारा इस्तेमाल नहीं किया जा सकता। इन पात्रों की कहानी एक बार की ही होती है, पेशीराम (फकरी बाबा) जैसे पात्र की बात दूसरी है जो अक्सर उपन्यासों में आता रहता है। साहिल सिकरवार, नोएडा से पूछते हैं—**'बबूसा**

का चक्रव्यूह' कब आ रहा है। शैलेन्द्र कुमार, जगह का नाम नहीं लिखा, कहते हैं—**बबूसा सीरीज** बहुत अच्छी लग रही है। **'बबूसा का चक्रव्यूह'** नहीं मिल रहा। कॉस्टर आस्कर, फैजाबाद, यू.पी से कहते हैं—**'सावधान हिंदुस्तान'** बढ़िया लगा। आपके ही उपन्यास पढ़ता हूं। अमित शेखानी, खरियार रोड, उड़ीसा से कहते हैं—मैं आपका हर उपन्यास पढ़ता हूं। अलफासे देवरिया, यू.पी से कहते हैं—बबूसा में गुड्डी को लाएं। सोनाली, बरेली से कहती हैं—**'बबूसा खतरे में'** अच्छा लगा। नागेश खिरवाडकर, इंदौर से कहते हैं—**'बबूसा और राजादेव'** नहीं मिला। जबकि **'बबूसा खतरे में'** ले चुका हूं परंतु पढ़ नहीं पा रहा कि बीच का मिस है। मनोज सक्सेना उर्फ डैनी, जयपुर। विशाल अरोड़ा, जगह नहीं लिखी—**'बबूसा खतरे में'** पढ़कर मजा आ गया। देवराज चौहान का पात्र कमजोर लगा, परंतु आपकी लेखनी बहुत अच्छी है। शरद सिंह, वाराणसी—देवराज चौहान मुझे बहुत बढ़िया लगता है आपके उपन्यास 1990 से पढ़ रहा हूं। राममेहर सिंह, डनौडा, हरियाणा से कहते हैं—आपका बहुत बड़ा फैन हूं। पांच साल से आपके सारे उपन्यास पढ़े हैं **'बबूसा खतरे में'** पढ़ा बहुत मजा आया। शाहिद, सूरत, गुजरात से कहते हैं—मेरी मम्मी और मैं आपके फैन हैं। अनिल कुमार सैनी, हरिद्वार से कहते हैं—मैं आपका पुराना पाठक हूं आपके उपन्यास बहुत पसंद करता हूं। सन्नी शर्मा, पालिवा से कहते हैं—सभी बुक्स पढ़ी हैं चक्रव्यूह का इंतजार है।

राजा पॉकेट बुक्स ने R.D.X सीरीज का उपन्यास भी व्हाईट पेपर में छपवाए। हेमंत पाल, दिल्ली से कहते हैं—मैं पुराना फैन हूं देवराज चौहान का। संजय कुमार, कुपवाड़ा, कश्मीर से कहते हैं—**'मिस्ड कॉल'** अच्छा लगा। बबूसा के सभी उपन्यास मुझे अच्छे लगे, परंतु आपके उपन्यास कश्मीर में नहीं मिलते। कृष्णा राठौर रांची से पूछते हैं—**'बबूसा खतरे में'** कब आएगा। श्याम बिहारी, हापुड़ से—मुझे देवराज चौहान सीरीज के उपन्यास बहुत पसंद हैं। रिपुभाई, लखनऊ से—**'बबूसा का चक्रव्यूह'** मार्किट में कब आएगा? राजसिंह, आगरा से कहते हैं—नए उपन्यास की कोई खबर नहीं आ रही। ईशांत अश्वनी, अजमेर से पूछते हैं—**'बबूसा का चक्रव्यूह'** कब आएगा? रविकांत दुबे, मथुरा से कहते हैं—**'बबूसा खतरे में'** पढ़ा, सम्बाद बहुत बड़े-बड़े हैं और अन्य पात्रों को बीच में लेने का मतलब समझ नहीं आया, जबकि उनका काम थोड़ा-सा था। अगर मैं उन पात्रों को ही कहानी में आगे चला देता तो कहानी का असली मजा खत्म हो जाना था, जब ये बात मुझे पता चली तो अन्य पात्रों को कहानी से निकाल देना ही मैंने बेहतर समझा। शैलेन्द्र सिंह कानपुर से कहते हैं—**'बबूसा खतरे में'** पढ़ी, मस्त है मजा आ गया पता ही नहीं

चला कि उपन्यास कब खत्म हो गया। वीरेश गुप्ता, लखनऊ—**'बबूसा खतरे में'** पढ़कर मजा आ गया। कुछ कमियां हैं पर उपन्यास अच्छा लगा। विजय घुन्ना, लुधियाना से कहते हैं—लुधियाना से अमृतसर जाते समय जालंधर से **'बबूसा खतरे में'** खरीदा और पढ़ा। ग्रेट है बबूसा। बहुत अच्छा लगा कि जैसे कहानी मेरे आस-पास घट रही है। **'बबूसा का चक्रव्यूह'** कब आ रहा है। संजय गड़वा, यू.पी से कहते हैं—**'बबूसा खतरे में'** नहीं मिल रहा, क्या करूं? जरूर मिलेगा। थोड़ी-सी कोशिश और कीजिए। काशीराम चौधरी, जयपुर से कहते हैं—बबूसा सीरीज शानदार है। चक्रव्यूह का इंतजार है। अमित श्रीवास्तव बढ़नी यू.पी—**'बबूसा और राजादेव'** पढ़ा बहुत अच्छा लगा। अनिल धवन दिल्ली से कहते हैं—**'बबूसा खतरे में'** अच्छा लगा, **'बबूसा का चक्रव्यूह'** का इंतजार है। अक्षय राजा, फरीदकोट, पंजाब से कहते हैं—पहले मैं किसी और लेखक के उपन्यास पढ़ा करता था। एक बार उसका उपन्यास न मिलने पर, आपका उपन्यास **'गुरु का गुरु'** ले आया। वो मुझे इतना अच्छा लगा कि उसके बाद से मैं आपके ही उपन्यास पढ़ रहा हूं और 59 उपन्यास पढ़ चुका हूं।

राजन अरोड़ा, सोनीपत से कहते हैं—आप सिर्फ **राजा पॉकेट बुक्स** से ही उपन्यास प्रकाशित करवाया करें। **राजा पॉकेट बुक्स** बढ़िया पेपर पर उपन्यास छापती है। संदीप खोरे, पूना से कहते हैं—हाल ही में आपका **'मिस्ड कॉल'** पढ़ा, मजा आया। झांसी, म.प्र. से आसुतोष चौनरी ने ई-मेल पर अपनी समस्या को काफी विस्तार से लिखा। ये कहते हैं—मैं आपके उपन्यास शुरू से ही पढ़ रहा हूं। कोई भी उपन्यास मैंने मिस नहीं किया। कुछ दिन पहले झांसी से मैं ट्रेन पकड़ने वाला था कि मुझे हॉकर के पास आपका नया उपन्यास **'बबूसा खतरे में'** दिखाई दे गया, जिसे खरीदने मैं फौरन पहुंच गया उसके पास। उपन्यास मांगा तो उसने कहा अस्सी रुपए का है। जबकि कीमत साठ रुपए छपी थी। मेरे कहने पर उसने कहा कि एक ही कॉपी बची है, स्टेशन पर कहीं भी उपन्यास नहीं है। लेना हो तो लो, नहीं तो ये उपन्यास कोई और ले लेगा। तब मजबूरन मुझे अस्सी रुपए देकर उपन्यास लेना पड़ा। बात बीस ज्यादा की नहीं थी, बात ये थी कि हॉकर बेईमान था। लेकिन उपन्यास पढ़कर मुझे इतना मजा आया कि बीस रुपए ऊपर देने की बात मैं भूल गया और मुस्कराकर सोचा, ऐसे उपन्यास पढ़ने को मिलें तो बीस रुपए ऊपर देने में भी कोई हर्ज नहीं। कुछ ऐसा ही मुझे, कुछ वक्त पहले दिल्ली के एक पाठक ने लिखा था कि एक जगह मुझे देवराज चौहान और मोना चौधरी एक साथ वाली किताबें जीत का ताज, ताज के दावेदार और कौन लेगा ताज दिख गई। वो तीनों पुराने उपन्यास थे। जब मैंने दुकानदार से खरीदने की बात कही तो वो बोला सौ रुपए का एक दूंगा। तीन सौ में तीनों उपन्यास। पूछने पर उसने कहा कि पुराने उपन्यास हैं,

ये कहीं भी नहीं मिलते। मैं जानता हूं कि पाठकों को कभी-कभी इस प्रकार की समस्या का सामना करना पड़ता है। अब ये आप पर ही है कि इस मामले का निपटारा आप कैसे करते हैं। परंतु मेरा अपना विचार है कि नए उपन्यास की कीमत तो ज्यादा नहीं होनी चाहिए। नया उपन्यास खत्म हो जाए तो प्रकाशक मार्किट में उसे फौरन भेज देता है। सूर्यराज, गाजियाबाद से कहते हैं—बहुत देर हो गई आपने मोना चौधरी सीरीज का नया उपन्यास नहीं लिखा। वे ठीक कह आपने। कुछ और पाठक भी ये बात कहते आए हैं। जब भी प्रोग्राम बन पड़ा, मोना चौधरी का नया उपन्यास लिखूंगा।

इस वक्त मैं और आप **'बबूसा'** के उपन्यासों के नशे में डूबे हुए हैं। मुझे **'बबूसा'** लिखने से फुर्सत नहीं और आपको पढ़ने से फुर्सत नहीं। कहानी में बढ़िया हालात हो तो जैसे पढ़ने का मजा आता है, वैसे ही लिखने में भी मजा आता है। जब मुझे लिखने में मजा आता है तो उसी से मैं समझ जाता हूं कि कहानी अच्छी बन पा रही है। लेकिन पाठकों की राय, मेरे लिए बहुत जरूरी है। आप ऐसा भी समझ सकते हैं कि पाठक मेरे गुरु की तरह हैं। असली फैसला तो आप ही करते हैं कि कहानी कैसी है। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि अपनी लिखी कहानी मुझे जरा भी अच्छी नहीं लगती या बहुत ज्यादा अच्छी लगती है लेकिन पाठकों के जवाब बिल्कुल उलट होते हैं। मतलब कि फाईनल जवाब तो आप सब का ही होता है। बहरहाल **'बबूसा'** शृंखला के समाप्त होने के बाद मैं आपके सामने देवराज चौहान और मोना चौधरी एक साथ वाला, पूर्वजन्म वाला उपन्यास **'महल'** हाजिर करने के बारे में विचार कर रहा हूं। मैं जानता हूं कि **'महल'** भी आपके दिमाग में घूम रहा होगा कि उसमें क्या होने वाला है। कैसे हादसे सामने आएंगे। **राजा पॉकेट बुक्स** से मेरा आगामी नया उपन्यास **'बबूसा और खुंबरी'** है। सदूर ग्रह पर पहुंचने के बाद वहां क्या-क्या हो रहा है, वो सब आपके सामने आ रहा है।

'बबूसा और सोमाथ' आपके हाथों में है, इसमें सदूर ग्रह पर पहुंचने और वहां के ताजा हालातों के सामने आने के दृश्य हैं। मुझे पूरा यकीन है कि इस उपन्यास में भी आपको खास मजा आएगा। तो अब मुलाकात करते हैं आगामी नए उपन्यास **'बबूसा और खुंबरी'** में।

—अनिल मोहन

बबूसा और सोमाथ

"क्या कह रहे हो बबूसा।" सोमारा हक्की-बक्की रह गई। आंखें हैरानी से फैलकर चौड़ी हो चुकी थीं—"तुम—तुम्हारा मतलब कि राजा देव, रानी ताशा को नहीं चाह रहे, बल्कि राजा देव की रानी ताशा पर दीवानगी, धरा की ताकतों की वजह से है। ये ही—ये ही कहना चाहते हो न तुम?"

बबूसा के चेहरे पर चिंता में डूबी गम्भीरता दिख रही थी।

"ठीक समझी तुम। पर ये बात मैं नहीं कह रहा, धरा ने मुझे बताया कि ये सब उसी की ताकतों का कमाल है, उसकी ताकतें राजा देव के सिर पर सवार हैं, जो कि उन्हें रानी ताशा की दीवाना बनाए हुए हैं।" बबूसा बोला।

"प-पर ऐसा क्यों...धरा की ताकतें ऐसा क्यों कर रही हैं?" सोमारा अजीब-से हाल में दिख रही थी।

"ये सब कुछ धरा को सदूर पर पहुंचने के लिए हो रहा है।"

"व—वो कैसे?"

"धरा सदूर ग्रह पर वापस पहुंचने को बेताब है। जैसा कि धरा ने ही मुझे बताया था कि उस जन्म में धरा की उन ताकतों ने, जो सदूर पर थीं, उन्होंने ही रानी ताशा के द्वारा राजा देव को सदूर ग्रह से बाहर फिंकवा दिया था, ये सब रास्ते तैयार किए जा रहे थे धरा को सदूर ग्रह पर लाया जा सके। रानी ताशा तो खुद ही परेशान रही कि भला वो कैसे राजा देव को ग्रह से बाहर फिंकवा सकती है। वो तो राजा देव को बहुत चाहती है। अभी तक रानी ताशा इस बात से अंजान है कि ताकतों ने उससे ये काम करवाया था और फिर रानी ताशा को अकेले छोड़ दिया। धरा की ताकतें जरूर भविष्य के बारे में ज्ञान रखती होंगी कि राजा देव आखिरकार पृथ्वी पर ही जीवन जिएंगे और एक दिन वो वापस सदूर पर अवश्य पहुंचेंगे और तब धरा साथ में आ जाएगी।"

"हैरानी हो रही है मुझे।"

"लेकिन मैं तो इन सब बातों से परेशान हुआ पड़ा हूं।" बबूसा होंठ भींचे कह उठा।

"तुम राजा देव के बारे में बता रहे थे कि...।"

"हां।" बबूसा कह उठा—"धरा ने बताया कि राजा देव ने कभी भी अपनी पत्नी नगीना का साथ नहीं छोड़ा था और ऐसे में झगड़े बढ़ जाने थे, तो वो सदूर पर कैसे पहुंचती? ऐसे में धरा की ताकतों ने राजा देव के दिमाग पर काबू पाकर उन्हें रानी ताशा का दीवाना बना दिया।"

"ओह।"

"धरा का कहना है कि ऐसा करने पर ही उसकी सदूर की यात्रा शुरू हो सकी। राजा देव और रानी ताशा एक हो गए और खुशी-खुशी सदूर की तरफ चल पड़े। मेरे साथ धरा भी पोपा में सवार हो गई। बात यहीं तक रहती तो तब भी सब ठीक रहता, परंतु धरा कहती है कि सदूर ग्रह पर पहुंचते ही उसकी ताकतें राजा देव के सिर से हट जाएंगी और राजा देव (देवराज चौहान) फिर पहले की स्थिति में पहुंच जाएंगे।"

"पहले की स्थिति कैसी...क्या वो तुम्हें भी नहीं पहचानेंगे?"

"मुझे पहचानेंगे। सदूर की जो बातें उन्हें याद आ चुकी हैं, वो याद रहेंगी। परंतु वो अपनी पृथ्वी की पत्नी नगीना को हरगिज नहीं छोड़ेंगे, रानी ताशा के लिए।" बबूसा ने चिंतित स्वर में कहा।

"ये बातें धरा ने बताईं?"

"हां।"

"ये तो बहुत बुरा होगा कि राजा देव सदूर पर पहुंचने के बाद रानी ताशा का साथ छोड़ देंगे और अपनी पत्नी नगीना का हाथ थाम लेंगे रानी ताशा तो पागल हो उठेगी। वो ये बात बर्दाश्त नहीं करेगी बबूसा।"

"ये ही बात तो मुझे परेशान किए दे रही है।"

दोनों कुछ पल एक-दूसरे को देखते रहे।

"फिर तो सदूर पर पहुंचना किसी के लिए भी शुभ नहीं होगा।" सोमारा बोली।

"क्या पता, सदूर पर अब क्या होने वाला है।"

"रानी ताशा किसी भी कीमत पर राजा देव को नहीं छोड़ेगी।"

"जानता हूं।" बबूसा ने बेचैनी से कहा।

"राजा देव को पाने के लिए रानी ताशा कुछ भी कर देगी। सदूर पर रानी ताशा के पास ताकतें हैं।"

"तुम ठीक कह रही हो सोमारा। ये ही बातें मैं सोच रहा हूं। रानी ताशा राजा देव को हाथ से नहीं जाने देगी। वो राजा देव से सच्चा प्यार करती है, परंतु समय बहुत तेजी से बदल रहा है, हालात पलटा खाने वाले हैं। सदूर पर पहुंचते ही तूफान उठ खड़ा होगा। मुझे तो कुछ समझ में नहीं आ रहा कि मैं क्या करूं?"

"ये सब धरा इसलिए कर रही है कि सदूर पर पहुंच सके।"

"हां।"

"तुमने धरा से पूछा नहीं कि असल में वो है कौन और क्या चाहती है?"

"वो कुछ भी नहीं बताती। इतना ही कहती है कि सदूर की जमीन पर

पांव रखते ही अपने बारे में बता देगी, परंतु उससे पहले इस बारे में कुछ भी नहीं कहेगी। कहती है कि अपने बारे में एक शब्द भी कहा तो कोई भी समझ लेगा कि वो कौन है।" बबूसा होंठ भींचे कह उठा।

"ये तो हालात बहुत खतरनाक हो गए। तुम ये बातें राजा देव या रानी ताशा को बता...।"

"चाहकर भी नहीं बता सकता।" बबूसा ने इंकार में सिर हिलाया—"तुम तो जानती हो कि जब भी धरा से वास्ता रखती बातें किसी को बताना शुरू करते हैं तो मुंह से कुछ का कुछ निकलने लगता है। ये सब गड़बड़ धरा की ताकतें ही करती हैं।" (ये सब विस्तार से जानने के लिए पढ़ें **राजा पॉकेट बुक्स** से प्रकाशित अनिल मोहन का पूर्व प्रकाशित उपन्यास **'बबूसा का चक्रव्यूह'**।)

"मैं धरा के बारे में किसी को कुछ भी बता नहीं पा रहा...।"

"तुमने तो मुझे चिंता में डाल दिया बबूसा कि राजा देव की, रानी ताशा के लिए चाहत, धरा की ताकतों की इच्छा से है। रानी ताशा को मैं बहुत अच्छी तरह से जानती हूं। वो बहुत जिद्दी है और जब राजा देव को अपने हाथों से निकलता देखेगी तो वो कुछ भी कर देगी। मुझे तो डर लग रहा है कि सदूर पर पहुंचते ही तूफान उठ खड़ा होगा।"

बबूसा खामोश रहा।

"तुम कुछ करो बबूसा।"

"मैं कुछ नहीं कर सकता।"

"परंतु कुछ तो...।"

"कुछ भी नहीं कर सकता। मैंने धरा पर झपटने की कोशिश की थी गुस्से में। तब मेरे मन में था कि मैं धरा का गला दबा दूंगा, परंतु दो-तीन कदमों के बाद, धरा की ताकतों ने मुझे वापस वहीं खड़ा कर दिया, जहां से मैं चला था। तब धरा बेड पर बैठी मुझे देखकर हंस रही थी। धरा की ताकतों ने उसे सुरक्षित कर रखा है। कोई भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता।"

"मैं व्याकुल हो रही हूं कि आखिर धरा है कौन और वो क्यों सदूर पर जा रही है।"

"कहती है सदूर पर वापस जा रही हूं। वो अपने को सदूर का बताती है।"

सोमारा बबूसा को देखने लगी।

"अब क्या होगा बबूसा?"

"जो भी होगा, बुरा ही होगा।" बबूसा सोच भरे गम्भीर स्वर में कह उठा—"सदूर पर पोपा के पहुंचते ही, धरा की ताकतें राजा देव के मस्तिष्क से हट जाएंगी तो राजा देव उसी पल रानी ताशा का साथ छोड़कर नगीना के पास आ जाएंगे। ये बात कभी भी रानी ताशा सह नहीं सकेगी। तब वो कुछ भी कर देगी।"

"परंतु तब तुम क्या करोगे?"
"मैं?"
"हां, तब क्या तुम राजा देव का साथ दोगे या रानी ताशा का?"
"मैं राजा देव का सेवक हूं सोमारा। हर तरह के हालातों में मैं राजा देव के साथ ही रहूंगा।"
"परंतु जीत रानी ताशा की होगी। क्योंकि वो सदूर की रानी है और...।"
"राजा देव को याद आ चुका है कि वो सदूर के राजा हैं।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा—"ऐसे में सदूर ग्रह को राजा देव संभालेंगे या रानी ताशा, ये नहीं कहा जा सकता। मुझे कहीं चैन नहीं मिल रहा। पहले पृथ्वी पर राजा देव को लेकर परेशान रहा अब ये नए हालात मुझे तनाव में डाल रहे हैं। रानी ताशा को भी पृथ्वी पर जाने और राजा देव को वापस लाने का कोई फायदा नहीं हुआ। पहले वो राजा देव की तलाश में परेशान थीं तो सदूर पर पहुंचते ही अब वो इस बात से परेशान होने वाली है कि राजा देव अपनी पत्नी का साथ नहीं छोड़ना चाहते। सदूर पर पहुंचते ही राजा देव भी समस्या में घिर जाएंगे कि वो पृथ्वी से इतनी दूर सदूर ग्रह पर क्यों आ गए। मुझे भी पता नहीं कि मैं राजा देव की कितनी सहायता कर पाऊंगा। बेचैनी हो रही है मुझे कि ये इतना गम्भीर मसला है और धरा की ताकतें, इन बातों को राजा देव को, नहीं बताने दे रहीं।"
"हम धरा की ताकतों का मुकाबला नहीं कर सकते।" सोमारा कह उठी।
"तुम ठीक कहती हो। धरा की ताकतों के सामने हम बहुत कमजोर हैं।" बबूसा ने होंठ भींचकर कहा—"जबकि धरा कहती है कि इस वक्त तो उसके साथ दो-तीन ताकतें हैं और उसकी बाकी की ताकतें सदूर पर उसका इंतजार कर रही हैं।"
"वो कभी-कभी मुझे शैतान जैसी लगती है। जब वो मुस्कराती है और उसका निचला होंठ टेढ़ा हो जाता है।"
"इस बात का आभास मुझे भी कई बार हुआ है।"
"अब क्या करोगे बबूसा?"
"मेरे खयाल में मुझे पूरा ध्यान सोमाथ पर लगा देना चाहिए। सोमाथ, सदूर पर पहुंचकर, रानी ताशा का हुक्म मानते हुए हमें तगड़ा नुकसान पहुंचा सकता है। रानी ताशा ने गुस्से में पागल होकर सोमाथ से कह दिया कि राजा देव की जान ले ले, तो वो ऐसा भी कर देगा। धरा के बारे में बाद में सोचूंगा, पहले सोमाथ को खत्म करना होगा कि...।"
"तुम तो कहते हो कि सोमाथ को मारने के लिए, कोई चक्रव्यूह रचने जा रहे हो?"

"चक्रव्यूह मेरे दिमाग में पूरी तरह अपने पंख फैला चुका है सोमारा।" बबूसा के चेहरे पर एकाएक खतरनाक मुस्कान आ ठहरी—"सोमाथ एक बार मेरे चक्रव्यूह में फंस गया तो सीधा मौत के मुंह में जाएगा।"

"कैसे फंसेगा वो?"

"जरूर फंसेगा।" बबूसा ने विश्वास भरे स्वर में कहा—"क्योंकि जब मैं अपने चक्रव्यूह को दिमाग से बाहर निकालने जा रहा हूं और जो भी होगा, सोमाथ कभी नहीं समझ सकेगा, वो सब मेरे रचे चक्रव्यूह के धागे हैं।"

"मुझे तो बताओ अपना चक्रव्यूह?"

"अभी कुछ मत पूछो सोमारा। मुझे अपना चक्रव्यूह बिछाने दो। सोमाथ को उसमें फंसने दो। आओ मेरे साथ।"

"कहां?"

"जगमोहन, नगीना और मोना चौधरी के पास। वो पोपा के पीछे वाले हिस्से में...।"

"वो तो उधर केबिन में हैं। कुछ देर पहले मैंने तीनों को उस केबिन में बैठे देखा है।" सोमारा बोली।

"तो फिर वहीं चलते हैं।"

बबूसा और सोमारा उस केबिन में पहुंचे जहां मोना चौधरी, जगमोहन और नगीना थे। वो बातों में व्यस्त थे कि उनके आने पर, बातें रुक गईं और वो दोनों को देखने लगे।

बबूसा और सोमारा के चेहरे पर गम्भीरता थी।

"खास बातें हो रही थीं क्या?" बबूसा बैठते हुए बोला।

"तुम्हारे बारे में ही बात कर रहे थे।" मोना चौधरी बोली।

"क्या?"

"यही कि तुम सोमाथ के बारे में किस तरह का कदम उठाने वाले हो।"

"तुम सोमाथ पर काबू पा भी सकोगे या नहीं?" जगमोहन बोला।

बबूसा मुस्कराया फिर गम्भीर होता कह उठा।

▭ ▭

सोमाथ अपने केबिन में चहल-कदमी कर रहा था। चेहरे पर सोच के भाव थे। वो पूरी तरह शांत दिख रहा था। उसकी सोचों का केंद्र बबूसा ही था, जिसके बारे में उसे पता था कि वो उस पर हमला करेगा। एक हमला तो बबूसा का नाकाम हो चुका था (विस्तार से जानने के लिए पढ़ें—**'बबूसा का चक्रव्यूह'**।) ऐसे में सोमाथ को पूरा यकीन था कि इस बार बबूसा बहुत सोच-समझकर अपना कदम उठाएगा। अब सोमाथ का इरादा भी इन लोगों को छोड़ने का नहीं था। एकाएक सोमाथ ठिठका और दीवार पर लगी स्क्रीन के पास पहुंचकर एक बटन दबाया तो स्क्रीन रोशन हो उठी। दो पलों बाद

स्क्रीन पर पेषा के किसी भाग का दृश्य नजर आने लगा। सोमाथ स्क्रीन के पास लगी नॉब को धीमे-धीमे घुमाने लगा तो स्क्रीन पर दृश्य बदलने लगे। सोमाथ की निगाह स्क्रीन पर ही टिकी थी कि एक जगह वो रुक गया। स्क्रीन पर बबूसा, सोमारा, नगीना, जगमोहन और मोना चौधरी दिख रहे थे। सोमाथ ने एक और बटन दबाया तो स्पीकर से निकलकर उसकी आवाजें सुनाई देने लगीं।

मोना चौधरी की आवाज सोमाथ के कानों में पड़ी।

"यही कि तुम सोमाथ के बारे में किस तरह का कदम उठाने वाले हो?"

"मेरी तैयारी पूरी हो चुकी है।" बबूसा ने कहा।

"कुछ हमें भी तो बताओ।"

चंद पल खामोश रहकर बबूसा बोला।

"अभी मैं कुछ नहीं बताऊंगा।"

"क्यों?"

"सोमाथ से मुझे ही निबटना है, ये काम कैसे होगा, ये मुझ पर छोड़ दो।"

"तो हम क्या करेंगे?" नगीना बोली।

"मेरी सहायता।"

"जब तुम हमें कुछ भी बताने को तैयार नहीं तो हम तुम्हारी सहायता कैसे कर सकेंगे।"

"जैसे मैं कहूं, वो ही करो तो मुझे तुम लोगों की सहायता मिल...।"

"तुम हमें सब कुछ स्पष्ट बता क्यों नहीं देते कि तुम्हारा प्लान क्या है?" जगमोहन बोला।

"वक्त आने दो सब बता दूंगा।"

सोमाथ की शांत निगाह स्क्रीन पर थी और वो उनकी बातें सुन रहा था।

"हम तुम्हारे प्लान में कहां फिट बैठते हैं?" जगमोहन ने पूछा।

"तुम लोग सोमाथ पर छोटे-छोटे हमले करोगे।"

"छोटे-छोटे हमले?"

"वो हमें मार देगा।" नगीना बोली।

"ऐसा कुछ नहीं होगा। सोमाथ पर छोटे-छोटे हमले करके उसे उलझाना है कि उसका पूरा ध्यान तुम लोगों पर लग जाए। जबकि असली हमला तो मैंने करना है। तुम लोगों के हमले मेरे तैयार किए चक्रव्यूह का ही हिस्सा होंगे।"

"लेकिन हमारे कमजोर हमलों से सोमाथ का क्या बिगड़ेगा?"

"कुछ भी नहीं।" बबूसा ने मुस्कराकर कहा—"तुम लोगों ने उसका कुछ भी बिगाड़ना नहीं है। बस उसे इस बात का एहसास दिलाना है कि हम उसे मारने के लिए उसके पीछे पड़ चुके हैं।"

"इससे क्या फायदा होगा?"

"जो फायदा होगा, वो सिर्फ मैं ही जानता हूं।" बबूसा मुस्कराया—"बस तुम लोगों ने इसी तरह मेरी सहायता करनी है। इस काम के लिए हथियारों की कमी नहीं है। पोपा के पीछे वाले हिस्से में हथियार रखे हैं, अपनी पसंद का हथियार चुन लो। सोमाथ से सावधान रहना। उसके हाथ नहीं पड़ना। हथियार से उस पर हमला करना और भाग जाना। तुम सबको अपना ठिकाना पोपा के पीछे वाले हिस्से को ही बनाना होगा। मैं भी उसी जगह को अपना ठिकाना बनाऊंगा।"

"लेकिन सोमाथ हमले के बाद हमें ढूंढ़ता वहां पहुंच जाएगा।" मोना चौधरी बोली।

"वे ही तो मेरे चक्रव्यूह का अहम वक्त होगा।"

"क्या मतलब?"

"मैं जो कर रहा हूं, वो मुझे करने दो। जैसे मैं कहता हूं, वैसा ही करो।"

"मुझे नहीं लगता तुम सोमाथ पर काबू पा लोगे।" नगीना कह उठी।

"मैं उसे खत्म करने के लिए चक्रव्यूह रच चुका हूं।" बबूसा ने दृढ़ स्वर में कहा—"वो नहीं बचेगा।"

"तुम्हें अपनी योजना पर पूरा भरोसा है?"

"पूरी तरह। इस वक्त का इंतजार तो मैं कब से कर रहा था।"

मोना चौधरी, नगीना, जगमोहन की नजरें मिलीं।

"तुम्हारा साथ देना, अंधेरे कुएं में छलांग लगाने के बराबर है कि, अंजाम पता नहीं क्या होगा। परंतु हमारे पास दूसरा रास्ता भी नहीं है। तुम पर भरोसा करना हमारी मजबूरी है।" जगमोहन ने गम्भीर स्वर में कहा

"बबूसा पर भरोसा रखकर घाटे में नहीं रहोगे।" सोमारा कह उठी।

बबूसा ने नगीना से कहा।

"राजा देव तुम्हारे पास नहीं है, इस बात की तुम्हें तकलीफ तो होगी।"

नगीना ने बबूसा को देखा और शांत स्वर में कहा

"देवराज चौहान खुश है तो मैं खुश हूं।"

"मेरे पास तुम्हारे लिए अच्छी खबर ये है कि सदूर पर पहुंचते ही राजा देव तुमसे आ मिलेंगे।"

"क्या?" नगीना की आंखें सिकुड़ीं।

मोना चौधरी और जगमोहन की नजरें मिलीं।

"क्या कहा तुमने?" जगमोहन ने पूछा।

"राजा देव तुम लोगों के पास वापस आ जाएंगे, सदूर पर पहुंचते ही।"

"ये तुम कैसे कह सकते हो?" मोना चौधरी बोली।

"मुझे पता है कि ऐसा ही कुछ होने वाला है।" बबूसा गम्भीर दिखा।

"स्पष्ट कहो।"

"इससे ज्यादा मैं कुछ नहीं बता सकता। परंतु सदूर पर पहुंचकर तुम लोगों को हर बात का जवाब दे दूंगा।"

"क्या देवराज चौहान से तुम्हारी कोई बात हुई?"

"नहीं।"

"तो फिर इतनी बड़ी बात तुमने कैसे कह दी?"

"अभी मैं जवाब नहीं दे सकता।"

"मैं तुम्हारी बात का विश्वास नहीं कर सकती।" नगीना गम्भीर स्वर में बोली—"देवराज चौहान, रानी ताशा को सच्चे मन से चाहते हैं। वो ताशा को नहीं छोड़ेंगे।"

बबूसा, नगीना को देखता खामोश रह फिर कह उठा।

"आने वाले वक्त में जो होने वाला है, वो मैंने बता दिया है। अब पोपा के पीछे वाले हिस्से में चलो, जहां पोपा से बाहर जाने का दूसरा दरवाजा है, वो जगह तुम लोग देख चुके हो। वहां हथियार भी रखे हैं, बाकी बातें वहीं होंगी।" बबूसा ने कहा और सोमारा के साथ बाहर निकल गया।

जगमोहन, मोना चौधरी, नगीना भी एक-एक करके बाहर निकल गए।

सोमाथ की निगाह स्क्रीन पर टिकी थी, जहां खाली केबिन नजर आ रहा था और कोई भी आवाज नहीं उभर रही थी। फिर सोमाथ शांत स्वर में कह उठा।

"बबूसा मुझे मारने के लिए षड्यंत्र रच चुका है। परंतु वो मुझे नहीं मार सकेगा। मैं ही बबूसा को मार दूंगा।" ये शब्द अपने आप से कहने के बाद हाथ बढ़ाकर सोमाथ ने स्क्रीन ऑफ कर दी।

▭ ▭
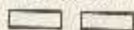
रानी ताशा ने अपने हाथों से, कमरे के किचन में खोनम (चाय जैसा पदार्थ) बनाया और वो गिलासों में डालकर देवराज चौहान के पास कमरे में पहुंची। उसके खूबसूरत चेहरे पर मधुर मुस्कान बिखरी हुई थी। देवराज चौहान कुर्सी पर आंखें बंद किए, पुश्त से सिर टिकाए बैठा था कि रानी ताशा पास आकर प्यार से बोली।

"देव।"

देवराज चौहान ने फौरन आंखें खोलीं और पास खड़ी रानी ताशा के खूबसूरत चेहरे को देखा। देखता ही रह गया। जाने कहां खो गया था वो कि रानी ताशा की हंसी से भरी आवाज सुनकर विचारों से बाहर आया।

"आप फिर मुझे इस तरह देखने लगे। मुझे तंग जरूर करोगे।"

देवराज चौहान ने मुस्कराकर खोनम का गिलास थामा और बोला।

"क्या करूं ताशा, तुम हो ही इतनी खूबसूरत कि...।"

"बस-बस।" अपना खोनम का गिलास थामे पास की कुर्सी पर बैठते ताशा ने हंसकर कहा—"ये बात मैं बहुत सुन चुकी हूं। मैं जानती हूं कि आप हमेशा ही मुझे पसंद करते आए हैं।"

"हां ताशा, मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकता।"

"तो मैं कहां रह सकती हूं मेरे देव।" रानी ताशा के स्वर में कम्पन उभरा—"न जाने वो कैसा बुरा वक्त था कि हम अलग हो गए, लेकिन अब हम किसी कीमत पर अलग नहीं होंगे। एक साथ सदूर पर जीवन बिताएंगे। मैं आपका बहुत खयाल रखूंगी। बहुत प्यार करूंगी अपने देव से।" ताशा की आंखों में आंसू चमकने लगे—"हमें किसी की नजर लग गई थी देव कि हम अलग हो गए। पर अब फिर सदूर पर पहुंच कर अपने प्यार की दुनिया को सजाएंगे।"

"हां ताशा। अब मैं तुम्हें अपने से दूर नहीं होने दूंगा।"

ताशा ने गीली आंखें हाथ से साफ कीं।

देवराज चौहान ने खोनम का घूंट भरते कहा।

"परंतु मुझे याद क्यों नहीं कि हम सदूर पर क्यों जुदा हो गए थे। मैं सदूर से दूर कैसे चला गया?"

खोनम का घूंट भरते-भरते ताशा का गिलास वाला हाथ कांप उठा, इस बात को सुनकर। चेहरे पर कई रंग आकर चले गए। ऐसी बात देवराज चौहान ने पहले नहीं कही थी।

देवराज चौहान की निगाह ताशा के खूबसूरत चेहरे पर टिक चुकी थी।

"ताशा।"

"हां मेरे देव।"

"तुम बताओ मुझे कि हम कैसे जुदा हो गए थे?" देवराज चौहान ने पूछा।

रानी ताशा का चेहरा एकाएक फीका दिखने लगा।

"प्यारे देव।" रानी ताशा कुर्सी से उठी और पास आकर देवराज चौहान का गाल चूमते कह उठी—"इन बातों के लिए सारी उम्र पड़ी है। सब बातें पोपा में ही कर लेंगे तो सदूर पर क्या बातें करेंगे।"

देवराज चौहान ने मुस्कराकर रानी ताशा का हाथ थाम लिया।

"हम तो प्यार करने वाले पंछी हैं। हमारे पास बातों की कमी कभी नहीं होगी।"

"कभी-कभी तो मुझे ये सब सपना लगता है कि हम सच में दोबारा मिल गए हैं।" ताशा की आवाज कांप उठी।

"हम फिर से एक हो चुके हैं ताशा। हमें कोई अलग नहीं कर सकता।"

"ये सफर मुझे बहुत लम्बा लग रहा है। हम जल्दी से सदूर पर क्यों नहीं

पहुंच जाते हैं? मैं अपने देव के साथ सदूर की जमीन पर कदम रखने को बेचैन हो रही हूं। तुम्हारे बिना किला सूना है। और वो...।"

"मैं भी जल्दी से सदूर को देखना चाहता हूं।"

"देव, अब तो आप सदूर को पहचान ही नहीं पाएंगे। पूरी तरह बदल चुका है सदूर। ऊंची-ऊंची इमारतें। सड़कों पर दौड़ते छोटे-छोटे वाहन। हर तरफ पक्के रास्ते। कुछ भी अब पहले जैसा नहीं रहा। जम्बरा ने बहुत मेहनत की है।"

"मेरी ताशा तो वो ही है।" देवराज चौहान ने ताशा का हाथ थाम लिया।

"हां देव।" ताशा का स्वर कांपा—"मैं तो वही हूं, तुम्हारी ताशा।"

"तुम्हारे सिवाय मुझे और कुछ नहीं चाहिए।"

ताशा ने पुनः झुककर देवराज चौहान का गाल चूमा।

"आपको पाकर मेरी दुनिया फिर से सुहावनी हो गई देव।"

बातों के दौरान दोनों खोनम भी पी रहे थे।

"अब आपको पृथ्वी ग्रह की पत्नी की तो याद नहीं आती?" रानी ताशा ने कहा।

"मैंने सिर्फ तुम्हें ही प्यार किया है ताशा। जब तुम मुझसे दूर हो गई। सदूर के बारे में मैं सब भूल गया तो तब मैं नगीना का हाथ थाम बैठा था। मैं सिर्फ तुम्हें चाहता हूं ताशा।"

"मुझे अपने देव पर पूरा भरोसा है। आप तो मेरी जान हैं।"

"ताशा।" देवराज चौहान का स्वर प्यार में डूबा था।

"मेरे देव। सिर्फ मेरे ही हो देव।" ताशा की आवाज भी प्यार में भरी हुई थी।

"सदूर पर मैं एक नया किला बनाऊंगा ताशा। बहुत ही शानदार। बहुत ही अच्छा। हम वहीं रहा करेंगे।"

"आप किला बनाने में लग जाएंगे तो मेरे पास कौन रहेगा?" ताशा बोली।

"किला बनाने का काम जम्बरा के हवाले कर दूंगा।"

"ये ठीक रहेगा देव।" ताशा के खूबसूरत चेहरे पर मुस्कान आ गई—"जम्बरा ये काम अच्छा कर लेगा।"

"तोलका के विद्रोह के बाद, सदूर पर किसी ने विद्रोह किया?" देवराज चौहान ने पूछा।

"नहीं। उसके बाद किसी ने विद्रोह नहीं किया। सब कुछ अच्छा चल रहा है।" रानी ताशा ने कहा।

"जब मैं सदूर पर नहीं था तो महापंडित का व्यवहार तुम्हारे साथ कैसा रहा?"

"बहुत ही सहयोगपूर्ण। महापंडित ने काफी हौसला दिया मुझे।"

"अब सेनापति कौन है सदूर पर?"

"सोमाथ।"

"वो बेहतर सेनापति है?"

"हां। उसके निर्देश पर सिपाही पूरे सदूर को संभालते हैं। चूंकि मुझे पृथ्वी ग्रह पर आना था, ऐसे में सदूर की पूरी देखरेख जम्बरा के हवाले कर आई थी। जम्बरा पर मुझे सबसे ज्यादा भरोसा है।" रानी ताशा ने कहा—"जो काम मुझे परेशानी देता था, वो मैं जम्बरा को पूरा करने को कह देती थी।"

"तुम्हारा मतलब कि सदूर पर इस समय कोई समस्या सिर उठाए नहीं खड़ी है?"

"नहीं देव। सदूर पूरी तरह शांत है।" रानी ताशा बोली—"परंतु इस वक्त पोपा में मुझे समस्या दिख रही है।"

"पोपा में समस्या?"

"बबूसा परेशानी खड़ी कर रहा है।" रानी ताशा गम्भीर थी—"वो सोमाथ को खत्म कर देना चाहता है। जबकि ऐसा सम्भव नहीं। बबूसा ने जगमोहन, नगीना, मोना चौधरी और सोमारा के साथ मिलकर सोमाथ पर हमला भी किया। इससे पहले कि बात आगे बढ़ जाए, आपको बबूसा को समझा देना चाहिए।"

"बबूसा इस बारे में मेरी बात मानने को तैयार नहीं।"

"अब सोमाथ नहीं रुकेगा। ये बात सोमाथ ने स्पष्ट कह दी है मुझे। सोमाथ का मुकाबला नहीं किया जा सकता। मैं सोमारा को साथ लाई कि वो बबूसा को समझाएगी, परंतु वो तो स्वयं ही बबूसा को सहयोग देने लगी।"

"बबूसा, मेरी बात नहीं मान रहा।"

"हैरानी है कि आपका सेवक, आपकी बात नहीं मान रहा देव।" रानी ताशा गम्भीर थी।

"ये बात ऐसी नहीं कि मैं उससे सख्ती से बात करूं।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा।

"सोमाथ, बबूसा की जान ले लेगा देव। क्या ऐसा होना आपको अच्छा लगेगा। कहीं ऐसा तो नहीं कि बाद में आप बबूसा की मौत के दुख में डूब जाएंगे।" रानी ताशा की निगाह देवराज चौहान पर थी।

"मुझे।" देवराज चौहान मुस्कराया—"बबूसा पर पूरा भरोसा है।"

"मैं समझी नहीं देव।"

"बबूसा जानता है कि वो क्या कर रहा है और उसका अंजाम क्या होगा। बबूसा कोई बेवकूफी नहीं करेगा।"

"सोमाथ को खत्म करने की सोचना बेवकूफी ही तो है।"

देवराज चौहान मुस्कान के साथ रानी ताशा को देखता रहा फिर बोला।

"महापंडित ने बबूसा का जन्म इस बार मेरी जैसी ताकत और मेरे जैसे दिमाग के साथ कराया है।"

"ये मुझे मालूम है।"

"तो फिर बबूसा कोई गलती नहीं करेगा। वो सोच-समझ कर ही, कुछ करेगा।"

"आपकी इच्छा देव। मैं तो आपको बता रही थी कि...।"

उसी पल दरवाजा खटखटाया गया।

रानी ताशा ने बात अधूरी छोड़कर, आगे बढ़कर दरवाजा खोला।

दरवाजे पर सोमाथ खड़ा था।

"रानी ताशा।" सोमाथ कह उठा—"बबूसा बाकी लोगों के साथ मिलकर मुझे मारने की सोच रहा है। मैंने स्क्रीन पर उनकी बातें सुनी हैं। अब मैं भी उन्हें मार दूंगा।"

रानी ताशा ने पलटकर देवराज चौहान को देखा।

देवराज चौहान ने सोमाथ की बात सुन ली थी। वो उठा और दरवाजे पर आ पहुंचा।

"बबूसा के साथी लोग कौन हैं?"

"जगमोहन, नगीना, मोना चौधरी और सोमारा।" सोमाथ ने जवाब दिया।

"तुमने स्क्रीन पर सुना कि वो तुम्हें खत्म करने की सोच रहे हैं?"

"हां।"

"तो तुमने क्या फैसला किया?"

"वो सब मुझ पर पहले भी हमला कर चुके हैं। उस वक्त तक तो रानी ताशा ने मुझसे कह रखा था कि मैंने उन्हें कुछ नहीं कहना है परंतु हर बार मैं खामोश भी नहीं रह सकता। रानी ताशा मुझे अब इजाजत दे चुकी हैं कि मैं भी उन्हें जवाब दे सकूं।"

"तुम्हें क्या लगता है सोमाथ कि क्या बबूसा अपनी सोच में सफल हो सकेगा?"

"वो कभी भी सफल नहीं होगा।" सोमाथ दृढ़ स्वर में बोला—"क्योंकि महापंडित ने मुझे इस तरह बनाया है कि कोई भी मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। बबूसा ने कुछ किया तो वो ही मेरे हाथों मरेगा।"

"इस वक्त बबूसा कहां पर है?"

"पोपा के पीछे वाले हिस्से में, जहां दरवाजा है, उस जगह पर वो सब इकट्ठे हुए पड़े हैं और मेरे खिलाफ षड्यंत्र रच रहे हैं। उस जगह को वो लोग अपने ठिकाने के तौर पर इस्तेमाल कर रहे हैं।" सोमाथ ने बताया।

"अब तुम क्या चाहते हो?"

"मैं आखिरी बार बताने आया था कि बबूसा के इरादे मेरे लिए बुरे हैं और अब वो बचेंगे नहीं।"

"अब वो तुम पर हमला करें तो तुम कुछ भी करने को आजाद हो सोमाथ।" देवराज चौहान ने शांत स्वर में कहा।

रानी ताशा की निगाह देवराज चौहान की तरफ उठी।

सोमाथ उसी पल पलटकर चला गया।

देवराज चौहान वापस कुर्सी पर आ बैठा।

रानी ताशा दरवाजा बंद करके गम्भीर स्वर में कह उठी।

"क्या ये अच्छा नहीं होगा देव कि आप बबूसा को फिर समझाने की चेष्टा करें।"

"बबूसा के साथ जगमोहन, नगीना, मोना चौधरी भी हैं। ऐसे में किसी को कुछ समझाने की जरूरत नहीं।"

"सोमाथ उन लोगों को मार देगा।"

"मुझे फिक्र नहीं ताशा तो तुम भी फिक्र मत करो। मुझे बबूसा पर भरोसा है।" देवराज चौहान मुस्करा पड़ा—"बबूसा जानता है कि सोमाथ को मारा नहीं जा सकता। इस पर भी वो सोमाथ के पीछे है तो अवश्य उसने ऐसी बात सोच रखी होगी, जिसके कारण वो अपने इरादे से पीछे नहीं हट रहा और मुझसे भी कह चुका है कि ये उसका और सोमाथ का मामला है।" कहने के साथ ही देवराज चौहान ने खोनम का आखिरी घूंट भरा और गिलास एक तरफ रख दिया फिर ताशा को देखा।

ताशा एकाएक मुस्करा पड़ी और पास आकर बोली।

"मेरा देव जो भी सोचता है, ठीक ही सोचता है। परंतु एक बात का मुझे शक हो रहा है।"

"वो क्या ताशा?"

"सोमाथ की ताकत जानते हुए भी आप बबूसा के प्रति निश्चिंत हैं। कहीं ऐसा तो नहीं कि आपने उसे जोबिना (ऐसा हथियार, जिसके इस्तेमाल पर सामने वाला इंसान राख हो जाता है) दे दी हो।" रानी ताशा ने कहा।

"वो तो तुम्हारे अधिकार में है।"

"परंतु।" रानी ताशा ने उस दीवार की तरफ देखा, जिधर तिजोरी जैसा बक्सा फिट था और सारी जोबिना वहां पर रखी हुई थी—"आप चाहें तो वो जगह आप भी खोल सकते हैं।"

"मैंने ऐसा कुछ नहीं किया।" देवराज चौहान मुस्करा पड़ा—"परंतु बबूसा जानता है कि जोबिना कहां पर है और वो आया भी था जोबिना चुपके से लेने। तब मैं नहा रहा था। बबूसा ने जोबिना वाली जगह खोलकर, जोबिना निकाल भी ली थी, परंतु तभी मैं बाथरूम से बाहर आ गया और

मैंने उसे जोबिना नहीं ले जाने दी। इतना ही कहा कि सोमाथ का मुकाबला करना है तो जोबिना के बिना करे। अब बबूसा जोबिना के बिना ही सोमाथ का मुकाबला कर रहा है।"

रानी ताशा मुस्करा पड़ी।

"बबूसा की हिम्मत तो देखो देव, उसने मेरी जोबिना वाली जगह भी खोल ली।" (ये सब विस्तार से जानने के लिए पूर्व प्रकाशित उपन्यास **'बबूसा का चक्रव्यूह'** अवश्य पढ़ें)।

देवराज चौहान कुर्सी से उठा और आगे बढ़कर रानी ताशा को बांहों में भरकर बोला।

"हमें इन बातों में अपना वक्त खराब नहीं करना है ताशा।"

"ओह देव।" रानी ताशा की बांहें भी देवराज चौहान के शरीर पर लिपटती चली गईं।

▭ ▭
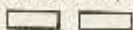
बबूसा पोपा के उस गोल कमरे में पहुंचा, जहां कई स्क्रीनें लगी हुई थीं और यंत्रों द्वारा सदूर ग्रह से बात करने की सुविधा थी। वहां दो आदमी बैठे बातों में व्यस्त थे कि बबूसा ने उन्हें ये कहकर बाहर भेज दिया कि उसे महापंडित से कुछ गोपनीय बातें करनी है। उसके बाद बबूसा ने सदूर ग्रह पर महापंडित से सम्पर्क बनाया तो बात हो गई। स्क्रीन पर महापंडित की तस्वीर दिखने लगी।

"कैसे हो बबूसा?" महापंडित ने पूछा। स्पीकर जैसे यंत्र से महापंडित की आवाज उभरी थी।

"मेरा हाल क्या तुम नहीं जानते?" बबूसा ने तीखे स्वर में कहा।

"कुछ-कुछ जानता हूं। मेरी मशीनों ने मुझे बताया था कि तुम परेशानी की स्थिति में हो।"

"तुमने सोमाथ का निर्माण किया, इसलिए।"

"सोमाथ का निर्माण मैंने रानी ताशा की, पृथ्वी पर सुरक्षा को लेकर किया था। तुम्हारे लिए नहीं।"

"मैं तुमसे कुछ पूछना चाहता हूं।"

"कहो बबूसा।"

"तुम जानते हो कि रानी ताशा ने राजा देव को धोखे से सदूर ग्रह से बाहर फेंक दिया था।" बबूसा बोला।

"जानता हूं।"

"परन्तु मुझे पता चला है कि रानी ताशा बेकसूर थी। जो भी तब हुआ, रानी ताशा के द्वारा हुआ, परंतु वो सब रानी ताशा की इच्छा से नहीं हुआ। रानी ताशा अभी भी अंजान है कि इस मामले में वो बेकसूर है।"

महापंडित की आवाज नहीं आई।

बबूसा स्क्रीन पर नजर आ रहे, महापंडित के चेहरे को देखता रहा।

"मुझे जवाब चाहिए महापंडित। क्या मैंने सच कहा?"

"सच कहा। मेरी मशीनों ने तब ही ये बात मुझे बता दी थी।" महापंडित का गम्भीर स्वर सुनाई दिया।

"रानी ताशा निर्दोष थी तो ये बात मुझे क्यों नहीं बताई महापंडित?"

"क्या तुम मेरी बात का भरोसा करते कि रानी ताशा निर्दोष है।"

बबूसा बेचैन दिखा।

"तुम तब कभी भी मेरी बात का भरोसा नहीं करते। क्योंकि तब धोगरा के सिपाहियों ने तुम्हें पकड़ रखा था और जो भी हुआ था तुम्हारी आंखों के सामने हुआ था तो तुम इस बात का भरोसा कैसे करते?"

अब बबूसा खामोश हो गया।

"सबसे बड़ी बात तो ये थी कि रानी ताशा की निर्दोषता की वजह तुम्हें न बता पाता, क्योंकि ये बात मेरी मशीनें भी नहीं बता सकीं कि रानी ताशा क्यों निर्दोष है। परंतु मशीनों के बताने से मैं इतना तो समझ गया था कि रानी ताशा ने कोई गुनाह नहीं किया। मेरी मशीनें कभी गलत नहीं बतातीं। लेकिन ये बात मैं किसी से भी कह नहीं सका क्योंकि बेगुनाह होने की वजह मैं नहीं जानता था।" महापंडित का गम्भीर स्वर यंत्र से उभरा।

"इसी कारण तुमने हमेशा रानी ताशा की सहायता की?" बबूसा गम्भीर स्वर में बोला।

"हां। क्योंकि रानी ताशा निर्दोष थी।"

"और मैं समझता रहा कि तुम राजा देव से धोखा कर रहे हो, रानी ताशा की सहायता करके।"

"अब तुम मुझे बताओ बबूसा कि ये बात तुम्हें कैसे पता चली और क्या ये भी पता है कि रानी ताशा निर्दोष क्यों है? मैं ये जानना चाहता हूं कि रानी ताशा के निर्दोष होने की वजह क्या है।"

बबूसा के होंठ भिंच गए।

"जवाब दो बबूसा।"

"सोमा के हालात ऐसे नहीं हैं कि मैं अपना मुंह खोल सकूं।" बबूसा बोला।

"क्या मतलब?"

"मैं इस बारे में तुम्हें बताना चाहूंगा तो मेरे मुंह से कुछ और ही निकलने लगेगा।"

"ऐसा क्यों?"

"बोला तो तुम्हें बता नहीं सकता। कुछ अदृश्य ताकतें मेरी पहरेदारी कर

रही है कि सदूर पर पहुंचने से पहले मैं किसी को कुछ न बता सकूं। जब भी बताने की चेष्टा की, तभी असफल रहा।"

"ओह, ये तो विचित्र हालात हैं।"

"सच में। मेरी हालत तुम नहीं समझ सकते।"

"तुमने राजा देव को इस बारे में बताने की चेष्टा की?"

"की, परंतु असफल रहा। कहना कुछ चाहा और निकला कुछ होंठों से।"

"अब तुम्हारी परेशानी का एहसास पा सकता हूं मैं। मैं तुम्हारी परेशानी बढ़ाना तो नहीं चाहता परंतु मेरी मशीनें मुझे खतरे के संकेत दे रही हैं कि पोपा के सदूर पर आते ही सब कुछ बुरा होना शुरू हो जाएगा।"

बबूसा ने होंठ भींच लिए।

"उस लड़की के बारे में बताओ।"

"धरा के?"

"हां, उसके बारे में कुछ पता चला। मेरी मशीनें कहती हैं कि उस लड़की से बचकर रहो। क्या हो रहा है पोपा पर। वो लड़की क्या कर रही है। मेरी मशीनें उसकी हकीकत के बारे में क्यों नहीं बता पा रहीं।"

"धरा के बारे में मैं तुम्हें कुछ बता नहीं पाऊंगा महापंडित।"

"क्यों?"

"तुम मेरी मजबूरी नहीं समझ रहे।"

"उस लड़की के बारे में बताने में तुम्हें क्या परेशानी है?" महापंडित की आवाज यंत्र से निकली।

"इतना तो तुम्हें बता ही चुका हूं कि धरा कहती है वो सदूर पर रहने वाली है और वापस जा रही है।"

"ये बात तुमने पहले बताई थी। याद है। सदूर पर वो कौन थी? पृथ्वी पर कैसे गई और अब वापस क्यों आ रही है?"

"इन बातों को पूछने पर वो कहती है कि सदूर पर पहुंचकर जवाब दूंगी।"

"अब क्यों नहीं?"

"वो सदूर पर पहुंचने से पहले अपने बारे में कुछ नहीं बताना चाहती। वो कहती है कि अपने बारे में कुछ भी बताया तो जानने वाले उसे फौरन पहचान जाएंगे और वो नहीं चाहती कि सदूर पर पहुंचते ही उसे मुसीबतों का सामना करना पड़े।"

"कैसी मुसीबत?"

"ये तो मैं नहीं जानता। पर जैसे कि तुम उसके बारे में जानकर, पोपा के सदूर पर पहुंचने पर, उसके बारे में कोई इंतजाम कर दो। उसका विचार है कि सदूर पर पहुंचने तक वो चुप रहे।"

"ऐसी क्या शख्सीयत है वो कि खुद को रहस्य में लपेटे हुए है।"

"मैं तुमसे एक बात और करना चाहता हूं।" बबूसा ने कहा।

"कहो बबूसा।"

"राजा देव, रानी ताशा के दीवाने हुए पड़े हैं। उन्होंने पृथ्वी वाली पत्नी को भी छोड़ दिया है।"

"हां। तो...?"

"परंतु मुझे पता लगा है कि सदूर पर पहुंचते ही राजा देव, रानी ताशा का साथ छोड़ देंगे।"

"तुम तो मुझे हैरान कर रहे हो बबूसा।" महापंडित की तेज आवाज आई।

"वो कैसे?"

"जो बातें मैं मशीनों से जान पाता हूं वो ही बातें तुम मुझे बता रहे हो।"

"तुम्हारी मशीनों ने इस बारे में कुछ बताया?"

"हां। बताया कि सदूर पर पहुंचने के बाद रानी ताशा अकेली रह जाएगी।"

"ऐसा क्यों?"

"मशीनों ने ये भी बताया कि राजा देव अपनी पृथ्वी वाली पत्नी के साथ रहेंगे।"

"ओह, तुमने ये बात मेरे को नहीं बताई?"

"मेरे पास तो हमेशा ही बहुत बातें होती हैं बताने को। लेकिन क्या-क्या बात बताऊं। मेरी मशीनें जो मुझे बता रही हैं, उसे सुनकर मैं परेशान होता जा रहा हूं और समझने की कोशिश कर रह हूं कि आने वाले वक्त में क्या होने वाला है। तुम ये बताओ कि तुम्हें ये बात कहां से पता चली कि राजा देव, सदूर पर पहुंचते ही रानी ताशा का साथ छोड़ देंगे?"

"ये बात मुझे—ओह—मुझे धरा के पास जाना है। वो मेरा इंतजार कर रही होगी।" बबूसा कहता चला गया जबकि उसके चेहरे के भाव, उसकी बातों से मेल नहीं खा रहे थे। वहां पर क्रोध आ गया था। फिर ठिठककर बोला—"महापंडित।"

"तुमने कहा वो लड़की तुम्हारा इंतजार कर...।"

"मेरी बात सुनो।" बबूसा झल्ला उठा—"अभी मैं तुम्हारी किसी बात का जवाब नहीं दे सकता। मुझे रोक दिया जाता है।"

"कौन रोकता है?"

"ये भी नहीं बता पाऊंगा।"

"तुम्हें पोपा पर किसी ने कैदी तो नहीं बना रखा?"

"मैं ठीक हूं परंतु अजीब-सी बातों में घिरा हूं। मैं तुमसे बाद में बात करूंगा महापंडित। शायद सदूर पर पहुंचकर ही बात करूंगा। क्योंकि अभी जो बात होगी वो आधी-अधूरी ही रहेगी।" कहकर बबूसा ने सम्बंध काटा। सिर पर हैडफोन जैसी लगा रखी तारें अलग कीं और सारे यंत्र बंद करके वहां से बाहर आकर एक रास्ते पर बढ़ गया। चेहरे पर झल्लाहट उभरी हुई थी। क्रोध भी था चेहरे पर। कई रास्तों को पार करके, सीढ़ियां उतरकर, पोपा के नीचे के हिस्से में, केबिनों की कतार में, एक केबिन के बाहर पहुंचकर ठिठका और दरवाजा थपथपा दिया।

"आ जाओ बबूसा।" भीतर से धरा की हंसी से भरी आवाज सुनाई दी।

बबूसा ने दरवाजा खोला। दो कदम भीतर प्रवेश करके ठिठक गया।

सामने ही बेड पर धरा आलथी-पालथी मारे बैठी थी। बबूसा पर निगाह पड़ते ही वो खुलकर मुस्कराई तो उसका निचला होंठ टेढ़ा हो गया। वो शैतान की नानी जैसी दिखी।

बबूसा का चेहरा गुस्से से भर उठा।

"तू जब नाराज होता है तो कितना अच्छा लगता है।" कहते हुए धरा ने दोनों आंखें नचाई।

"तू मेरा पीछा कब छोड़ेगी?" बबूसा ने शब्दों को चबाकर कहा।

"क्या कर दिया मैंने?"

"तू मुझे किसी को कुछ कहने क्यों नहीं देती?"

"जब तक मैं सदूर पर नहीं पहुंच जाती, तब तक तू मेरे बारे में किसी से कुछ नहीं कह सकेगा। मेरी ताकतें तुझे कुछ भी कहने नहीं देंगी। अगर तू महापंडित को मेरे बारे में बता देता तो उसने कोई खास इंतजाम कर लेना था कि मैं जब सदूर पर पहुंचूं तो वो मुझे कैद कर ले या मुझे नुकसान पहुंचा दे। मैं ऐसा नहीं होने दूंगी।"

"मेरे से झगड़ा मत ले।"

धरा हंस पड़ी।

बबूसा होंठ भींचकर धरा को देखता रहा।

"मेरा क्या बिगाड़ेगा तू?"

"कुछ तो बिगाड़ सकता हूं।"

"भूल में है तू। सदूर पर तेरे-मेरे रास्ते अलग हो जाएंगे। बहुत काम करने हैं मुझे। सब कुछ फिर से शुरू करना है। सोई ताकतों को ऊर्जा देकर उन्हें फिर उठाना है। इन सब कामों में मुझे बहुत मेहनत करनी होगी। मुझे उस वक्त में प्रवेश करके, सब कुछ आज के वक्त में लाना होगा। वहां मेरे इंतजार में सब सोए पड़े हैं। सदूर तभी कई टुकड़ों में बिखर गया था। मेरे कार्य पूर्ण होते ही सदूर के टुकड़े वापस आ मिलेंगे तो सदूर चौगुना हो

जाएगा। फिर सदूर पर मेरा शासन चलेगा। सब मेरे आगे झुकेंगे। पहले की तरह। परंतु अब डुमरा कोई चाल नहीं चल सकेगा। अब... ।"

"डुमरा कौन?" बबूसा ने पूछा।

"नहीं जानता तू डुमरा को?" धरा के चेहरे पर सख्ती आ गई थी।

"नहीं।"

"महापंडित जानता है।" धरा खतरनाक अंदाज में हंस पड़ी।

"महापंडित के मुंह से मैंने कभी ये नाम नहीं सुना।"

"देवराज चौहान भी डुमरा के बारे में जानता है।"

"राजा देव भी जानते हैं। परंतु उन्होंने कभी इस नाम का जिक्र मेरे से नहीं किया। कौन है डुमरा?"

"क्यों बताऊं तुझे?"

"बताने में क्या हर्ज है। तेरी ताकतें तो मेरे को, किसी से कुछ कहने नहीं दे रहीं। बात मेरे तक ही रहेगी।"

धरा लम्बे पलों तक बबूसा को देखती रही फिर कह उठी।

"डुमरा, महापंडित का पिता है।"

"महापंडित का पिता, डुमरा?" बबूसा के लिए ये नई जानकारी थी—"क्या वो अभी जीवित है?"

"वो बहुत ज्ञानी है। कई शक्तियां उसके अधिकार में हैं। उसने ही अपने बेटे महापंडित को विद्वान बनाया था। परंतु पिता तो पिता ही होता है। महापंडित, डुमरा के सामने बच्चा है। बहुत कम ज्ञान है महापंडित को। डुमरा सच में महान है, परंतु मेरा दुश्मन है। उसने बहुत बुरा किया था मेरे साथ।" धरा गुर्रा उठी।

"महापंडित के पिता डुमरा से तुम्हारा क्या वास्ता?"

"अब तो बहुत गहरा वास्ता बन चुका है।" धरा का लहजा बेहद खतरनाक हो उठा—"उसने मेरा शासन तबाह कर दिया। मेरी ताकतें भी कम नहीं थीं, डुमरा के पसीने छूट गए थे मेरे से मुकाबला करके। परंतु एक बार उसने मुझे घेर ही लिया। ऐसा घेरा कि मुझे पांच सौ बरस के लिए श्राप दे दिया। उस श्राप का मतलब ये था कि मुझे पांच सौ बरसों के लिए सदूर से दूर चले जाना होगा। परंतु उसका श्राप तभी मुझ पर लागू होता, जब मैं स्वयं उस श्राप को स्वीकार करती और मुझे करना पड़ा स्वीकार। डुमरा ने बहुत बुरी तरह मुझे फंसा डाला था।"

"क्यों स्वीकार करना पड़ा श्राप को?"

"डुमरा ने मुझे अपनी शक्तियों में ऐसा फंसा लिया था कि अगर मैं श्राप को स्वीकार नहीं करती तो जलकर राख हो जाती। मेरी मृत्यु हो जाती और कोई भी मरना नहीं चाहता। मैं भी मरना नहीं चाहती थी, इसलिए डुमरा के

श्राप को स्वीकार करना पड़ा। तब डुमरा की खूब चली मुझ पर। मेरे श्राप को स्वीकार करते ही सदूर ग्रह कई टुकड़ों में बिखरकर छोटा-सा रह गया। अलग हो चुके सदूर ग्रह के टुकड़ों पर मेरी फौजें रहती थीं। डुमरा नहीं चाहता था कि मेरी फौजें, मेरे सदूर पर न रहने की वजह से, आम लोगों को नुकसान पहुंचाएं। डुमरा ने तब खूब चालें चली मेरे साथ।"

बबूसा हैरानी से धरा की बातें सुन रहा था।

ये सब बातें उसके लिए नई थीं। सदूर का इतिहास उसके सामने पन्ने पलटकर आ रहा था।

"फिर तुम्हारा क्या हुआ?"

"मुझे सदूर से बाहर जाना पड़ा। श्राप स्वीकार करने के बाद मैं न जाती तो जल जाती। लेकिन डुमरा से कह दिया था मैंने कि श्राप का वक्त पूरा होते ही मैं वापस आऊंगी और सारे हिसाब बराबर करूंगी...।"

"तुम ग्रह छोड़कर गई कैसे?"

"मेरी ताकतों ने मुझे पृथ्वी पर पहुंचा दिया, जहां जीवन था। वहां मैं जन्म लेने लगी और...।"

"तुम्हारी ताकतें तुम्हें सदूर से इतनी दूर पृथ्वी तक कैसे पहुंचा सकती हैं।" बबूसा कह उठा।

धरा ने होंठ भींचे बबूसा को देखा फिर बोली।

"मुझे अपना शरीर सदूर पर ही छोड़ना पड़ा था। मेरी ताकतों ने मेरी 'जान' को पृथ्वी पर पहुंचाया था, जो कि ताकतों के लिए कठिन काम नहीं था। तब से मेरी 'जान' पृथ्वी पर ही जन्म लेती रही और मरती रही। मुझे नए-नए नाम मिलते रहे। नए-नए रिश्ते मिलते रहे। परंतु हर जन्म में, हर पल मुझे इस बात का एहसास रहा कि असल में मैं कौन हूं। मैं पांच सौ सालों के कष्ट से भरे वक्त को बिता रही थी। वो वक्त मेरे लिए कष्टों से ही भरा था, क्योंकि मैं सदूर की सबसे बड़ी शख्सियत थी और डुमरा ने श्राप देकर, मुझे कहां से कहां पहुंचा दिया था...।"

"तुम सदूर की शासक रही थीं?"

"हां। सदूर मेरा था और हमेशा ही मेरा रहेगा।" धरा का चेहरा क्रोध से भरा था।

"डुमरा ने तुम्हें श्राप क्यों दिया?"

"क्योंकि वो मुझे पसंद नहीं करता था। मेरे से जलता था। मेरे हाथों डुमरा का भाई मारा गया था। डुमरा मेरे से बदला लेना चाहता था और इस प्रकार श्राप देकर उसने मेरे से बदला लिया। बेवकूफ डुमरा अभी भी नहीं जानता कि उसने बहुत बड़ी मुसीबत मोल ले ली है। मुझसे झगड़ा करके। मैं किसी का अच्छा किया तो भूल जाती हूं परंतु बुरा किया कभी नहीं भूलती। डुमरा

ने मेरे साथ जो किया है उन सब बातों का अब उसे हिसाब देना होगा। एक बार उसकी चल गई, परंतु अब...।"

"तुम्हारी बातें बहुत दिलचस्प हैं।" बबूसा बोला—"मुझे सब कुछ बताओ।"

"क्या सब कुछ?"

"अपने बारे में सब कुछ बताओ। मैं जानना चाहता हूं। तुम्हारी ताकतें मुझे किसी को कुछ बताने नहीं देंगी। ऐसे में बात मेरे तक ही रहेगी। मैं तुम्हारे बारे में जानने को उत्सुक हूं कि आखिर तुम्हारी हकीकत क्या है।"

धरा मुस्कराई तो उसका निचला होंठ टेढ़ा हो गया।

"तो मेरे बारे में जानना है तुझे?" धरा हौले से हंसी।

बबूसा ने सिर हिला दिया।

"मैं खुंबरी हूं।"

"खुंबरी?" बबूसा की आंखें हैरानी से फैल गई—"तुम—तुम खुंबरी हो?"

"हां—हां, तो नाम सुन रखा है मेरा।" खुंबरी हंसी।

"तुम्हारा नाम तो सदूर का बच्चा-बच्चा जानता है। तुम्हारे नाम की कहानियां सुनाते हैं लोग अब बच्चों को।" बबूसा अभी तक हक्का-बक्का था—"मुझे यकीन नहीं आ रहा कि तुम खुंबरी हो। तुम—तुम...।"

"खुंबरी एक ही है, दूसरी कोई पैदा हो ही नहीं सकती। सिर्फ मैं—खुंबरी।" हंस पड़ी खुंबरी—"ये जानकर मुझे बहुत ज्यादा खुशी हुई कि सदूर अभी तक खुंबरी को याद करता है। खुंबरी है ही ऐसी।"

बबूसा हैरानी से धरा को देखे जा रहा था।

खुंबरी मुस्कराई तो उसका निचला होंठ टेढ़ा हो गया।

बबूसा, खुंबरी को देखे जा रहा था।

"ये मेरा चेहरा देखा है। अब का चेहरा?" खुंबरी ने अपने गालों पर हाथ फेरा—"ये खुंबरी का हू-ब-हू चेहरा है। मेरा असली शरीर तो सदूर पर सुरक्षित मौजूद है। जब मैं वहां जाऊंगी तो अपने शरीर को फिर से जीवित करूंगी।"

"फिर से जीवित करोगी? परंतु वो तो सड़ चुका...।"

"मेरा शरीर, मेरे खास सेवक दोलाम ने सुरक्षित कर रखा है। इस वक्त मेरा शरीर ऐसा होगा जैसे कि मैं सोई हुई हूं। अगर मेरा शरीर जरा भी खराब हुआ तो दोलाम जानता है कि मैं उसे सख्त सजा दूंगी। वो मेरे शरीर को खराब नहीं होने देगा।"

"दोलाम तुम्हारे सेवक का नाम है?"

"हां, वो मेरा सबसे खास है। मेरा सबसे ज्यादा विश्वासपात्र।"

"तुम्हारा शरीर सदूर पर कहां रखा है?"

"बहुत ही खास जगह पर।" खुंबरी के चेहरे पर रहस्यमय मुस्कान नाच उठी। निचला होंठ टेढ़ा हो गया—"मैं सब इंतजाम करके ही सदूर से निकली थी। मैं जानती हूं डुमरा ने बहुत कोशिश की होगी कि मेरे शरीर को ढूंढ़कर नष्ट कर सके। परंतु वो मेरे शरीर को नहीं ढूंढ़ सका होगा। मेरी ताकतों ने अपनी छाया से, मेरे शरीर को छिपाकर, डुमरा की नजरों से ओझल रखा है। खुंबरी ने हमेशा ही सारे काम शानदार ढंग से किए हैं, डुमरा को अब अपना किया भुगतना होगा।"

बबूसा के चेहरे पर अजीब-से भाव छाए हुए थे।

"तुम सदूर पर पहुंचकर क्या करने वाली हो?"

"क्या करने वाली हूं।" खुंबरी हंसी—"मेरे पास करने को बहुत काम हैं। सदूर पर शासन करना है मुझे। परंतु सबसे पहले डुमरा को सबक सिखाऊंगी। उसे मृत्यु दूंगी। उसके दिए श्राप का बदला लूंगी। तब उसे...।"

"तुम अपने बारे में बताओ कि तुम कौन थीं और डुमरा से तुम्हारा क्या झगड़ा रहा?" बबूसा ने पूछा।

"तो सब कुछ जानना चाहता है बबूसा।"

"हां। ये बातें मेरे लिए नई होंगी और लोगों को भी ये सब न पता होगा।"

खुंबरी के चेहरे पर सोच के भाव उभरे।

"बातें ज्यादा लम्बी नहीं हैं।"

"परंतु मेरे लिए ये जानकारी अहम होगी।"

"तो सुन, सैकड़ों सालों पहले सदूर बेलगाम था।" खुंबरी ने बताया—"किसी का शासन नहीं था। कच्चे घरों में लोग रहा करते थे परंतु ताकत वाले लोग सदूर पर शासन करने के इरादे से सदूर पर अपनी हुकूमत कायम करना चाहते थे। ऐसे आठ-दस लोग थे जिनमें मेरा पिता भी था। जिनमें डुमरा का भाई ओमाच भी था। सबकी अपनी-अपनी सेना थी। परंतु अपनी हुकूमत कायम करने में कोई भी कामयाब नहीं हो पा रहा था। जो भी सबसे ताकतवर दिखता, बाकी सब उस पर टूट पड़ते और उसे खत्म कर देते। आपस में ही झगड़े शुरू हो गए थे। मैं अपने पिता की एकमात्र संतान थी और हमेशा ही पिता के कार्यों में हाथ बंटाया करती थी। पिता ने मुझे ही बेहतर ढंग से युद्ध कला सिखाई थी और मैं अपने पिता के टक्कर की शानदार योद्धा बन गई थी। उस समय सब ताकतवर लोग अपने योद्धाओं के साथ इस बात की कोशिश में थे कि सदूर पर उनकी हुकूमत हो। आए दिन सब दलों में टकराव होता रहता था। परंतु जल्दी ही सबको समझ आ गया कि इस तरह कोई भी सदूर पर अपनी हुकूमत कायम नहीं कर पाएगा। दूसरा उसे शासक नहीं बनने देगा। ऐसे में सबसे पहले डुमरा के भाई ओमाच ने सबके पास संदेश भिजवाया कि इस तरह

आपस में झगड़ा करने से कोई फायदा नहीं। कोई भी सद्दूर पर हुकूमत नहीं कर सकेगा। ऐसे में बेहतर होगा कि सद्दूर को बराबर-बराबर बांटकर उसका शासक बना जाए। ये सब बात बाकी आठों दलों ने पसंद की और वे बैठकर बात करने को तैयार हो गए परंतु मेरे पिता ने ये बात नहीं मानी।"

"क्यों?" बबूसा ने पूछा।

"क्योंकि उस वक्त मेरे पिता के पास सबसे ज्यादा ताकत थी और उन्हें भरोसा था कि देर-सवेर में वे पूरे सद्दूर के शासक बन जाएंगे। मेरी भी, पिता को ये ही सलाह थी कि हमें उनकी बात नहीं माननी चाहिए।"

"इन बातों के बीच डुमरा कहां था?"

"डुमरा अपना शांत जीवन जी रहा था परिवार के साथ। उसकी अपनी ही दुनिया थी। वो यज्ञ करके शक्तियों का आह्वान करता था और उन्हें अपना बनाता था। वो विद्वान था अपने कामों में। उसे अपने भाई ओमाथ से इतना ही मतलब था कि वो उसका भाई है और उनका मिलना भी कम ही होता था।"

"मतलब कि डुमरा को ओमाथ के कामों से कोई मतलब नहीं था?"

"नहीं।"

"अच्छा। फिर क्या हुआ?"

"मेरे पिता के इंकार को किसी ने भी पसंद नहीं किया। मेरे पिता को मनाने की बहुत चेष्टा की गई, परंतु वो नहीं माने। उसके बाद मैंने और पिता ने सुना कि वो सब दल आपस में मिल गए हैं। ये हमारे लिए खतरनाक बात थी। उनके इस तरह से मिल जाने की वजह से उनकी ताकत बहुत बढ़ गई और हम कमजोर पड़ गए थे। मुझे इस बात की पूरी आशंका थी कि वो सब हमारे खिलाफ जरूर कुछ करेंगे और किया भी। एक रात सब दलों ने मिलकर हमारे ठिकाने पर हमला कर दिया। हमारे सब योद्धाओं को मार दिया गया। मेरे पिता की जान भी ले ली गई। मैं भी मारी जाती परंतु उनकी एकता और ताकत देखकर मुझे छिप जाना पड़ा। इस तरह मैं बच गई। मेरे आस-पास लाशें ही लाशें थीं। खून था। जो जिंदा बचे थे, वो किसी काम के नहीं रहे थे। मैं अचानक ही अकेली पड़ गई।"

"उन लोगों ने तुम्हें ढूंढ़ा तो होगा कि तुम जिंदा हो।"

"उसी रात के अंतिम पहर में मैंने वहां से चले जाना ठीक समझा कि तभी नागाथ को मैंने अपने करीब पाया।"

"नागाथ कौन?"

"नागाथ को लोग पागल ज्ञानी के तौर पर जानते थे, जो कि बे-पनाह ताकतों का मालिक था। अपने भले के लिए वो अपनी ताकतों से क्रूर काम भी लेता था। लोग उससे डरते थे। उधर डुमरा, नागाथ को खत्म करने के लिए अपनी शक्तियों से उस पर वार करता रहता था। दोनों में खामोश

लड़ाई चलती रहती थी। डुमरा का रुख अच्छाइयों की तरफ था तो नागाथ का रुख बुराइयों की तरफ कह सकते हो तुम। डुमरा बुराई को खत्म करना चाहता था। परंतु नागाथ को जरा भी नुकसान पहुंचाना आसान काम नहीं था। वो ही नागाथ अब मेरे सामने था।"

"तुम पहले कभी नागाथ से मिली थी?"

"नहीं। मैंने उसे कभी देखा भी नहीं था। नाम अवश्य सुन रखा था। मैंने उसे देखा तो समझी कि वो कोई दुश्मन है। मैंने तुरंत तलवार उठा ली। मैं अपने पिता की मौत और हमले की वजह से घबराई हुई थी। मुझे तलवार उठाते देखकर नागाथ ने शांत स्वर में कहा, डरो मत, मैं नागाथ हूं। तुम्हारे पिता नहीं रहे, इसका मुझे अफसोस है। परंतु तुम तो बहुत ही जबर्दस्त योद्धा हो। इस तरह घबराओगी तो जीवन में कुछ भी हासिल नहीं होगा। मेरे साथ चलो, मैं तुम्हारे जीवन को बेहतर बनाने के लिए तुम्हें एक मौका दूंगा। अब ये तुम पर है कि तुम अपने जीवन को बेहतर बना पाती हो या नहीं। नागाथ मुझे अपने साथ ले गया। पहाड़ों के पार वो रहता था। वो अकेला ही रहता था। उसने मुझे अपने साथ बेटी की तरह रखा और एक दिन कहा कि उसे शरीर छोड़ने का हुक्म हो चुका है। उसे अब इस दुनिया से जाना है। परंतु वो तभी शरीर छोड़ सकता है, जबकि अपनी ताकतों को किसी काबिल इंसान के हवाले कर दे। ऐसा काबिल इंसान जो उसकी दी ताकतों का बराबर इस्तेमाल करता रहे। ऐसा होने पर उसे मरने के बाद अच्छा जीवन मिलेगा। ऐसा न हुआ तो मरने के बाद उसे बुरा जीवन मिलेगा। इसलिए उसे काबिल इंसान की तलाश है। नागाथ ने कहा कि उसकी ताकतों ने उसे बताया है कि तुम बहुत काबिल हो अगर कोशिश करो तो काफी आगे जा सकती हो और सदूर पर एकछत्र राज कर सकती हो। मैं परेशान थी और उसकी बातों को ठीक से न समझ पा रही थी। उसने मुझसे पूछा कि क्या मैं उसकी ताकतों की मालिक बनना चाहती हूं। उसने अपनी ताकतें देने के लिए मेरे सामने शर्त रखी कि मैं उन आठों दलों के मालिकों को खत्म कर दूं तो वो अपनी ताकतें मेरे हवाले करके अपना शरीर त्याग देगा। जितनी देर मैं उसके पास रही तो उतनी देर में मैं इस बात को जान चुकी थी कि नागाथ की ताकतें मेरे पास आ जाएं तो मैं सब कुछ कर सकती थी। मैंने उसकी बात मान ली और वहां से चली आई।"

"मतलब कि तुम उन आठों दलों के मालिकों को मारने को तैयार हो गई?"

"हां। इसकी एक और वजह भी थी कि उन्होंने मेरे पिता को मारा था।"

"हूं—फिर?"

"फिर मुझे बहुत लम्बा वक्त लगा उन आठों को मारने में। हर एक के

पास मैं अलग-अलग रूप में पहुंची। उनका विश्वास जीता और इस तरह एक-एक करके सबकी जान ले ली। इस सारे काम को पूरा करने में मुझे इतना ज्यादा वक्त लग गया कि मैं सोचने लगी कि कहीं नागाथ अब जिंदा ही न रहा हो। जब मैं पहाड़ों के पार नागाथ की जगह पर पहुंची तो उसे वहां मौजूद पाया। नागाथ ने खुशी से मेरा स्वागत किया, कहा कि वो मेरा ही इंतजार कर रहा था। उसका समय करीब है और अब वो चैन से शरीर छोड़कर, अपने अगले सफर पर जा सकेगा। उसने मुझे बताया कि मेरा अगल कदम सदूर पर हुकूमत करना है। उसने अपनी ताकतों के बारे में मुझे समझाया कि कैसे उनका इस्तेमाल करना है ये एक लम्बी शिक्षा थी और मैंने मन से सब कुछ जाना। फिर नागाथ ने अपनी ताकतें मुझे सौंपी और अपना शरीर त्याग दिया।

"नागाथ ने अपनी ताकतें तुम्हें किस रूप में सौंपी?"

"ये नहीं बताऊंगी बबूसा।" खुंबरी मुस्कराई तो उसका निचला होंठ टेढ़ा हो गया।

"तो इस प्रकार तुम्हारे पास ताकतें आ गईं।"

"हां। और मैंने ताकतों का खूब इस्तेमाल किया। सदूर पर शासन करने लगी। मेरे इशारा हर...।"

"डुमरा से झगड़ा कैसे हुआ?" एकाएक बबूसा ने पूछा।

"उसने अपनी शक्तियों से जान लिया था कि मैंने उसके भाई ओमाच को मारा है। इस बात का डुमरा ने बुरा माना। परंतु तब मेरे पास नागाथ की दी ताकतें आ चुकी थीं और उनसे मुझे काम लेना भी आ गया था। ऐसे में डुमरा मेरा कुछ बिगाड़ भी नहीं सकता था। मैं पूरे सदूर पर अपना साम्राज्य फैलाती जा रही थी, नागाथ की ताकतें मेरी भरपूर सहायता कर रही थीं। रास्ते में आने वाली मेरी हर परेशानी को दूर कर रही थी। लोग मेरी हुकूमत को स्वीकार करते जा रहे थे। फिर एक दिन डुमरा रास्ते में मुझे मिला। मुझे रोककर उसने बताया कि वो डुमरा है। मैं खुशी से उससे मिली, जबकि मैं जानती थी कि डुमरा मेरी जान लेकर अपने भाई की मौत का बदला लेना चाहता है। उसने मुझसे पूछा कि मैंने उसके भाई ओमाच को क्यों मारा। तो मैंने कहा, उसने मेरे पिता की जान ली थी। डुमरा ने कहा, ओमाच ने तुम्हारे पिता को नहीं मारा, तो मैंने कहा वो साथ तो था। उसने कहा कि एक औरत के हाथों उसका भाई मारा गया, ये बात उसे पसंद नहीं आई। डुमरा ने कहा कि उसे पता है कि नागाथ ने अपनी ताकतों का मालिक उसे बना दिया है। अगर वो उन ताकतों को त्याग दे तो, तब मेरी जान नहीं लेगा। सच बात तो ये थी कि डुमरा नहीं चाहता था कि मैं नागाथ की ताकतों का इस्तेमाल करूं। मैंने उसे स्पष्ट तौर पर समझा दिया कि जो वो चाहता है,

वैसा नहीं होने वाला। नागाथ की ताकतें मेरे साथ ही रहेंगी। डुमरा चला तो गया, परंतु उसके बाद वो अपनी शक्तियों द्वारा मुझ पर वार करने लगा। हम पक्की तरह एक-दूसरे के दुश्मन बनने लगे। मेरी ताकतें मुझे डुमरा के वारों से बचाती रहीं। मैंने भी कई बार अपनी ताकतों का वार डुमरा पर किया, परंतु कोई फायदा नहीं हुआ। उसकी शक्तियां उसे बचा लेतीं। मेरी और डुमरा की लड़ाई शुरू हो चुकी थी। इधर मेरा साम्राज्य पूरे सदूर पर फैल चुका था। मैं सदूर की रानी बन गई। हर तरफ मेरा नाम गूंजने लगा था। परंतु सदूर पर मेरे विद्रोही भी थे, मैंने अपनी सेना के योद्धाओं द्वारा विद्रोहियों का अंत कराया। सदूर की मालकिन बन गई थी मैं। जो ख्वाब मेरे पिता ने देखा था उसे मैंने पूरा किया और नागाथ की ताकतों ने इस काम में मेरी इतनी ज्यादा सहायता की कि सब कुछ सरल बना दिया था मेरे लिए। परंतु डुमरा को मैं नहीं भूली थी। क्योंकि डुमरा मेरा दुश्मन था और मुझे मारने का मौका नहीं चूकना चाहता था। उसके और मेरे बीच वार होते रहते थे। ऐसे में मैंने डुमरा की तलाश में अपने योद्धाओं को लगा दिया। मेरी सेना के योद्धा सदूर के चप्पे-चप्पे पर फैले थे। परंतु भरपूर तलाश के बाद भी डुमरा कहीं न मिला। वो गुप्त जगह पर छिप गया था। डुमरा की अपेक्षा मेरी स्थिति बहुत बेहतर थी। सदूर पर मेरा कब्जा था। डुमरा को अपनी शक्तियों का सहारा था, जबकि मेरे पास हर तरह की ताकत थी। डुमरा अपनी गुप्त जगह से, मेरी जान लेने के लिए अपनी शक्तियों द्वारा वार करता रहता था।"

बबूसा गम्भीरता से खुंबरी की बातों को सुन रहा था।

"फिर क्या हुआ?" बबूसा ने उसके खामोश होते ही पूछा।

"कुछ साल बीते। सदूर पर मेरी पकड़ मजबूत हो चुकी थी। मैं खुश थी। सब कुछ अच्छा चल रहा था। एक रात किले के बाहर खुले मैदान में जश्न हो रहा था। मैं कर्मचारियों को, योद्धाओं को खुश करने के लिए यदा-कदा जश्न कराती रहती थी। जश्न में कारू पीते थे सब। परंतु वो रात मुसीबत से भरी बन गई मेरे लिए। डुमरा ने अपनी कई शक्तियों के साथ मुझ पर सोची-समझी योजना के साथ हमला कर दिया। तब मैं जश्न में लापरवाह-सी, हंस-झूम रही थी। मैंने कारू भी पी रखी थी और उसी दौरान नाचते हुए मेरे गले से बटाका भी गिर गया था। जो कि...।"

"क्या गिरा?"

"बटाका।"

"वो क्या होता है?"

"नागाथ की ताकतें उसी बटाका (नग) के साथ जुड़ी हुई थी। बटाका

मेरी हद में रहेगा तो तभी मैं ताकतों के बुला सकती हूं और उनसे काम ले सकती हूं। उस रात जश्न में मैंने बहुत ज्यादा दारू पी ली थी और होश गंवा बैठी थी। नाचते-नाचते बटाका भी, धागे से अलग होकर गिर गया। बटाका के अलग होते ही मैं सामान्य युवती बनकर रह गई। नागाथ की दी ताकतें मेरे से तब तक के लिए दूर हो गई थीं जब तक कि मैं बटाका पुनः हाथों में न ले लेती या उसे धागों में फंसाकर गले में न डाल लेती...।"

"इस वक्त बटाका तुम्हारे पास है?" बबूसा ने पूछा।

"नहीं।"

"तो फिर अब ताकतें तुम्हारे काम कैसे आ रही हैं। कैसे तुम्हारी सहायता कर रही हैं?"

खुंबरी मुस्कराई तो उसका निचला होंठ टेढ़ा हो गया।

"ये मेरा समझौता है उन ताकतों के साथ।"

"कैसा समझौता?"

"उन ताकतों को तभी एहसास हो गया था कि मैं फिर वापस आऊंगी। मैं ही उनकी साथी बनूंगी। ऐसे में वो मुझे सहायता दे रही हैं तब से ही, जबसे मैंने डुमरा के श्राप को स्वीकारा था। ताकतें चाहती हैं कि मैं वापस आकर उनकी साथी बनूं।"

"अब वो बटाका कहां है?"

"दोलाम के पास।"

"तो दोलाम क्यों नहीं उन ताकतों का मालिक बना?"

"उसे नहीं पता कि बटाका का इस्तेमाल कैसे करते हैं। ताकतों को कैसे बुलाते हैं। बटाका को इस्तेमाल करने का खास ढंग होता है। ये नहीं कि जो जिसके पास होगा, ताकतें उसके काम आने लगेंगी।"

"दोलाम को बटाका की अहमियत पता है?"

"पता है।"

"उसने कोशिश की होगी बटाका के इस्तेमाल करने...।"

"कभी नहीं। दोलाम मेरा खास है। विश्वासपात्र है। वो बटाका को इस्तेमाल करने की कोशिश भी नहीं कर सकता। न ही वो जानता है कि उसे इस्तेमाल कैसे करना है। दोलाम ने बटाका को मेरी अमानत के तौर पर सम्भालकर रखा होगा।"

"अगर बटाका खो जाए तो क्या होगा?" बबूसा ने पूछा।

"तो ताकतें बटाका की जानकारी दे देती हैं कि वो कहां पर है।"

"मान लो वो पूरी तरह खो जाता है। मिलता ही नहीं तो फिर तुम्हारी क्या स्थिति होगी?"

"ऐसे में ताकतें किसी और चीज को बटाका बनाकर मुझे बता देंगी कि

मैं उस चीज के बटाका के तौर पर उठा लूं। परंतु बटाका ऐसी चीज नहीं है कि खो जाए। ऐसा हो तो ताकतें फौरन उसे ढूंढ़ लेती हैं।"

"मैंने सुना है कि खुंबरी एक क्रूर शासक रही।"

खुंबरी मुस्करा पड़ी तो निचला होंठ टेढ़ा हो गया।

"जरूर, ऐसा ही सुना होगा। नागाथ की ताकतें जिसके पास हों तो वो खुद-ब-खुद ही क्रूर बन जाता है। ताकतें मुझे किसी पर रहम नहीं करने देतीं। वो सिर्फ अपना काम पूरा करना जानती हैं। जो भी मेरे शासन के खिलाफ गया, मेरे योद्धा उसे मार देते थे। जिस किसी से भी मुझे खतरे का अंदेशा हुआ, उसे तुरंत खत्म कर दिया जाता था। कई बार तो मैं अपना राजकीय शासन चलाने के लिए, ताकतों से भी सलाह लेती थी। ऐसा अक्सर होता था कि मेरी ताकतें मुझे पहले ही इस बात का एहसास दिला देती थीं कि फलां-फलां इंसान आने वाले वक्त में, मेरे लिए मुसीबतें खड़ी करने वाला है तो तब मेरे इशारे पर मेरे तलवारबाज योद्धा उसे खत्म कर डालते थे।"

"बिना किसी कसूर के।"

"कसूर इतना ही है कि आने वाले वक्त में वो मेरे लिए मुसीबत बनेगा।"

"ये तो अजीब बात है।"

"मेरी ताकतें मुझे पहले ही सतर्क कर देती थीं। इसमें कुछ भी बुरा नहीं है। मैंने अपनी ताकतों के कहने पर ऐसे कई लोगों की जान ली, जो सदूर पर शासन करने की सोचने लगे थे कि कैसे मुझे खत्म कर सकें।"

"मैंने तो सुना है कि तुम अपने योद्धाओं की भी जान ले लेती थीं।"

"हां। ऐसा बहुत बार किया मैंने। मुझे सुस्त और आलसी योद्धा पसंद नहीं थे। मेरे खास लोग ऐसे योद्धाओं को तलाश करके उन्हें मार देते थे। जिससे कि बाकी योद्धा अपने काम को मौत के डर से बखूबी अंजाम दिया करते थे। सेवकों में डर बना रहे तो तो वो अच्छा काम करते हैं। पूरे सदूर पर सारे साम्राज्य को संभालना आसान काम भी तो नहीं। मैंने अपने सेवक, योद्धा, कर्मचारियों पर मौत का डर डाल रखा था कि वो ठीक से काम नहीं करेंगे तो उन्हें मार दिया जाएगा। जो बढ़िया काम करता था उसे ईनाम भी मिलता था। परंतु तब भी वो डरा रहता कि आने वाले वक्त में उससे कोई गलती न हो जाए। इस प्रकार मेरे सारे काम बहुत बढ़िया ढंग से होते थे। इधर मुझे अपनी ताकतों को भी तो खुश रखना होता था।"

"कैसे खुश रखती तुम ताकतों को?"

"उनसे काम लेते रहो, वो खुश हैं। मैं जितनी क्रूरता का इस्तेमाल करूंगी वो खुशी होंगी। सदूर की रानी बनाने में उन ताकतों का बहुत बड़ा योगदान रहा है। ताकतों ने मेरी राहें आसान कीं। मेरे दुश्मनों के प्रति पहले ही मुझे

सचेत कर दिया जाता। मैं उन्हें पहले ही खत्म कर देती। इस तरह मैं सदूर की मालकिन बनती चली गई।"

"तुम बता रही थीं कि डुमरा की ताकतों ने तुम पर जश्न की रात हमला कर दिया।"

"वो बहुत बुरी रात थी मेरे लिए।" खुंबरी ने दुख भरे स्वर में कहा।

"तब तुम्हारी ताकतों ने तुम्हें आने वाले खतरे के प्रति सतर्क नहीं किया?" बबूसा ने कहा।

"किया। ताकतों ने बहुत कोशिश की, परंतु बटाका मेरे गले से गिर जाने के बाद ताकतें मेरे करीब नहीं पहुंच पा रही थीं। मेरे से दो कदम के फासले तक ही आ पा रही थीं। दारू की मदहोशी में नाचते-नाचते जब कभी नीचे गिरे बटाका (नग) पर मेरे पांव पड़ते तो वो ताकतें उसी पल मेरे सिर पर सवार होकर मुझे सतर्क करने की चेष्टा करतीं, परंतु जब मेरा पांव बटाका से हट जाता तो, ताकतें उसी पल मेरे से दूर हो जातीं।"

"मतलब कि बटाका के बिना तुम कुछ भी नहीं हो।"

"सच कहा तुमने।"

"तो बटाका खो जाने की स्थिति में ताकतें तुम्हें कैसे बताती हैं कि बटाका कहां पर मौजूद है।"

"ताकतों से सम्पर्क करने के तरीके मेरे पास और भी हैं। बटाका को अपने पास रखने का ये फायदा होता है कि मैं किसी भी पल, कैसे भी हालातों में मैं बटाका का इस्तेमाल करके, ताकतों से बात कर सकती हूं।"

"अब बिना बटाका के ताकतें तुम्हारे साथ, दूसरे ग्रह पृथ्वी पर भी हैं। ये कैसे मुमकिन है?"

चंद पल चुप रहकर खुंबरी कह उठी।

"मैंने तुम्हें अभी बताया था कि ताकतों ने श्राप मिलने और मेरे स्वीकार करने पर ये जान लिया था कि उनकी अगली मालिक भी मैं ही बनूंगी, बेशक मुझे पांच सौ सालों के लिए सदूर छोड़कर जाना है। ऐसे में उन ताकतों ने हर पल मेरी सहायता करने की ठान ली। ताकतों का अपना वजूद भी होता है। वो अपने फैसले तब लेती हैं, जब उनका मालिक कोई न रहे। ऐसे में उन ताकतों ने मेरा साथ कभी भी नहीं छोड़ा। मैंने जब शरीर को गुप्त जगह पर छोड़ा तो ताकतें उसी पल मेरी जान को संभाले पृथ्वी ग्रह की तरफ रवाना हो गई। उन्होंने मुझे सुरक्षित पृथ्वी पर पहुंचाया और मेरा नया जन्म कराया। तब से दो-तीन ताकतें पृथ्वी पर हर समय मेरे साथ ही रहीं।"

बबूसा ने सोच-भरे गम्भीर अंदाज में सिर हिलाया।

"तो डुमरा ने तुम्हारे साथ क्या किया?" बबूसा ने पूछा।

"उसकी शक्तियों ने जश्न की उस रात, मेरे से बटका के जुदा होते ही

घेर लिया। नाचते-नाचते मेरे पांव जैसे जमीन से चिपक गए। मैं लाख कोशिश करके भी पांवों को न हिला सकी। मेरी आंखें खुली थीं। दिमाग काम कर रहा था। मैंने गले में पड़े 'बटाका' को छूना चाहा तो वो गले में नहीं मिला। उसी पल मैं समझ गई कि बटाका कहीं गिर गया है और डुमरा की शक्तियों ने मुझे पकड़ लिया है। कारू का नशा मेरे सिर पर सवार था। मैं समझ सब कुछ रही थी परंतु कुछ बोल न पा रही थी। वहां मौजूद लोगों ने मेरी हालत देखी तो मुझे सहायता देने पास आ पहुंचे, परंतु जमीन से चिपके पांवों को वो अलग न कर सके। उसी हाल में खड़े-खड़े सुबह हो गई। तब मेरी नजर कुछ दूर पड़े बटाका पर गई। उसका धागा टूट गया था। वो अभी भी धागे में फंसा कुछ दूर जमीन पर पड़ा था। लोगों के पांवों के नीचे आ रहा था। मेरा नशा उतर चुका था। वहां अभी भी रात वाले लोग मौजूद थे और इस बात से हैरान हो रहे थे कि मुझे क्या हो गया है। मैंने चीखकर कहा कि वो नग मुझे दे दें। परंतु जैसे उन लोगों को मेरी आवाज सुनाई ही नहीं दे रही थी। मेरे कहने का उन पर कोई असर नहीं हुआ। बहुत बार कहा मैंने। सब बेकार रहा। जब अच्छी तरह दिन निकल आया, सूर्य भी दिखने लगा तो मैंने डुमरा को अपने पास आते देखा। वो मुस्करा रहा था। उसके चेहरे पर शांत भाव थे। वो मेरे पास आकर ठिठका और बोला।

"तुम्हारी आवाज किसी के कानों तक नहीं पहुंच रही। मेरी शक्तियों ने तुम्हारे सब दरवाजे बंद कर दिए हैं। तुम अब साधारण युवती बनकर रह गई हो। तुम्हें जश्न में कारू के नशे में इस तरह नहीं नाचना चाहिए था। कम-से-कम बटाका का तो ध्यान रखती जो तुम्हें सुरक्षित रखे हुए था। तुम तो बहुत लापरवाह निकलीं।"

खुंबरी गुर्रा पड़ी।

डुमरा हंस पड़ा।

"तो अब तुम अपने भाई ओमाथ की मौत का बदला मुझसे लोगे।"

"नहीं। ये बात तो बिल्कुल नहीं है।"

"ये ही बात है। तभी तो तुम कब से मेरे पीछे पड़े हुए हो।" खुंबरी ने दांत पीसकर कहा।

"इन बातों का ओमाच की मौत से कोई वास्ता नहीं है।" डुमरा बोला।

"तो क्या चाहते हो?"

"मुझे पसंद नहीं कि कोई नागाथ की ताकतों का इस्तेमाल करे।" डुमरा गम्भीर हो गया।

"क्यों?"

"नागाथ की ताकतें बुरी हैं। वो लोगों को तकलीफ देती हैं। तुम उनका क्रूरता से इस्तेमाल करती हो।"

"तो वो ताकतें तुम ले लेना चाहते...।"

"उन ताकतों को लेने की मैं सोच भी नहीं सकता। क्योंकि मेरी राहें तुमसे बहुत अलग हैं।"

"चाहते क्या हो?"

"तुम उन ताकतों से छुटकारा पा लो। उन्हें आजाद कर दो।" डुमरा ने शांत स्वर में कहा।

"हरगिज नहीं। तुमने कैसे सोच लिया कि मैं ऐसा करूंगी।" खुंबरी दांत पीस उठी।

"ऐसा ही करना होगा तुम्हें।"

"तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है जो तुमने ऐसा कहा। नागाथ की दी ताकतों की मेरी जिंदगी में क्या अहमियत है, यो तुम नहीं समझ सकते। आज मेरा जो रुतबा है, नागाथ की ताकतों की वजह से ही...।"

"मुझे हर बात का ज्ञान है।"

"तो तुम्हें इस बात का भी ज्ञान होगा कि मैं ताकतों को अपने से जुदा नहीं होने दूंगी।" खुंबरी गुस्से में पागल हो रही थी—"मैं तुम्हारी परवाह नहीं करती डुमरा। मैं तुम्हारी कोई बात नहीं मानूंगी।"

डुमरा गम्भीर निगाहों से, खुंबरी को देख रहा था।

"मुझे बहुत बातों का ज्ञान पहले से ही है कि आगे क्या होने वाला है।" डुमरा गम्भीर था।

"तू मेरे हाथों से मरेगा डुमरा।" खुंबरी गुर्रा उठी।

"अभी तो ऐसा होना मुझे दिख नहीं रहा खुंबरी।" डुमरा ने कहा—"बेहतर होगा तुम मेरी बात को मानते हुए नागाथ की दी ताकतों को छोड़ दो। तुम हां कहो, पीछा मैं छुड़ा दूंगा।"

"कभी नहीं, वो ताकतें तो मेरी जान हैं। उनके साथ जीने की मुझे आदत पड़ गई है। वो सिर्फ मेरी हैं। मैं उन्हें अपनी जान से भी ज्यादा प्यार करती हूं।" खुंबरी चीख उठी—"मैं उन्हें अपने से दूर नहीं करूंगी।"

"इस वक्त तुम्हारी वो ताकतें आसपास ही हैं, परंतु तुम्हें बचाने में असमर्थ हैं।"

खुंबरी की निगाह कुछ दूर गिरे पड़े बटाका पर पड़ी।

"तुम्हें अपनी शक्तियों पर बहुत नाज है डुमरा।"

"गलत शब्द इस्तेमाल मत करो। मुझे कभी भी अपनी शक्तियों पर नाज नहीं रहा। मैंने अपनी शक्तियों का हमेशा आदर किया है। वो मेरे लिए पूजनीय हैं।" डुमरा ने सिर हिलाकर कहा—"मैं हमेशा उनका आभारी रहता हूं।"

"लेकिन मुझे अपनी ताकतों पर नाज है।"

डुमरा ने खुंबरी की आंखों में झांका।

"वो सामने-जमीन पर धागे में फंसा नग पड़ा है। उसे उठाकर मेरे हाथों में दे दो।" खुंबरी कह उठी।

डुमरा ने गर्दन घुमाकर उस तरफ देखने की कोशिश नहीं की और बोला।

"तुम 'बटाका' की बात कर रही हो। मुझे कब से इंतजार था कि 'बटाका' एक पल के लिए भी तुमसे अलग हो और मेरी शक्तियां तुम पर काबू पा लें। ऐसा हुआ और मुझे मौका मिल गया।"

"तो तुम 'बटाका' के बारे में जानकारी रखते हो।" खुंबरी ने दांत पीसे।

"मैं तुमसे वास्ता रखती अधिकतर चीजों का ज्ञान रखता हूं। बात भाई ओमाच के मरने की नहीं है। जब मुझे मेरी शक्तियों ने बताया कि नागाथ अपना शरीर छोड़ते समय, अपनी ताकतें तुम्हें दे गया है तो तभी से मेरी नजर तुम पर टिक गई थी। नागाथ की ताकतें जो भी काम करेंगी, बुरा करेंगी। वो ताकतें क्रूरता को बढ़ावा देती हैं। मैं चाहता हूं कि तुम उन ताकतों को आजाद कर दो। उसके बाद मैं उन ताकतों को किसी चीज में बंद करके, जमीन में दबा दूंगा। इस तरह जमीन से बुराई कम होगी। मेरी शक्तियां भी ऐसा करने की इच्छा रखती हैं।"

"तुम अपनी कोशिश में कभी सफल नहीं हो सकते डुमरा।"

"मेरी बात मान जाओ। नहीं तो मेरे पास और भी रास्ते हैं।" डुमरा ने शांत गम्भीर स्वर में कहा।

"मैं तुम्हारी धमकी से डरने वाली नहीं।"

"मेरी सलाह को धमकी मत कहो।"

"मैंने तुम्हें कभी भी पसंद नहीं किया।" खुंबरी ने सुलगते स्वर में कहा।

"जिसके पास ताकतें हों, वो मुझे कभी भी पसंद नहीं करेगा।"

"मैंने तुम्हें कभी कुछ नहीं कहा। हमारे में दुश्मनी जैसा कुछ हुआ तो उसकी शुरुआत तुमने ही की थी।"

"स्वीकार करता हूं तुम्हारी बात को। जिस तरह तुम्हारी ताकतें तुम्हें बुरा करने पर मजबूर करती हैं उसी तरह मेरी शक्तियां मुझे मजबूर करती हैं कि मैं बुराई को रोकूं। यही वजह है कि मुझे आगे आना पड़ा। नागाथ की दी ताकतों को छोड़ दो। इसी में सबका भला है। मैं वादा करता हूं सदूर पर तब भी तुम्हारी हुकूमत कायम रहेगी।"

"मुझे उन ताकतों से प्यार है।" खुंबरी विषैले अंदाज में हंस पड़ी—"मैं तुमसे कभी नहीं डरती।"

"मुझे सख्ती पर मजबूर मत करो खुंबरी।" डुमरा बेहद गम्भीर दिखने लगा।

"तुम जो चाहो कर लो डुमरा, परंतु मुझे मेरी ताकतों से तुम जुदा नहीं कर सकते।" खुंबरी पागलों की तरह गुर्रा पड़ी।

"मेरी शक्तियों को पसंद नहीं कि वो किसी की जान लें। इस बात को पाप समझती हैं वो। परंतु मेरे आदेश पर और हालातों को देखते हुए वो ऐसा कर सकती हैं। मैं तुम्हें पांच सौ सालों के लिए श्राप देता हूं कि सदूर से दूर चली जाओ। अगर तुम मेरा श्राप स्वीकार करती हो तो मेरी शक्तियां तुम्हें अभी आजाद कर देंगी। नहीं तो इसी तरह खड़े-खड़े तुम जान दे दोगी। इसके अलावा ये बात अभी भी तुम्हारे सामने है कि तुम नागाथ की दी ताकतों से दूर होना चाहो तो बता दो।"

खुंबरी गुस्से से चीख उठी।

डुमरा शांत खड़ा उसे देखता रहा।

वहां सैकड़ों-हजारों की भीड़ में खड़े सब देख रहे थे परंतु उनके लिए उलझन की बात थी कि डुमरा या खुंबरी की आवाजें वो न सुन पा रहे थे। उन्हें नहीं पता था कि क्या हो रहा है।

"मैं श्राप दे चुका हूं।" डुमरा ने स्थिर आवाज में कहा—"और तुम अच्छी तरह जानती हो कि मेरे शब्द खाली नहीं जाएंगे। पांच सौ साल के लिए तुम्हें सदूर छोड़कर जाना होगा। श्राप स्वीकार नहीं करोगी तो इसी तरह खड़े-खड़े तुम्हारी जान निकल जाएगी। तीसरी बात ये कि नागाथ की शक्तियों को आजाद कर दो और इसी प्रकार सदूर पर शासन करती रहो। जो भी तुम्हें मंजूर हो। वो करो। मुझे कोई जल्दी नहीं है। मैं तुम्हारे जवाब का इंतजार...।"

"मेरा जवाब तुम सुन चुके हो डुमरा।" खुंबरी पुनः चीखी—"वो ताकतें अब मेरा हिस्सा बन चुकी हैं। उनके बिना मैं जीवन बिताने की सोच भी नहीं सकती। उन ताकतों में मेरी जान बसती है।"

डुमरा स्थिर-सा खुंबरी को देखता रहा।

क्रोध में खुंबरी का चेहरा तप रहा था।

"कोई और राह निकालो डुमरा।" खुंबरी एकाएक तेज सांसें लेने लगी।

"और कोई रास्ता नहीं है।" डुमरा बोला।

"तुम अपनी शक्तियों के माध्यम से किसी की जान नहीं ले सकते। शक्तियां ये बात नहीं मानेंगी।"

"वो मान रही हैं।"

"तुम झूठ कह रहे हो।"

"मैं झूठ नहीं बोलता कभी। शक्तियां तुम्हारी जान लेने को तैयार हैं, परंतु ये पाप मुझे अपने सिर लेना होगा।"

खुंबरी गुर्राकर रह गई।

"मेरे हुक्म पर शक्तियां तुम्हारे पांवों को तब तक आजाद नहीं करेंगी,

जब तक कि तुम बेजान होकर गिर न जाओ। तुम्हारे प्राण न निकल जाएं।" डुमरा ने कहा।

"तुम तो बहुत गिरे हुए इंसान हो डुमरा।" खुंबरी की निगाह पुनः 'बटाका' की तरफ गई।

"अभी भी तुम्हारे पास समय है कि तुम नागाथ की शक्तियों को आजाद कर दो और सदूर पर शासन करो।"

"मैं उन ताकतों को अपने से दूर नहीं करूंगी डुमरा।" खुंबरी पागलों की तरह चीख उठी—"मुझे तुम्हारा श्राप स्वीकार है। मैं पांच सौ सालों के लिए सदूर से दूर जाने को तैयार हूं।"

"अब तुमने श्राप स्वीकार कर लिया है। अगर तुम सदूर से नहीं गई तो खु-ब-खुद ही तुम्हारी जान निकल जाएगी।"

"जानती हूं।" खुंबरी का चेहरा दहक रहा था—"लेकिन मैं वापस आऊंगी डुमरा। तेरे से एक-एक बात का बदला लूंगी और तेरी जान लेकर रहूंगी। तब मेरी ताकतें मेरा साथ देंगी।"

"पांच सौ सालों के बाद क्या होगा, ये न तो तुम जानती हो और न ही मैं।" डुमरा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"मैं तुम्हें नहीं छोड़ूंगी।"

"पांच सौ साल बहुत ज्यादा होते हैं खुंबरी। शायद इतनी देर वो ताकतें तुम्हारा इंतजार न कर सकें और खुद ही चली जाएं। ये अच्छी बात होती अगर तुम उन ताकतों को छोड़ने का फैसला कर लेती और सदूर पर शासन चलाती।"

"जिसे उन ताकतों का नशा हो जाए, वो ही जानता है कि ताकतों के साथ सदूर की रानी बनने में क्या मजा है।" खुंबरी ने मौत से भरे स्वर में कहा—"इस बार तो तेरी चल गई डुमरा परंतु अगली बारी मेरी होगी।"

डुमरा ने अपना हाथ हवा में लहराया।

उसी पल खुंबरी के पांव आजाद हो गए।

ऐसा होते ही खुंबरी पागलों की तरह डुमरा पर झपट पड़ी।

अगले ही पल खुंबरी के पैर पुनः जमीन से चिपक गए।

"ऐसा मत करना। कुछ भी मत करना अब।" डुमरा ने शांत स्वर में कहा—"तुम श्राप में बंध चुकी हो। अब कुछ भी करने का हक खो चुकी हो। अगर तुमने फिर भी कुछ करने की कोशिश की तो तुम्हें अपने शरीर के अंगों की क्षति सहनी पड़ेगी।"

पुनः खुंबरी के पैर आजाद हो गए।

खुंबरी ने गहरी सांसें लीं और मौत की-सी निगाहों से डुमरा को देखा।

डुमरा पलटकर जाने लगा तो खुंबरी गुर्रा उठी।

"मैं तुम्हें कभी नहीं भूलूंगी डुमरा।" खुंबरी के चेहरे पर दरिंदगी नाच रही थी।

डुमरा ने शांत निगाहों से खुंबरी को देखा।

"हो सका तो तुमसे आज के दिन का पूरा बदला लूंगी।" खुंबरी ने दांत किटकिटाकर कहा।

डुमरा पलटकर आगे बढ़ गया।

"मुझे कुछ वक्त चाहिए डुमरा सदूर छोड़ने के लिए। मुझे कुछ तैयारियां करनी हैं।"

"कितना वक्त?" उसी तरह चलते-चलते डुमरा ने पूछा। पीछे नहीं देखा।

"दस दिन।"

"मैं तुम्हें पंद्रह दिन देता हूं। सोलहवें दिन तुमने श्राप का पालन नहीं किया तो तुम्हारी मृत्यु हो जाएगी।" कहने के साथ ही डुमरा आगे बढ़ता भीड़ में गुम होता चला गया।

खुंबरी सब कुछ बताने के बाद रुकी।

बबूसा की निगाह खुंबरी पर टिकी थी। वो ऐसी बातें जान रहा था जिनका उसे पता नहीं था।

"फिर—फिर...?" बबूसा के होंठों से निकला।

"आगे क्या बताऊं।" खुंबरी मुस्कराई। निचला होंठ टेढ़ा हो गया—"बता ही चुकी हूं तुम्हें कि मेरे आगे के सफर में क्या रहा। अब वापस सदूर पर जा रही हूं पांच सौ सालों बाद। डुमरा ने सोचा था जैसे पांच सौ साल कभी पूरे ही नहीं होंगे, लेकिन वक्त कभी ठहरता नहीं। अब मैं...।"

"तुम्हारी ताकतें अब भी तुम्हारे साथ हैं पूरी तरह?" बबूसा गम्भीर दिखने लगा था।

"जितनी मुझे जरूरत है, उतनी तो साथ ही हैं।" खुंबरी बोली—"अब मेरे सदूर पर पहुंचने पर सब ठीक हो जाएगा।"

"बटाका दोलाम ने संभाल रखा है।"

"पूरी हिफाजत से।"

"मैं तुम्हें धरा कहूं या खुंबरी?"

"मैं खुंबरी का रूप भर हूं। मैं धरा हूं। खुंबरी तो सदूर पर गहरी नींद में डूबी है, पांच सौ सालों से। मैं जाकर उसे जगाऊंगी।"

"तुम जगाओगी? कैसे?"

"वो मुझे पता है।"

"खुंबरी सदूर में कहां पर है?"

"ये मैं तुम्हें नहीं बताने वाली।"

"तुम्हें मालूम है?"

"मुझे क्यों न मालूम होगा।"

"तो तुम धरा हो। खुंबरी का ही रूप। सदूर पर पहुंचकर तुम्हारी क्या स्थिति होगी?"

"मैं खुंबरी की सहेली-दोस्त, उसकी करीबी बनकर रहूंगी। मैं खुंबरी का ही तो हिस्सा हूं।"

"तो खुंबरी पहले डुमरा से बदला लेगी उसके बाद सदूर की रानी बनने की कोशिश करेगी?" बबूसा गम्भीर था।

"कोशिश?" धरा मुस्कराई तो उसका निचला होंठ टेढ़ा दिखने लगा—"खुंबरी को कोशिश करनी है। सदूर उसी का तो है। ताकतें खुंबरी की सहायता करेंगी और खुंबरी सदूर की मालकिन बन जाएगी। टुकड़े-टुकड़े हो चुका सदूर वापस सदूर से आ मिलेगा। बहुत बड़ा सदूर बन जाएगा। डुमरा के श्राप के शुरू होते ही सदूर कई टुकड़ों में बदल गया था कि खुंबरी की बची ताकतें टुकड़ों में बिखर जाएं। परंतु अब सब कुछ पहले जैसा हो जाएगा।" धरा की आंखों में चमक थी "लेकिन सबसे पहले मैं डुमरा को खत्म करूंगी। नहीं तो वो फिर मेरी राह में मुसीबतें इकट्ठी करने की कोशिश करेगा। मैंने उससे बदला लेना है।"

बबूसा, खुंबरी उर्फ धरा को देखता रहा। फिर बोला।

"तुम्हारे बारे में काफी सुन रखा था। परंतु अब जाना कि खुंबरी की असलियत क्या है।"

"डुमरा ही मेरे रास्ते में आया था वो ही मेरे पीछे पड़ा था। मैंने तो उसे कुछ नहीं कहा था।" धरा गुस्से में भर उठी।

"उसे तुम्हारी बुरी ताकतों से शिकायत थी।"

"वो ताकतें जैसी भी हैं मुझे उनसे प्यार है। तुम देख ही रहे हो कि वो मेरा कितना खयाल रखती हैं।"

"ताकतों को तुम्हारी चिंता क्यों है?"

"क्योंकि मेरे पास रहकर वो सक्रिय रहेंगी। मेरे साथ ही उनका जीवन है। कोई दूसरा नहीं जानता कि उन्हें कैसे संभालना है। दूसरा तभी जानेगा। जब मैं ताकतों को संभालने का तरीका बताऊंगी और ये बातें मैंने अभी तक किसी को नहीं बताईं।"

"तुम चाहती तो ताकतों से अलग होकर, सदूर की रानी बनी रह सकती थी।" बबूसा ने कहा।

"वो ताकतें मेरा नशा है। मैं उनसे अलग होने की सोच भी नहीं सकती। उनके बिना मेरा जीना बेकार है। वो मेरा खयाल रखती हैं और मैं उनका खयाल रखती हूं। मैं उनसे कभी भी अलग नहीं होना चाहूंगी।"

"तो तुम सदूर पर फिर से अपनी क्रूरता का प्रदर्शन करोगी?"

"ये तो होगा ही।" धरा मुस्कराई तो निचला होंठ टेढ़ा हो गया—"मेरी ताकतें हैं ही ऐसी। वो किसी पर रहम नहीं करतीं।"

"तुम बुराई नहीं छोड़ोगी?"

"ये बुराई नहीं, मेरा शासन करने का तरीका है। मेरी ताकतें मुझे रास्ता दिखाती हैं और मैं सलामत रहती हूं उस रास्ते पर चलकर।"

बबूसा सिर हिलाकर बोला।

"मैंने तुमसे बहुत कुछ नया जाना है।" चेहरे पर गम्भीरता थी।

धरा उसी मुस्कान के साथ बबूसा को देखती रही।

"अब मैं चलूंगा।" बबूसा ने कहा और पलटकर दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

बबूसा बाहर निकल गया।

धरा खुलकर मुस्कराई तो निचला होंठ टेढ़ा दिखने लगा।

'तेरे को कोई नहीं जीत सकेगा अब खुंबरी।' वो बड़बड़ाई—'सदूर पर तू सबसे महान बन जाएगी।'

▭ ▭
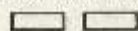
सोमाथ अपने केबिन से निकला और दरवाजा बंद करते हुए आगे बढ़ गया। उसका चेहरा शांत दिख रहा था। उसने स्क्रीन द्वारा मोना चौधरी, नगीना और जगमोहन, के केबिनों में देखा था तो वहां किसी को भी नहीं पाया। वो समझ गया कि सब बबूसा के साथ पोपा के पीछे वाले हिस्से में मौजूद होंगे। वो जान चुका था कि सब उसके खिलाफ षड्यंत्र रच रहे हैं। उसे जान से खत्म करने की योजना बनाई जा रही है। इस विचार के साथ सोमाथ मुस्करा उठता कि वो पागल लोग अपनी ही मौत की तैयारी कर रहे हैं। रानी ताशा की तरफ से उसे इजाजत मिल चुकी थी कि अगर वे उस पर हमला करें तो वो कुछ भी करने को आजाद है। सोमाथ जानता था कि इस सारे मामले की जड़ बबूसा है। बबूसा ने दूसरों को अपने साथ लगा रखा है।

एक मोड़ से मुड़ने पर वो पतले से रास्ते पर आगे बढ़ा कि तभी पीछे से दबे पांव नगीना उसके पास पहुंची और हाथ में दबी तलवार तीव्रता के साथ सोमाथ की पीठ में घुसेड़ दी। इसके साथ ही नगीना भागती हुई नजरों से ओझल हो गई। सोमाथ के कदम उसी पल रुक गए थे। उसने भागती नगीना को देख लिया था। परंतु उसके पीछे नहीं गया। क्योंकि तलवार पीठ से आती, छाती वाले हिस्से कुछ बाहर आ रही थी। उसने हाथ पीछे किया और तलवार की मूठ पकड़कर धीरे-धीरे बाहर की तरफ खींचने लगा। दो मिनट में ही उसने तलवार बाहर निकालकर फेंक दी और छाती पर बने सुराख को देखा।

वैसे ही खड़ा रहा सोमाथ। मिनट भर में पीठ और छाती फिर से सामान्य हो गई।

सोमाथ के चेहरे पर लापरवाही थी, वो आगे बढ़ गया।

एक अन्य मोड़ मुड़ा कि सामने से जगमोहन और मोना चौधरी आते दिखे। उनके हाथों में तलवारें थीं। सोमाथ को एकाएक सामने पाकर वो ठिठक गए। सोमाथ उनके पास जा पहुंचा।

जगमोहन और मोना चौधरी की नजरें मिलीं। फिर सोमाथ को देखा।

"तुम लोग जानते हो कि मुझे नहीं मारा जा सकता।" सोमाथ शांत स्वर में बोला—"फिर क्यों बबूसा की बातों में आकर अपनी जान फंसाते हो। अपनी जान बचा के रखो इसी में समझदारी है।"

"लेकिन हमने तो तुम्हें कुछ भी नहीं कहा।"

"तलवारें हाथ में लेकर क्या कर रहे हो?" सोमाथ मुस्कराया।

"ये तो यूं ही...।"

"अभी नगीना ने मुझ पर तलवार से हमला किया और भाग गई। तुम लोग भी मुझे ही ढूंढ रहे हो। बेवकूफी मत करो। पहले भी मुझ पर हमला करके देख चुके हो कि मेरा कुछ नहीं बिगड़ता।"

"नगीना ने ऐसा क्यों किया?" मोना चौधरी बोली—"क्या तुमने उसे कुछ बुरा कहा था।"

"चालाक मत बनो। बबूसा की बातों में मत आओ। मारे जाओगे।" सोमाथ ने सख्त स्वर में कहा।

"पता नहीं तुम ऐसी बातें क्यों कर रहे...।" जगमोहन ने कहना चाहा।

तभी मोना चौधरी ने फुर्ती से तलवार का वार सोमाथ पर कर दिया।

सोमाथ ने तलवार रोकने के लिए फुर्ती से हाथ आगे बढ़ाया तो उसका हाथ कटता चला गया। इसके साथ ही मोना चौधरी और जगमोहन फुर्ती से पलटे और भागते चले गए।

सोमाथ कठोर निगाहों से, वहीं खड़ा उन्हें तब तक देखता रहा जब तक वो मुड़कर निगाहों से ओझल न हो गए फिर अपने हाथ में देखा, जो कि हथेली तक बीच में से कटा पड़ा था। तीन उंगलियां एक तरफ थीं और दूसरी तरफ एक उंगली और अंगूठा था। सोमाथ ने दूसरे हाथ से, हाथ को पकड़कर पुनः ठीक से जोड़ा और दबाए रखा। करीब पांच मिनट तक इसी स्थिति में रहा फिर जब हाथ को छोड़ा तो वो जुड़कर पहले की तरह सामान्य स्थिति में आ चुका था। सोमाथ के होंठ भिंचे हुए थे। वो आगे बढ़ गया।

बबूसा चालक कक्ष में पहुंचा।

किलोरा एक कुर्सी पर गिलास थामे बैठा खोनम के घूंट भर रहा था।

"आओ बबूसा।" एकाएक किलोरा उसे देखते ही बोला—"खोनम पिओगे।"

"तुम पिओ।" बबूसा ने सामने की विंड शील्ड से बाहर देखा।

सूर्य चमक रहा था। तेज रफ्तार से पोपा अपने रास्ते पर बढ़ा जा रहा था।

"आगे कितनी देर का रास्ता साफ है?" बबूसा ने पूछा।

"दो दिन तक रास्ते में कोई समस्या नहीं आएगी। रास्ता साफ है।"

बबूसा ने स्क्रीनों की तरफ देखा, जहां से पोपा के हर तरफ का दृश्य दिख रहा था।

"तुम अकेले यहां रहे तो थक जाओगे।"

"कुछ घंटे बाद राजा देव आ जाएंगे, तब मैं आराम कर लूंगा।" किलोरा ने मुस्कराकर कहा।

"राजा देव ने आने को कहा था?"

"हां। वो अभी चक्कर लगा कर गए हैं।"

बबूसा ने किलोरा को देखकर पूछा।

"तुम्हारे खयाल में राजा देव कितनी देर तक यहां आएंगे?"

"शायद पांच-सात घंटों बाद।"

"पांच-सात घंटे, बहुत हैं, तब तक मैं अपना काम पूरा कर लूंगा।" बबूसा कह उठा।

"कैसा काम बबूसा?"

"मैं तुम्हें कष्ट देना चाहता हूं किलोरा।"

"कष्ट, कैसा कष्ट...?"

उसी पल बबूसा का हाथ उठा और किलोरा के सिर पर जा पड़ा।

किलोरा के होंठों से कराह निकली। खोनम का गिलास हाथ से छूट गया।

तभी बबूसा ने किलोरा की कनपटी पर जोरदार घूंसा मारा।

किलोरा के होंठों से मध्यम-सी चीख निकली और वो कुर्सी पर ही एक तरफ लुढ़क गया। वो बेहोश हो चुका था। इस पर भी बबूसा ने दो और घूंसे उसकी कनपटी पर मारे फिर जेब से पतली-सी डोरी निकालकर उसके हाथ-पांव बांधे और उसे कुर्सी से उठाकर, एक तरफ फर्श पर लिटा दिया। किलोरा गहरी बेहोशी में था।

इस काम से निबटकर बबूसा कुर्सी पर बैठा और उसके हाथ सामने के डैशबोर्ड के बटनों और लीवरों पर चलने लगे। चेहरे पर गम्भीरता दिख रही थी। करीब दस मिनट बबूसा इसी तरह व्यस्त रहा। फिर एक तरफ लगे मीटर की सुई को देखा। सुई दर्शा रही थी कि पोपा की रफ्तार जीरो के करीब पहुंच चुकी है। मतलब कि पोपा अब एक साइकिल की-सी रफ्तार से आगे बढ़ रहा था।

"अब ठीक है।" बबूसा बड़बड़ाया—'अब मैं अपने चक्रव्यूह पर काम कर सकूंगा और पोपा के भीतर मौजूद किसी को भी इस बात का एहसास नहीं होगा कि पोपा की रफ्तार क्या है। भीतर के लोगों को पोपा की रफ्तार का पता नहीं चलता। बेशक वो तेज हो या धीमा।" इसके साथ ही बबूसा उठा और विंड स्क्रीन से बाहर देखा। रास्ता क्लियर था। फिर छोटी स्क्रीनों की तरफ देखा।

सब ठीक पाकर बबूसा किलोरा के पास पहुंचा। उसे चैक किया। वो गहरी बेहोशी में था।

बबूसा चालक कक्ष से बाहर निकला। दरवाजा बंद किया और बाहर लगी नम्बरों की प्लेट के कुछ बटनों को दबाकर दरवाजा लॉक किया और आगे बढ़ गया। चेहरे पर गम्भीरता दिख रही थी।

▭ ▭

सोमाथ ने अपने केबिन का दरवाजा खोला और भीतर प्रवेश किया। अगले ही पल चौंका। उसके केबिन में नगीना मौजूद थी और देखते ही देखते हाथ में दबी तलवार उसके पेट में घुसेड़ दी।

सोमाथ के शरीर को हल्का-सा झटका लगा लेकिन इसी के साथ ही उसने हाथ बढ़ाकर नगीना की गर्दन पकड़ ली। नगीना छटपटा उठी, परंतु सोमाथ शांत रहा। दूसरे हाथ से उसने पेट में धंसी तलवार बाहर निकाली और परे ही फेंक दी। नगीना खुद को छुड़ाने का असफल प्रयास कर रही थी परंतु उसकी कोशिश सफल नहीं हो पा रही थी।

"मेरे समझाने पर भी तुम लोगों को समझ नहीं आई।" सोमाथ सख्त स्वर में कह उठा।

नगीना खुद को छुड़ाने के लिए जोरों से तड़पी।

लेकिन सोमाथ के हाथ की उंगलियों ने नगीना का गला नहीं छोड़ा।

नगीना का चेहरा दम घुटने से लाल-सुर्ख होने लगा।

"तो तुम पृथ्वी ग्रह पर राजा देव की पत्नी हो।" कहते हुए सोमाथ बेहद शांत भाव में मुस्करा पड़ा।

नगीना का चेहरा लाल-सुर्ख हो चुका था और आंखें फटती जा रही थीं।

जगमोहन के हाथ में तलवार थी। वो सतर्कता से पोपा के सुनसान रास्तों पर आगे बढ़ रहा था।
उसकी निगाह सोमाथ की तलाश कर रही थी। चेहरे पर खतरनाक भाव छाए हुए थे। तभी सामने से, एक मोड़ पर मोना चौधरी प्रकट हुई। दूर से ही उनकी नजरें मिलीं। जगमोहन ठिठका, मोना चौधरी पास आ पहुंची।
"सोमाथ कहां है?" जगमोहन ने पूछा।
"वो कहीं भी नहीं दिख रहा।" मोना चौधरी बोली।
"कहीं वो अपने केबिन में तो नहीं?"
"मैं नहीं जानती।"
"आओ उसके केबिन की तरफ चलते हैं।"
दोनों एक साथ आगे बढ़ गए।
"नगीना भाभी को देखा है?"
"नहीं। बेला नहीं दिखी। वो भी कहीं पर सोमाथ के लिए, घात लगाए खड़ी होगी।"
"क्या हम ठीक कर रहे हैं?" जगमोहन बोला।
"क्य मतलब?"
"हम सोमाथ का कुछ नहीं बिगाड़ सकते, फिर भी उस पर वार करने की कोशिश कर रहे हैं।"
"ये बबूसा का प्लान है। वो चाहता है कि तंग आकर सोमाथ उसे मारने पोपा के पीछे वाले हिस्से पर आ पहुंचे।"
"बबूसा करना क्या चाहता है?"
"ये नहीं बता रहा वो।"
"कुछ करने से पहले हमें उससे जानना चाहिए था कि उसका प्लान क्या है।" जगमोहन बोला।
"हम अजीबो-गरीब हालातों में फंसे अंजान ग्रह की तरफ जा रहे हैं। हमें नहीं पता कि आगे क्या होने वाला है। सबसे बड़ी समस्या देवराज चौहान की है कि वो हमारी परवाह ही नहीं कर...।"
"इससे क्या फर्क पड़ता है?"
"बहुत फर्क पड़ता है।" मोना चौधरी ने कहा—"जिसके लिए हम दूसरे ग्रह का सफर कर रहे हैं, उसे हमारी कोई चिंता नहीं है। वो एक बार भी हमारे पास नहीं आया और रानी ताशा के पहलू में मौजूद रह रहा है। हम देवराज चौहान से कोई बात भी नहीं कर पा रहे, क्योंकि सोमाथ से हमें डर लगता है। अगर सोमाथ नहीं रहेगा तो हम देवराज चौहान से बात कर सकते हैं। कुछ आगे का भी सोच सकते हैं। उसे तो...।"

"चुप रहो। हम सोमाथ के केबिन के पास आ पहुंचे हैं।" जगमोहन ने धीमे स्वर में कहा।

दोनों खामोशी से आगे बढ़ते सोमाथ के केबिन के दरवाजे पर जा पहुंचे। दोनों की निगाहें मिलीं। जगमोहन ने इशारे से वहीं रहने को कहा कि वो भीतर जाकर देखता है।

मोना चौधरी ने सिर हिला दिया।

▭ ▭

सोमाथ अपने केबिन में मौजूद था।

फर्श पर नगीना लुढ़की पड़ी थी। पता नहीं वो बेहोश थी या बेजान थी। उसकी टांगें एक तरफ मुड़ी हुई थीं। बांहें फैली थीं। आंखें बंद थीं सन्नाटा छाया हुआ था वहां।

सोमाथ सामने की स्क्रीन पर जगमोहन और मोना चौधरी को देख रहा था। दोनों के हाथों में तलवारें थीं और वो जानता था कि दोनों उसके केबिन की तरफ ही बढ़ रहे हैं। फिर उसने स्क्रीन पर, दोनों को केबिन से बाहर रुकते देखा तो चेहरे पर कठोरता आ गई।

वो दरवाजे की तरफ बढ़ गया। सावधानी से चल रहा था कि उसके कदमों की आवाज न उठे। दरवाजे की ओट में जा टिठका और दरवाजा खुलने का इंतजार करने लगा।

चंद पल बीते।

तभी दरवाजा धीरे-धीरे खुला। थोड़ा और खुला और जगमोहन का सिर दिखाई दिया। वो केबिन में झांकना चाहता था। झांका भी, सामने नगीना को फर्श पर लुढ़के पड़े देखा।

"भाभी...।" जगमोहन चीखा और होश खो बैठा।

दरवाजा खोलते तेजी से भीतर लपका।

अगले ही पल मोना चौधरी भी भीतर प्रवेश कर आई कि भीतर नगीना के साथ क्या हुआ।

उसी पल सोमाथ ने दरवाजा बंद कर दिया।

दोनों भीतर आ चुके थे और दरवाजा बंद होते पाकर चौंककर पलटे।

जगमोहन को इतना वक्त नहीं मिल सका कि नगीना को देख पाता।

सोमाथ बंद दरवाजे के पास खड़ा कठोर निगाहों से उन्हें देख रहा था।

"तुमने भाभी के साथ क्या किया? मार दिया इसे?" जगमोहन चीखा।

"तुम दोनों अपने अंजाम की परवाह करो।" सोमाथ ने सख्त स्वर में कहा।

तभी जगमोहन और मोना चौधरी तलवारों के साथ, सोमाथ पर झपट पड़े।

बबूसा पोपा के पीछे हिस्से में मौजूद था और चहलकदमी कर रहा था। उसके चेहरे पर सख्ती नाच रही थी। उसके अलावा वहां और कोई मौजूद नहीं था। काफी देर से वो अकेला था। उसके चेहरे पर बेचैनी छाई हुई थी। एकाएक वो ठिठका और नीचे फैले पड़े मोटे रस्से का सिर उठाकर अपनी कमर से बांधने लगा। रस्से का दूसरा सिर एक रॉड से मजबूती से बांध रखा था। बबूसा ने कमर पर भी मजबूती से रस्सा बांधा कि किसी भी स्थिति में खुल न सके। इन सब बातों के दौरान उसका मस्तिष्क इसी सोच में उलझा हुआ था कि क्या उसके बिछाए चक्रव्यूह में सोमाथ फंसेगा या नहीं? ये उसकी आखिरी कोशिश थी सोमाथ को खत्म करने की और उसे नहीं पता था कि उस कोशिश में वह कितना सफल हो पाएगा। लेकिन उसे अपने पर भरोसा था कि वो सफल हो जाएगा। परंतु रह-रहकर उसकी सोचें डगमगा उठती थीं।

तभी उसके कानों में दौड़ते कदमों की आवाजें पड़ीं।

बबूसा सतर्क हो गया।

अगले ही पल सोमारा ने भीतर प्रवेश किया। वो हांफ रही थी।

"बबूसा।" सोमारा जल्दी से परेशान स्वर में कह उठी—"सोमाथ ने सबको मार दिया।"

"सबको?" बबूसा के होंठों से निकला।

"नगीना, जगमोहन और मोना चौधरी को।"

"न-हीं।" बबूसा के होंठों से निकला। वो सोमारा को देखता रह गया।

"म-मैं उन पर नजर रखे थी। उन्हें सोमाथ के केबिन में जाते देखा मैंने। पहले नगीना गई थी। कुछ देर बाद सोमाथ अपने केबिन में गया। उसके कुछ देर बाद मैंने मोना चौधरी और जगमोहन को सोमाथ के केबिन में जाते देखा। मैं जानती हूं कि वो लोग सोमाथ का मुकाबला नहीं कर सकते। तुमने भी तो उन्हें यही कहा था कि सोमाथ पर वार करो और भाग जाओ। तुमने उन्हें समझा दिया था कि उनका मकसद सोमाथ को परेशान करना है कि परेशान होकर वो यहां, तुम्हारे पास चला आए। उन्हें सोमाथ के केबिन में नहीं जाना चाहिए था। उन तीनों में से कोई भी बाहर नहीं निकला। सोमाथ ही बाहर निकला और वहां से चला गया। तब मैंने केबिन का दरवाजा खोलकर भीतर देखा तो उन तीनों को फर्श पर गिरा पाया।"

"जान जा चुकी थी उनकी?" बबूसा का चेहरा खतरनाक हो गया।

"मेरी तो हिम्मत नहीं हुई आगे जाने की। परंतु सोमाथ उन्हें जिंदा क्यों छोड़ने लगा।" सोमारा ने कहा।

"ये तो बहुत बुरा हुआ।" बबूसा गुर्रा उठा—"राजा देव उनकी मौत को कभी भी पसंद नहीं करेंगे।"

"मुझे बताओ अब मैं क्या करूं?"

"तुमने बबूसा पर वार क्यों नहीं किया।"

"मैं...।" कहते-कहते सोमारा ठिठक गई।

कदमों की मध्यम-सी आवाजें उनके कानों में पड़ीं।

"वो आ गया।" सोमारा के होंठों से निकला।

बबूसा की आंखों में उसी पल खतरनाक चमक नजर आने लगी।

सोमारा पीछे हटती दीवार से जा लगी। तलवार अभी भी उसके हाथ में थी।

बबूसा ने कमरे में बंधे रस्से को चैक किया।

"अ-अब तुम क्या करने वाले हो बबूसा।" सोमारा भय से भरे स्वर में कह उठी।

तभी कदमों की आवाजें पास से आईं और सोमाथ ने भीतर प्रवेश किया।

सोमाथ को वहां आया पाकर बबूसा वहशी अंदाज में मुस्करा पड़ा।

"तो तुमने मुझे ढूंढ ही लिया सोमाथ।" बबूसा बोला।

"मैं तुम्हें मारने आया हूं।" सोमाथ ने सख्त स्वर में कहा।

"मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है।" बबूसा पोपा के बंद दरवाजे की तरफ बढ़ा।

"तुमने जगमोहन, नगीना और मोना चौधरी को...।"

"मार दिया उन तीनों को तुमने।" दरवाजे के पास पहुंचकर बबूसा ठिठका और सोमाथ को देखा।

"तीनों जिंदा हैं।"

"हैरानी है, मारा क्यों नहीं?"

"उनकी कोई गलती नहीं है। तुमने उन्हें भड़काया है। मेरे पीछे भेजा। अब तुम...।"

"पर तुम मुझे नहीं मार सकते।" कहने के साथ ही बबूसा ने दीवार पर लगे बटन की प्लेट में से कुछ बटन दबाए।

सोमाथ की आंखें सिकुड़ीं।

तभी दरवाजा खुलता चला गया।

बाहर से सूर्य की तेज रोशनी भीतर आई।

"मेरे पास आओ सोमारा।" बबूसा बोला।

सोमाथ समझने वाली नजरों से सब कुछ देख रहा था।

सोमारा पास पहुंची तो बबूसा ने उसके कान में कुछ कहा।

सुनकर सोमारा पीछे हट गई।

"तुम क्या करने की सोच रहे हो?" सोमाथ बोला।

"सोमाथ। तुम मुझे नहीं मार सकते। मैं बाहर कूद जाऊंगा।" बबूसा मुस्कराकर कह उठा।

"ये बच्चों जैसी बातें हैं।" सोमाथ मुस्करा पड़ा।

"देख लो, मैंने रस्सा भी बांध रखा है। पोपा की रफ्तार भी बहुत कम है। मैंने कम की थी और...।"

"ऐसी बातें करके तुम मुझे भटकाने की चेष्टा कर रहे हो।" सोमाथ बबूसा की तरफ बढ़ा—"तुम कब से मुझे मारने की सोच रहे हो और जानते भी हो कि मुझे नहीं मार सकते। तुम्हारा दिमाग खराब है जो तुमने मेरे खिलाफ साजिश रची। अब मैं किसी भी कीमत पर जिंदा नहीं छोड़ने वाला।"

सोमाथ बबूसा के पास आ पहुंचा था कि उसी पल बबूसा, सोमाथ पर झपट पड़ा।

सोमाथ ने फुर्ती से खुद को बचाया और बबूसा के सिर पर जोरों का घूंसा मारा।

बबूसा का सिर झनझना उठा और दो-तीन कदम पीछे हट गया। सोमाथ को देखा।

दोनों कई पलों तक एक-दूसरे की आंखों में देखते रहे।

"मुझे ये समझ नहीं आया कि तुमने पोपा का दरवाजा क्यों खोला है?" सोमाथ बोला।

"ताकि जब मुझे तुमसे जान का खतरा लगे तो मैं बाहर कूद जाऊं। तभी तो पोपा की रफ्तार भी कम कर रखी है।"

"बात कुछ और है।"

"जो भी तुम समझो। मगर मैंने सच बात कही है।"

"किलोरा कहां है?"

"चालक कक्ष में बेहोश है।"

"तुम अपनी किसी योजना पर काम कर रहे हो। योजना को तुमने चक्रव्यूह का नाम दे रखा है। मैंने तुम्हारी बातें सुनीं थीं। पोपा के दरवाजे को इस प्रकार खोलना अन्यथा नहीं है। इसमें तुम्हारी कोई चाल छिपी है। कहीं तुम मुझे तो पोपा से बाहर नहीं फेंकना चाहते।"

"तुम्हारी बात पर मैं गौर करूंगा। खयाल बुरा नहीं। पर ये दरवाजा मैंने अपने लिए खोला है।"

"तुम दूसरों से मुझ पर वार कराते रहे और खुद यहां पर रहे। मतलब कि तुम मुझे यहां बुलाना चाहते थे।"

"महापंडित ने तुम्हारा निर्माण बहुत बढ़िया किया है। इतना सब कुछ तुम कैसे सोच लेते हो। महापंडित का कमाल हो तुम।"

सोमारा, घबराई-सी एक तरफ खड़ी थी।

तभी सोमाथ, बबूसा की तरफ बढ़ा और हाथ बढ़ाकर बबूसा की गर्दन पकड़नी चाही। बबूसा ने सोमाथ का हाथ पकड़कर छटका और जोरों का घूंसा सोमाथ के चेहरे पर मारते पीछे हो गया।

"तुम अच्छी तरह जानते हो कि इन घूंसों का मुझ पर कोई असर नहीं होगा। ये सब करके तुम मुझे उलझाना चाहते हो और मैं सोच रहा हूं कि तुम आखिर क्या चाल चलने वाले हो।" सोमाथ ने शांत स्वर में कहा।

बबूसा मुस्कराकर सोमाथ को देखने लगा।

"तुमने रस्सा क्यों बांधा हुआ है?" सोमाथ बोला।

"तुमसे बचने के लिए मुझे बाहर छलांग लगानी पड़ सकती है। बाहर आकाश गंगा है। गुरुत्वाकर्षण नहीं है। मैं नहीं चाहता कि मैं बाहर ही रह जाऊं और पोपा आगे निकल जाए।"

"तुम असल बात से मुझे भटका रहे हो।" सोमाथ की आंखें सिकुड़ गई।

बबूसा ने कुछ नहीं कहा।

"तुम्हें खत्म कर देना ही बेहतर होगा बबूसा।" सोमाथ ने एकाएक निर्णायक स्वर में कहा और बबूसा की तरफ बढ़ा।

पास पहुंचकर सोमाथ ने दोनों हाथ बढ़ाकर बबूसा को पकड़ना चाहा।

बबूसा ने तुरंत सोमाथ के आगे बढ़ते हाथों को थामा और पीछे को बेहद तेज झटका दिया।

सोमाथ मात्र एक कदम ही पीछे की तरफ लड़खड़ाया, संभल गया।

तभी तेजी से नगीना ने भीतर प्रवेश किया और यहां का नजारा देखकर ठिठक गई। उसके बाल बिखरे हुए थे। चेहरे पर हल्की-सी चोट का निशान था। वो बेहोशी से बाहर आई तो मोना चौधरी और जगमोहन को भी वहां बेहोश पड़े देखा। उसके बाद सीधी भागती हुई यहां आ पहुंची थी। बबूसा और सोमाथ को उसने टकराव की स्थिति में देखा। आखिरकार उसकी कठोर निगाह बबूसा पर टिक गई कि तभी सोमारा उसका हाथ पकड़कर एक तरफ ले गई और कान में कुछ कहा। सुनकर नगीना के माथे पर बल पड़ गए। उसने बबूसा और सोमाथ को देखा। अपनी जगह पर खड़ी रही।

बबूसा ने मुस्कराकर नगीना को देखा तो नगीना ने सहमति से सिर हिला दिया।

तभी सोमाथ ने बबूसा पर छलांग लगा दी। बबूसा खुद को बचा न सका और सोमाथ ने दोनों बांहों के बीच बबूसा को भींच लिया। ऐसा होते ही सोमाथ, बबूसा पर अपनी बांहों का दबाव बढ़ाने लगा। हर पल उसकी बांहें कसती जा रही थीं। बबूसा ने खुद को आजाद कराने के लिए जोर लगाया, परंतु बेकार रहा।

"सोमारा।" बबूसा कसमसाकर बोला—"इस पर वार करो।"

सोमारा तुरंत तलवार थामे आगे बढ़ी।

"इसके सिर पर वार करना।" नगीना दांत भींचकर बोली।

सोमाथ ने गर्दन घुमाकर सोमारा को देखा।

तब तक सोमारा के हाथ में दबी तलवार उठ चुकी थी। नीचे आई तो तलवार से सोमाथ का सिर बीच में से माथे तक कट गया। सोमारा फुर्ती से तलवार थामे पीछे हो गई। ऐसा होते ही सोमाथ की पकड़ ढीली हो गई। बबूसा आजाद होकर पीछे हटता चला गया।

सोमाथ ने दोनों हाथों से अपने कटे सिर को दबा लिया और खड़ा रहा।

तभी बबूसा, सोमाथ पर झपटा।

सोमाथ ने फौरन टांग घुमाई जो कि बबूसा के पेट में जा लगी। बबूसा के होंठों से कराह निकली और लड़खड़ाकर वो पीछे की तरफ जा गिरा फिर फुर्ती से उठ खड़ा हुआ।

उसी पल सोमाथ ने सिर से अपने दोनों हाथ हटा लिया। उसका सिर पहले की तरह सामान्य हो चुका था। अब सोमाथ के चेहरे पर कठोरता दिखने लगी थी। उसने पलटकर सोमारा को देखा।

सोमाथ को अपनी तरफ देखते पाकर सोमारा का चेहरा फक्क पड़ गया।

सोमाथ, बबूसा को छोड़कर सोमारा की तरफ बढ़ने लगा।

"बबूसा।" सोमारा चीख उठी—"मुझे बचाओ। ये मुझे...।"

"मैं जा रहा हूं सोमाथ। तुम मुझे नहीं मार सकते।" बबूसा ने ऊंचे स्वर में कहा और पोपा के खुले दरवाजे से छलांग लगा दी। वहां फैला रस्सा बाहर की तरफ सरकता चला गया और आखिरकार रस्से के आखिरी सिरे पर रुक गया, जो कि पाइप से बंधा था। ऐसा होते पाकर सोमाथ के कदम ठिठक गए। चेहरे पर उलझन उभरी और पलटकर पोपा के खुले दरवाजे पर आ खड़ा हुआ और नीचे झांका। परंतु बबूसा नीचे नहीं, पीछे दिखा। रस्से से बंधा वो बेहद मध्यम गति से पोपा के साथ साथ खिंचा चला आ रहा था। आकाश गंगा में गुरुत्वाकर्षण न होने के कारण, बबूसा नीचे की तरफ नहीं, पोपा के आस-पास डोल रहा था, परंतु बंधे रस्से की वजह से, पोपा के साथ खिंचे चले आने की वजह से, अब वो पोपा के पीछे दिखने लगा था।

दरवाजे पर खड़ा सोमाथ, रस्से में जकड़े बबूसा को देख रहा था।

बबूसा भी उसे देख रहा था। मुस्करा रहा था।

अभी चंद पल ही बीते होंगे सोमाथ को वहां खड़े कि एकाएक नगीना अपनी जगह से दौड़ी और अगले ही पल उछलकर फ्लाईंग किक सोमाथ की पीठ पर मारी।

ये जबर्दस्त धक्का था सोमाथ के लिए।

सोमाथ के पैर उखड़े और वह पोपा से बाहर गिरता चला गया। बाहर गिरते ही उसका शरीर हवा में तैरने लगा और पोपा मध्यम-सी रफ्तार आगे बढ़ता चला गया। रस्से से बंधा बबूसा पोपा से बंधा, पोपा के साथ खिंचा चला आ रहा था। सोमाथ चंद पलों में ही पीछे छूट गया था।

उधर नगीना ने सोमाथ को किक मारते ही अपने को संभालने की चेष्टा की। पोपा का ऊपर का हिस्सा उसने थाम लिया खुद को रोकने के लिए। क्योंकि वो बहुत वेग के साथ, सोमाथ की तरफ बढ़ी थी, परंतु लाख चेष्टा के बाद भी खुद को संभाल न सकी। यहां तक कि सोमारा तेजी से दौड़ी थी गिरती नगीना को थामने के लिए, परंतु उसके करीब पहुंचने के पहले ही, नगीना खुले दरवाजे से बाहर गिरती चली गई।

"नगीना। ऽ-ऽ-ऽ।" सोमारा चीखी।

परंतु अब तक नगीना बाहर खुली सीढ़ियों का एक किनारा थाम चुकी थी और पोपा के साथ-साथ खिंचने लगी। किसी प्रकार नगीना ने खुद को खुली सीढ़ी पर पहुंचाया, परंतु सीढ़ी पर पकड़ बनाए रखी। वो जानती थी कि हाथ छूटा नहीं कि खेल खत्म। फिर उसने सीढ़ी का रेलिंग, जो कि एक पाइप की तरह था, वो थामा और उसे पकड़कर धीरे-धीरे दरवाजे की तरफ आने लगी। दरवाजे पर खड़ी सोमारा का दिल जोरों से बज रहा था।

नगीना कुछ मिनटों की मेहनत के बाद दरवाजे के करीब आ पहुंची तो सोमारा ने अपना हाथ आगे बढ़ाया, जो कि नगीना ने थाम लिया। नगीना ने कोई जल्दी नहीं की भीतर आने की। उसकी जल्दबाजी सोमारा को बाहर गिरा सकती थी। फिर कुछ ही पलों में नगीना भीतर थी।

"तुम बच गई नगीना। मेरा दिल तो देखो, डर के मारे, कितना जोरों से धड़क रहा है।" सोमारा कह उठी।

"सोमाथ को पोपा से बाहर धकेलना भी तो आसान नहीं था।" नगीना पोपा के फर्श पर बैठी, गहरी सांसें लेती कह उठी।

"अब सोमाथ से हमारा पीछा छूट गया। बबूसा का चक्रव्यूह बहुत अच्छा रहा।" सोमारा मुस्कराई।

"बबूसा को देखो।"

सोमारा ने उसी पल बाहर झांका।

बबूसा, रस्से को पकड़-पकड़कर काफी करीब आ चुका था।

"आ जाओ बबूसा।" सोमारा धड़कते दिल के साथ कह उठी।

"मेरी फिक्र मत करो।" बबूसा खुशी से बोला—"हमने सोमाथ से पीछा छुड़ा लिया।"

अगले कुछ ही मिनटों में बबूसा पोपा के भीतर आ गया। खुला दरवाजा बंद कर दिया।

▭ ▭

बबूसा चालक कक्ष में पहुंचा। किलोरा के होश आ चुके था, परंतु वो बंधा हुआ था। पोपा इस वक्त बेहद मध्यम रफ्तार से आगे बढ़ रहा था। किलोरा को देखकर बबूसा मुस्कराया और उसके बंधन खोलने लगा।

"ये क्या हरकत की तुमने बबूसा।" किलोरा नाराजगी से कह उठा—"रानी ताशा से तुम्हारी शिकायत करनी पड़ेगी मुझे।"

"अब सब ठीक है। ऐसा फिर नहीं होगा।"

"तुमने मेरे साथ ऐसा क्यों किया?"

"मुझे बेहद जरूरी काम करना था और उसके लिए पोपा की रफ्तार बहुत कम करनी थी।" बंधन खोलता बबूसा बोला—"मैं तुम्हें ऐसा करने को कहता तो तुम नहीं मानते। इसलिए तुम्हें बेहोश करना पड़ा।"

"परंतु ऐसा क्या काम था जो कि तुम...।"

बबूसा ने बंधन खोल दिए।

"अब पोपा को संभालो। उसकी रफ्तार खूब तेज कर दो ताकि हम जल्दी से सदूर पर पहुंच सकें।" बबूसा खुशी से मुस्करा रहा था।

"मुझे तुम्हारी बातें समझ नहीं आ रहीं कि तुम क्या कर...।"

"बातें खत्म हो चुकी हैं। तुम पोपा को संभलो।" बबूसा हंस पड़ा।

किलोरा उठ खड़ा हुआ। चेहरे पर उलझन थी।

बबूसा चालक कक्ष से बाहर निकलता चला गया। वहां से पोपा के ऊपरी हिस्से में, रानी ताशा वाले कमरे के बाहर जा पहुंचा। दरवाजा बंद था तो उसने बेचैनी भरे अंदाज में दरवाजा थपथपाया फौरन ही दरवाजा खुला। सामने रानी ताशा खड़ी थी।

"कहो बबूसा।"

"एक खबर है मेरे पास मेरे लिए तो वो अच्छी है परंतु आपके लिए शायद सुखद न हो रानी ताशा।"

"कहो।" रानी ताशा ने गहरी निगाहों से बबूसा को देखा।

"राजा देव भी अगर पास में होते तो...।"

तभी देवराज चौहान उनके पास आ पहुंचा।

"राजा देव।" बबूसा खुशी से कह उठा—"मैं जीत गया। सोमाथ अब नहीं रहा।"

देवराज चौंका, फिर मुस्करा पड़ा।

"असम्भव।" रानी ताशा के होंठों से निकला—"सोमाथ को खत्म नहीं किया जा सकता। महापंडित ने मुझे ऐसा ही कहा था।"

"आप सही कहती हैं रानी ताशा। सोमाथ को मैं खत्म नहीं कर सका, परंतु उसे पोपा के बाहर फेंक दिया।"

"कब?" रानी ताशा के माथे पर बल पड़ गए।

"कुछ ही देर पहले। अभी की तो बात है और आपको खबर देने आ गया था।"

रानी ताशा ने गर्दन घुमाकर देवराज चौहान को देखा।

देवराज चौहान के होंठों पर मुस्कान थी।

"सोमाथ ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था बबूसा?" रानी ताशा बोली।

"उसने मुझे मारना चाहा था। मुझे पसंद नहीं कि कोई मुझे जीत ले।" (विस्तार से जानने के लिए पढ़ें **'बबूसा खतरे में'**।)

"तुम जिद्दी हो।" रानी ताशा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"महापंडित ने मेरे में राजा देव के गुण डालकर, इस बार मेरा जन्म कराया था।" बबूसा खुश था फिर देवराज चौहान से कहा—"इस काम में जगमोहन, मोना चौधरी और आपकी पृथ्वी की पत्नी नगीना ने मेरी सहायता की। नगीना ने तो काफी ज्यादा सहायता की सोमाथ को पोपा के बाहर फेंकने में। उसी कारण मैं सफल हो सका।"

देवराज चौहान मुस्कराते हुए बबूसा को देख रहा था।

"सोमाथ मेरा प्यारा साथी था बबूसा।"

"क्षमा करें रानी ताशा। मैं उसे अपना दुश्मन मान चुका था तब से, जब उसने मेरा गला दबाकर मुझे मारना चाहा था।"

"तुमने अच्छा नहीं किया।" रानी ताशा के चेहरे पर गुस्सा चमका।

"मुझे अभी काम है, मैं चलता हूं।" बबूसा ने कहा और पलटकर चला गया।

रानी ताशा ने पलटकर देवराज चौहान को देखते हुए कहा।

"देव, आपने बबूसा को सिर पर चढ़ा रखा है।"

"खतरा उसे भी था। सोमाथ बबूसा को भी जान से मार सकता था।" देवराज चौहान ने कहा।

"सोमाथ मेरे हक में बहुत अच्छा था। मुझे उसका बहुत सहारा था।"

"अब तुम्हारा सहारा मैं हूं। तब मैं तुम्हारे पास नहीं था।" देवराज चौहान ने मुस्कराकर कहा।

"देव। मेरे देव।" रानी ताशा का स्वर कांपा और वो देवराज चौहान के करीब जा पहुंची।

देवराज चौहान ने रानी ताशा को बांहों में समेट लिया।

"आप कितने अच्छे हैं देव।" रानी ताशा का स्वर कांपा।

"तुम मेरे से ज्यादा अच्छी हो। मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकता ताशा।" देवराज चौहान ने प्यार से कहा।

"ओह। सदूर पर अब हमारा वक्त कितना अच्छा निकलने वाला है। हम कितने किस्मत वाले हैं देव।"
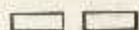
बबूसा वहां से कुछ आगे हो गया था कि तभी रानी ताशा का एक आदमी सामने से आया और बोला।

"बबूसा। महापंडित तुमसे बात करना चाहता है।"

"महापंडित?" बबूसा की आखें सिकुड़ी।

"वो सम्बंध बनाए हुए है। जाकर उससे बात करो।"

बबूसा तेजी से आगे बढ़ गया।

बबूसा उसी कमरे में पहुंचा। सामने स्क्रीन पर महापंडित की तस्वीर नजर आ रही थी। बबूसा ने हैड फोन जैसा यंत्र कानों पर लगाया तो स्क्रीन पर नजर आ रहे महापंडित की निगाह अपने पर टिकती देखी बबूसा ने।

"कहो महापंडित।" बबूसा बोला।

"मेरी मशीनों ने मुझे अभी-अभी बताया है कि तुमने सोमाथ को कोई नुकसान पहुंचा दिया है।" महापंडित की आवाज यंत्र से उभरी।

"सच में?" बबूसा मुस्कराया—"पर तुमने तो सोमाथ को ऐसा बनाया कि उसे नुकसान नहीं पहुंचाया जा सकता।"

"इसी कारण तो मैं हैरान हूं कि ऐसा कैसे हो सकता है।"

बबूसा बराबर मुस्कराए जा रहा था।

"मुझे बताओ तुम्हारे और सोमाथ के बीच क्या हुआ है?"

"इसमें कोई शक नहीं कि तुमने सोमाथ का बेहतरीन निर्माण किया था। उसकी ताकत, उसका दिमाग सब कुछ शानदार था। उसक मुकाबला नहीं किया जा सकता था। परंतु मैंने किसी तरह उसे पोपा के बाहर आकाशगंगा में गिरा दिया।"

"ओह।"

"अब सोमाथ पोपा पर नहीं है। वो आकाश गंगा में भटकता रहेगा। उसे करंटकहां से मिलता था महापंडित?"

"बैटरी से। वो खुद ही अपने भीतर बैटरी लगाता था बैटरी बदलते वक्त भी उसमें करंट रहता था। मैंने उसके भीतर ऐसा सिस्टम लगाया था कि बैटरी निकाल लेने के बाद भी देर तक उसके भीतर करंट रहे।" महापंडित की निगाह आवाज यंत्र में उभरी।

"तो जब तक उसकी बैटरी में करंट रहेगा, तब तक वो आकाशगंगा में भटकता हाथ-पांव मारता रहेगा फिर शांत हो जाएगा। मुझे इस बात का ज्यादा अफसोस नहीं कि मैंने तुम्हारी बेहतरीन चीज को बेकार कर दिया। मैंने उसे कभी भी पसंद नहीं किया।"

"ऐसा करके सोचते हो कि तुमने सोमाथ से पीछा छुड़ा लिया।" महापंडित स्क्रीन पर मुस्करता दिखा।

"बेशक। सोमाथ अब वापस नहीं आ सकता।"

"तुम सदूर पर पहुंचो। वहां सोमाथ तुम्हारे स्वागत में खड़ा मिलेगा।"

"ये कैसे सम्भव हो सकता है?" बबूसा के माथे पर बल दिखने लगे।

"मैं एक और सोमाथ बना चुका हूं।"

"क्या?"

"ठीक पहले वाले सोमाथ जैसा। नए सोमाथ के दिमाग में मैं मशीनों द्वारा हर वो जानकारी डालने जा रहा हूं जो पुराने सोमाथ के पास थी। उसके पास ये भी जानकारी होगी कि तुमने उसके साथ क्या किया।" महापंडित की आवाज यंत्र से उभर रही थी—"परंतु इस बार मैंने सोमाथ को कुछ लचीला बनाया है कि वो इंसानों का बेहतर दोस्त बन सके। उनकी तरह फालतू बातें कर सके।"

"मेरे खयाल में महापंडित, सोमाथ की अब किसी को भी जरूरत नहीं है।" बबूसा ने कहा।

"मेरी मशीनों ने मुझे बताया है कि सोमाथ की बहुत जरूरत पड़ेगी आने वाले वक्त में।"

"क्यों?"

चंद पलों के पश्चात महापंडित की आवाज पुनः यंत्र से उभरी।

"मशीनों का कहना है कि इस बारे में बबूसा से तब तक बात न करूं, जब तक वो सदूर पर न पहुंच जाए। अगर बात की गई तो बबूसा बातों का जवाब नहीं दे पाएगा। किसी ने उसे रोक रखा है।"

बबूसा समझ गया कि बातें 'धरा' से वास्ता रखती होंगी।

"अगर तुमने पहले ही मेरे से सोमाथ के बारे में जिक्र किया होता तो मैं सोमाथ से तुम्हारी दोस्ती करा देता।" महापंडित की आवाज उभरी।

परंतु बबूसा का ध्यान धरा की तरफ हो चुका था।

"क्या तुम जानते हो कि पोपा के सदूर पर पहुंचने पर क्या होने वाला है।" बबूसा बोला।

"मेरी मशीनों ने कई बातें बताई हैं परंतु मैं अभी तक नहीं जान पाया कि उस लड़की की हकीकत क्या है।"

"मैं जान चुका हूं।" बबूसा गम्भीर स्वर में बोला—"परंतु उसका नाम नहीं बता सकता अभी...।"

"मैं समझ रहा हूं।" महापंडित के स्वर में इस बार गम्भीरता थी।

बबूसा चुप रहा।

"राजा देव और रानी ताशा को लड़की की हकीकत के बारे में पता है?" महापंडित ने पूछा।

"हकीकत तो क्या, वो उसके बारे में कुछ भी नहीं जानते।"

"तुमने बताया?"

"कोशिश की, परंतु बताने में नाकाम रहा। सोमारा अवश्य जानती है।"

"अब शेष बातें तभी होंगी जब पोपा सदूर पर पहुंचेगा। परंतु सोमाथ को खो देने का मुझे अफसोस है। सोमाथ जैसी चीज का निर्माण करने में बहुत मेहनत और वक्त लगता है। मशीनों ने एक अजीब बात कही मुझसे।"

"क्या?"

"रानी ताशा, राजा देव को, सदूर पर पहुंचते ही खो देगी।"

"ऐसा ही होगा।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा—"इससे ज्यादा मैं अभी नहीं बता सकता महापंडित।"

"क्या रानी ताशा को इस बात का एहसास है?"

"उन्हें कुछ भी नहीं मालूम। ये सब धरा...ओह—बस करो महापंडित। बातों का रुख उधर ही मुड़ रहा है। इस बारे में मुझे बात करने से रोका जाता है। मैं चाहकर भी बात पूरी नहीं कर सकता।" बबूसा ने कठिनता से कहा।

उधर से महापंडित ने बात खत्म कर दी।

▭ ▭
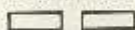
जगमोहन और मोना चौधरी को होश आ चुका था। इस वक्त वो सोमाथ के केबिन में ही थे। नगीना और सोमारा पास में थीं। उन्हें पता चल गया था कि बबूसा ने किस तरह सोमाथ को पोपा से बाहर आकाश गंगा में धकेल दिया। ये जानकर वो खुश थे कि सोमाथ से पीछा छूट गया। तब मोना चौधरी ने कहा।

"अब हमें देवराज चौहान से सीधी बात करनी चाहिए कि वो ये सब क्या कर रहा है।"

"तुम ठीक कहती हो। अभी तक सोमाथ की वजह से हमें देवराज चौहान से बात करने का मौका नहीं मिला था।" जगमोहन बोला।

"देवराज चौहान, रानी ताशा के साथ खुश है और अपनी इच्छा से ताशा के साथ रह रहा है।" नगीना कह उठी—"ऐसे में हमें उनके बीच नहीं आना चाहिए। देवराज चौहान की खुशी में ही मेरी...।"

"नहीं बेला।" मोना चौधरी का स्वर कठोर हो गया—"मैं बात जरूर करूंगी।"

"मोना चौधरी ठीक कह रही है भाभी।" जगमोहन गम्भीर दिखा—"हमें देवराज चौहान से स्पष्ट बात करनी चाहिए। पहले तो हमें सोमाथ के डर ने रोका हुआ था, लेकिन अब ऐसा कुछ भी नहीं...।"

तभी दरवाजा खुला और बबूसा ने भीतर प्रवेश किया।

"क्या हाल है दोस्तो।" बबूसा खुशी से कह उठा—"तुम सबकी सहायता के बिना, सोमाथ से पीछा नहीं छूट पाता।"

"परंतु तुमने भी अपना चक्रव्यूह बढ़िया बना रखा था।" जगमोहन मुस्करा पड़ा—"तभी तो काम हो सका।"

"तुम्हें चाहिए था कि हमें अपनी सोचों से अवगत करा देते। तुमने हमें पहले बताया क्यों नहीं कि क्या करना चाहते हो।" मोना चौधरी बोली।

"पोपा में ऐसे यंत्र लगे हुए हैं कि सोमाथ हमारी बातें सुन सकता था, इसलिए मैंने हमेशा ही चक्रव्यूह बताने की बात को नजरंदाज किया।" कहने के साथ ही उसने नगीना को देखा—"तुमने बेहद अच्छा मेरा साथ दिया, नहीं तो सोमाथ को आकाश गंगा में गिराने में दिक्कत आती।"

"मुझे सोमारा ने कान में बताया था कि सोमाथ को आकाशगंगा में गिराना है। उस वक्त सोमाथ खुले दरवाजे पर खड़ा था और ये अच्छा मौका था कि मैं उसे बाहर धकेल देती, तब मैंने ऐसा ही किया।"

"जब सोमाथ वहां पहुंचा तो सोमारा के कान में मैंने ही बताया था कि सोनाथ को आकाशगंगा में गिराना है। जब वो सोमारा को मारने के लिए आगे बढ़ा तो सोमाथ का ध्यान भटकाने के लिए मैं आकाशगंगा में कूद गया। मैं जानता था कि मुझे देखने सोमाथ खुले दरवाजे पर जरूर आएगा और ऐसा ही हुआ। मैंने रस्सा बांध रखा था, इसलिए संभला रहा। पोपा की रफ्तार 'जीरो' पर मैं पहले ही ला चुका था। सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा मैंने सोचा था। अब सोचता हूं कि अगर नगीना वहां न होती तो सोमाथ को आकाशगंगा में गिराना आसान काम नहीं था। सोमारा इस काम को करने में कमजोर पड़ जाती।"

"हां।" सोमारा ने कहा—"मेरे लिए ये सच में कठिन काम था। मैं तब सोच ही रही थी और नगीना हरकत में आ गई।"

"हम देवराज चौहान से बात करने जा रहे हैं।" मोना चौधरी बोली—"अब हमें सोमाथ का डर नहीं रहा।"

"क्या बात करनी है राजा देव से?" बबूसा बोला।

"ये ही कि रानी ताशा के लिए बेला को क्यों छोड़ रखा...।"

"अभी ऐसी कोई बात मत छेड़ें।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा—"पोपा को सदूर पर पहुंचने दो।"

"तब क्या होगा जो...।"

"राजा देव फिर से नगीना के पास आ जाएंगे।"

"रानी ताशा को छोड़कर।" मोना चौधरी की आंखें सिकुड़ीं।

"हां।"

"ये बात तुम्हें देवराज चौहान ने कही?"

"नहीं। परंतु मुझे मालूम है कि ऐसा होने वाला है। मेरी बात का भरोसा करो।"

"स्पष्ट कहो कि तुम क्या कहना चाहते हो?" जगमोहन बोला।

"कुछ भी स्पष्ट नहीं बता सकता। अगर मुझ पर भरोसा है तो पोपा के सदूर पर पहुंच जाने का इंतजार करो। ऐसी बहुत-सी नई बातें हैं जो तुम सबको और परेशानी में डाल देंगी। मैं स्वयं आने वाले वक्त के बारे में चिंतित हूं।"

"तो हमें बताओ कि क्या बात है।" नगीना बोली।

"चाहकर भी नहीं बता सकता।" बबूसा के चेहरे पर सख्ती आ गई—"भरोसा करो मैं सच कह रहा हूं। अभी शांत रहो, चुप रहो। सोमाथ से हमने छुटकारा पा लिया है परंतु महापंडित का कहना है कि सदूर पर पहुंचने पर एक नया सोमाथ वहां पर मौजूद होगा।"

"क्या?" सोमारा चौंकी।

"ऐसा क्यों?" जगमोहन बोला।

"पता नहीं, पर महापंडित कोई भी काम बिना वजह नहीं करता। कुछ तो बात होगी ही। परंतु महापंडित कहता है कि इस बार सोमाथ पहले से अलग आदतों वाला होगा। हर तरफ परेशानी ही परेशानी है।" बबूसा गम्भीर दिख रहा था।

"तो देवराज चौहान से बात न करें?" जगमोहन सोच भरे स्वर में कह उठा।

"मुझ पर भरोसा रखो और पोपा को सदूर पर पहुंचने दो।"

उसके बाद बबूसा धरा के केबिन में पहुंचा।

दरवाजा खोला तो धरा को केबिन में टहलते पाया। उसे देखकर मुस्कराई तो निचला होंठ टेढ़ा हो गया। फिर वो बेड पर जा बैठी और बबूसा को शांत निगाहों से देखने लगी। कुछ पल उसे देखने के बाद बबूसा ने कहा।

"अब मैं फुर्सत में आ गया हूं। पहले मेरा ध्यान दो तरफ बंटा हुआ था।"

"बहुत खुश हो सोमाथ को पोपा से बाहर धकेल कर।"

"अब।" बबूसा ने धरा को गहरी निगाहों से देखा—"मैं तुम पर ध्यान दे सकता हूं। तुम...।"

"खूब।" धरा मुस्कराई तो निचला होंठ टेढ़ा हो गया—"अब तुम मुझ पर ध्यान देने वाले हो।"

बबूसा धरा को देखता रहा।

"सोमाथ को पोपा से बाहर धकेल कर ये तो नहीं सोच रहे कि तुम मुझे भी बाहर फेंक दोगे।"

"मैं ऐसा करना चाहता हूं।" बबूसा बोला।

"तो करो, आओ मेरे पास—मुझे उठाओ और पोपा से बाहर फेंक दो।" धरा हंस पड़ी।

बबूसा वहीं खड़ा धरा को देखता रहा।

"मुझसे डरते हो।" धरा ने कहा।

"बबूसा किसी से नहीं डरता। डरती तो तुम हो जो किन्हीं ताकतों का सहारा ले रही हो।"

"वो ताकतें ही तो मेरे वजूद को कायम रख रही हैं, वरना खुंबरी तो कब की खत्म हो गई होती।"

"मैं कोई ऐसा रास्ता तलाश करूंगा कि जिससे तुमसे मुकाबला कर सकूं।"

"तो तुम मेरा मुकाबला करने की सोच रहे हो।" धरा हंसी—"मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?"

"तुमने अपनी ताकतों से, राजा देव को रानी ताशा को दिवाना बना रखा है। इससे राजा देव भी धोखे में हैं और रानी ताशा भी धोखे में जी रही है। क्योंकि सदूर पर पहुंचते ही राजा देव पर से तुम्हारी ताकतों का असर हट जाएगा और वो रानी ताशा को छोड़कर, वापस नगीना का हाथ थाम लेंगे। इससे रानी ताशा को कितनी तकलीफ होगी।"

"मुझे क्या, मेरा मतलब तो सदूर पर पहुंचने से है।"

"और तुम सदूर की रानी बनने की सोच रही हो।"

"सदूर की मालकिन बनना मेरे लिए नया अनुभव नहीं है। मैं पहले भी सदूर की मालकिन थी। धरा ने तनकर कहा—"सदूर सिर्फ मेरा है। अब फिर मेरी ताकतें मुझे सदूर की मालकिन बना देंगी। लेकिन मेरा पहला काम होगा डुमरा से पांच सौ साल, मुझे सदूर से दूर रखने का बदला लेना।" धरा के चेहरे पर दरिंदगी नाच उठी—"पहले मैं डुमरा को मौत की नींद सुलाऊंगी फिर सदूर की रानी बनूंगी। बहुत गलत किया था डुमरा ने मेरे साथ—मैं उसे... ।"

"तुम्हारी ताकतों में क्रूरता है, डुमरा ने इसीलिए तुम्हें सदूर से भगा देना चाहा।"

धरा ने बबूसा को क्रोध भरी नजरों से घूरा।

"तुम खुंबरी के सामने डुमरा को सही कह रहे हो।" धरा ने कठोर स्वर में कहा।

"सही बात कहने में गलत क्या?"

"डुमरा गलत है। मैंने उसे कुछ नहीं कहा था। उसकी मेरी कोई लड़ाई नहीं थी।" धरा फुंफकार उठी।

"इस बात का जवाब तो डुमरा ही दे सकता है।" बबूसा बोला।

उसी पल बबूसा को लगा किसी ने उसके पैरों को पकड़कर खींच लिया हो।

बबूसा धड़ाम से नीचे जा गिरा। होंठों से कराह निकली। वो संभला और

जल्दी खड़ा हो गया। धरा गुस्से से बबूसा के घूर रही थी। बबूसा ने उसके चेहरे के भाव देखे तो बोला।

"ये तुमने मेरे साथ क्या किया?"

"तुम्हें डुमरा को सही कहने की सजा मिली है। दोबारा तुमने ऐसा कुछ कहा तो सजा और भी सख्त होगी।"

"तुम्हारा मतलब कि मैं तुम्हारे हक में बात कहूं।"

धरा के चेहरे पर क्रोध नाच रहा था।

"मैंने तुम्हें एक-एक बात बताई कि मेरे और डुमरा के बीच क्या हुआ था। तब भी तुम्हें समझ न आई कि गलती किसकी थी।"

"मैं समझ सकता हूं कि डुमरा तुम्हारी तरफ क्यों बढ़ा होग।"

"क्यों?"

"क्योंकि तुम सदूर की शासक थी और मासूम लोगों पर जुल्म और क्रूरता कर रही थी।"

"तो इसमें डुमरा का क्या जाता है। मैं सदूर की रानी हूं जो मेरे मन में आएगा, वे करूंगी।"

"डुमरा जानता था कि तुम नागाथ की ताकतों का इस्तेमाल करती हो, जो कि क्रूर हैं।"

"इससे डुमरा को क्या।" धरा फुंफकार उठी।

"इस बात का जवाब डुमरा ही देगा। वो बिना वजह तो तुम्हारी तरफ बढ़ा नहीं होगा। तुमने उससे नहीं पूछा?"

"वो बेवकूफ मेरे हर सवाल पर एक ही रट लगाए हुए था कि नागाथ की ताकतों को छोड़ दूं।"

"और तुम्हें ये बात पसंद नहीं थी।"

"इसी से समझ लो कि ये बात मुझे कितनी नापसंद थी कि मैंने पांच सौ साल सदूर से दूर रहना पसंद किया, परंतु उन ताकतों को नहीं छोड़ा। उन ताकतों ने इस बात का सिला भी दिया मुझे। वो हमेशा मेरे साथ रहीं, इन पांच सौ सालों में। इस वक्त भी मुझे वापस सदूर पर पहुंचाने में, सहायक हो रही हैं। ऐसी ताकतों के बिना कौन रहना चाहेगा। मेरा वजूद ही इन ताकतों के साथ है, वरना खुंबरी बेकार है।"

"तुमने इन ताकतों को देखा है?" बबूसा ने गम्भीर स्वर में पूछा।

"सहायक ताकतों को नहीं, परंतु मुख्य ताकतों से सदूर पर मेरी मुलाकात होती थी। वो मुख्य ताकतें जो सहायक ताकतों से काम लेती हैं। तुम इन बातों को नहीं समझ पाओगे बबूसा।"

"मुख्य ताकतें इंसान के रूप में होती हैं?"

"नहीं। उनका अपना रूप होता है। सबसे जुदा, सबसे अलग रूप।"

"वो तुमसे मिलने आती हैं?"

"मैं जब भी बुलाती हूं तो ताकतें आती हैं। क्यों न आएंगी, वो मेरा हुक्म मानती हैं। वो सब मेरे काबू में हैं। नागाथ महान था, जिसने इन ताकतों को काबू में कर रखा था।" धरा मुस्कराई तो निचला होंठ टेढ़ा हो गया।

"तुम सदूर पर कहां जाओगी?"

"अपनी उसी गुप्त जगह पर, जहां दोलाम मेरे शरीर को सुरक्षित रखे हुए है और मेरी हर जरूरी चीज वहां पर मौजूद है। सदूर छोड़ते वक्त पांच सौ साल पहले मैं पूरी तैयारी करके चली थी कि वापसी पर मेरे को किसी तरह की परेशानी न हो, अपनी चीजों को तलाशने में।" धरा ने हंसकर कहा।

"वो जगह कहां है?"

"ये नहीं बताऊंगी। बताने की जरूरत भी क्या है।"

"तुम डर रही हो, तभी नहीं बता रही।"

"मैं शोर नहीं चाहती कि वहां पर तुम या कोई और आकर मेरी शांति भंग करे। वहां पहुंचकर मुझे बहुत से काम करने हैं। अपनी ताकतों को जगाना है। मंत्रों वाला कटोरा तैयार करना है और भी बहुत कुछ...।"

"मुझे तो लगता है कि पांच सौ साल बीत जाने के बाद, तुम्हारा शरीर खराब हो गया होगा।"

"ऐसा कभी नहीं हो सकता।" धरा गुर्रा उठी—"दोलाम लापरवाही करके सजा का हकदार नहीं बनना चाहेगा। उसने मेरे शरीर को बहुत हिफाजत से रखा होगा।"

"पांच सौ सालों में, कितनी भी हिफाजत में रखा जाए, कोई भी शरीर सलामत नहीं रहता।" बबूसा ने कहा।

"दोलाम बहुत काबिल इंसान है। वो अपना काम करना बखूबी जानता है।"

"पांच सौ साल जितनी लम्बी किसी की उम्र नहीं होती। शायद दोलाम मर गया हो।"

"वो जिंदा है। स्वस्थ है। बिल्कुल पहले की तरह।"

"तुम्हें कैसे पता?"

"मेरी ताकतें मुझे बताती रहती हैं। दोलाम को मेरी ताकतें उम्र दे रही हैं कि वो मेरे शरीर को सुरक्षित रख सके।"

"तुम्हारी ताकतें भी तुम्हारे शरीर का ध्यान रख रही होंगी?"

"ये काम ताकतें नहीं कर सकतीं। परंतु दोलाम से ये काम करवा सकती हैं। दोलाम को किसी भी चीज की जरूरत हो तो ये बता देती हैं कि वो चीज कहां पर मिलेगी...।"

"इस वक्त 'बटाका' कहां है?"

"उसी गुप्त जगह पर सुरक्षित रखा है।"

"मैं तुम्हारे साथ वहां चलना चाहूं तो क्या मुझे साथ ले चलोगी?" बबूसा ने कहा।

"मुझे तुम्हारी कोई जरूरत नहीं।" धरा ने स्पष्ट इंकार किया।

"तो क्या हो गया, फिर भी मैं तुम्हारे साथ चल सकता हूं।"

धरा चंद पल चुप रहकर बोली।

"तुम साथ नहीं चल सकते। मुझे इंकार का इशारा मिल रहा है।"

"कौन दे रहा है इशारा?"

"वो ही ताकत दे रही है जिसने तुम्हें अभी सजा दी थी।"

"तो तुम ताकतों के इशारे पर काम करती हो।"

"कभी-कभी। ताकतों की सलाह मेरे फायदे के लिए ही होती है। मैं खुशी से उनकी बात मानती हूं।"

"तो अब तुम सदूर पर पहुंचकर डुमरा से बदला लोगी।"

"ये मेरा पहला काम है। उसके बाद ही सदूर की रानी बनूंगी।"

"तुम रानी बनोगी तो रानी ताशा—राजा देव का क्या होगा, जो अभी सदूर के मालिक हैं।"

"ऐसे मामूली लोगों की मैं कभी भी परवाह नहीं करती।" धरा मुस्कराई तो होंठ टेढ़ा हो गया।

बबूसा की गम्भीर निगाह धरा पर थी।

"तुम तो देवराज चौहान के बहुत वफादार हो।"

"राजा देव को मैं पसंद करता हूं।"

"मुझे पसंद नहीं करते?"

"तुम्हें? मैं सोमारा से शादी करूंगा।"

"गलत मत समझो। मैं सेवक के नाते तुमसे बात कर रही हूं कि अगर तुम मुझे भी देवराज चौहान की तरह पसंद करो तो मैं तुम्हें अपना सेवक बना लूंगी। ये मत भूलो कि मैं अब सदूर की रानी बनूंगी। मेरी सेवा में रहकर तुम्हें बहुत फायदा होगा।"

"मैं सिर्फ राजा देव की सेवा कर सकता हूं।" बबूसा मुस्कराया—"किसी और की नहीं। क्योंकि मैं राजा देव को पसंद करता हूं। राजा देव के साथ रहता हूं तो मुझे बहुत खुशी मिलती है। तुम कोई और सेवक ढूंढ लो।"

धरा मुस्कराई तो उसका निचला होंठ टेढ़ा हो गया।

"अगर मुझे पृथ्वी ग्रह पर ही पता चल जाता कि तुम खुंबरी हो तो मैं तुम्हें कभी भी साथ नहीं लाता।" बबूसा बोला।

"क्यों?"

"क्योंकि तुम सदूर की शांति भंग करने वाली हो। डुमरा भी अब बहुत बूढ़ा हो चुका होगा और तुम...।"

"वो बूढ़ा नहीं है।" थरा ने इंकार में सिर हिलाया—"महापंडित अपने पिता डुमरा को, बूढ़े होने पर, हर बार उसे नया जवान शरीर दे देता है। मेरी ताकतें मुझे बता चुकी हैं कि कुछ वक्त पहले ही डुमरा को नया शरीर मिला है।"

"फिर तो वो तुम्हें जबर्दस्त टक्कर देगा।"

थरा की आंखों में खतरनाक चमक उभरी। वो मुस्कराई।

"तुम जाओ बबूसा। बहुत बातें हो गईं। तुम्हारे और मेरे रास्ते अलग हैं। तुम देवराज चौहान की सेवा करो, जिसका कोई भविष्य नहीं है। मैं जल्दी ही तुम्हें सदूर की मालकिन बनी दिखूंगी। खुंबरी सबसे ताकतवर है। सदूर की एकमात्र ताकत खुंबरी होगी।" कहने के साथ ही थरा ठहाका मारकर हंस पड़ी—"कोई मेरा मुकाबला नहीं कर सकेगा।"

बबूसा पलटा और बाहर निकल गया। पतले रास्ते पर आगे बढ़ता चला गया। चेहरे पर गम्भीरता दिख रही थी।

वो अपनी ही सोचों में उलझ गया था कि खुंबरी सदूर पर क्या रंग दिखाने वाली है। ये बात पोपा में हर कोई जान चुका था कि बबूसा ने सोमाथ को आकाशगंगा में फेंक दिया है। रानी ताशा का एक कर्मचारी हाथों में सामान उठाए जा रहा था कि बबूसा को देखकर ठिठक गया और पास पहुंचने पर वो कह उठा।

"सोमाथ को तुमने आकाशगंगा में कैसे फेंका। जब से मैंने सुना है, तभी से हैरान हूं।"

जवाब में बबूसा उसे मुस्कराकर देखता, आगे बढ़ता चला गया।

बबूसा चालक कक्ष में पहुंचा। वो जानना चाहता था कि पोपा कितनी रफ्तार पर है।

"बबूसा।" किलोरा उसे देखते ही चिल्लाया—"पता चला तुमने सोमाथ को आकाशगंगा में फेंक दिया।"

"ऐसा कुछ नहीं है।" बबूसा विंडशील्ड के बाहर पोपा की रफ्तार को नजरों से पहचानता बोला—"सोमाथ सदूर पर हमारा इंतजार करता मिलेगा। मैंने उसे महापंडित के पास पहुंचा दिया है।"

"ये कैसी अजीब बात कर रहे हो। ऐसा कैसे हो सकता है। सोमाथ का मुकाबला करने में बहुत परेशानी आई होगी।"

"बहुत।"

"जब तुमने मुझे बेहोश करके बांधा, उसके बाद ही तुमने ये सब किया होगा।" किलोरा उत्सुक था।

"ठीक समझे।" बबूसा सूइयों पर निगाह मारकर बोला—"अभी तुम पोपा की रफ्तार और बढ़ा सकते हो। बढ़ाते क्यों नहीं?"

"ये रफ्तार ही काफी ज्यादा है। मैं पोपा को खतरे में नहीं डालना चाहता।" किलोरा ने कहा—"हमें सुरक्षित होकर यात्रा करनी चाहिए, जम्बरा ने मुझे ये ही सिखाया है कि जहां तक हो सके पोपा की रफ्तार कम रखो।"

"मैं जल्दी सदूर पर पहुंचना चाहता हूं।"

"पोपा की रफ्तार मैं इससे तेज नहीं कर सकता। ये अभी भी तूफानी रफ्तार से जा रहा है।"

बबूसा चालक कक्ष से बाहर निकला और पोपा के किचन में पहुंचा।

वहां दो आदमी खाना तैयार कर रहे थे। खुशबू फैली थी।

"जल्दी से खाना तैयार करो। मुझे भूख लगी है।" बबूसा ने कहा।

"हमें हैरानी है कि तुमने सोमाथ का मुकाबला करके उसे, पोपा के बाहर फेंक दिया। ये तुमने कैसे किया?" एक ने हैरानी से पूछा।

"हर कोई ये ही पूछ रहा है।" बबूसा ने कहा और वहां से चला आया।

वापस केबिनों की कतार में पहुंचा और एक केबिन में जगमोहन और नगीना बातें करते मिले।

"अब मजा आ रहा है।" बबूसा हंसकर बोला—"सोमाथ पोपा में नहीं है।"

जगमोहन और नगीना मुस्करा पड़े।

"भूख लग रही है। खाने का कोई इंतजाम हो जाए तो ज्यादा मजा आ जाएगा।" जगमोहन ने कहा।

"खाना तैयार हो रहा है।"

सोमारा, एक केबिन में मोना चौधरी के साथ बैठी थी।

बबूसा, सोमारा को बाहर बुला लाया और अकेले में, धरा (खुंबरी) की बातें करने लगा। बबूसा उसे खुंबरी के इरादों से अवगत करा रहा था। दोनों चिंतित थे।

"क्या हम धरा को पोपा के बाहर नहीं फेंक सकते?" सोमारा कह उठी।

"पोपा में खुंबरी की ताकतें सक्रिय हैं। हम कुछ करना चाहेंगे भी तो वो ताकतें हमें कुछ नहीं करने देंगी। मैंने जरा-सी डुमरा की साइड क्या ले ली, खुंबरी की ताकतों ने उसी पल मुझे 'धड़ाम' से नीचे गिरा दिया। खुंबरी सच में खतरनाक है, उससे जितना दूर रहा जाए, उतना ही अच्छा है। लेकिन एक अच्छी खबर है।"

"क्या?"

"महापंडित ने अपने पिता डुमरा को कुछ वक्त पहले ही नया शरीर

दिया है। मतलब कि डुमरा स्वस्थ है और खुंबरी का अच्छी तरह मुकाबला कर सकता है।" बबूसा ने बताया।

"तुम्हें कैसे पता ये बात?"

"खुंबरी ने बताया है।"

"क्या पता महापंडित को खुंबरी के बारे में मशीनों ने बता दिया हो, तभी उसने अपने पिता डुमरा को नया शरीर...।"

"मेरे ख्याल में महापंडित खुंबरी के बारे में नहीं जानता। जानता होता तो मुझे बता देता। अब हमारा बाकी का सफर आराम से कटेगा। क्योंकि जो भी होना होगा, वो सदूर पर होगा। आने वाले वक्त का इंतजार रहेगा मुझे।"

"तू भूल गया बबूसा, सदूर पर पहुंचकर सबसे पहला काम तुझे क्या करना है?" सोमारा ने बबूसा की बांह पकड़ ली।

"क्या?"

"मेरे से शादी करनी है तूने।"

"ओह, सच में, मैं भूल ही गया था।" बबूसा मुस्कराया—"ये तो सबसे जरूर काम है हमारे लिए।"

▭ ▭
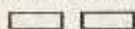
सदूर ग्रह तक, पहुंचने तक जिक्र के काबिल खास बात नहीं हुई। देवराज चौहान, रानी ताशा के साथ ही रहता और किलोरा को आराम देने के लिए चालक कक्ष में चला जाता। देवराज चौहान जब तक पोपा संभालता, तब तक किलोरा नींद ले लेता। इस दौरान बबूसा, चालक कक्ष में आ जाता और देवराज चौहान से बातें करता रहता। नगीना, मोना चौधरी और जगमोहन अपने केबिनों वाले हिस्से में ही रहे। देवराज चौहान से उनकी कोई मुलाकात नहीं हुई। रानी ताशा खुश थी कि राजा देव को लेकर, वापस सदूर पर जा रही है। धरा अपने केबिन में ही रही।

फिर वो वक्त भी आ गया जब पोपा सदूर पर जा पहुंचा था।

"हम सदूर पर पहुंच गए देव।" रानी ताशा का स्वर खुशी से कांप रहा था—"अब हम इकट्ठे सदूर पर जीवन बिताएंगे।"

"हां ताशा। सदूर को फिर से देखने का मेरा कितना मन है। मैं तुम्हारे साथ फिर से सदूर पर रहूंगा। कितना अच्छा लगेगा।"

"अब तो मैं आपसे और भी ज्यादा प्यार करूंगी।" रानी ताशा की नीली आंखों में आंसू चमक उठे।

देवराज चौहान ने हथेली से उसकी आंखें साफ करते कहा।

"मैं तुम्हारी आंखों में आंसू नहीं देख सकता।"

"आप कितने अच्छे हैं देव।" रानी ताशा का स्वर थरथरा उठा—"सदूर से भी ज्यादा अच्छे। आप सदूर को देखकर हैरान रह जाएंगे। बहुत बदल

गया है सदूर। कुछ भी पहले जैसा नहीं रहा। आप सदूर को पहचान ही नहीं पाएंगे।"

"सदूर कितना भी बदल जाए, पर हम नहीं बदलेंगे ताशा। हम एक-दूसरे के बने रहेंगे।" देवराज चौहान ने प्यार से कहा।

"हां देव। हम कभी नहीं बदलेंगे।"

तभी दरवाजा थपथपाया गया।

देवराज चौहान ने आगे बढ़कर दरवाजा खोला तो बबूसा सामने खड़ा था।

"राजा देव।" बबूसा उत्साह भरे स्वर में कह उठा—"हम सदूर पर आ पहुंचे हैं। पोपा सदूर की जमीन पर उतरने वाला है।"

"फिर तो मुझे किलोरा के पास चालक कक्ष में जाना चाहिए।" देवराज चौहान बोला।

"मैं भी आपके साथ चलूंगी देव।" रानी ताशा पास आते बोली।

देवराज चौहान और रानी ताशा अपने कमरे से निकलकर आगे बढ़ते चले गए।

बबूसा वहीं खड़ा उन्हें जाता देखता रहा फिर पलटकर उल्टी दिशा में चल पड़ा और कुछ रास्तों के पार करता धरा के केबिन पर पहुंचा और दरवाजे को खोला। सामने ही धरा मौजूद थी। वो बेड पर आंखें बंद किए लेटी हुई थी। आहट पाकर भी उसने आंखें नहीं खोलीं। बबूसा भीतर प्रवेश कर आया।

"आ बबूसा।" धरा उसी तरह बंद आंखों से कह उठी।

"तुम्हें कैसे पता कि मैं हूं।" बबूसा गम्भीर स्वर में बोला।

"मेरी ताकतों ने मुझे बता दिया था।"

"पोपा सदूर पर उतरने जा रहा है।"

"जानती हूं, मेरा सदूर आ गया। पांच सौ बरस भी अभी अभी पूरे हुए हैं।" धरा ने आंखें नहीं खोली थीं।

"अभी-अभी पूरे हुए हैं?"

"हां। कुछ पल पहले ही।"

"अगर पांच सौ बरस पूरे होने से पहले ही पोपा सदूर पर उतर जाता तो क्या फर्क पड़ता?"

"मेरी जान चली जाती। मैंने श्राप को स्वीकार कर लिया था तो मुझे श्राप के मुताबिक ही चलना पड़ रहा था। पांच सौ बरस पूरे होने के बाद ही मैं सदूर पर पहुंच सकती हूं, पहले पहुंची तो मेरी जान गई।" उसी मुद्रा में धरा ने कहा—"डुगरा ने श्राप में बहुत सख्त बातों का इस्तेमाल किया था। उसका इरादा था कि मैं जिंदा ही न रहूं, परंतु मैंने श्राप को स्वीकार करके बहुत समझदारी दिखाई थी। श्राप के स्वीकार करते ही डुगरा मन-ही-मन तिलमिला गया होगा कि मैंने श्राप स्वीकार कर लिया।" उसी पल धरा ने

आंखें खोलीं और उठ बैठी। शांत निगाहों से बबूसा को देखा—"डुमरा चाहता था कि मैं जिद पर अड़ जाऊं, श्राप स्वीकार न करूं और जान चली जाए मेरी। अगर उसे पता होता कि मैं श्राप स्वीकार कर लूंगी तो वो मुझे और भी कठोर श्राप देता।"

"ये भी सम्भव है कि अभी पांच सौ बरस पूरे न हुए हों और...।"

"पूरे हो गए हैं। पृथ्वी के वक्त के हिसाब से दस घंटे पहले, पांच सौ साल पूरे हो गए हैं। ये हिसाब मेरा नहीं, मेरी ताकतों का है। वो मेरे एक-एक पल का हिसाब रख रही हैं। ताकतों ने ही मुझे बताया था कि श्राप के पांच सौ साल पूर्ण हो गए हैं।"

"तुम्हें खुशी तो बहुत हो रही होगी, पांच सौ साल पूरे करके सदूर पर आ पहुंचने की।"

"बहुत।" धरा मुस्कराई तो उसका निचला होंठ टेढ़ा हो गया—"अपने घर आना किसे अच्छा नहीं लगता। मेरी ताकतें बेसब्री से मेरे वापस आने की राह देख रही हैं। पांच सौ साल की तकलीफ मैंने ही नहीं, मेरी ताकतों ने भी सही हैं, जो तब से एक ही जगह फंसी हुई हैं। परंतु अब वो पहले से ज्यादा ताकतवर हो गई हैं। वो सब खुशी से पागल हो रही हैं कि मैं जल्दी से उनके पास पहुंच जाऊं। सबसे ज्यादा तकलीफ तो डुमरा को हो रही होगी कि मैं सही-सलामत, पांच सौ साल पूरे होते ही वापस आ गई। ये वक्त मैंने बहुत कष्ट में रहकर पूरा किया है। इससे बड़ा कष्ट क्या होगा कि सदूर को छोड़कर मुझे दूसरे ग्रह पृथ्वी पर जाकर जन्म लेने पड़े। जबकि हर पल मुझे सदूर की मालकिन होने का एहसास होता रहा। तड़पती रही मैं। लेकिन वक्त कट ही गया। मैं डुमरा को बहुत बुरी मौत दूंगी कि...।"

"क्या डुमरा को पता होगा कि तुम आ गई हो?"

"उसके पास तो मेरा पूरा हिसाब होगा।"

"मतलब कि वो जानता है कि तुम पोपा में बैठकर आ रही हो?"

धरा, बबूसा को देखती रही फिर शांत अंदाज में मुस्कराई।

"डुमरा जानता है। मुझे मालूम है कि तुम क्या सोच रहे हो बबूसा।"

"क्या?"

"यही कि मेरे पोपा से बाहर आते ही डुमरा मुझ पर वार कर सकता है, जबकि मेरे पास दो-तीन ताकतें ही हैं।"

बबूसा की नजरें धरा पर ही रहीं।

"परंतु डुमरा ऐसा नहीं कर सकता।"

"क्यों?"

"डुमरा को श्राप के नियम से चलना होगा, वरना मुझे दिया श्राप उसे भी भुगतना पड़ सकता है।"

"कैसा नियम?"

"नियम है कि श्राप पूरा करने पर, श्राप देने वाला, पहला वार उस पर तब तक नहीं करेगा जब तक कि श्राप पूरा करने वाला उस पर वार न कर दे। अगर अब डुमरा ने वार मुझ पर कर दिया तो पांच सौ सालों का श्राप उसे भी भुगतना पड़ेगा।"

"ओह।"

"डुमरा मेरे पहले वार का इंतजार करेगा।" धरा खतरनाक अंदाज में हंस पड़ी—"पर मैं उसे निराश नहीं करूंगी। जल्दी ही उस पर वार करके उसे वार करने का मौका दूंगी। खुंबरी किसी से झगड़ा लेती है तो छाती ठोककर सामने वाले को भी मौका देती है।"

"मैं तुम्हें एक रास्ता बता सकता हूं कि उससे, ये झगड़ा नहीं होगा।" बबूसा ने कहा।

"रास्ता?" धरा हंसी और बबूसा को देखा।

"तुम डुमरा पर वार न करो।"

"तुम्हारा मतलब कि मैं डुमरा को माफ कर दूं।" धरा के माथे पर बल पड़ गए।

"कुछ भी समझो। इससे झगड़ा ही खड़ा नहीं होगा और...।"

"तुम बेवकूफ हो बबूसा।" धरा गुर्रा उठी—"तुम चाहते हो कि झगड़े के डर से मैं डुमरा को जाने दूं। नहीं, ये कभी नहीं हो सकता और मेरी ताकतें तो इस बात को जरा भी पसंद नहीं करेंगी। वो मेरा काम करना बंद कर देंगी।"

"काम करना बंद कर देंगी। परंतु वो तो तुम्हारे अधीन हैं और उन्हें तुम्हारी बात माननी पड़ेगी।"

"बेशक। परंतु वो अपनी मनमानी भी कर सकती हैं। मेरे कामों को पूरा करने में देर लगा सकती हैं। नाराजगी से काम करेंगी तो मुझे नुकसान होगा। लेकिन बात ये नहीं, मैं डुमरा को सबक सिखाना चाहती हूं। मैं बदला लेकर रहूंगी। खुंबरी को झगड़ा करना अच्छा लगता है। खुंबरी ने कभी डरना नहीं सीखा। बदले की मुझमें तीव्र इच्छा है, तभी तो मैं सदूर की रानी बाद में बनूंगी, पहले डुमरा से बदला लूंगी। पांच सौ साल कम नहीं होते बबूसा। डुमरा ने खुंबरी पर अपनी शक्तियों का प्रयोग धोखे से किया। जब मेरा 'बटाका' गिर गया तो तब उसने मुझे घेरा। मैं बेबस हो गई थी तब। तभी तो वो मुझे श्राप दे सका। और...।"

"मैं चाहता हूं तुम्हारा और डुमरा का झगड़ा न हो।"

"तेरे को क्या पड़ी है, ऐसा चाहने की।"

"तुम्हारे झगड़े में सदूर की हालत बिगड़ेगी। ये चिंता है मुझे।"

"पर मुझे चिंता नहीं है। वैसे भी सदूर का कुछ नहीं बिगड़ेगा। ये मेरा और डुमरा के बीच का मामला है।"

"मतलब कि तुम डुमरा से बदला लेकर रहोगी।" बबूसा गम्भीर हो गया।

धरा ठठाकर हंस पड़ी।

"खुंबरी अपने दुश्मन को कभी नहीं छोड़ती। डुमरा को तो बिल्कुल नहीं छोड़ूंगी।"

बबूसा कई क्षणों तक धरा को देखता रहा फिर बोला।

"तुम्हारी बातें मुझे राजा देव को बतानी होंगी।"

"जरूर बताओ।" धरा मुस्कराई तो निचला होंठ टेढ़ा हो गया—"जब मैं पोपा से उतरकर चली जाऊंगी तो बता देना।"

"तुमने सही कहा था कि तुम्हारी ताकतों ने राजा देव को, रानी ताशा का दीवाना बना रखा है।"

"देख लेना। सदूर अब दूर तो नहीं रहा।" धरा ने आंखें नचाईं।

"रानी ताशा के दिल को तकलीफ पहुंचेगी, जब राजा देव, उसका साथ छोड़ देंगे।"

"खुंबरी इन बेकार की बातों की परवाह नहीं करती।"

"ये प्यार की बातें है। प्यार में जब दिल टूटता है तो...।"

"बकवास। प्यार व्यार कुछ नहीं होता। खुंबरी की निगाह में प्यार पागल लोगों की चीज है। अगर प्यार सच में बढ़िया होता तो खुंबरी को कब का किसी से प्यार हो गया होता। परंतु खुंबरी को प्यार की कभी जरूरत ही महसूस नहीं हुई।"

"तुमने कभी प्यार नहीं किया?"

"कभी भी नहीं।"

"पृथ्वी पर तो...।"

"नहीं। मुझे कोई मर्द कभी पसंद नहीं आया। मैंने किसी भी जन्म में शादी नहीं की।"

"सहवास तो किया होगा?"

"वो भी नहीं।" खुंबरी ने शांत स्वर में कहा—"जब सदूर पर थी तब भी नहीं किया। जब पृथ्वी पर गई तब भी नहीं किया। प्यार को मैंने हमेशा ही बेकार की चीज समझा है। मुझे मर्द की कभी भी जरूरत ही महसूस नहीं हुई।"

"हैरानी है।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"खुंबरी है ही ऐसी।"

"जब तुम्हें प्यार का एहसास होगा तो तब पता चलेगा कि ये पागल लोगों का काम नहीं है।"

"इन बातों की मुझे जरूरत नहीं।"

"तो तुम्हारे जीवन में है ही क्या? सदूर की रानी बनना और डुमरा से बदला लेना। बस। ये ही है तुम्हारी जिंदगी।"

"सब की ये ही जिंदगी होती...।"

"सबकी जिंदगी में प्यार होता है।" बबूसा ने शांत स्वर में कहा—"मेरे खयाल में तुम्हें एक बार प्यार का स्वाद चखना चाहिए।"

"इन बातों के लिए मेरे पास वक्त ही नहीं है।"

"प्यार करने के लिए वक्त नहीं चाहिए होता, सिर्फ प्यार चाहिए होता है। किसी से प्यार करोगी तो अपनी जिंदगी को बदला हुआ पाओगी।"

"तुम्हें मेरी बहुत चिंता हो रही है बबूसा। कहीं तुम्हारे मन में ये तो नहीं कि ऐसी बातें करके तुम मुझसे प्यार कर लोगे।"

बबूसा ने धरा को देखा और पलटकर बाहर निकलता चला गया।

बबूसा चालक कक्ष में पहुंचा तो देवराज चौहान और रानी ताशा को वहां मौजूद पाया।

"बस राजा देव।" किलोरा कह रहा था—"कुछ ही मिनट में हमें सदूर की ऊंची इमारतें दिखने लगेंगी।"

"ऊंची इमारतें?" देवराज चौहान के होंठ सिकुड़े।

"हां देव।" रानी ताशा मुस्कराकर कह उठी—"मैंने आपको बताया तो था कि जम्बरा ने एक नया सदूर खड़ा कर दिया है। दो लोगों के बैठने के वाहन चलते हैं सड़कों पर। आपके लिए बड़ा वाहन बनाया है उसने। वैसा कुछ भी सदूर पर नहीं है, जैसा कि आपने पहले देखा था।"

"ये तो देखने पर ही समझ पाएंगे राजा देव कि सदूर कितना बदला है।" बबूसा ने कहा।

"तुमने तो बदला हुआ सदूर देखा है बबूसा।" देवराज चौहान ने कहा।

"हां राजा देव। सिर्फ तीस साल पहले ही तो महापंडित ने मेरा जन्म करा कर, मुझे पृथ्वी की डोबू जाति में छोड़ा था।"

"तीस सालों में भी काफी बदलाव आ चुके हैं।" रानी ताशा ने कहा।

कुछ ही देर बाद, किलोरा ने पोपा की रफ्तार कम कर दी। इस वक्त पोपा एक चपटे ग्रह के ऊपर पहुंच चुका था। नीचे सब कुछ छोटा-छोटा नजर आ रहा था। किलोरा पोपा को नीचे की तरफ लेता चला गया। कुछ ही पलों में सदूर का हाल स्पष्ट दिखने लगा। ऊंची-ऊंची इमारतों का जाल नजर आ रहा था। सड़कें लकीरों की तरह, जाल जैसा दृश्य बना रही थीं। पहाड़, पेड़ बहुत कुछ नजर आ रहा था। देवराज चौहान चमक भरी निगाहों पोपा के विंड शील्ड के पार सदूर को देख रहा था।

"हम पहुंच गए देव।" रानी ताशा खुशी भरे स्वर में कह उठी।

देवराज चौहान ने मुस्कराकर रानी ताशा को देखा।

जबकि बबूसा गम्भीर निगाहों से दोनों को देख रहा था।

"हम कुछ ही देर में जमीन पर होंगे।" किलोरा ने कहा।

रानी ताशा ने पलटकर बबूसा से कहा।

"सबसे कहो अपने को बैल्टों से बांध लें। जमीन पर उतरते समय झटका लग सकता है।"

बबूसा उसी पल वहां से चला गया।

"देव।" रानी ताशा बोली—"मैं भी अपने को बैल्ट में बांधने जा रही हूं। आप यहीं कुर्सी पर बैल्ट लगा लें।" रानी ताशा कहकर चली गई।

▭ ▭
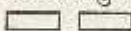
तीव्र झटके के साथ पोपा जमीन पर उतर चुका था। कुछ पलों बाद उसके इंजन की मध्यम-सी आवाज भी बंद हो गई। जहां पर पोपा उतरा था, वो जगह खुले मैदान की तरह थी। परंतु इस वक्त मैदान के आस-पास बहुत संख्या में लोग इकट्ठे हुए दिख रहे थे। उनके पास जानकारी थी कि पोपा पृथ्वी ग्रह से राजा देव को लेकर वापस लौट रहा है। मैदान के पास सैनिकों का जमघट लगा हुआ था। उनमें सेनापति मोमाथ भी था। सबकी निगाहें विशाल पोपा पर टिक चुकी थीं जो कि आकाश गंगा का लम्बा सफर तय करके लौटा था। हर कोई राजा देव को देखने के लिए बेताब था। उसी भीड़ में एक पच्चीस बरस का युवक खड़ा दिख रहा था। उसने साधरण पैंट-कमीज पहन रखी थी। काले बाल पीछे को जा रहे थे। रंग सांवला, परंतु चेहरा आकर्षक था। कोई भी उसकी हकीकत नहीं जानता था। वो डुमरा था। पवित्र शक्तियों का मालिक। कुछ वक्त पहले महापंडित ने अपने पिता डुमरा को नया शरीर बनाकर दिया तो पवित्र शक्तियों का सहारा लेकर, डुमरा ने बूढ़े शरीर का त्याग किया और नए जवान शरीर में आ गया था। वो ही डुमरा भीड़ का साधारण-सा हिस्सा बना, लोगों के साथ खड़ा था कि तभी पोपा का दरवाजा खुला और सीढ़ियां खुलती हुई नीचे जमीन से आ लगीं।

अगले ही पल खुले दरवाजे पर देवराज चौहान और रानी ताशा दिखे। दोनों ने एक-दूसरे का हाथ थाम रखा था और उनकी नजरें वहां के नजारे पर फिर रही थीं।

"पहले सदूर ऐसा नहीं था।" देवराज चौहान के होंठों से निकला। उसकी नजरें लोगों पर, लोगों से पीछे दिख रही इमारतों पर थीं।

"ये आपका सदूर है देव। आप राजा हैं यहां के। मैंने किसी प्रकार इसे संभाले रखा।" रानी ताशा ने कहा।

"ये तो पृथ्वी जैसा ही लगता है।" देवराज चौहान हैरान था।

"पृथ्वी ग्रह तो सदूर से बहुत शानदार है। सदूर को भी हम वैसा ही बना लेंगे।" रानी ताशा बोली।

"आगे बढ़ो ताशा।" देवराज चौहान ने कहा।

रानी ताशा सीढ़ियां उतरने लगी। देवराज चौहान का हाथ थाम रखा था। उससे एक सीढ़ी पीछे देवराज चौहान था। रानी ताशा की आंखों में खुशी भरी चमक थी। देवराज चौहान जैसे सदूर को पहचानने की चेष्टा में लग रहा था। फिर पीछे बबूसा और सोमारा उतरते दिखे। उनके पीछे मोना चौधरी, नगीना, जगमोहन थे फिर धरा भी दिखी। जो बराबर मुस्करा रही थी। उसका निचला होंठ थोड़ा-सा टेढ़ा हुआ पड़ा था। होंठ टेढ़ा होते ही वो एकाएक खूबसूरत दिखने लगती थी। ऐसे में उसकी खतरनाक मुस्कान को भी पहचाना जा सकता था।

धरा की चाल में खास तरह की अकड़ थी। शरीर में तनाव था। जैसे वो शान से चलने की कोशिश में हो। सीढ़ियां उतरते धरा की निगाह दूर लोगों की भीड़ में उस तरफ उठ गई जिधर डुमरा खड़ा था। लगता था जैसे अभी-अभी उसकी ताकतों ने उसे डुमरा की मौजूदगी के बारे में अवगत कराया हो धरा की आंखें सिकुड़ चुकी थीं और होंठों के बीच जहरीली मुस्कान नृत्य करने लगी थी।

वो सब सीढ़ियों से नीचे आ गए।

अब रानी ताशा के कर्मचारी और किलोरा सीढ़ियों से उतर रहे थे।

सेनापति मोमाथ रानी ताशा के पास आकर, आदर भरे स्वर में बोला।

"आपके ग्रह पर आपका स्वागत है रानी ताशा। मैं राजा देव से मिलना चाहता हूं।"

"ये राजा देव हैं और देव ये सेनापति मोमाथ है।"

इधर बबूसा की निगाह धरा पर थी। वो गम्भीर था। धरा भीड़ के उस हिस्से की तरफ बढ़ रही थी, जिधर डुमरा मौजूद था। बबूसा, धरा के पीछे जाना चाहता था, परन्तु राजा देव के पास रहना भी जरूरी था, धरा ने कहा था कि उसके वहां से जाते ही देवराज चौहान के सिर पर से उसकी ताकतें हट जाएंगी और वो रानी ताशा को छोड़कर, नगीना का हाथ थाम लेगा। ऐसे में कई परेशानियां उठ जानी थीं। वह राजा देव को अकेला नहीं छोड़ सकता था। तभी बबूसा के मस्तिष्क को झटका लगा। वो हैरानी से सामने देखने लगा। वो सोमाथ ही था जो इधर चला आ रहा था। उसके चेहरे पर मुस्कान छाई हुई थी।

"ये, वो सोमाथ है।" मोना चौधरी के होंठों से निकला।

"सोमाथ और यहां?" नगीना के होंठों से अजीब-सा स्वर निकला।

"मैंने कहा तो था कि सोमाथ से यहां मुलाकात होगी।" बबूसा कह उठा।

"वो तुमसे बदला लेगा बबूसा।" सोमारा व्याकुल स्वर में बोली।

बबूसा के होंठों में कसाव आ गया।

"भाभी तुम सतर्क रहना।" जगमोहन बोला—"वो तुम्हें भूला नहीं होगा।"

"पर सोमाथ को तो हमने आकाश गंगा में फेंक दिया था।" नगीना ने कहा।

"ये वो नहीं है। महापंडित ने सोमाथ जैसा एक और बना रखा था। जो जानकारी उस सोमाथ के पास थी, वही जानकारी महापंडित ने इस सोमाथ के मस्तिष्क में डाली है। महापंडित ने ऐसा ही कहा था। उसने ये भी कहा था कि ये सोमाथ कुछ अलग तरह का होगा।"

"अलग तरह का?"

बबूसा की निगाह सोमाथ पर टिक चुकी थी।

मुस्कराता हुआ सोमाथ करीब आता जा रहा था।

धरा भीड़ के पास पहुंची। सामने ही डुमरा खड़ा था।

दोनों की नजरें मिलीं।

धरा मुस्करा पड़ी। निचला होंठ टेढ़ा हो गया। थोड़ा और करीब पहुंची और फुंफकार भरे स्वर में बोली।

"मैं आ गई डुमरा।"

"तब मुझे नहीं पता था कि तू पांच सौ सालों के बाद भी आ जाएगी। ज्ञान होता तो और भी सख्त श्राप देता।"

"तेरी शक्तियों ने तुझे बताया नहीं या उन्हें ये बात पता न थी?" धरा हंस पड़ी कहर से।

"इतनी दूर की बात उन्हें मालूम नहीं थी।" डुमरा शांत स्वर में बोला।

"अब तो तू फंस गया डुमरा।"

जवाब में डुमरा मुस्कराकर धरा को देखने लगा।

"मेरी ताकतों ने और भी ज्यादा ताकत पा ली है। वो जागने को तड़प रही हैं और मैं तुमसे बदला लेकर रहूंगी।"

"तू जरा भी नहीं बदली खुंबरी।" डुमरा ने सिर हिलाकर कहा।

"खुंबरी को कोई हालात नहीं बदल सकते—तुम...।"

"मेरी सलाह अभी भी वो ही है जो कभी पहले थी। ताकतों का साथ छोड़ दे, मैं तुझे सदूर की रानी बना दूंगा।"

"तेरी ये बात माननी होती तो पांच सौ साल पहले मान ली होती बेवकूफ इंसान। अपनी जान की परवाह कर। खुंबरी तुझे नहीं छोड़ेगी। पांच सौ साल तूने मेरी ताकतों से मुझे दूर रखा। सदूर से दूर रखा। मैंने बहुत दुख उठाया। अब इन सब बातों का हिसाब देने का वक्त आ गया है डुमरा और हिसाब तेरी जान से बराबर होगा। खुंबरी का मुकाबला करने के लिए अपने को तैयार कर ले। तू बुरा भुगतेगा।"

"मेरी शक्तियों ने मुझे पहले ही बता दिया था कि तू ऐसा कुछ ही कहेगी।

फिर भी मैं तेरे से कहने आ गया कि बुरी ताकतों का साथ छोड़ दे। नहीं तो अपने सामने तू मुझे खड़ा पाएगी और इस बार पहले से भी कठोर श्राप दूंगा।" डुमरा का स्वर शांत और सामान्य था।

"उससे पहले ही मेरी ताकतें तुझे जला देंगी।" धरा ने दांत भींचकर कहा और भीड़ को चीरती आगे बढ़ गई।

डुमरा के चेहरे पर गम्भीरता आ गई थी।

तभी बबूसा भागते हुए डुमरा के पास पहुंचा और बोला।

"वो तुमसे बातें कर रही थी?"

"हां।" डुमरा ने गहरी निगाहों से बबूसा को देखा।

"क्या कह रही थी वो—मुझे बताओ उसने कहां जाने के लिए रास्ता पूछा?" बबूसा ने जल्दी से पूछा।

डुमरा कुछ पल बबूसा को देखता रहा फिर बोला।

"हम जल्दी मिलेंगे बबूसा।"

"बबूसा? तुम मेरा नाम कैसे जानते हो? कौन हो तुम?"

"महापंडित से पूछना, वो बता देगा।" कहने के साथ ही डुमरा पलटा और भीड़ को पार करता, गुम होता चला गया।

बबूसा उलझकर रह गया। परंतु ज्यादा न सोचा और पलटकर वापस आ पहुंचा। तब तक सोमाथ पास आ पहुंचा और बराबर मुस्करा रहा था। सोमाथ को पास आया पाकर, चंद पलों के लिए चुप्पी आ ठहरी।

"तुम तो बहुत बहादुर हो बबूसा।" सोमाथ ने हंसकर कहा—"अब तो तुमसे मुझे डर कर रहना होगा। तुमने तो मुझे अंतरिक्ष में फेंक दिया। खूब चाल चली, मैं समझ ही नहीं पाया।"

"ये बातें तुम्हें कैसे पता?" बबूसा के होंठों से निकला।

"मुझे कैसे न पता होंगी। मैं ही तो था वो।"

"नहीं, तुम्हें तो मैंने आकाशगंगा में फेंक दिया...।"

"ठीक है। मान लेता हूं।" सोमाथ हंसा—"उस सोमाथ को तुमने आकाशगंगा में फेंक दिया था। परंतु मैं भी सोमाथ हूं और पूरी तरह उस जैसा ही हूं। परंतु मुझमें और उसमें फर्क रखा है महापंडित ने। महापंडित का कहना है कि वो सोमाथ दोस्त नहीं बन सकता था। दोस्तों की तरह बात नहीं कर सकता था। ऐसे में महापंडित ने मुझमें ये बातें डाली हैं।"

"वो तो मैं देख ही रहा हूं कि तुम मुस्करा भी रहे हो, हंस भी रहे हो।" बबूसा बोला।

"उस सोमाथ के मस्तिष्क की सारी जानकारी मेरे में मौजूद है। इसलिए हमें एक-दूसरे को जानने की जरूरत नहीं।" तभी सोमाथ की निगाह नगीना पर पड़ी तो हंसकर कह उठा—"तुम बहुत खतरनाक हो। किस तेजी से

मुझे आकाश गंगा में धकेल दिया। तुम बच गई, वरना तुम भी आकाश गंगा में ही गिर गई होती।"

"तो अब तुम मुझसे उस बात का बदला लेने वाले हो।" नगीना ने सतर्क स्वर में कहा।

"नहीं। नहीं। मैं तो तुम सबका दोस्त हूं। मैं किसी को कुछ नहीं कहूंगा। मुझे रानी ताशा के साथ रहने को कहा है महापंडित ने। महापंडित ने मुझे भेजा कि मैं रानी ताशा के साथ रहूं।" सोमाथ बोला।

"मतलब कि तुम रानी ताशा का हुक्म मानोगे?"

"हां। परंतु अपनी समझ से भी मुझे काम लेने को कहा है महापंडित ने।" सोमाथ की नजरें घूमीं और हर तरफ देखने के बाद बोला—"धरा कहां चली गई? क्या वो पोपा से बाहर नहीं आई अभी तक?"

"वो चली गई।" बबूसा बोला।

"कहां?"

"मैं नहीं जानता। उस तरफ गई है।"

"महापंडित का कहना है कि वो कुछ खास है। उस पर नजर रखूं। परंतु वो चली गई।"

"और क्या कहा महापंडित ने धरा के बारे में?"

"इतना ही कहा—धरा तो...।"

तभी रानी ताशा की आवाज सुनाई दी।

"ओह देव। मेरे देव ये आपको क्या हो रहा है।"

सबकी निगाह चंद कदमों के फासले पर खड़े रानी ताशा देवराज चौहान और सोमाथ पर पड़ी। देवराज चौहान ने दोनों हाथों से इस तरह सिर पकड़ रखा था जैसे बहुत दर्द हो रहा हो।

सब उसकी तरफ लपके।

रानी ताशा ने देवराज चौहान को व्याकुलता से थाम रखा था।

"राजा देव।" बबूसा ने आगे बढ़कर देवराज चौहान को सम्भाला—"क्या हुआ आपको?"

उसी पल देवराज चौहान ठीक होने लगा।

चंद क्षणों में ही वो सामान्य दिखने लगा।

"क्या हुआ था राजा देव?" बबूसा ने पूछा।

"सिर में दर्द उठा था बबूसा।" कहते हुए देवराज चौहान ने रानी ताशा को देखा फिर नगीना को।

रानी ताशा से मिलने के बाद ये पहली बार थी जब देवराज चौहान ने नगीना को देखा था।

देवराज चौहान कुछ बदला-बदला सा दिखा।

बबूसा एकाएक सतर्क हो गया।
तभी देवराज चौहान आगे बढ़ा और नगीना का हाथ थाम लिया।
"नगीना।" देवराज चौहान से कुछ कहते न बना।
नगीना की आंखों में बरबस ही आंसू चमक उठे।
जगमोहन और मोना चौधरी की गम्भीर निगाह देवराज चौहान पर थी।
"जाने क्या हो गया था मुझे जो मैं रानी ताशा के पास ही रहा। लगता है जैसे मैं गहरी बेहोशी में...।"
"राजा देव। मेरे देव।" रानी ताशा तड़प उठी—"ये—ये आप क्या कर रहे हैं। आप तो मेरे हैं।"
देवराज चौहान की निगाह रानी ताशा की तरफ उठी।
रानी ताशा हैरान-सी देवराज चौहान को देख रही थी।
"मैं नगीना का हूं। नगीना मेरी पत्नी है। तुम्हारे साथ मेरा रिश्ता जन्मों पुराना हो चुका है।"
"ये क्या कह रहे हो देव?" रानी ताशा हक्की-बक्की रह गई—"आप मेरे हैं। हम एक हैं और...।"
"नहीं। मेरे लिए नगीना ही सब कुछ है। नगीना इस जन्म की मेरी पत्नी है। मुझ पर इसी का हक है। तुम जन्मों पुरानी बातें कह रही हो, जिनका आज कोई अर्थ नहीं, हमारे रिश्ते को लेकर।" देवराज चौहान गम्भीर था।
"पोपा में ली कसमें-वादे, वो सब झूठे थे क्या, जो सदूर पर पांव रखते ही आप बदल गए। मुझसे इस तरह का व्यवहार न करो देव, मैं तुम्हारी ताशा हूं। हमने साथ-साथ जिंदगी बितानी।"
"मुझे समझ नहीं आ रहा कि मैं तुम्हारे साथ सदूर पर क्यों आ...।"
"आप सदूर के मालिक हैं देव—आप...।"
"नहीं। मुझे सदूर नहीं चाहिए। मैं पृथ्वी पर साधारण जीवन जीकर खुश हूं।" देवराज चौहान ने नगीना का हाथ थाम रखा था। उसने जगमोहन को देखकर कहा—"तुमने मुझे सदूर पर आने से रोका क्यों नहीं?"
"ये आप कैसी बातें कर रहे हैं देव।" रानी ताशा की आंखों से आंसू बह निकले।
देवराज चौहान, जगमोहन को देखता रहा तो जगमोहन बोला।
"तब तुम जैसे अपने होश गंवा चुके थे। हमने तुम्हें रोका पर तुमने हमारी एक न सुनी।"
"हां। मुझे याद आ रहा है कि क्या हुआ था, परंतु मैं जैसे अपने काबू में नहीं था। जैसे...।"
"मेरे साथ इस तरह का व्यवहार मत करो देव। जन्मों के इंतजार के

बाद तो मैंने तुम्हें वापस पाया है। मेरे को अपने से जुदा न करो। मैं तुमसे दूर नहीं जाना चाहती देव।" रानी ताशा रो पड़ी।

"मुझे नहीं समझ आ रहा कि मैं तुम्हारे साथ क्यों था ताशा और क्यों मैंने सदूर तक, पोपा में यात्रा की। परंतु मेरा जीवन नगीना का है। मैं इस जन्म में नगीना का पति हूं। ये ठीक है कि कभी हम सदूर पर पति-पत्नी के रूप में इकट्ठे रहा करते थे, परंतु वो जन्मों पुरानी बातें हैं उसके बाद ये मेरा चौथा जन्म चल रहा है और इस जन्म में नगीना मेरी पत्नी है। मेरा तुम पर या तुम्हारा मुझ पर कोई हक नहीं अब...।"

"और जो हमने प्यार किया देव, वो...।"

"वो मैं स्वयं नहीं जानता कि ये सब कैसे हुआ। शायद मैं अपने होश में नहीं था या फिर...।"

"इसका जवाब मेरे पास है राजा देव।" बबूसा कह उठा।

"क्या जवाब?" देवराज चौहान ने बबूसा को देखा।

"ये ही कि आप रानी ताशा के दीवाने क्यों रहे और क्यों सदूर पर पहुंचते ही आपमें बदलाव आ गया।"

"मुझे बताओ बबूसा, क्या बात है?"

"ये सब खुंबरी ने किया था।"

"खुंबरी।" देवराज चौहान चौंका, चेहरे पर सोच के भाव उभरे—"वो खुंबरी, जिसे डुमरा ने श्राप...।"

"वो ही खुंबरी। मैं जानता था कि आपको खुंबरी के बारे में याद होगा। डुमरा ने श्राप देकर खुंबरी को पांच सौ सालों के लिए सदूर से बाहर भेज दिया था और उसके पांच सौ साल पूरे होते ही, वो पोपा में बैठकर वापस आ गई।"

"पोपा में बैठकर वापस आ गई?" देवराज चौहान के माथे पर बल दिखे।

"मैं धरा की बात कर रहा हूं राजा देव। वो खुंबरी का ही रूप है।"

सबकी निगाह फौरन घूमी धरा को देखने के लिए।

"धरा कहां है?" जगमोहन के होंठों से निकला।

"वो चली गई।"

"कहां?"

"मैं नहीं जानता।" बबूसा गम्भीर दिखा—"परंतु सदूर पर उसका कोई ठिकाना है। गुप्त और रहस्यमय ठिकाना।"

"तुम खुंबरी के बारे में क्या बता रहे थे बबूसा?" देवराज चौहान ने पूछा।

"राजादेव। खुंबरी से मेरी बातें होती रहती थीं। उसने अपने बारे में सब कुछ बताया। अभी भी उसकी ताकतें उसके पास मौजूद थीं। वो ताकतें मुझे किसी से धरा की बातें कहने न देती थीं। जब मैं कहने लगता तो मेरे मुंह से

कुछ और ही निकल जाता। ये सब धरा उर्फ खुंबरी की ताकतें ही करवाती थीं मुझसे। हम खुंबरी की बुरी ताकतों के बारे में जो किस्से सुना करते थे वो सब सच है। मैंने खुद खुंबरी की ताकतों को महसूस किया और पहचाना। मैं सिर्फ सोमारा से ही सब बातें कह सुन सकता था। परंतु सोमारा भी किसी को धरा की हकीकत न बता पाती थी। खुंबरी की ताकतें रोक देती थीं।"

"डोबू जाति में मैंने मोना चौधरी और नगीना को धरा की हकीकत बतानी चाही तो नहीं बता सकी थी।" सोमारा ने कहा—"तब मेरे मुंह से कुछ का कुछ ही निकलने लगा था।"

"परंतु खुंबरी का मुझसे क्या वास्ता?" देवराज चौहान ने उलझन भरे स्वर में कहा।

"धरा के रूप में खुंबरी सदूर ग्रह पर वापस आना चाहती थी। उसके पांच सौ सालों का श्राप पूरा हो रहा था। सदूर पर आने की तैयारी तो वो ढाई-तीन सौ सालों से कर रही थी।" बबूसा ने कहा—"सदूर पर आपके और रानी ताशा के अलग हो जाने की वजह खुंबरी की बुरी ताकतें ही थीं।"

"ये क्या कह रहे हो?" रानी ताशा हैरान हो उठी।

"मैं सच कह रहा हूं। ये सब बातें मुझे खुंबरी ने स्वयं बताई है। खुंबरी की ताकतें पांच सौ साल पूरे होने पर, खुंबरी के सदूर पर लौट आने के लिए रास्ता बना रही थीं। खुंबरी का शरीर तो सदूर पर था और उसकी ताकतें उसकी जान को पृथ्वी तक ले गई थीं और वहां नया जन्म कराया जाने लगा खुंबरी का। परंतु वापसी पर तो खुंबरी को शरीर के साथ लौटना था। इसलिए सशरीर खुंबरी को सदूर पर लाने के लिए, उसकी ताकतें रास्ता बनाने में लगी थीं। जब राजा देव ने पोपा तैयार कर लिया था तो तब तक आपके सम्बंध किले के सेनापति धोमरा के साथ हो गए थे। ये सब खुंबरी की ताकतें आपके सिर पर सवार होकर, आपसे करा रही थीं। जब राजा देव लौटे तो रास्ते में ही आपने धोमरा के साथ मिलकर राजा देव को बंदी बनाया और सदूर के बाहर फेंक दिया। ये आपने नहीं किया। खुंबरी की ताकतों ने आपसे करवाया था। खुंबरी ने स्वयं ये सब बातें मुझसे कहीं। उसके जन्मों बाद आप राजा देव की तलाश में, पोपा में बैठकर पृथ्वी ग्रह पर जा पहुंची, जबकि खुंबरी के श्राप के पांच सौ साल पूरे होने जा रहे थे। उधर खुंबरी की ताकतें उसे रास्ता दिखा रही थीं कि कैसे वो सदूर पर पहुंच सकती है। खुंबरी यानी कि धरा से मेरी मुलाकात हो गई। मैं अंजान था, परंतु धरा (खुंबरी) तो अपनी ताकतों के दिखाए रास्ते पर चल रही थी। फिर वो वक्त आया जब पृथ्वी पर आप और रानी ताशा का सामना हुआ। यहां पर खुंबरी की ताकतों ने आपके दिमाग पर काबू पाया और सिर पर बैठ गई।"

"क्यों?" देवराज चौहान के होंठों से निकला।

"खुंबरी ने मुझे बताया कि आपने रानी ताशा को स्वीकार नहीं करना था, क्योंकि नगीना इस जन्म में आपकी पत्नी है। आपने नगीना का साथ नहीं छोड़ना था। जबकि रानी ताशा हर हाल में आपको सदूर पर वापस ले जाना चाहती थी। ऐसे में आपसे और रानी ताशा के बीच तगड़ा झगड़ा खड़ा हो जाता तो खुंबरी (धरा) कैसे सदूर पर पहुंच पाती। यही वजह थी कि खुंबरी की ताकतों ने आपके सिर पर बैठकर, आपके दिमाग को खुंबरी के हक में चलाया और आपको रानी ताशा का दीवाना बना दिया। ऐसा दीवाना कि आप सब कुछ भूल बैठे और सदूर पर चलने को तैयार हो गए। खुंबरी ने पोपा में ही मुझे बता दिया था कि सदूर पर पहुंचते ही उसकी ताकतें राजा देव के सिर से हट जाएंगी और वो रानी ताशा को छोड़कर, नगीना के पास चले जाएंगे।"

बबूसा की बातें सुनकर सब सन्न रह गए।

किसी से कुछ कहते न बना।

अलबत्ता रानी ताशा का खूबसूरत चेहरा सुलग उठा। उसकी नीली आंखें लाल-सी दिखने लगीं।

"ये खुंबरी कौन है?" नगीना ने पूछा।

"मैंने तो इसका नाम पहले कभी नहीं सुना।" जगमोहन कह उठा—"ये तो बहुत खतरनाक खेल खेल गई।"

बबूसा खुंबरी के बारे में बताने लगा।

पोपा में खुंबरी की कही बातें बताने लगा।

जिसे खुंबरी के बारे में नहीं पता था, उसे भी स्पष्ट रूप से खुंबरी के बारे में पता चल गया।

खुंबरी की हरकतों की वजह से हर कोई हैरान-परेशान था।

"इस तरह खुंबरी ने पोपा द्वारा सदूर तक पहुंचने का अपना रास्ता बना लिया और यहां आ पहुंची।" बबूसा ने अपनी बात समाप्त की।

जबकि रानी ताशा का चेहरा क्रोध में धधक रहा था।

बबूसा रानी ताशा की हालत देखकर तुरंत कह उठा।

"रानी ताशा। मुझे आपसे पूरी हमदर्दी है परंतु आपको संयम से काम लेना होगा। मैंने जो कहा वो सच है। सब कुछ मुझे खुंबरी (धरा) ने ही बताया है। राजा देव इस जन्म में आपके दीवाने नहीं बन सके। राजा देव से जो कराया, खुंबरी की ताकतों ने ही कराया जैसे कभी खुंबरी की ताकतों ने आपसे, राजा देव को सदूर से बाहर फिंकवा दिया था पाइप में डालकर। ऐसे में आप बेहतर समझ सकती हैं कि पृथ्वी पर राजा देव का झुकाव आपकी तरफ क्यों और कैसे रहा। राजा देव अपनी पृथ्वी वाली पत्नी के ही हैं।"

"बात अब यहीं तक नहीं रही बबूसा।" रानी ताशा ने बेहद कठोर स्वर में कहा—"ये सवाल खतम हो गया कि राजा देव अब मेरे हैं या नगीना के। बात ये है कि खुंबरी की ताकतों ने, मेरे द्वारा राजा देव को ग्रह से बाहर फिंकवाया।"

"ऐसा ही हुआ था।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"खुंबरी ने स्वयं ये बात स्वीकारी?" रानी ताशा गुर्रा उठी।

"जी, रानी ताशा। खुंबरी ने स्वयं मुझसे ये बात कही।" बबूसा बेहद गम्भीर हो उठा।

"तो राजा देव को, मेरे से अलग करने वाली खुंबरी थी। खुंबरी को अपनी इस हरकत का अंजाम भुगतना होगा। अगर खुंबरी ने ऐसा न किया होता तो राजा देव के वियोग में जन्मों तक मुझे न तड़पना पड़ता। आज ये हालात न होते। अपने मतलब के लिए खुंबरी और उसकी ताकतें मेरे जीवन में जहर घोल गई। इसका जवाब मैं खुंबरी से लेकर रहूंगी। वो...।"

"रानी ताशा।" बबूसा बेचैनी से कह उठा—"खुंबरी के पास ताकतें हैं। आप उनका मुकाबला नहीं कर सकतीं।"

रानी ताशा कुछ कहती, उससे पहले ही देवराज चौहान कह उठा।

"इस मामले में मैं तुम्हारे साथ हूं। तुम्हारी भावनाओं की कद्र करता हूं। खुंबरी और उसकी ताकतों ने तुम्हारे और मेरे साथ उस जन्म में जो किया, बुरा किया। परंतु मैं बबूसा की बात से भी सहमत हूं कि खुंबरी और उसकी बुरी ताकतों का मुकाबला नहीं किया जा सकता। इस बारे में हमें महापंडित से बात करनी होगी। महापंडित के पिता डुमरा की सहायता लेना बहुत जरूरी हो गया है। वैसे भी खुंबरी सदूर की धरती पर वापस आ पहुंची है तो वो सबका चैन छीन लेगी। डुमरा को खुंबरी के वापस आ जाने की पूरी जानकारी होगी और डुमरा तक हमें महापंडित ही ले जा सकता है। बबूसा।"

"जी राजा देव।"

"क्या तुम्हें खुंबरी ने बताया कि सदूर पर पहुंचने के बाद वो कहां पर जाएगी?" देवराज चौहान ने पूछा।

"वो किसी गुप्त जगह जाने को कह रही थी, परंतु उसने उस जगह के बारे में बताया नहीं।" बबूसा ने कहा।

"हमें इसी वक्त महापंडित के पास चलना होगा। तुम भी साथ चलोगी ताशा?"

"जरूर मेरे देव।" रानी ताशा बेहद गुस्से में थी—"आप मेरे साथ हैं तो मुझे पूरा यकीन है कि हम खुंबरी को उसकी हरकत की कठोर-से-कठोर सजा देंगे। मुझे इतनी खुशी जरूर है कि आप सदूर पर आ गए। खुंबरी को

सजा देने के बाद मैं आपको अपना भी बना लूंगी। मैं आपके बिना नहीं रह सकती।" रानी ताशा की आंखों में आंसू चमक उठे।

देवराज चौहान ने नगीना का हाथ थामे, नगीना पर निगाह मारकर कहा।

"कम-से-कम इस जन्म में तो तुम मुझे नहीं पा सकोगी। मेरा ये जन्म नगीना के नाम दर्ज हो चुका है।"

रानी ताशा देवराज चौहान को देखती रही। कहा कुछ नहीं।

▭ ▭
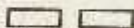
वो बहुत बड़ी तीन मंजिला इमारत थी। आबादी से कुछ हटकर बनी थी। उसकी चारदीवारी दूर तक फैली नजर आ रही थी। उस इमारत में खास बात ये थी कि वो गोलाई लिए हुए थी। उसके सामने के हिस्से पर बड़े-बड़े शीशे लगे हुए थे। बाहर से देखने पर भीतर कुछ भी नजर नहीं आता था। ये महापंडित का ठिकाना था। प्रवेश गेट पर जोबिना वाले दो आदमी मौजूद रहते थे। उन दो के अलावा वहां पहरे पर कोई नहीं था। महापंडित की इजाजत के बिना कोई भीतर नहीं आ सकता था। महापंडित अपने कामों में, इमारत के भीतर इतना व्यस्त रहता कि महीना महीना बाहर नहीं निकल पाता था। इस वक्त महापंडित इमारत की तीसरी मंजिल के एक हॉल में मौजूद था और वहां देवराज चौहान, रानी ताशा, सोमाथ, सोमारा, बबूसा, जगमोहन, नगीना और मोना चौधरी मौजूद थे। अभी-अभी बबूसा सब कुछ महापंडित को बताकर हटा था और उसके बाद कुछ खामोशी-सी आ ठहरी थी। महापंडित देवराज चौहान से मिलकर बहुत खुश हुआ था। देवराज चौहान को भी महापंडित को गले से लगाकर खुशी हुई थी। उनकी बातें लम्बी चलतीं परंतु धरा का मामला बीच में आ गया था।

महापंडित ने गम्भीर स्वर में खामोशी तोड़ी और कहा।

"जितनी बातें मुझे बबूसा ने बताईं उससे आधी तो मैं वाकिफ था। मेरी मशीनें बता चुकी थीं। परंतु मशीनें ये नहीं बता पा रही थी कि ये मामला खुंबरी से वास्ता रखता है। खुंबरी को तो मैं भूल ही चुका था। ढाई-तीन सौ साल पहले जब राजा देव को सदूर ग्रह के बाहर फेंका रानी ताशा ने तो मेरी मशीनों ने मुझे बताया था कि रानी ताशा निर्दोष है। क्यों निर्दोष है। ये बात मेरी मशीनें नहीं बता सकी थीं। तब से ही मैं उलझन में फंसा हुआ था कि आखिर ऐसी क्या बात है कि रानी ताशा, राजा देव को ग्रह से बाहर फेंकने के प्रति निर्दोष है। मशीनें गलत बात नहीं कह सकती थीं। इस बात का जवाब अब मुझे तीन सौ साल बाद मिला कि खुंबरी की ताकतों ने, रानी ताशा पर काबू पाकर, उसे माध्यम बनाकर रानी ताशा से, राजा देव को सदूर से बाहर फेंकने का काम कराया था। मैं तो सोच भी नहीं सकता था कि खुंबरी की ताकतें इन पांच सौ सालों में सदूर पर सक्रिय हैं।"

"कुछ ही ताकतें सक्रिय रहीं।" बबूसा बोला—"खुंबरी का कहना है कि उसकी अधिकतर ताकतें सो चुकी हैं उसके बिना।"

"खुंबरी की ताकतें खुंबरी के जरूरी कामों को करती रहीं। खुंबरी के वापस सदूर पर आने का रास्ता तैयार किया जाता रहा।" महापंडित गम्भीर स्वर में बोला—"और आज खुंबरी पांच सौ साल बाद सदूर पर आ पहुंची है। इससे गम्भीर स्थिति उत्पन्न हो गई है।"

"महापंडित।" रानी ताशा क्रोध भरे स्वर में कह उठी—"कई जन्मों तक मैं अपने को कसूरवार समझती रही कि राजा देव को मैंने सदूर से बाहर फेंका है। मेरे को इस बात से बहुत तकलीफ होती रही कि मेरे सम्बंध सेनापति धोमरा के साथ हो गए थे। मैं अपने से ही ये सवाल पूछा करती थी कि ये सब मैंने कैसे कर दिया। परंतु मेरे पास कोई जवाब नहीं था। लेकिन आज मुझे जवाब मिल गया कि ये सब खुंबरी की ताकतों ने मेरे दिमाग पर काबू पाकर मेरे से ये सब कराया था। खुंबरी ने मुझे और राजा देव को अपने मतलब की खातिर अलग किया। ये बहुत गलत किया खुंबरी ने। हम दोनों तब कितना अच्छा जीवन जी रहे थे कि खुंबरी की ताकतों ने हमें बर्बाद कर दिया। ये बात जब से मैंने जानी है, मुझसे सहन नहीं हो रहा। मैं खुंबरी को कठोर-से-कठोर सजा देना चाहती हूं। उसे मौत के रास्ते पर भेजना चाहती हूं। अब खुंबरी के लिए सिर्फ मौत की सजा ही है मेरे पास। मैं तो सपने में भी राजा देव से अलग नहीं हो सकती थी और खुंबरी ने ये काम हकीकत में कर दिखाया।"

"मैं इस काम में ताशा के साथ हूं।" देवराज चौहान का स्वर भी सख्त था—"खुंबरी की ताकतों ने हमें जुदा करके बहुत गलत किया। अब ज्यादा तो कुछ नहीं हो सकता महापंडित, परंतु खुंबरी को सजा तो दी जा सकती है।"

"खुंबरी अकेली नहीं है।" महापंडित ने धीमे स्वर में कहा—"उसके साथ बुरी ताकतें हैं। उसका कुछ बिगाड़ पाना सम्भव नहीं। बल्कि वो आप लोगों को और भी तबाह कर देंगी। जान ले लेंगी आपकी।"

"इस बात का एहसास है, तभी तो तुम्हारे पास आए हैं।" देवराज चौहान ने कहा।

"मैं इसमें कोई सहायता नहीं कर...।"

"तुम हमें अपने पिता डुमरा तक पहुंचा सकते हो।" रानी ताशा ने कहा।

महापंडित एकाएक चुप हो गया।

"खुंबरी डुमरा से श्राप का बदला लेना चाहती है। वो डुमरा तक जरूर पहुंचेगी। डुमरा हमारी सहायता कर सकता है और इस बारे में शायद हम भी डुमरा की सहायता कर सकें। हमारा और डुमरा का मकसद, खुंबरी को खत्म करना ही है।" रानी ताशा पुनः बोली।

"तुमने हाल ही में अपने पिता डुम्रा को नया शरीर दिया है।" बबूसा बोला।

"कुछ वक्त हो गया इस बात को।" महापंडित ने कहा—"पांच-छः साल हो गए।"

"ये बात मुझे खुंबरी ने बताई। वो डुमरा के बारे में सब कुछ जानती है।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा—"उसकी ताकतें उसे हर बात की खबर देती रहती हैं। वो बता रही थी कि अब उसकी ताकतों की ताकत और भी बढ़ गई है।"

महापंडित उठा और कमर पर हाथ बांधे टहलने लगा।

"हमें डुमरा के पास ले चलो महापंडित।" देवराज चौहान ने कहा।

"इसमें मेरे पिता को एतराज भी हो सकता है कि आप लोगों को मैं उनके पास क्यों लाया।" महापंडित बोला।

"हम डुमरा का साथ देंगे और खुंबरी को खत्म करने की चेष्टा करेंगे।"

"ये साधारण इंसानों की लड़ाई नहीं होगी राजा देव।" महापंडित गम्भीर स्वर में बोला—"इस लड़ाई में खुंबरी की बुरी ताकतें और पिता की शक्तियां आमने-सामने होंगी। इस लड़ाई में आप लोगों के लिए कोई जगह नहीं होगी।"

"इस बारे में हम डुमरा से बात करेंगे।" देवराज चौहान ने कहा।

"महापंडित।" रानी ताशा ने कठोर स्वर में कहा—"खुंबरी ने मेरे द्वारा राजा देव को ग्रह से बाहर फिंकवा दिया। मुझे और राजा देव को अलग कर दिया।" रानी ताशा की आंखों में आंसू चमक उठे—"हमारा हंसता-खेलता जीवन तबाह कर दिया। इसकी सजा तो हम खुंबरी को देंगे ही।"

"मैं आपके साथ हूं रानी ताशा। आपका हुक्म मेरे लिए सबसे पहले है। परंतु पिता इस बारे में क्या विचार रखते हैं ये मैं नहीं जानता। इस बारे में मैं मशीनों से पूछकर आता हूं तभी कुछ फैसला ले सकूंगा।"

महापंडित वहां से गया तो बबूसा कह उठा।

"अगर महापंडित हमें डुमरा के पास ले जाने को इंकार करता है तो हम स्वयं डुमरा की तलाश लेंगे।"

रानी ताशा के चेहरे पर कठोरता छाई हुई थी।

देवराज चौहान गम्भीर था उसने पास बैठी नगीना से कहा।

"मैं ताशा का साथ दूंगा कि हम खुंबरी को सजा दे सकें।"

"ये जरूरी भी है।" नगीना ने गम्भीर स्वर में कहा—"उसने आपको और रानी ताशा को अलग कर दिया था अपने मतलब के लिए। उसे इस बात की सजा मिलनी ही चाहिए। मैं भी आपके साथ हूं।"

नगीना को देखते ही देवराज चौहान गम्भीर भाव से मुस्कराया।

"अगर तुम धरा की हकीकत मुझे पोपा में ही बता देते तो मैं उसे मार देता।" सोमाथ ने बबूसा से कहा।

"तब उसकी ताकतें मेरे पहरे पर थीं। किसी को कुछ बताने ही नहीं दे रही थीं।"

"तो तुम उसे मार सकते थे।"

"एक बार कोशिश की थी परंतु धरा की ताकतें बीच में आ गईं और मेरे को पीछे पटक दिया। ताकतें धरा को पूरी तरह सुरक्षा दिए हुए थीं। अगर कुछ हो सकता तो मैंने कर दिया होता।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा—"मैं उसका गला दबा देना चाहता था।"

"एक बार मेरे को इशारा करके तो देखा होता।" सोमाथ मुस्कराया—"परंतु तुम तो मेरे को मारने के रास्ते तलाश कर रहे थे।"

बबूसा ने कुछ नहीं कहा।

जगमोहन और मोना चौधरी खामोश थे। उन्हें इस बात की खुशी थी कि देवराज चौहान सीधे रास्ते पर आ गया है। इससे उन्हें जो मुख्य परेशानी थी, वो समाप्त हो गई थी।

"बबूसा।" सोमारा बोली—"हमने शादी करनी है।"

"मुझे याद है, परंतु पहले खुंबरी की समस्या हल कर लें। राजा देव और रानी ताशा उससे बदला लेना चाहते हैं।"

एक घंटे बाद महापंडित लौटा। उसके चेहरे पर गम्भीरता थी। आते ही वो कह उठा।

"मैं आप लोगों को पिता डुमरा के पास ले जाऊंगा। मशीनों ने हां कह दी है।"

"कहां पर है डुमरा?" बबूसा ने पूछा।

"पिता तक पहुंचने के लिए हमें लम्बा रास्ता तय करना होगा। वहां वाहन नहीं जा सकेंगे। घोड़ों का इस्तेमाल किया जाएगा।"

▭ ▭
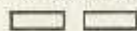
शाम का वक्त हो रहा था। सूर्य सद्दूर के किनारे पर रहकर, तेज किरणें फेंक रहा था। कुछ ही देर में सूर्य नजर आना बंद होने वाला था। तीव्र गर्मी का एहसास हो रहा था।

धरा तेजी से पैदल ही उस सुनसान, वीरान जंगलों में आगे बढ़ी जा रही थी। जब से पोपा से निकली थी, तभी से उसके कदम उठे जा रहे थे, एक बार भी वो रुकी नहीं थी। पसीने से उसका बदन भीग रहा था। चेहरे पर भी पसीने की बूंदें लकीर बनकर ठोढ़ी तक आ रही थी। हथेली से रह-रहकर वो पसीने को साफ कर रही थी। जंगल में प्रवेश करने के बाद सूर्य की गर्मी से उसे राहत मिली थी। वो इस तरह आगे बढ़ रही थी जैसे उसे पता हो

कि कहां जाना है। उसकी मंजिल कहां है। उसके शरीर पर जींस की पैंट और स्कीवी थी। उसकी आंखों में इस वक्त अनोखी ही चमक छाए हुए थी। पेड़ों के पत्ते मध्यम हवा के संग, एक-दूसरे से टकराते तड़-तड़ बज उठते थे। कभी-कभार किसी पक्षी की आवाज कानों में पड़ने लगती थी। मशीनी अंदाज में धरा के कदम उठे जा रहे थे।

फिर वो वक्त भी आया जब सूर्य गायब हो गया।

एकाएक शाम का अंधेरा छाने लगा (सदूर पर सूर्य ढलने के फौरन बाद ही अंधेरा छाने लगता था) धरा के कदमों की रफ्तार में कोई कमी नहीं आई थी। वह इस बात के प्रति आश्वस्त थी कि कोई भी उसके पीछे नहीं आ रहा। वो सदूर के ऐसे इलाके में आ चुकी थी जहां लोगों का आना-जाना होता ही नहीं था।

अंधेरा छा गया। परंतु धरा के कदम नहीं रुके। वो अंधेरे में भी इसी तरह आगे बढ़ती रही जैसे दिन के उजाले का वक्त हो और उसे सब कुछ स्पष्ट दिख रहा हो। जबकि ऐसे अंधेरे से भरे जंगल में आम आदमी के लिए दो कदम उठाना भी कठिन हो जाता। काफी देर बाद धरा जंगल में बने मामूली खंडहर के पास जा पहुंची। ठिठकी। वो साधारण-से दो कमरों का खंडहर था। उसकी छतें उड़ चुकी थीं। दीवारें पहाड़ी पत्थर को काटकर, बनाई गई ईंटों जैसे पत्थर से बनाई गई थीं। इस अंधेरे में वो खंडहर मात्र दीवारों के साए की तरह नजर आ रहा था। धरा कुछ देर वहीं पर चहल-कदमी करती रही। अगर रोशनी होती तो स्पष्ट दिख जाता कि धरा की आंखों में तीव्र चमक लहरा रही थी और रह-रहकर मुस्कान के साथ उसका निचला होंठ टेढ़ा हो जाता था।

तभी उस खंडहर में तीव्र रोशनी चमकी। जैसे कोई जलती मशाल सामने आ गई हो। फिर वो मशाल हिलती दिखी। मशाल की रोशनी में एक व्यक्ति दिखा, जिसने मशाल थामी हुई थी। वो खंडहर से बाहर आया।

धरा फौरन उसके पास पहुंचते कह उठी।

"दोलाम।"

"महान खुंबरी को दोलाम का नमस्कार।" मशाल थामे व्यक्ति ने कहा—"आपको सामने पाकर मुझे बहुत खुशी हो रही है। विश्वास ही नहीं आ रहा कि महान खुंबरी वापस आ गई है। लेकिन मैं जानता हूं कि ये बात सच है। आपकी ताकतों ने मुझे संकेत दे दिया था कि आप यहां पहुंचने वाली हैं। श्राप के पांच सौ साल बहुत दुख से भरे रहे। मैं आपके दुख को समझ सकता हूं और खुशी से आपकी वापसी का स्वागत करता हूं।"

"तुम खुश हो दोलाम।" खुंबरी के स्वर में जिंदगी की चमक थी।

"बहुत, महान खुंबरी। आपकी ताकतों ने मेरा हरदम खयाल रखा।" दोलाम की आवाज उभरी।

"मेरा शरीर कैसा है?"

"एकदम सुरक्षित है। वैसा ही जैसा आप छोड़ गई थीं।"

"और मेरा सामान?"

"वो भी वैसे ही रखा है, जैसे आप रख गई थीं।" दोलाम ने कहा।

"भीतर चलो।"

"आओ महान खुंबरी।" दोलाम ने कहा और पलटकर खंडहर में प्रवेश कर गया।

खुंबरी यानी कि धरा उसके पीछे थी।

खंडहर के कमरे के कोने में एक गड्ढा-सा दिखा, जो कि वास्तव में नीचे जाने की सीढ़ियां थीं। सीढ़ियों का ढक्कन एक तरफ सरका हुआ था। मशाल का मध्यम-सा प्रकाश वहां फैला था। मशाल थामे दोलाम सीढ़ियां उतरता कह उठा।

"महान, खुंबरी, आप मेरे पीछे आइए। यहां सीढ़ियां...।"

"मुझे सब याद है। तुम भीतर चलो। मैं तुम्हारे पीछे आ रही हूं।" धरा ने कहा।

जब धरा भी भीतर आ गई तो दोलाम ने पुनः ऊपर जाकर नीचे से हाथ बाहर निकाला और ढक्कन सीढ़ियों पर सरका दिया। उसके बाद दोनों मशाल के प्रकाश में सीढ़ियां उतरने लगे। सीढ़ियां मिट्टी की न होकर पक्की थीं। वो कमसे कम पचास सीढ़ियां नीचे उतरे तो सामने चौड़ा रास्ता दिखने लगा, जहां मशालें रोशन थीं।

दोलाम ने हाथ में थाम रखी मशाल को दीवार में लगे स्टैंड में फंसा दिया।

धरा खुशी भरे अंदाज में ठहाका लगा उठी।

"मैं वापस आ गई दोलाम।" उसकी आवाज हर तरफ गूंजी।

"महान खुंबरी वापस आ गई है।" दोलाम ने आदर भरे स्वर में कहा।

"कितना अच्छा लग रहा है, पांच सौ बरस के बाद लौट के अपनी जगह पर आना।" धरा खुशी से पागल हो रही थी—"वो ही जगह। वो ही सब कुछ। डोमरा ने तो सोचा भी नहीं होगा कि वो ही वक्त, फिर लौट आएगा।"

"डुमरा को सजा देनी है महान खुंबरी।"

"जरूर सजा मिलेगी डुमरा को।" धरा गुर्रा उठी—"आओ दोलाम।"

खुंबरी और दोलाम उस रास्ते पर आगे बढ़ गए।

"तुम्हें अकेले रहने में तो बहुत कष्ट हुआ होगा।" धरा बोली।

"आपके कष्ट से बहुत कम कष्ट हुआ। आपके कष्ट के आगे, मेरा कष्ट तो, कुछ भी नहीं है।"

"सब ठीक हो जाएगा। मैं आ गई हूं अब। इन पांच सौ सालों में कोई यहां आया तो नहीं?"

"नहीं। आपकी ताकतों ने रास्ते बंद कर रखे थे। कोई आ ही नहीं सकता था।"

वो रास्ता शानदार और सजा सजाया था। दीवारों पर रंग हुए पड़े थे। ये ही हाल छतों का था। गैलरी के बीचोबीच, जहां वे चल रहे थे, कपड़ा बिछा हुआ था। सन्नाटे में उनके कदमों की आवाजें उभर रही थीं।

"सदूर अब पहले से अच्छा हो गया है।" धरा बोली।

"अब तो और भी अच्छा हो जाएगा। आप जो आ गई हैं। कब से सदूर आपका इंतजार कर रहा था।"

"मेरी भी बहुत इच्छा थी सदूर वापस लौटने की। डुमरा ने मेरे साथ बहुत गलत किया। आज मिला था डुमरा।" धरा ने जहरीले स्वर में कहा—"वो जानता था कि खुंबरी सदूर पर पहुंच रही है। उसे भी तो हर बात की खबर रहती है।"

"डुमरा ने कोई खास बात कही। क्या वो माफी मांग रहा था?" दोलाम ने चलते-चलते पूछा।

"वो चाहता है मैं नागाथ की दी ताकतों को छोड़ दूं।"

"कितने गलत विचार हैं डुमरा के। मैंने तो सोचा, माफी मांगी होगी।"

"डुमरा अपनी उसी अकड़ के साथ मिला था दोलाम। मैं नागाथ की दी ताकतों से अलग हो ही नहीं सकती। उन ताकतों के बिना खुंबरी का वजूद ही खत्म हो जाएगा। उन ताकतों में तो मेरी जान बसती है।" खुंबरी की आवाज में जहरीलापन था—"डुमरा को बहुत सख्त सजा दूंगी। ऐसी कि वो मौत पाना चाहेगा। परंतु उसकी मौत मेरे हाथ में होगी।"

"डुमरा तब तक आप पर वार नहीं कर सकता, जब तक पहला वार आप उस पर नहीं करतीं। क्योंकि उसने श्राप दिया था आपको और नियम के मुताबिक अब पहला वार वो नहीं कर सकता।" दोलाम ने जैसे याद दिलाया।

धरा हंस पड़ी।

"वो भुगतेगा।"

"महान खुंबरी।" दोलाम ने मुस्कराकर कहा—"अब आपके आ जाने के बाद मेरा दिल खूब लगेगा। पांच सौ साल हो गए मुझे किसी से बात किए। हमेशा अकेला चुपचाप पड़ा रहा। कभी-कभी अपने से ही बात कर लिया करता था।"

"खाने का इंतजाम करने तो बाहर जाते होंगे।"

"आपकी ताकतें मेरे लिए खाने का इंतजाम कर देती थीं। जब भी खाना

लेने, जाने के लिए ऊपर जाता तो खाना वहां रखा मिलता। इन पांच सौ सालों में मुझे किसी तरह की कोई तकलीफ नहीं हुई।"

वो गैलरी एक छोटे-से हॉल में जा निकली। हॉल जैसे कमरे में बैठने के लिए कुर्सियां-टेबल थीं। वहां सजावट थी। दीवारों पर रंग-बिरंगी कारीगरी की हुई थी। छत पर भी रंग किए हुए थे। धरा एक कुर्सी पर जा बैठी। उसके चेहरे पर थकान की अपेक्षा स्फूर्ति झलक रही थी। आंखों में भरपूर चमक थी। रह-रहकर वो मुस्करा उठती और निचला होंठ टेढ़ा दिखने लगता।

दोलाम वहां से एक अन्य रास्ते पर चला गया था।

"कितना अच्छा लग रहा है वापस आकर।" खुंबरी बड़बड़ा उठी—"डुमरा ने मेरा सारा आराम, सारा चैन छीन लिया था। मैंने तो डुमरा से कुछ भी नहीं कहा था। सदूर पर शान से शासन चला रही थी, फिर उसने मुझे क्यों छेड़ा। मेरी ताकतों को बुरा कहता है।" धरा हंस पड़ी—"मेरी ताकतें तो कितनी अच्छी हैं। मेरा कितना ध्यान रखती हैं। वो मुझे सबसे प्यारी हैं।"

दोलाम एक ट्रे में दो गिलास रख पास पहुंचा और आदर भरे स्वर में बोला।

"महान खुंबरी। आपके लिए कारू लाया हूं। लम्बे सफर से आप थक गई होंगी। अगर कारू की इच्छा न हो तो दूसरे गिलास में फलों का रस है। हुक्म कीजिए, आपकी सेवा में क्या पेश करूं?"

"कारू दो। पांच सौ सालों से कारू का स्वाद नहीं चखा।" धरा मुस्कराकर बोली।

दोलाम ने एक गिलास उठाया और खुंबरी को थमा दिया।

खुंबरी ने घूंट भरा और चेहरे पर ऐसे भाव उभरे जैसे संतुष्टि मिल गई हो।

"पृथ्वी ग्रह पर कारू नहीं होती?" दोलाम ने पूछा।

"कारू जैसा पदार्थ होता है, परंतु वहां मुझे ये एहसास कभी नहीं हुआ कि मैं पृथ्वी की मालकिन हूं। इसलिए कारू पीने का मन ही नहीं किया कभी। यहां तो कारू की चाहत बढ़ जाती है। कारू के साथ-साथ, सदूर की रानी होने का नशा भी तो सिर पर चढ़ता है।" धरा मुस्कराई।

"मैं आपको जल्द ही रानी बने देखना चाहता हूं महान खुंबरी।"

"अभी नहीं। सबसे पहले डुमरा को सबक सिखाना है।" धरा ने कारू का बड़ा-सा घूंट भरा—चेहरा कठोर हो गया था—"मेरी ताकतें उसकी शक्तियों से कहीं ज्यादा बेहतर हैं, मैं डुमरा को ये दिखा देना चाहती हूं और उसका बुरा हाल कर देना चाहती हूं।"

"जिस दिन ये वक्त आएगा, उस दिन मैं जश्न मनाऊंगा।" दोलाम ने खुशी से कहा।

धरा ने एक ही सांस में कारू का गिलास खाली कर दिया।
"कारू और लाऊं?" खाली गिलास थामता दोलाम बोला।
"अभी नहीं।" धरा बोली "पहले मैं नहाना चाहूंगी। उसके बाद मुझे ताकतों से मुलाकात करनी है और अपने शरीर को भी जिंदा करना है। बहुत काम है मेरे पास। मैं जल्दी से सब कुछ सामान्य कर लेना चाहती हूं।" कारू के नशे में धरा के चेहरे पर शांत भाव दिखने लगे थे। उसका खुशी का उत्साह और बढ़ चुका था। चेहरे पर बार-बार मुस्कान छा जाती।
दोलाम ने उसके नहाने का इंतजाम किया।
वो छोटे से तालाब जैसी जगह थी भीतर जाकर। बिल्कुल साफ पानी था कमर तक। धरा ने कपड़े उतारे और तालाब में उतर गई। पानी में डूब जाने के बाद भी उसका संगमरमरी शरीर चमक रहा था। मशालों की वहां पर्याप्त रोशनी थी।
दोलाम तब तक वहां खड़ा रहा, जब तक वो नहाकर बाहर नहीं निकली। उसके बाहर आते ही दोलाम एक गाऊन जैसा कपड़ा लिए आगे बढ़ा और धरा के गीले शरीर पर ही डाल दिया। धरा ने उस कपड़े को अपने शरीर से बांध लिया।
"मुझे बिना कपड़े के देखकर तुम्हें कुछ होता है दोलाम?" धरा ने सहज स्वर में पूछा।
"मुझे कुछ नहीं होता महान खुंबरी।"
धरा की निगाह दोलाम पर टिक गई।
"कुछ नहीं होता?"
"नहीं।" दोलाम ने शांत स्वर में कहा।
"तो क्या मेरा सौंदर्य फीका पड़ चुका है जो तुम्हें कुछ नहीं होता?" धरा का स्वर सामान्य था।
"ये बात नहीं।" दोलाम ने कहा—"मैं आपका आदर करता हूं। आप महान हैं। ऐसे में मैं आपके शरीर को देखकर कुछ सोच ही नहीं सकता। मैं आपका सेवक हूं। मेरे मन में आपके प्रति गलत बात नहीं आ सकती।"
"बबूसा कहता है कि प्यार बहुत जरूरी चीज है।"
"ये तो आपको पता होगा महान खुंबरी।"
"मैंने पृथ्वी पर भी किसी से प्यार नहीं किया। जब यहां थी तब भी प्यार नहीं किया जो बता सकूं प्यार जीने के लिए अहम है या नहीं?"
"आपकी ताकतों और सदूर के सामने प्यार कोई अहमियत नहीं रखता।"
"मतलब कि प्यार सच में बेकार की चीज है।"
"हां महान खुंबरी।"
धरा आगे बढ़ती कह उठी।

"मुझे कारू दो और उसके बाद खाने का इंतजाम कर दो। फिर मैं अपनी ताकतों से बात करूंगी।"

धरा एक कमरे में पहुंची और टेबल के पास जा रुकी।

टेबल पर कई तरह का सामान रखा था। उसमें 'बटाका' भी था। धरा ने बटाका को उठाया चूमा और वापस रख दिया। आंखों में चमक और चेहरे पर मुस्कान थी फिर टेबल पर रखे अन्य सामान को देखने लगी।

दोलाम कारू का गिलास ले आया।

धरा ने घूंट भरा।

"खाना तैयार है महान खुंबरी।"

"इतनी जल्दी?" धरा ने दोलाम को मुस्कराकर देखा।

"ताकतों की माया है।" दोलाम ने कहा—"मैं खाने के कमरे में गया तो खाना तैयार पड़ा मिला बर्तनों में। आपकी ताकतें चाहती हैं कि आप जल्दी से खाना खाएं और उनके पास जाकर बातें करें।"

धरा ने एक ही सांस में हाथ में थाम रखे कारू के गिलास को खत्म कर दिया।

▭ ▭
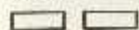
कारू के नशे में धरा का चेहरा तप रहा था। आंखों में मदहोशी छाई झलक रही थी। शरीर पर वो ही गाऊन जैसा कपड़ा लिपटा पड़ा था। चाल में जरा भी लड़खड़ाहट नहीं थी। कई रास्तों को पार करके वो एक ऐसे कमरे में पहुंची जो न तो ज्यादा बड़ा था और न ही छोटा। कमरे की दीवारों पर सफेद रंग किया गया था। छत पर भी सफेद रंग था। कमरे में एक तरफ धातु की बनी दो मशीनें रखी थीं। अजीब-सी टेढ़ी और असमतल मशीनें। एक मशीन मात्र एक टांग के सहारे खड़ी थी। वो टांग जैसी धातु की मोटी रॉड, मशीन के ठीक बीचोबीच थी और जमीन में धंसी हुई थी, जबकि दूसरी मशीन पांच टांगों पर खड़ी थी। मशीनों में कई लीवर और बटन लगे दिख रहे थे।

कमरे में प्रवेश करते ही धरा कह उठी।

"खुंबरी आ गई मेरी ताकतों। खुंबरी वापस लौट आई है।"

जवाब में कमरे में सन्नाटा रहा।

एक तरफ छोटा-सा चबूतरा बना हुआ था। उस पर कड़ाही के आकार का धातु का बना बर्तन रखा था। जो कि पूरी तरह साफ था। उसके भीतर कुछ भी नहीं था। धरा समझ गई कि दोलाम उस बर्तन को साफ करता रहता होगा। वो बर्तन के बीच में हाथ फेरकर कह उठी।

"मंत्रों वाला कटोरा खाली है तो ताकतों को ऊर्जा कहां से मिलेगी। मुझे सब कुछ सही करना होगा।"

उसी पल दोलाम ने भीतर प्रवेश किया तो धरा बोली।

"मशीनों में गंधक वाला पानी डालो दोलाम।"

दस मिनट लगाकर मशीनों के सूराख में दोलाम ने ऐसा पानी डाला, जिसमें से तीव्र स्मैल उठ रही थी। इस काम से फारिग होते ही वो कई कदम पीछे हटकर खड़ा हो गया।

धरा ने बारी-बारी दोनों मशीनों का एक बटन दबाया तो उनमें बे-आवाज सा कम्पन उठ खड़ा हो गया।

मशीनों पर हाथ रखने से उस कम्पन का एहसास हो रहा था। फिर मशीनों के कुछ लीवर खींचे, कुछ को दबाया। मशीन में से गड़-गड़ की आवाजें आने लगीं। कई पलों तक ये ही स्थिति रही फिर धरा ने दोनों मशीनों से निकलती महीन-सी तारों को आपस में बांधा तो तभी सामने की सफेद दीवार पर काली छाया के रूप में दृश्य से उभरने लगे।

धरा की आंखों में तीव्र चमक आ ठहरी।

उसी पल सफेद दीवार पर दो-तीन छाया उभरी और एक को जैसे बोलते पाया।

"तेरा स्वागत है खुंबरी। तेरे से आ जाने से हम सब बहुत खुश हैं।" आवाज बेहद कमजोर थी। वो मशीन से उभरी थी।

"ढोला।" धरा खुशी से चीख उठी—"तेरी आवाज सुनकर मुझे बहुत खुशी हो रही है।"

"हमें ऊर्जा दे खुंबरी। नहीं तो हमारा अंत हो जाएगा बिना ऊर्जा के हमने बहुत काम कर लिया। अब तो हमसे बोला भी नहीं जाता। एक-एक पल हम पर भारी पड़ रहा है।" ढोला का कमजोर स्वर फिर से सुनाई दिया।

"मैं अभी तुम सबके लिए ऊर्जा का प्रबंध करती हूं।" धरा जोश भरे स्वर में कह उठी—"मंत्रों वाला कटोरा अभी तैयार करती हूं। इसके अलावा और बता क्या करूं?"

"पहले इस काम को पूरा कर। हमें ऊर्जा चाहिए। हम सब कमजोर हो चुकी हैं।"

"ठीक है ढोला। उसके बाद तू 'बटाका' द्वारा मुझसे बात कर सकेगा?" धरा ने पूछा।

"हां। फिर तू बटाका का सफल इस्तेमाल कर सकेगी।"

धरा ने मशीनें बंद की और दोलाम से बोली।

"मुझे मंत्रों कटोरा तैयार करना है दोलाम। स्वच्छ पानी ला।"

दोलाम गया और अन्य बर्तन में पानी लेकर लौटा।

धरा ने उससे बर्तन लिया और पहले पड़े बर्तन को पानी से भर दिया। फिर उस भरे बर्तन के पास ही चबूतरे पर धरा बैठी और आंखें बंद करके होंठों ही-होंठों में मंत्रों का उच्चारण करने लगी। उनका मध्यम-सा स्वर

वहां गूंज रहा था। ये पता नहीं लग रहा था कि वो कैसे मंत्र बोल रही है।

दोलाम खड़ा रहा।

कई घंटों तक धरा इसी काम में व्यस्त रही।

दोलाम अपनी जगह पर खड़ा रहा। थकान का कोई चिन्ह उसके चेहरे पर नहीं था। बल्कि उसके चेहरे पर खुशी के भाव उभरे हुए थे, जैसे उसके पसंदीदा काम को अंजाम दिया जा रहा हो।

आखिरकार वो वक्त भी आया जब पानी से भाप जैसा धुआं उठने लगा। तब कहीं जाकर धरा के मंत्र उच्चारण की क्रिया रुकी और उसने आंखें खोलीं। चेहरे पर मुस्कान आ गई थी। कई पलों तक वो भाप वाले पानी को देखती रही फिर खुशी से हंस पड़ी।

"मेरी ताकतों ऊर्जा हासिल करो और फिर से ताकतवर बन जाओ।" धरा कह उठी।

पानी से भाप उठती जा रही थी।

धरा चबूतरे से नीचे उतरी और दोलाम से कह उठी।

"मंत्रों वाला पानी सूखे नहीं। समय-समय पर इसमें पानी डालते रहना।"

"मुझे सब याद है महान खुंबरी। बिना ऊर्जा के ताकतें कमजोर हो रही थी, इसी कारण ही मुझे भी ज्यादा ऊर्जा वाला जीवन नहीं दे पा रही थीं। ताकतों को ऊर्जा मिलते ही, मुझमें भी स्फूर्ति आ जाएगी।" दोलाम हंसकर कह उठा।

"ताकतें और तुम, मुझे सबसे प्यारे हो। मैं तुम सबको खुश रखने के लिए, अपने को भी दांव पर लगा दूंगी। इन पांच सौ कष्ट से भरे सालों में ताकतों ने मुझे बहुत सहारा दिया। पृथ्वी ग्रह पर मेरा भरपूर खयाल रखा। अच्छी जगह हर बार मेरा जन्म कराया। मुझे तकलीफें नहीं आने दीं। मैं सदूर पहुंच सकूं, इसके लिए ताकतों ने कमजोर होते हुए भी भरपूर मेहनत की। तुम सबके बिना खुंबरी बेजान है।"

"आप सच में महान हैं खुंबरी।" दोलाम कह उठा।

"अब मैं अपना शरीर देखना चाहती हूं। उसे जीवन देना है।" धरा की आंखें चमक उठीं।

धरा सबसे पहले उस कमरे में गई जहां टेबल पर 'बटाका' रखा था। बटाका उठाकर गले में डाला। बटाका के नग में इस समय खास चमक नहीं थी। धरा ने नग को छुआ और बोली।

"दोला।"

"बोल खुंबरी।"

"ऊर्जा मिली?"

"मिल रही है, परंतु स्वस्थ होने में कुछ वक्त लगेगा।" धरा के कानों में दोला की आवाज पड़ी।

"मुझे कोई जल्दी नहीं है। मैं तुम सबको स्वस्थ देखना चाहती हूं। ये बताओ अपने शरीर को कैसे जिंदा करूं?"

"तुम अपने शरीर के पास लेट जाना। बाकी क्रिया हम कर देंगे।"

"ठीक है।" कहकर धरा ने 'बटाका' (नग) छोड़ा और कमरे से बाहर निकलकर एक रास्ते पर बढ़ गई। धरा के चेहरे पर खुशी की लहरें दौड़ रही थीं। वो पूरी तरह उत्साह से भरी लग रही थी। रास्ते के बीच ही बाईं तरफ नीचे जाती सीढ़ियां आईं तो धरा वो सीढ़ियां उतर गई।

सोलह सीढ़ियां उतरने के बाद वो एक कमरे में जा पहुंची थी। कमरे की दीवारें रंग-बिरंगे रंगों से सजी थीं। बहुत शांत-सा माहौल लग रहा था यहां। दोलाम भी यहां मौजूद था परंतु ऐसा लग रहा था जैसे कोई और भी यहां हो। इस तरह का एहसास-सा होता था। उस कमरे में धातु के बने बक्से के अलावा और कुछ नहीं था। वो बक्सा आठ फुट लम्बा और तीन फुट चौड़ा था। उसके ऊपर धातु का ही ढक्कन था और उसका रंग भूरा था।

धरा की चमक भरी निगाह उस बक्से पर जा टिकी थी।

"खुंबरी का शरीर सामान्य हाल में है न दोलाम?" खुंबरी बोली।

"हां, महान खुंबरी।" दोलाम बोला—"आप स्वयं देख लें।" आगे बढ़कर दोलाम ने बक्से का ढक्कन उठा दिया।

पास पहुंचकर धरा ने भीतर झांका। उसके होंठ भिंच गए। आंखों की चमक बढ़ गई। बक्से के भीतर धरा के चेहरे वाली ही युवती पीठ के बल लेटी हुई थी। देखने पर ऐसा लग रहा था जैसे अभी-अभी सोई हो। बंद आंखें। खूबसूरत होंठ। चौड़ा माथा। खूबसूरत नाक। वो धरा से ज्यादा खूबसूरत लग रही थी। उसके कंधे धरा से ज्यादा चौड़े थे और वो कुछ लम्बी भी लग रही थी। लेकिन चेहरा दोनों का एक जैसा था। परंतु उसके शरीर पर पड़े कपड़े सड़ चुके थे। नग्न जिस्म हर जगह से झांक रहा था। धरा ने झुककर खुंबरी के शरीर को छूकर देखा।

शरीर गर्म-सा लग रहा था। स्पष्ट था कि ताकतों ने खुंबरी का शरीर गर्म रखा हुआ है। धरा ने खुंबरी के शरीर को अच्छी तरह चैक किया। परंतु कहीं से भी शरीर खराब नहीं था। उरोज छोटे किंतु खूबसूरत थे। नाभि का हिस्सा बेहद आकर्षक लग रहा था सिर के बाल खूबसूरती से फैले हुए थे।

"तुमने अच्छी देखभाल की खुंबरी के शरीर की।"

"महान खुंबरी की सेवा करके मैं बहुत खुश हूं।" दोलाम बोला।

"खुंबरी के शरीर को बक्से निकालकर फर्श पर लिटाना है।" धरा ने कहा।

फिर एक तरफ से धरा ने बांहें थामी, दोलाम ने टांगें थामी और खुंबरी के शरीर को उठाकर बक्से के भीतर से निकाला और पास ही फर्श पर लिटा दिया। उसके पास ही धरा लेट गई। आंखें बंद कर लीं।

दोलाम खामोशी से खड़ा रहा परंतु उसके चेहरे पर चमक थी।

वक्त बीतने लगा। आधा घंटा बीत गया। पौन घंटा बीता।

एक घंटा बीत गया। धरा उसी मुद्रा में आंखें बंद किए खुंबरी के शरीर के पास लेटी थी। दोलाम अपनी जगह से जरा भी नहीं हिला था।

एकाएक धरा के होंठों से कराह निकली फिर कमरे में कोहरे जैसा धुआं दिखने लगा। जो कि धीरे-धीरे जाने कहां से कमरे में भरता जा रहा था। तभी वो कोहरा इकट्ठा हुआ और गोले के रूप में धरा और खुंबरी के शरीरों पर इस तरह फैल गया कि दोनों शरीर ही दिखने बंद हो गए। दोलाम को कोहरे रूपी गोला ही दिखता रहा।

पंद्रह मिनट बीते कि एकाएक वो कोहरा छंटने लगा।

दोलाम की आंखों में चमक बढ़ गई।

छंटते कोहरे के साथ ही, उसे खुंबरी बैठी मुद्रा में दिखी।

धीरे-धीरे कोहरा पूरी तरह छंट गया।

खुंबरी बैठी हुई नजरें घुमा रही थी। उसकी आंखें, धरा से बड़ी थीं। वो धरा से ज्यादा खूबसूरत थी। फिर खुंबरी अपना शरीर देखने लगी। अच्छी तरह अपने शरीर को देखा।

दोलाम उसे देखता खुश हो रहा था। फिर प्रसन्न स्वर में कह उठा।

"महान खुंबरी का स्वागत है। दोबारा जीवन शुरू करने पर।"

"ओह दोलाम।" खुंबरी के होंठों से खतरनाक स्वर निकला—"तुमने मेरे शरीर का खूब खयाल रखा।"

"महान खुंबरी, मैं सप्ताह में एक बार आपके पूरे शरीर को साफ करके, दवा लगाया करता था।" दोलाम खुशी से बोला

"तभी तो मेरे शरीर को नुकसान नहीं हुआ।" खुंबरी बोली—"तुम्हें ईनाम मिलेगा दोलाम।" फिर खुंबरी ने पास लेटी धरा को देखा जिसकी आंखें अभी भी बंद थी। उससे बोली—"उठ जा धरा।"

धरा ने आंखें खोलीं और उठ बैठी। खुंबरी को देखा।

खुंबरी खड़ी हो गई। वस्त्र के नाम पर उसके शरीर पर कुछ नहीं था। खराब हो चुके कपड़े जो शरीर पर थे, वो उसने गिरा दिए थे। धरा उसे ध्यानपूर्वक देखने के बाद बोली।

"तू तो बिल्कुल मेरे जैसी है। पर तू ज्यादा लम्बी है। मेरे से ज्यादा खूबसूरत है। तेरे कंधे चौड़े हैं। तेरा शरीर भी मेरे से बहुत अच्छा है। हम दोनों एक जैसी हैं, पर हममें ये फर्क क्यों?"

"क्योंकि तू मेरा रूप है। खुंबरी मैं हूं। मेरे रूप में तू धरा है जो पृथ्वी पर जन्मी थी।" खुंबरी मुस्कराकर बोली।

धरा भी उठ खड़ी हुई।

"मुझे खुशी है कि जान तेरे में प्रवेश कर गई।"

"वो तो करनी ही थी। ताकतों ने ये काम किया।" खुंबरी ने बांहें उठाकर अंगड़ाई ली—"अब डुमरा को देखना है।"

"मिला था वो मुझसे। वो...।"

"बेवकूफ, मुझे सब पता है। जो जानकारी तेरे पास है, वो स्वयं ही मेरे पास आ चुकी है। मतलब कि अब तक का वक्त तेरे को बताने की जरूरत नहीं। पृथ्वी की बातें, पोपा की बातें, सब कुछ मैं जान चुकी हूं। तेरे से ही जान लेकर, ताकतों ने मेरे शरीर में डाली है।" खुंबरी ने बांहें नीचे कीं—"चल मैं नहा लूं। वहीं पर बातें करते हैं। नहाने का पानी तैयार है दोलाम?"

खुंबरी और धरा उसी जगह पर पहुंचे जहां धरा नहाई थी। खुंबरी ने कुछ भी नहीं पहना था।

दोलाम उनके चार कदम पीछे था।

खुंबरी ने चैन-भरी निगाहों से पानी को देखा फिर गहरी सांस ली जैसे कुछ सूंघ रही हो।

"पानी में इत्र नहीं डाला दोलाम।"

"क्षमा महान खुंबरी। भूल गया।" कहकर दोलाम तुरंत चला गया।

खुंबरी पानी के किनारे टहलती कह उठी।

"डुमरा ने बहुत तकलीफ दी।"

"पांच सौ साल हमने किस तरह बिताए। तुम बिना जान के पड़ी रहीं और मैं पृथ्वी पर जन्म लेती भटकती रही।" धरा के चेहरे पर क्रोध के भाव दिखने लगे। वो पांव पटककर बोली—"डुमरा से हम बदला लेकर ही रहेंगे।"

"मैंने सोच लिया है कि डुमरा को मौत देंगे।" खुंबरी का स्वर कठोर हो गया—"बहुत बुरी मौत।"

"ऐसा ही होगा खुंबरी।"

तभी दोलाम आया। उसके हाथ में इत्र की शीशी थी जो कि उसने पानी में उड़ेल दी।

खुंबरी पानी में उतरती कह उठी।

"आ, मेरे साथ नहा ले।"

"नहा ली, अभी दोबारा नहाने का मन नहीं है।" धरा पानी के बाहर टहलते कह उठी।

खुंबरी पानी में उतरी, पानी संग खेलने लगी।

दोलाम कुछ कदम दूर खड़ा था।

"ढोला को बुला।" खुंबरी पानी में नहाते कह उठी।

धरा ने बटाका (नग) थामा और पुकारा।

"ढोला।"

"हुक्म महान खुंबरी।" धरा के कानों में महीन-सी आवाज पड़ी।

"उससे बात कर।" धरा बोली।

अगले ही पल खुंबरी के कानों में कुछ ऊंची आवाज पड़ी।

"हुक्म महान खुंबरी।"

"डुमरा को खत्म करना है।" खुंबरी ने कहा।

"क्यों नहीं।" ढोला की आवाज उभरी—"अब डुमरा को जिंदा रहने का कोई हक नहीं। परंतु हमें कुछ वक्त चाहिए।"

"कैसा वक्त?"

"सब ताकतें ऊर्जा प्राप्त कर रही हैं। कुछ ताकतें तो ऊर्जा न मिलने से होश खो बैठी हैं। सब ठीक होने में एक दिन का वक्त तो लगेगा ही।"

"इतनी भी जल्दी नहीं है ढोला। ताकतों को ऊर्जा ले लेने दो।"

"गोमात तुमसे कुछ कहना चाहता है।"

"कहो गोमात।" खुंबरी कह उठी।

"महान खुंबरी की जय हो।" एक नई आवाज वहां उभरी—"पुनः जीवन में आने की, खुशी हुई।"

"तुम सब मेरे अंगों की तरह हो।"

तभी दोलाम एक थाल थामे पास आया थाल में पाउडर जैसा पदार्थ भर रखा था। खुंबरी पानी में किनारे तक उसके पास पहुंची और मुट्ठी भर पाउडर लेकर अपने सिर पर डाला और बालों पर हाथ फेरने लगी। देखते-ही-देखते बालों में ढेर सारी झाग बनती चली गई। दोलाम पीछे हटता चला गया। वातावरण में इत्र की खुशबू फैल चुकी थी।

"खुंबरी।" गोमात की आवाज उभरी—"डुमरा फंसा पड़ा है।"

"वो कैसे?"

"उसने श्राप दिया था और वो श्राप स्वीकार करके तुमने पूर्ण भी कर दिया। अब डुमरा तुम पर कोई 'वार' नहीं कर सकता। जब तक कि तुम उस पर पहला वार न करो। अगर तुम डुमरा पर वार नहीं करोगी तो वो तड़पता रहेगा।"

"स्पष्ट कहो।"

"मेरे खयाल में तुम डुमरा का खयाल छोड़ दो तो बेहतर होगा।"

"क्या कहा।" खुंबरी के चेहरे पर क्रोध उभरा—"तुम कहते हो कि मैं डुमरा से बदला न लूं।"

"तुम्हारे पास ताकतें हैं और डुमरा के पास शक्तियां। कोई भी कमजोर नहीं है। मुझे डर है कि कहीं फिर कुछ गलत न हो जाए।"

"तुम डर रहे हो गोमात।" खुंबरी गुर्रा पड़ी—"और मुझे भी कमजोर बनाना चाहते...।"

"नहीं महान खुंबरी। मैं तो चाहता हूं कि तुम अपने कामों की तरफ ध्यान दो। डुमरा हमेशा ही तुम्हारे 'वार' का इंतजार करता रहेगा। वो तुम्हें मिटा देना चाहता है, परंतु तुम्हारी तरफ से पहला वार न होने की स्थिति में वो ठीक से जी भी नहीं पाएगा। ये सजा होगी डुमरा के लिए। डुमरा के लिए ये हार ही है कि तुम श्राप पूरा करके अपनी जगह पर फिर से स्थापित हो गई हो।"

"मुझे तुम्हारी सलाह की जरूरत नहीं है।" खुंबरी गुस्से से कह उठी।

"क्या महान खुंबरी नाराज हो गई।"

"मैंने डुमरा से बदला लेना है। क्या तुम मेरे विचार से सहमत हो?"

"महान खुंबरी का हुक्म टालने की हिम्मत मुझमें नहीं है।" गोमात की आवाज आई—"मैंने तो सिर्फ सलाह दी थी। परंतु मेरी सलाह गलत थी।"

"पूरी तरह गलत।"

"जो हुक्म।"

"ऊर्जा लेने के बाद डुमरा पर हमला करने की तैयारी करो।" खुंबरी ने आदेश भरे स्वर में कहा।

"ऐसा ही होगा। आपके रहने के लिए किसी दूसरी जगह का इंतजाम कर दिया जाए।" गोमात ने पूछा।

"अभी नहीं। विचार करने के बाद इस बात का जवाब दूंगी।"

तभी ढोला की आवाज उभरी।

"गोमात की बात से मैं भी सहमत नहीं हूं महान खुंबरी। डुमरा को सबक सिखाना जरूरी है। उसे मृत्यु देनी है।"

"जरूर देंगे ढोला। डुमरा इसी काबिल है।" खुंबरी ने नहाते हुए सख्त स्वर में कहा।

"हमारा ऊर्जा हासिल होने का कार्य पूर्ण होते ही, पूरी ताकत के साथ हम आपकी सेवा में हाजिर हो जाएंगे।"

धरा पानी के किनारे-किनारे टहल रही थी। एक शब्द भी बीच में न बोली थी।

"तब तक मैं इस बात पर विचार कर लूंगी कि डुमरा पर कैसा वार किया जाए।"

"मेरे खयाल में डुमरा पर छोटा-सा वार करके, उसके लिए वार करने के दरवाजे खोल दिए जाएं और देखें कि वो कैसा वार करता है। वो

किस तरह से लड़ाई पसंद करता है। तब हम उसी तरीके से उसकी जान लेंगे।"

"इस बारे में बाद में बात करेंगे ढोला। पहले तुम सब ऊर्जा प्राप्त कर लो।"

"श्राप के बाद सदूर कई टुकड़ों में बंट गया था।" ढोला की आवाज पुनः आई—"क्या फिर से उन टुकड़ों को पास बुलाने का कार्य शुरू किया जाए? इस काम में काफी ज्यादा वक्त लग जाने की संभावना है।"

"और हमारे पास वक्त कम है।" खुंबरी कह उठी।

"सदूर की रानी बनने के प्रयास भी शुरू करने हैं।"

"सबसे जरूरी काम खुंबरी के लिए डुमरा है। डुमरा की मौत है।" खुंबरी दांत भींचे कह उठी।

"मैं समझ गया महान खुंबरी। ऊर्जा प्राप्त करते ही, मैं आपकी सेवा में फिर हाजिर होता हूं।"

उसके बाद ढोला की आवाज नहीं आई।

बातचीत खत्म हो गई थी।

धरा ठिठकी और खुंबरी से कह उठी।

"डुमरा के ठिकाने का पता लगाओ। उसे घेरो और खत्म कर दो।"

"ये इतना आसान नहीं होगा। डुमरा को भी पता है कि अब हम उसे छोड़ने वाले नहीं। ऐसे में वो सतर्क होगा और अपनी सुरक्षा के उपाय कर चुका होगा। डुमरा को चालाकी से मारना होगा।" खुंबरी ने कहा और पानी में डुबकी लगा दी।

जब खुंबरी ने पानी से सिर निकाला तो धरा बोली।

"इंसान जब ज्यादा सतर्क हो जाए तो उसे मारना और भी आसान हो जाता है। सतर्कता में वो कोई-न-कोई रास्ता भूल जाता है, जिस पर पहरा नहीं होता। मैं देखूंगी डुमरा को।"

"तू।" खुंबरी ने धरा को देखा।

"क्या मैं डुमरा को नहीं संभाल सकती?"

"क्यों नहीं संभाल सकती। तू मेरा ही रूप है। खुंबरी तो खुंबरी ही रहेगी, बेशक वो किसी भी रूप में हो।"

"मैं पता करूंगी कि डुमरा कहां है। उसके बाद उसका काम तमाम करूंगी।"

"जल्दी मत कर। ये काम आसान नहीं रहेगा। डुमरा के पास ढेर सारी शक्तियां हैं।"

"हमारे पास भी ताकतों की कमी नहीं और सबसे अच्छी बात तो हमारे हक में ये है कि जब तक हम वार नहीं करेंगे, तब तक श्राप के नियम के

हिसाब से, डुमरा वार नहीं कर सकता। करेगा तो खुद-ब खुद ही मर जाएगा। ऐसे में हम बहुत ही खास वक्त पर डुमरा पर पहला और आखिरी वार करेंगे कि वो बच न सके।"

खुंबरी ने धरा को देखा। कहा कुछ नहीं।

एकाएक धरा का चेहरा बेचैनी से भर उठा। वो बटाका थामती कह उठी।

"क्या है?"

"मैं खुंबरी से बात करना चाहती हूं।" धरा के कानों के पास महीन-सी आवाज उभरी।

"अमाली।" धरा के होंठों से निकला।

"हां, अमाली हूं मैं। खुंबरी को मुंह लगी।" अमाली कहकर हौले-से हंसी।

"कर ले बात।"

अगले ही पल अमाली की कुछ ऊंची आवाज उभरी।

"महान खुंबरी के मिजाज कैसे हैं?" स्वर में चंचलता थी।

"खुंबरी खुश है वापस जीवन में आकर।" खुंबरी नहाने के बाद किनारे पर आ पहुंची।

"बुरा हो डुमरा का जिसने मेरी खुंबरी को पांच सौ सालों तक कष्ट दिया। मैं तो उसकी गर्दन मरोड़ दूं।"

मुस्करा पड़ी खुंबरी। वो पानी से बाहर निकली। उसका एक-एक अंग पानी की बूंदों में लिपटा चमक रहा था। दोलाम तुरंत आगे बढ़ा और गाऊन जैसा कपड़ा उसके भीगे बदन पर दे दिया। खुंबरी ने कपड़ा अपने शरीर से लपेटा।

"एक बहुत ही विचित्र बात मैंने देखी। कुछ आभास-सा हुआ कि जिसके कारण मुझे आना पड़ा।" अमाली की आवाज गूंजी।

"कह दो।"

"तू प्यार पर तो विश्वास नहीं करती?"

"नहीं। प्यार-व्यार कुछ भी नहीं होता।" खुंबरी ने लापरवाही से कहा—"मुझे कभी भी ऐसी बातें अच्छी नहीं लगतीं।"

"पर मुझे आभास हुआ है कि तेरे को प्यार होने वाला है महान खुंबरी।"

"क्या?" खुंबरी की आंखें सिकुड़ीं।

चंद कदमों के फासले पर खड़ा दोलाम मुस्करा पड़ा।

धरा ने आंखें नचाकर, खुंबरी को देखा।

"सच में खुंबरी।" अमाली का स्वर धरा के आस पास से उभर रहा था—"तू प्यार करने वाली है।"

"बकवास।" ऐसा कभी नहीं हो सकता।"

"प्यार भी तेरे को पृथ्वी के पुरुष से होने वाला है।"

"पृथ्वी का पुरुष?" खुंबरी के माथे पर बल दिखने लगे।
दोलाम के चेहरे पर नाराजगी उभर आई।
"तू उसके प्यार में पागल हो जाएगी। फिर...।"
"तेरे को पता है खुंबरी ने आज तक किसी से प्यार नहीं किया। कोई मर्द खुंबरी को नहीं भाता। आज तक खुंबरी इन बातों से दूर रही है। मुझे किसी से प्यार नहीं होगा अमाली।" खुंबरी ने सख्त स्वर में कहा।
"देख लेना।" अमाली की हंसी उभरी—"तेरे को प्यार हो जाएगा।"
"खामखाह की बातें न कर।"
"तेरे रूप के तो हजारों दीवाने रहे हैं पर तूने किसी को न चाहा। अब ऐसा होने वाला है।"
"मुझे गुस्सा मत दिला। चली जा।"
उसके बाद अमाली की आवाज नहीं उभरी।
'बेवकूफ।' खुंबरी गुस्से से बड़बड़ा उठी—'मुझे प्यार होने वाला है।'
"महान खुंबरी।" दोलाम बोला—"अमाली की बात को आप हल्के में नहीं ले सकतीं। वो कहती है तो जरूर ऐसा होगा।"
"तू इस बात के प्रति खामोश रह।"
परंतु दोलाम कुछ नाराज-सा दिखा कि खुंबरी को किसी से प्यार होने वाला है।
"चल।" खुंबरी, धरा से बोली—"मैं कुछ आराम करूंगी। सोचूंगी।"
"खाना नहीं खाएगी?"
"नहीं।" खुंबरी ने इंकार में सिर हिलाया—"अमाली ने मन खराब कर दिया।"
"अमाली यूं ही तो ये बात नहीं कहने वाली।" धरा बोली—"कुछ तो होने वाला ही होगा।"
खुंबरी और धरा वहां से चल पड़ीं।
दोलाम पीछे रहा।
"मैं नहीं मानती।" खुंबरी बोली—"मैंने आज तक किसी से प्यार नहीं किया। मर्द मुझे कभी अच्छे नहीं लगे।"
"पर अब ऐसा होने वाला होगा।"
खुंबरी ने गहरी सांस ली।
"अब तू इस बात का इंतजार करेगी कि पृथ्वी का वो कौन-सा पुरुष है, जिससे तुझे प्यार होगा"
उसी पल पीछे आता दोलाम कह उठा।
"महान खुंबरी को पृथ्वी के पुरुष से प्यार करने की क्या जरूरत है।

सदूर पर पृथ्वी से भी खूबसूरत और अच्छे मर्द हैं। खुंबरी को प्यार करना होगा तो सदूर के पुरुष से करेगी।"

"तेरे को मना किया है न कि तू इस मामले में मत बोल।" धरा कह उठी।

दोलाम नाराजगी भरे अंदाज में चुप कर गया।

एकाएक चलते-चलते खुंबरी मुस्करा पड़ी। उसका निचला होंठ टेढ़ा हो गया।

"देखूंगी कि अगाली की बात सच है या नहीं?"

धरा भी मुस्कराई तो उसका भी निचला होंठ टेढ़ा हो गया।

वो नए रास्तों को पार करके एक शानदार कक्ष में पहुंचे। वहां बड़ा-सा बेड बिछा था। चादरें बिछी थीं। तकिए रखे थे। कमरे में किए गए रंगों की सजावट देखते ही बनती थी।

खुंबरी आगे बढ़ी और बेड पर जा बैठी। धरा दोलाम से बोली।

"तुम जाओ दोलाम। अब हम कुछ आराम करेंगी।"

"खोनम बना लाऊं?" दोलाम ने पूछा।

"कुछ नहीं तुम जाओ।"

दोलाम चला गया।

"ताकतें ऊर्जा प्राप्त कर लें। उसके बाद हमारी व्यस्तता बढ़ जाएगी।" खुंबरी ने कहा।

"डुमरा को मैं खत्म करने का प्रयास करूंगी।" धरा बोली।

"आसान मत समझ, डुमरा को।"

"मैं जानती हूं कि ये काम बहुत कठिन है।" धरा के होंठ भिंच गए।

▭ ▭
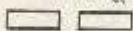
सदूर के शहर के इलाके के बीचोबीच वो तीन मंजिला विशाल इमारत थी। इमारत के गेट पर तीन पहरेदार मौजूद थे। डुमरा दोपहिया वाहन पर वहां पहुंचा। वो ही वाहन चला रहा था। वाहन पर दो लोगों के बैठने का इंतजाम था परंतु डुमरा अकेला ही वाहन पर मौजूद था। पहरेदारों ने गेट खोल दिया। डुमरा वाहन को भीतर ले जाता चला गया। भीतर जाकर उसने वाहन रोका और उतरकर तेज कदमों से छोटे-से प्रवेश गेट की तरफ बढ़ गया। पास पहुंचकर दरवाजा धकेला और भीतर प्रवेश कर गया। भीतर लोग आते-जाते व्यस्त दिखे। वहां से भीतर की तरफ पांच रास्ते जाते दिखाई दे रहे थे। डुमरा एक लिफ्ट जैसी जगह पर खड़ा हुआ तो लिफ्ट खुद-ब-खुद ही ऊपर की तरफ जाने लगी। डुमरा के चेहरे पर सोच के भाव दिख रहे थे।

ऊपर पहुंचकर लिफ्ट रुकी तो डुमरा वहां से निकलकर एक राहदारी में बढ़ गया। नीचे की अपेक्षा यहां कम लोग ही नजर आ रहे थे। एक बंद

दरवाजे को खोलते हुए डुमरा ने भीतर प्रवेश किया तो दरवाजा बंद होता चला गया। डुमरा ने आगे बढ़ते हुए कमरे में निगाह मारी।

एक टेबल की गिर्द कुर्सियों पर चार लोग बैठे हुए थे। चारों ही शांत और गम्भीर दिख रहे थे। डुमरा टेबल के पास पहुंचकर ठिठका, परंतु बैठा नहीं। चारों की निगाहें डुमरा पर ही थीं।

"मैंने खुंबरी को देखा। वो मेरे पास आई, बात भी हुई।" डुमरा ने गम्भीर स्वर में कहा—"मैंने तो सोचा था कि पांच सौ सालों में वो बदल जाएगी, परंतु वो जरा भी नहीं बदली। उसके तेवर वैसे के वैसे ही हैं।"

"ओह।" एक ने सिर हिलाया।

"तुमने उससे क्या कहा?"

"मैंने उसे बुरी ताकतों का साथ छोड़ देने का कहा, परंतु वो मुझे खत्म करने को कहने लगी।" डुमरा बोला।

"उसने तुम्हें पहचान लिया था?"

"उसकी ताकतें उसका मार्गदर्शन कर रही हैं। वो उसे सीधा मेरे पास ले आईं।"

"खुंबरी की ताकतों को ऊर्जा नहीं मिली। ऐसे में वो पांच सौ सालों के बाद भी उसकी सहायता कैसे कर रही हैं।"

"मेरे खयाल में इस वक्त के लिए ताकतों ने ऊर्जा किसी तरह बचा रखी होगी।" डुमरा ने कहा—"उसकी ताकतें अभी भी पूरी तरह उसके साथ हैं, बल्कि अब तो उसकी ताकतें और भी ताकतवर होती चली जाएंगी। अब उन्हें ऊर्जा मिलेगी तो वो एक नए जोश के साथ मैदान में आएंगी।"

"तो झगड़े के आसार बढ़ रहे हैं।"

"खुंबरी मेरे से बदला लेना चाहती है तो झगड़ा होगा ही।" डुमरा ने गम्भीर स्वर में कहा—"क्या मैं उन पर वार कर सकता हूं।"

"पहला वार तुम नहीं कर सकते। किया तो खत्म हो जाओगे। तुमने उसे श्राप दिया था। अब पहले वार का हक उसे है।"

"अभी उसकी ताकतों को ऊर्जा नहीं मिली होगी। पहला वार करने में फायदा है।"

"क्या तुम श्राप के नियम भूल गए डुमरा?"

"भूला नहीं हूं।"

"तो वार करने में पहल मत कर देना। इसका अंजाम तुम्हारे लिए अच्छा नहीं होगा।"

"खुंबरी कहां गई होगी?" दूसरे ने कहा।

"अपने उसी गुप्त ठिकाने पर गई होगी जहां उसका शरीर रखा है। डुमरा ने कहा—"उस जगह पर उसकी ताकतों ने अपना साया डाल रखा

है। इसलिए आज तक उस जगह का पता नहीं चल सका, परंतु ये पता है कि वो पूर्व में कहीं है।"

"मैं कुछ और ही सोच रहा हूं।" एक ने कहा।

"क्या?"

"अगर खुंबरी तुम पर वार नहीं करती तो तब तुम्हारी स्थिति क्या होगी?"

डुमरा होंठ भींचकर रह गया।

"ये झगड़ा तभी शुरू होगा, जब वो पहला वार तुम पर करे, उसके बाद ही तुम उस पर वार कर सकते हो। श्राप पूरा कर लेने के बाद ये ही नियम काम करता है। हम ये सोच सकते हैं कि खुंबरी चालाकी से काम लेती है। वो जानती है कि अगर उसने तुम पर वार करने की शुरुआत नहीं की तो, तुम बेबस होकर रह जाओगे। वो सदूर की रानी बनेगी और अपनी बुरी ताकतों का भरपूर इस्तेमाल करेगी, लेकिन तुम उसके खिलाफ कुछ नहीं कर सकोगे। उसकी बुरी ताकतों को खत्म करने की तुम्हारी इच्छा, अधूरी ही रह जाएगी। तब तुम...।"

"खुंबरी वार जरूर करेगी।" डुमरा ने कहा।

"न करे तो?"

"वो करेगी। उसके भीतर बदले की भावना प्रबल है। वो मुझसे मिली तो ये ही महसूस किया मैंने।" डुमरा ने कहा।

"बाद में उसे अक्ल आ जाए तो?"

"हो सकता है उसकी ताकतें ही उसे ऐसी सलाह दे दें कि वो डुमरा की तरफ देखे भी नहीं।"

डुमरा खामोश-सा उन्हें देखता रहा।

"अभी खुंबरी के पास वक्त है। वो काफी कुछ सोच सकती है।" तीसरे ने कहा।

"इसके लिए मुझे अपनी शक्तियों से बात करनी होगी।" डुमरा बोला—"तब कुछ पता चलेगा।"

"बेशक बात करो। परंतु पहला वार खुंबरी पर करने की गलती मत कर देना। हम तुम्हारे सलाहकार हैं। तुम्हें हमारी बात माननी चाहिए। तुमने पहले वार कर दिया तो तुम्हारे हक में बुरा होगा। श्राप के नियम के खिलाफ होगा।"

डुमरा ने कुछ नहीं कहा।

"क्या तुम सोचे बैठे हो कि पहला वार करोगे?"

"मैंने कोई फैसला नहीं लिया।" डुमरा ने कहा।

"मतलब कि सम्भव है कि तुम खुंबरी पर पहला वार कर सकते हो।" उसने डुमरा की आंखों में देखा।

डुमरा के चेहरे पर सख्ती छाई रही।

"इसका मतलब कर सकते हो। तुम्हारी खामोशी इसी तरह इशारा करती है।" वो पुनः बोला।

डुमरा के चेहरे पर उलझन थी।

"दोस्तों।" वो अपने तीन साथियों से कह उठा—"डुमरा श्राप के नियम के विरुद्ध कदम उठाने की सोच रहा है। ये अपने को तबाह कर लेगा। तब इसकी जगह हममें से कोई लेगा। ये फैसला हम बाद में कर लेंगे कि कौन इसकी जगह लेगा।"

"जरूरी तो नहीं कि डुमरा ऐसा करे।"

"पर मुझे लग रहा है, ये ऐसा ही करने की सोच रहा है। एक बार भी ये नहीं कहा कि ये पहला वार नहीं करेगा। हमने जो समझाना था समझा दिया। अगर ये जिद पर रहा तो इसकी जगह लेने के लिए हमें तैयार रहना चाहिए।"

"तुम बात बढ़ा रहे हो।" एक ने कहा—"शक्तियों की इजाजत के बिना डुमरा कोई कदम नहीं उठा सकता।"

"उठा सकता है। इसके हाथों में बहुत कुछ है।"

"डुमरा तुम बताते क्यों नहीं कि तुम्हारा इरादा क्या है।"

"मैं खुंबरी की बुरी ताकतों को खत्म करना चाहता हूं ताकि वो लोगों की जान न ले सकें। और दुख न दे सकें। इस बात से मुझे कोई एतराज नहीं कि वो सदूर की रानी बनती है या नहीं।" डुमरा बोला—"मैं सिर्फ उसकी बुरी ताकतों के पीछे हूं। पांच सौ साल पहले मुझसे एक भूल हो गई। खुंबरी को दो हजार वर्षों के लिए श्राप देता तो अच्छा रहता।"

"ऐसा किया क्यों नहीं?"

"तब मुझे पांच सौ साल बहुत लगे थे। मैंने सोचा था कि इतने से ही खुंबरी की अक्ल ठीक हो जाएगी।"

"तब तुमने हमसे सलाह लेने की जरूरत नहीं समझी थी। क्रोध में सीधे खुंबरी को घेर लिया।"

"वक्त कम था उस वक्त।" डुमरा ने कहा—"उसका 'बटाका' उसके शरीर से जुदा होकर गिर गया था। वो कारू के नशे में मदहोश हुई जश्न में नाच रही थी। अगर मैं उसे घेरने में देर लगाता तो शायद उसे 'बटाका' के गिर जाने का एहसास हो जाता और वो नीचे से बटाका उठा लेती तो ये मौका भी हाथ से निकल जाता। फिर भी मैं उसे पांच सौ साल तक सदूर से दूर रख सका। उसकी बुरी ताकतों को बेकार कर दिया। परंतु अब फिर वो ही हालात पैदा होने वाले हैं।"

"खुंबरी की जान पृथ्वी ग्रह पर चली गई थी। तो खुंबरी ने वहीं पर अपना साम्राज्य क्यों नहीं बना लिया।" दूसरे ने पूछा।

"खुंबरी की ताकतों का केंद्र सदूर पर है। ऐसे में पृथ्वी पर उसकी ताकतें ठीक से काम नहीं करेंगी। वैसे भी पृथ्वी ग्रह की ताकतें इन ताकतों को वहां ठहरने नहीं देंगी। ये सदूर पर ही बेहतर काम कर सकती हैं।" डुमरा ने गम्भीर स्वर में कहा—"मैं आने वाले वक्त में तुम लोगों को बुलाऊंगा, क्योंकि मुझे कई बार तुम सबकी सलाह की जरूरत पड़ेगी।"

"पहला वार करने की गलती मत कर देना।"

डुमरा खामोश रहा।

चारों उठकर वहां से चले गए।

डुमरा काफी देर तक सोच भरी मुद्रा में कुर्सी की पुश्त थामे खड़ा रहा। चेहरे के भावों से ही स्पष्ट लग रहा था कि उसके मस्तिष्क में कई तरह के भाव बन बिगड़ रहे हैं। फिर आगे बढ़ा और बांई तरफ की दीवार के पास जाकर दीवार का एक हिस्सा दबाया तो दीवार खामोशी से एक तरफ सरकी। इतनी कि एक इंसान भीतर जा सके। डुमरा ने भीतर प्रवेश किया और दीवार का एक खास हिस्सा दबाया तो दीवार वापस अपनी जगह पर आ गई।

डुमरा जहां खड़ा था, वहां बेहद मध्यम-सा प्रकाश था। सामने पतला रास्ता जा रहा था। ऐसा रास्ता कि जिसमें एक वक्त में एक ही इंसान आगे जा सके। डुमरा उसी रास्ते पर आगे बढ़ने लगा। उसके कदमों का मध्यम-सा स्वर उठ रहा था। कभी-कभार उसके कंधे इधर-उधर की दीवार से टकरा जाते थे। आगे जाकर वो रास्ता दो रास्तों में तब्दील हो गया। डुमरा सीधे रास्ते पर ही आगे बढ़ता रहा और वो रास्ता एक दरवाजे पर जाकर खत्म हुआ। डुमरा ने हाथ बढ़ाकर दरवाजे को धकेला और भीतर प्रवेश कर गया। चेहरे पर गम्भीर भाव छाए हुए थे।

कमरे में एक तरफ टेबल और दो कुर्सियां रखी थीं। सामने की दीवार पर एक चक्री लगी थी। जिसके बीच में मोटा-सा गोला था और उसके सात किनारे निकले, चक्री की शक्ल बना रहे थे। डुमरा उस चक्री के पास पहुंचा और हाथ से घुमाकर चक्री के गोले का कवच (ऊपरी खोल) उतारा तो बीच में कई रंगों की तारों का गुच्छा दिखा। दो तारें अलग हुई पड़ी थीं। डुमरा ने हाथ से उन तारों को जोड़ा और कवच वापस चढ़ाकर, हाथ से चक्री को बांई तरफ घुमा दिया। चक्री बहुत तेज रफ्तार से घूमने लगी। डुमरा वापस पलटकर टेबल के पास पहुंचा और टेबल की टॉप पर अजीब-से कई अंक पहले से ही फिट थे। जो कि कुल सात थे और उसके ऊपर एक डायल लगा था। डायल के छेदों में से हर अंक स्पष्ट नजर आ रहा था।

डुमरा ने एक नजर दीवार की घूमती चक्री पर डाली फिर टेबल पर लगे डायल के एक अंक में दो उंगलियां डाल कर उसे भी घुमा दिया। डायल भी टेबल की टॉप पर तेजी से घूमने लगा।

मिनट भर का वक्त बीता।

दीवार की चक्र और डायल एक साथ रुके। उसी पल शांत-सी एक आवाज चक्री से उभरी।

"डुमरा।"

"डुमरा तुम्हारा स्वागत करता है वजू।" डुमरा ने कहा।

"परेशानी में हो।" वजू की आवाज उभरी।

"तुम तो सब जानते हो।"

"सब नहीं, परंतु काफी कुछ जानता हूं। तुम खुंबरी पर वार करने की सोच रहे हो।"

"ये अच्छा मौका है। खुंबरी की ताकतों ने ऊर्जा नहीं प्राप्त की अभी तक। वो कमजोर है और...।"

"खुंबरी का ठिकाना कहां है।" वजू की आवाज आई।

"नहीं जानता।"

"तो फिर वार कैसे करोगे?" वजू का स्वर गूंजा।

"तुम मुझे खुंबरी की जगह बताओगे।"

"ये नहीं हो सकता। सच तो ये है कि हम खुंबरी की जगह जानते ही नहीं। जानते होते तो बताते नहीं। श्राप के नियम के मुताबिक तुम तब तक खुंबरी पर वार नहीं कर सकते, जब तक कि वह पहला वार न कर दे। ये तुम्हारी भूल है कि तुम ये सोचते हो कि खुंबरी की ताकतें अभी कमजोर हैं। एक दिन में ही वो ताकतवर बन जाएंगी। तुम्हें जल्दी नहीं करनी चाहिए और खुंबरी के वार का इंतजार करना होगा।"

"अगर पहला वार मैं करना चाहूं तो?"

"तो पवित्र शक्तियों को तुम्हें खो देने का दुख होगा। श्राप का नियम भंग करने का आरोप तुम पर लगेगा और हमें ही तुम्हें सजा देनी होगी। तब हमसे रहम की उम्मीद भी मत रखना।"

"कोई रास्ता नहीं कि जिससे श्राप का नियम बदला जा सके?" डुमरा ने पूछा।

"नियम बदले नहीं जाते। खुंबरी ने पांच सौ बरस दूर रहकर श्राप का नियम अच्छी तरह पूरा किया है, ऐसे में तुम्हें भी नियम पर चलना होगा। नियम के मामले में हमारे लिए सब बराबर हैं। खुंबरी में सिर्फ इतनी ही बुराई है कि वो बुरी ताकतों के दम पर अपना साम्राज्य फैलाना चाहती है। अगर वो बुरी ताकतों का साथ छोड़ दे तो वो बुरी नहीं।"

"खुंबरी मुझ पर वार करेगी?"

"अवश्य। वो तुम पर वार करने की तीव्र इच्छा रखती है।" वजू का स्वर उभरा।

"मैं खुंबरी की बुरी ताकतों को खत्म करना चाहता हूं।"

"तुम उन्हें कम आंक रहे हो, जो ऐसा कह रहे हो। ये काम आसान नहीं होगा।"

"वजू। तुम अच्छी शक्तियों ने मेरे को चुन रखा है कि मैं बुरी ताकतों को हमेशा खत्म करता रहूं और लोगों को तकलीफ न होने दूं, परंतु इस बार तुम मेरी सहायता नहीं कर रहे।"

"हमसे ज्यादा सहायता नहीं मिल सकती।"

"क्यों?"

"क्योंकि तुमने खुंबरी को श्राप देने में, हमारी सहमति हासिल नहीं की थी।"

"लेकिन ये काम किया तो मैंने लोगों के भले के लिए था।"

"अवश्य। अब बहुत हद तक ये मामला तुम्हारा और खुंबरी का हो गया है। पवित्र शक्तियां हमेशा तुम्हारे साथ होंगी, परंतु जो करना है, तुमने ही सोच-समझकर करना है। हमसे ज्यादा सहायता नहीं मिलेगी।"

"ये तुम अपनी बात कह रहे हो, या सब शक्तियों की ये राय है।" डुमरा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"ये मेरी बात है।" वजू की आवाज आई।

"मुझे सबकी राय चाहिए।"

"इसके लिए तुम्हें सलूरा से बात करनी होगी।"

"तुम मेरे से इसलिए किनारा कर रहे हो कि श्राप देते समय मैंने तुमसे सलाह नहीं ली।"

"ये किनारा नहीं कहते। तुमने अपनी इच्छा से श्राप दिया तो ये मामला तुम्हारा बन गया। खुंबरी से अब तुमने ही मुकाबला करना है, जहां तक आसानी से सम्भव होगा, हम तुम्हें सहायता देते रहेंगे।"

"मुझे तुम लोगों की पूरी सहायता चाहिए। ये मामला सिर्फ मेरा मत बनाओ। खुंबरी की ताकतें बहुत खतरनाक हैं।" डुमरा बोला।

"क्या तुम कमजोर हो?"

"नहीं।"

"तो फिर खुंबरी की ताकतों की चिंता क्यों करते हो?"

"मुझे व्याकुलता है कि ये मामला सिर्फ मुझे संभालना होगा।" डुमरा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"कम-से-कम खुंबरी के मामले में तुम्हें मेरा साथ नहीं मिलेगा।" वजू का शांत स्वर आया—"अगर खुंबरी तब तुम्हारे लिए घातक बन गई होती या शक्तियों को उससे खतरा होता तो तब तुम्हारे श्राप को मैं उचित समझता, परंतु अब...।"

"वजू, तुम ये कहना चाहते हो कि मैंने श्राप देकर गलती की?" डुमरा का स्वर तेज हो गया।

"मेरा कहने का ये मतलब नहीं था।"

"पर तुम्हारा मतलब कुछ ऐसा ही है।"

"तुम सलूरा से बात करो। वो बड़ी शक्ति है। उसका फैसला ही सबसे बड़ा होगा और मैं भी मानूंगा।"

"मैंने श्राप देकर खुंबरी के पास मौजूद, नागाथ की बुरी ताकतों को खत्म करने की चेष्टा की थी। मैंने सोचा था कि पांच सौ सालों में खुंबरी ताकतों का रास्ता भूल जाएगी या ताकतें खुद-ब-खुद खत्म हो जाएंगी। परंतु दोनों में से ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। पर मेरी चेष्टा तो पवित्र थी और अब वक्त आया तो तुम साथ देने से इंकार कर रहे हो।"

"मैं इंकार नहीं कर रहा। पर ये मामला सिर्फ तुम्हें ही संभालना है।"

"सिर्फ मुझे ही क्यों? हर काम की तरह शक्तियां क्यों नहीं संभालती इस मामले को? मुझे माध्यम ही बना रहने दो। लेकिन तुम तो मुझे जंग के मैदान में धकेल रहे हो। क्या ये मेरा काम है?" डुमरा ने नाराजगी भरे स्वर में कहा।

"श्राप तुमने अपनी इच्छा से दिया था। इसलिए खुंबरी की ताकतों का मुकाबला तुम्हें ही करना होगा, डुमरा।"

"ये बात गलत है। तुम मुझे मजबूर कर रहे हो कि मैं सलूरा से बात करूं।"

"यो ही तो मैं चाहता हूं कि तुम सलूरा से बात करो। सलूरा का हर हुक्म मुझे मान्य होगा। वो बड़ी शक्ति है। हो सकता है मेरा विचार गलत हो।" वजू के आने वाले स्वर में गम्भीरता थी—"परंतु सलूरा का विचार कभी भी गलत नहीं हो सकता।"

"तुमने आज से पहले मेरे साथ ऐसा व्यवहार नहीं किया।" डुमरा गम्भीर दिखने लगा।

"हमारी भी सीमाएं हैं। तुम तो सीमा पार कर सकते हो, लेकिन हम नहीं कर सकते ऐसा। तुम हमारे प्रिय हो। हमारे लिए कीमती हो। सम्भव है सलूरा तुम्हारे लिए कोई बेहतर हल निकाल सके। वजू की शांत सामान्य आवाज डुमरा के कानों में पड़ी—"हमारे व्यवहार को गलत मत समझो। हम गलत कर ही नहीं सकते। हम जैसी शक्तियां सिर्फ बेहतरी के लिए बनी हैं।"

"मुझे लगता है खुंबरी के सामने मुझे अकेला छोड़ा जा रहा है।" डुमरा बोला।

"हम तुम्हें अकेला नहीं छोड़ सकते।"

"ये ही तो कर रहे हो।"

"सलूरा से बात करो। वो जो कहेगा, हम सबको मंजूर होगा।"

□ □

दो घोड़ों वाली वो बग्गी बेहद तूफानी रफ्तार से उस जंगल के सुनसान रास्ते पर दौड़ रही थी। घोड़ों की टापों की आवाज किसी मशीन के चलने की आवाज जैसी थी जो लगातार कानों में पड़ रही थी। जंगल में दूर-दूर तक कोई भी नजर नहीं आ रहा था। कभी पेड़ के झुंड होते तो कभी झाड़ियां दिखने लगतीं। बूढ़ा कोचवान उस बग्गी को दौड़ा रहा था। उसने पीले कपड़े का लबादा जैसा वस्त्र पहन रखा था। चेहरे पर दाढ़ी थी। पर वो चुस्त नजर आ रहा था।

बग्गी के भीतर डुमरा विचारपूर्ण मुद्रा में बैठा था। सफर शुरू हुए दो घंटे से ऊपर का वक्त हो चुका था। चूंकि सफर लम्बा और रास्ता खराब था, इसलिए वाहन पर सफर न करके, बग्गी का इस्तेमाल किया था डुमरा ने। सूर्य सदूर के कोने से अपनी किरणें फेंक रहा था। गर्मी और उमस भरा मौसम था। परंतु डुमरा अपने ही विचारों में डूबा हुआ था। उसके चेहरे पर गम्भीरता नजर आ रही थी। वजू से बात करने के बाद वो सलूरा से मिलने चल पड़ा था। उसकी निगाहों में ये अहम मुद्दा था। खुंबरी के मामले में पवित्र शक्तियां उससे किनारा कर रही थीं। जबकि इस वक्त उसे सहारे की जरूरत थी। खुंबरी अपनी बुरी ताकतों के साथ उस पर वार करने वाली थी। वो सोचे बैठा था कि खुंबरी की बुरी ताकतों को समाप्त कर देगा, लेकिन उसकी शक्तियां साथ नहीं देंगी तो उसके लिए गम्भीर समस्या पैदा हो जाएगी। यूं तो उसकी समस्या हमेशा ही वजू हल कर देता था और सलूरा जैसी बड़ी शक्ति से उसका मिलना कम ही होता था। परंतु इस बार खुंबरी से टकराव की स्थिति में वजू ने सहायता करने से स्पष्ट इंकार कर दिया था,जो कि उसके लिए परेशानी की बात थी। खुंबरी की ताकतें अब जरूर ऊर्जा प्राप्त कर रही होंगी। कुछ ही घंटों में वो स्वस्थ हो जाएंगी और उस पर हमला करने का विचार करेंगी।

चार घंटे के सफर के बाद बग्गी जंगल में बने एक छोटे-से मकान के सामने जा रुकी। वो मकान पीले रंग का नया और चमकता लग रहा था जैसे कल ही बना हो। परंतु डुमरा जानता था कि ये मकान हमेशा ऐसा ही दिखता है। वो जब-जब भी यहां आया, मकान नया बना ही लगा।

डुमरा बग्गी से नीचे उतरा और गेट की तरफ बढ़ गया। गेट खुला हुआ था। मकान के आस-पास घना जंगल दिख रहा था। बेहद शांति का माहौल था। पेड़ों के पत्तों की तड़-तड़ कभी-कभार कानों में पड़ जाती थी।

डुमरा गेट से भीतर प्रवेश कर गया।

छोटा-सा बगीचा पार करके सामने मकान का दरवाजा दिखा, जो कि खुला हुआ था।

डुमरा भीतर प्रवेश कर गया।

ये साधारण ड्राइंग रूम था। लेकिन वहां कोई नहीं था। डुमरा मकान में घूमने लगा कि एक तरफ से बर्तन खड़कने की आवाज आई। वो किचन जैसी जगह में जा पहुंचा। जहां एक बूढ़ा व्यक्ति बर्तनों को किचन की शैल्फ पर रख रहा था। उसके सिर के बाल पूरी तरह सफेद थे। बढ़ी हुई दाढ़ी भी सफेद थी। कमर से लाल रंग का कपड़ा बांध रखा था। वो नंगे पांव था। डुमरा को उसकी पीठ नजर आ रही थी। वो सलूरा ही था जो बिना पलटे कह उठा।

"मैं तुम्हारा ही इंतजार कर रहा था। तुम्हारे लिए मैंने पहले ही दरवाजे खोल रखे थे।"

"हम लम्बे वक्त के बाद मिल रहे हैं सलूरा।" डुमरा मुस्कराकर बोला।

सलूरा पलटा और डुमरा को देखकर मुस्करा पड़ा।

"हां, पचास बरस पहले मिले थे हम। तुम आए ही नहीं कभी मिलने।" सलूरा ने कहा।

"जरूरत नहीं पड़ी। बिना वजह तुमसे मिलकर तुम्हारा वक्त खराब नहीं करना चाहता था।"

"मुझसे ज्यादा तुम्हारा वक्त कीमती है। तुम लोगों के भले के लिए काम करते हो। संसार से बुरी चीजों को दूर रखते हो। हर वक्त तुम्हें परेशानी ही परेशानी रहती है। भागते रहते हो तुम।"

"मैं कुछ भी नहीं सलूरा। ये सब उन पवित्र शक्तियों के दम पर ही मैं कर रहा हूं जो मेरे इशारे पर चलती हैं।"

"पवित्र शक्तियां भी तो अच्छे इंसान का साथ देती हैं। तुम भले इंसान हो। आओ कमरे में चलते हैं। मैंने अभी-अभी खाना तैयार करके रखा है। मैं जानता था कि तुम आने वाले हो तो सोचा हम एक साथ खाना खाएंगे।"

दोनों मकान के भीतर के एक कमरे में पहुंचे तो वहां टेबल पर खाना लगा दिखा। दोनों कुर्सियों पर बैठ गए और खाना शुरू किया। कई पलों तक कोई कुछ न बोला।

"तुम चिंता में लग रहे हो।" सलूरा कह उठा।

डुमरा एकाएक मुस्कराकर सलूरा को देखने लगा और कहा।

"तुमसे कुछ भी छिपा नहीं रहता। मैं जानता हूं तुम मेरी चिंता की जानकारी रखते हो।"

"हां। जानकारी तो है मुझे।"

उसके बाद दोनों ने खामोशी से खाना खाया किचन में अपने-अपने बर्तन साफ करके रखे।

"खोनम बनाऊं सलूरा?" डुमरा ने पूछा।

"क्यों नहीं।" कहकर सलूरा किचन जैसी जगह से बाहर निकल गया।

खोनम के गिलास थामे डुमरा को सलूरा बगीचे में बैठा मिला। उसने सलूरा को खोनम का गिलास दिया और खुद उसके सामने जा बैठा। पेड़ों की छांव की वजह से वो धूप से बचे हुए थे। डुमरा ने खोनम का घूंट भरा।

"अब कहो डुमरा। अपनी समस्या कह दो।" सलूरा ने कहा।

"तुम जानते हो कि मैं किस वास्ते तुम्हारे पास आया हूं।" डुमरा बोला।

"तुम अपनी बात रखो।"

"खुंबरी मुझ पर अपनी ताकतों के साथ हमला करने वाली है। मुझे शक्तियों के साथ की जरूरत है। बजू का कहना है कि खुंबरी के मामले में शक्तियां मेरा साथ नहीं देंगी। ये जंग मुझे खुद ही लड़नी है।"

"डुमरा।" सलूरा ने मुस्कराकर कहा—"तुम हमारे बच्चे हो। हम बच्चों को कष्ट में नहीं देख सकते।"

"तो मुझे शक्तियों की पूरी सहायता मिलेगी?"

"वजू ने जो कहा है सही कहा है।"

"तो क्या मैं खुद को अकेला समझूं।"

"अकेला क्यों? तुम्हारे पास तो शक्तियां है। हमने तुम्हें दे रखी हैं।"

"शक्तियों के अलावा मुझे सबकी सहायता की जरूरत है। खुंबरी की ताकतें पुरानी हो चुकी हैं। इस बार वो ज्यादा ताकतवर होंगी। क्या मेरे पास जो शक्तियां हैं, वो खुंबरी की ताकतों का मुकाबला कर पाएंगी?"

"ये तो तुम पर निर्भर करता है कि तुम किस प्रकार लड़ते हो।"

"मुझे तुम सबकी सहायता क्यों नहीं मिल रही?"

"वजू ने तुम्हें बता दिया है।"

डुमरा सलूरा को गम्भीर निगाहों से देखता रहा।

"खुंबरी को श्राप देने से पहले तुम्हें हमारी सलाह जरूर ले लेनी चाहिए थी।" सलूरा बोला।

"क्या मैंने गलत कर दिया था?"

"इसे मैं गलत तो नहीं कहता। अगर गलत होता तो उसी वक्त तुमसे शक्तियां वापस ले ली जातीं। तुमने अपनी इच्छा से खुंबरी को श्राप दिया था। अब वो फिर वापस आ गई है तो तुम्हें ही सब संभालना होगा। तुमने जल्दबाजी में खुंबरी को श्राप दिया सोच-समझकर दिया होता तो आज वो कभी वापस नहीं आ पाती। आती तो ताकतें उसके पास न होतीं। इस बारे में शक्तियों के बीच लम्बी चर्चा हुई और इसी नतीजे पर पहुंचे कि कोई भी खुंबरी और तुम्हारे बीच नहीं आएगा। जो शक्तियां तुम्हें दे रखी हैं, उन्हीं से खुंबरी का मुकाबला करोगे तुम।"

"इसमें तो मेरी जान भी जा सकती है।"

"सब कुछ तुम पर निर्भर है।"

"खुंबरी से लड़ाई में मेरा स्वार्थ नहीं है। फिर मुझे अकेला छोड़ देना उचित होगा।"

"तुम्हें जवाब दे दिया गया है।"

"शायद मैं खुंबरी की ताकतों का मुकाबला न कर सकूं।" डुमरा गम्भीर स्वर में बोला।

"अपने में विश्वास रखो। तुम हम सब शक्तियों के चेहते हो। हमने तुम्हें शक्तियां दे रखी हैं। तुम ही सोचो कि उन्हें कैसे इस्तेमाल करना है कि खुंबरी की ताकतों पर विजय पा सको।"

"मेरा इरादा खुंबरी की ताकतों को समाप्त करने का है।"

"बेशक करो। तुम्हें पृथ्वी से आए लोगों की सहायता मिलेगी।"

"पृथ्वी से आए लोग?" डुमरा के होंठों से निकला।

"जो पोपा में बैठकर रानी ताशा के साथ आए हैं।"

"वो साधारण लोग मेरी क्या सहायता करेंगे।"

सलूरा मुस्करा पड़ा।

"उन्हें साधारण न समझो। वो माहिर लोग हैं। खुंबरी के मामले में वो तुम्हारी सहायता करेंगे। रानी ताशा खुंबरी से बदला लेने को उतावली हो रही है क्योंकि कभी खुंबरी की ताकतों ने उसे राजा देव से अलग किया था। राजा देव भी सदूर पर आ पहुंचे हैं। उनके साथ जगमोहन, नगीना, मोना चौधरी हैं। बबूसा है, सोमाथ नाम का वो नकली इंसान है, जिसे तुम्हारे बेटे (महापंडित) ने बनाया है। शक्तियां हमने तुम्हें दे रखी हैं। तुम खुंबरी की ताकतों का मुकाबला कर सकते हो।"

"मैं आपके इंकार को समझ रहा हूं सलूरा।"

"इन सबको तुम्हारा बेटा लेकर, तुम्हारे पास आ रहा है।"

"क्यों?"

"ये तो तुम उनसे मिलोगे तो पता चल जाएगा। वो सब अपने इरादों के पक्के और मजबूत हैं। समझदारी से उनका इस्तेमाल करो। खुंबरी की ताकतें लड़खड़ा भी सकती हैं। सब कुछ तुम पर है डुमरा कि तुम कैसे काम करते हो।"

"वो बेहतर ढंग से मेरे काम आएंगे?"

"तुम उनसे मिलो तो सही। अभी वापस चल दो। तुम्हारा बेटा सबके साथ उसी जगह पर पहुंचेगा। जहां से तुम आए हो। खुंबरी जिनके सहारे, वापस सदूर पर आ पहुंची है, वो ही उसके लिए मुसीबतें खड़ी कर देंगे। तुम आने वाले वक्त से अंजान हो। क्योंकि तुमने अभी तक अपने पास मौजूद ताकतों का इस्तेमाल नहीं किया। ये मत सोचो कि तुम अकेले हो। आगे बढ़ो और मुकाबला करने की सोचो। शक्तियां न तो तुम्हारा साथ देंगी न ही अड़चन डालेंगी। वापस जाओ डुमरा और तैयारी करो।"

महापंडित, रानी ताशा, देवराज चौहान, बबूसा, सोमारा, सोमाथ, जगमोहन, नगीना, मोना चौधरी, उसी इमारत पर पहुंचे जहां गेट पर तीन पहरेदार मौजूद थे। महापंडित को वो जानते थे और उन्हें भीतर जाने दिया गया। महापंडित उन सबको लेकर भीतर नीचे की मंजिल पर पहुंचा। महापंडित को मालूम हुआ कि उसके पिता कुछ देर पहले ही लौटे हैं। उन सबने कुछ देर इंतजार किया फिर डुमरा का संदेश आने पर वो सब दूसरी मंजिल के उस हॉल में पहुंचे, जहां डुमरा पहले से ही मौजूद था और नहाकर कपड़े बदल चुका था। उसके चेहरे पर गम्भीरता थी। तब वो खिड़की के बाहर देख रहा था। शाम हो रही थी। सूर्य छिपने वाला था और कुछ ही देर में अंधेरा हो जाना था। महापंडित की आवाज सुनकर वो पलटा।

"पिता श्री।" महापंडित ने कहा—"ये सब आपसे मिलना चाहते हैं। ये रानी ताशा है और ये राजा देव। ये नगीना है, राजा देव की पृथ्वी की पत्नी। ये जगमोहन है राजा देव का, भाई जैसा दोस्त। ये मोना चौधरी है नगीना की बहन। ये बबूसा है और ये आपकी बेटी सोमारा। ये सोमाथ है जिसका निर्माण मैंने किया है, परंतु ये इंसानों से बेहतर काम करता है।"

"डुमरा को सोमाथ का नमस्कार।" सोमाथ फौरन मुस्कराकर कह उठा—"मैं सच में आप इंसानों से बेहतर हूं क्योंकि मेरे पास जबर्दस्त ताकत है और मुझे कोई मार भी नहीं सकता।"

रानी ताशा का चेहरा कठोर हुआ पड़ा था।

डुमरा शांत नजरों से सबको देख रहा था। बोला।

"बैठ जाओ।"

सब वहां रखी कुर्सियों पर बैठ गए।

"ये मेरे पिताश्री डुमरा हैं। पवित्र शक्तियों से इनका करीबी रिश्ता है। बुरी ताकतों को खत्म करना इनका काम है। इनके शरीर पर मत जाइए। कुछ समय पहले ही इन्होंने नया शरीर प्राप्त किया है, जबकि इनकी उम्र हजार वर्ष से ऊपर है।" महापंडित बोला।

डुमरा की निगाह सब पर जा रही थी।

"पिता श्री। ये लोग खुंबरी से वास्ता रखती समस्याओं में फंसे हैं। आप ही हल कर सकते हैं इनकी समस्या।"

"डुमरा।" रानी ताशा सख्त स्वर में बोली—"मुझे खुंबरी से बदला लेना है। ढाई-तीन सौ साल पहले खुंबरी की ताकतों ने मुझे और राजा देव को अपने फायदे के लिए अलग किया था और अब हाल ये है कि मैं अभी तक राजा देव को वापस प्राप्त नहीं कर सकी। खुंबरी मेरी गुनाहगार है। तुम्हारी सहायता चाहिए। वरना मैं खुंबरी का मुकाबला नहीं कर पाऊंगी।"

"आप इनकी सहायता अवश्य करें पिताश्री। ये मेरे बड़े हैं।" महापंडित ने कहा।
"खुंबरी से तुम लोग मुकाबला नहीं कर सकते।" डुमरा गम्भीर स्वर में बोला।
"आपका साथ होगा तो हम ये काम कर लेंगे।" बबूसा कह उठा।
"आपको हमारे काम आना चाहिए पिता श्री।" सोमारा बोली।
"खुंबरी से टकराव का मतलब मौत है। वो ताकतों की मालिक है।" डुमरा ने गम्भीर स्वर में कहा—"खुंबरी अब वापस आ गई है तो मेरा उसका मुकाबला होगा ही। वो मुझसे बदला लेगी, तब...।"
"खुंबरी ने मुझसे कहा था कि वो आपसे बदला लेगी।" बबूसा बोला।
"तो खुंबरी का मुकाबला मुझे ही करने दो। तुम लोगों का बदला मैं ले लूंगा।"
"नहीं डुमरा।" रानी ताशा कह उठी—"मैं खुंबरी से बदला लूंगी। उसने मेरे साथ अन्याय किया है।"
"ये काम मौत को गले लगाने जैसा होगा।"
"तुम्हारा साथ होगा तो हम ये काम आसानी से कर लेंगे।" रानी ताशा ने कठोर स्वर में कहा।
"इसे मामूली खेल न समझो। ये जानलेवा मुकाबला होगा। खुंबरी तुम लोगों को मार देगी।"
"मैं खुंबरी से बदला लेना चाहूंगी। तुम्हें मेरा साथ देना होगा डुमरा।"
डुमरा ने महापंडित को देखा।
"मेरी खातिर पिता श्री।" महापंडित बोला—"इन्हें मैं आपके पास लाया हूं।"
"खुंबरी से लड़ाई में हम तुम्हारा पूरा साथ देंगे डुमरा।" देवराज चौहान ने कहा—"तुम्हें निराशा नहीं होगी।"
डुमरा कुछ कहने लगा कि तभी उसके कानों में फुसफुसाती आवाज पड़ी।
"मौका अच्छा है डुमरा। ये लोग खुद तेरे पास आए हैं।"
"ओह तोखा तुम?" डुमरा के होंठों से निकला।
"इन्हें अपने साथ ले ले।"
"पर मुझे कोई फायदा नजर नहीं आता तोखा।"
"बहुत फायदे होंगे इनके। तोखा ने तेरे को कभी गलत सलाह दी है?"
"नहीं।"
"तो आज भी मेरी सलाह मान ले।"
डुमरा की गम्भीर निगाह सब पर गई।

"ठीक है। तुम लोग मेरे साथ रहोगे। हम मिलकर ये काम करेंगे।" डुमरा ने कहा।

"तो मैं जाऊं पिताश्री।"

"बेशक। सोमारा को साथ ले जाओ। इसका वहां कोई काम नहीं।"

"मैं नहीं जाऊंगी।" सोमारा कह उठी—"मैं तो बबूसा के साथ रहूंगी।"

डुमरा ने महापंडित को देखा।

"सोमारा को बबूसा के साथ ही रहने दीजिए।" महापंडित बोला—"मैं जाता हूं।"

महापंडित चला गया।

"तुम लोग, इस तरफ कमरे बने हैं, उनमें आराम कर सकते हो।" डुमरा बोला—"अभी व्यस्त होने के कारण बात नहीं कर सकता। कुछ देर बाद आऊंगा तुम लोगों से बात करने।"

डुमरा चला गया वहां से।

तभी बबूसा उठा और चिंतित अंदाज में रानी ताशा के पास पहुंचकर बोला।

"रानी ताशा। मैंने धरा की ताकतों को करीब से पहचाना है। हम खुंबरी के मुकाबले कहीं भी नहीं ठहरते।"

"वो मेरे हाथों से नहीं बचेगी।" रानी ताशा ने दांत पीसकर कहा।

"आप जोश से नहीं होश से काम लें, खुंबरी तो...।"

"बबूसा।" रानी ताशा ने बेहद कठोर स्वर में कहा—"खुंबरी ने मुझे और राजा देव को जुदा किया था। ऐसा जुदा कि भरपूर चेष्टा के बाद भी मैं अपने देव को ठीक से हासिल नहीं कर पाई। इस बात की गुनाहगार खुंबरी को सजा भुगतनी होगी।"

"परंतु खुंबरी बुरी ताकतों की मालिक है। हम उसकी बराबरी नहीं कर सकते।"

"डुमरा की सहायता हमें मिलेगी।" रानी ताशा गुर्रा उठी।

"इस पर भी पक्का क्या कि खुंबरी को हम जीत लेंगे।" बबूसा ने कहा।

"बबूसा ठीक कहता है रानी ताशा।" पास आती सोमारा कह उठी—"खुंबरी से हमारी बराबरी नहीं हो सकती। वो बुरी ताकतों की मालिक है। जबकि हम साधारण लोग हैं। डुमरा पर हम ज्यादा भरोसा नहीं कर सकते। जान तो हमारी ही जाएगी।"

"मैं रानी ताशा को कुछ नहीं होने दूंगा।" सोमाथ ने कहा।

"पर रानी ताशा के साथ हम सब हैं।" सोमारा ने कहा।

"डुमरा इतना बेवकूफ नहीं होगा कि हमें मरने के लिए खुंबरी के सामने

छोड़ दे।" देवराज चौहान ने कहा—"अभी डुमरा से हमारी बात होनी है। तब देखेंगे कि वो क्या कहता है। हमसे बेहतर वो खुंबरी को जानता है।"

"और उसे ये भी पता है कि खुंबरी का मुकाबला कैसे करना है।" जगमोहन बोला।

"राजा देव, थरा की ताकतों को मैंने महसूस किया है, जबकि उसका कहना था कि उसके पास दो-तीन ताकतें ही हैं। सदुर की जमीन पर आकर तो उसके पास ढेरों ताकतें होंगी। हम उसके सामने ठहर भी नहीं सकेंगे।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"डुमरा से बातचीत करके ही हमें अंदाजा हो जाएगा कि खुंबरी का मुकाबला हम कर सकते हैं या नहीं।" मोना चौधरी ने कहा—"खुंबरी के बारे में अब तक जो सुना है, उससे तो ये ही लगता है कि हम उसका मुकाबला नहीं कर सकेंगे।"

"तुम खुंबरी से डरती लगती हो।" रानी ताशा ने कहा।

"डर नहीं रही, मैं स्पष्ट बात कर रही हूं।" मोना चौधरी ने कहा—"वो हमसे ज्यादा बहादुर है। वो ताकतों का सहारा रखती है। उसका नाम सुनते ही हर कोई घबरा-सा जाता है तो स्पष्ट है कि उसका मुकाबला करना भी आसान नहीं होगा।"

"मैं खुंबरी को नहीं छोड़ूंगी।" रानी ताशा गुर्रा पड़ी—"उसने मुझे मेरे देव से अलग किया था।"

"हम ताशा के साथ हैं।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा—"मैं स्वीकार करता हूं कि खुंबरी ने हमारे साथ बुरा किया था।"

"आप मुझसे प्यार करते हैं न?" नगीना कह उठी।

"हां नगीना।"

"ताशा से तो नहीं?"

"ताशा से मेरा इतना ही रिश्ता है कि कभी वो मेरी पत्नी थी। कभी वो मुझे बहुत प्यारी हुआ करती थी। पर वो जन्मों पुरानी बात...।"

"ऐसा न कहो देव।" रानी ताशा की आंखों में आंसू चमक उठे—"मैं आज भी आप से उतना ही प्यार करती हूं।"

"मैं जानता हूं कि तुम सच कह रही हो।" देवराज चौहान गम्भीर था—"परंतु अब नगीना मेरी पत्नी है। ये तुम्हें याद रखना होगा।"

"मैं आपके बिना जी नहीं सकती देव।" रानी ताशा तड़प उठी।

देवराज चौहान रानी ताशा को देखता रहा।

"खुंबरी से बदला लेने के बाद मैं आपको अपना बना लूंगी देव।" रानी ताशा के स्वर में विश्वास था।

"नगीना मेरे लिए पहले है। तुम्हारी जगह मुझे कहीं भी नजर नहीं

आ रही ताशा।" देवराज चौहान बोला—"तुम्हें इस सच्चाई को स्वीकार कर लेना चाहिए कि तुम कभी मेरी पत्नी थीं, लेकिन आज नगीना मेरी पत्नी है।"

रानी ताशा ने आंसुओं भरा चेहरा घुमा लिया, परंतु चेहरे पर दृढ़ता नजर आ रही थी।

बबूसा वहां से हटा और टहलने लगा।

"हमें ये मालूम करना चाहिए कि खुंबरी रह कहां रही है। पोपा से उतरकर वो कहां गई?" जगमोहन बोला।

"ये बात शायद डुमरा को पता हो।" बबूसा ने कहा—"पवित्र शक्तियां उसे खबर देती रहती हैं।"

"ऐसा है तो डुमरा ने अभी तक उस पर हमला क्यों नहीं किया, उसे मारने के लिए।" मोना चौधरी बोली।

"डुमरा ऐसा नहीं कर सकता। धरा ने मुझे बताया था।" बबूसा कह उठा।

"क्यों नहीं कर सकता?"

"डुमरा ने खुंबरी को श्राप दिया था और खुंबरी ने नियम से श्राप को पूरा किया। ऐसे में अब पहले वार का हक खुंबरी का बनता है। खुंबरी वार करने की शुरुआत कर दे तो तभी डुमरा के लिए, हमले के दरवाजे खुलेंगे। अगर डुमरा नियम के खिलाफ खुंबरी पर वार पहले कर देता है तो इसका बुरा अंजाम डुमरा को भुगतना होगा।" बबूसा ने बताया।

"अगर खुंबरी वार करे ही नहीं?" नगीना बोली।

"तो डुमरा कुछ भी नहीं कर सकेगा।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा—"परंतु धरा ने मुझसे कहा था कि वो डुमरा से पांच सौ सालों का बदला लेगी। ऐसे में पूरी तरह सम्भव है कि वो जल्दी ही डुमरा पर वार करेगी।"

"तुम खुंबरी के काफी करीब हो गए थे।" देवराज चौहान बोला।

"हां। इत्तफाक से धरा को काफी हद तक जान गया था। वो सच में खतरनाक है। कभी-कभी तो वो शैतान की तरह लगती है। जब वो मुस्कराती है तो उसका निचला होंठ टेढ़ा हो जाता है तो खूबसूरत भी लगती है और खतरनाक भी। खुंबरी भी बिल्कुल धरा जैसी ही है। जादूगरनी (होम्बी) ने बताया था कि वो दोनों एक ही चेहरे वाली होंगी।"

"पांच सौ सालों में खुंबरी का शरीर खराब हो गया...।"

"नहीं।" बबूसा ने मोना चौधरी से कहा—"खुंबरी के शरीर की देखभाल उसका खास सेवक दोलाम कर रहा है। उसने खुंबरी के शरीर को खराब नहीं होने दिया होगा। धरा ने मुझसे कहा था कि खुंबरी का शरीर संभालने

में उसकी ताकतें भी दोलाम का साथ देती हैं। सच में खुंबरी की ताकतें, बहुत वफादार हैं। मैंने जब धरा को गला दबाकर मारना चाहा तो उसकी ताकतों ने उसी पल मुझे पीछे धकेल दिया। पर खुंबरी भी उन ताकतों के लिए वफादार है। डुमरा ने खुंबरी को स्पष्ट कहा था कि वो सदूर की रानी बनी रहेगी, पर वो नागाथ की ताकतों को त्याग दे। परंतु खुंबरी ने ताकतों को छोड़ने से मना कर दिया और श्राप को स्वीकार करके पांच सौ सालों के लिए सदूर छोड़ गई। ऐसे में तो ताकतें खुंबरी का जरूरत से ज्यादा खयाल क्यों नहीं रखेंगी।"

"खुंबरी के बारे में और बताओ बबूसा।" नगीना कह उठी।

"धरा ने कहा था कि अब ऊर्जा प्राप्त करने के बाद उसकी ताकतें और बढ़ जाएंगी। वो डुमरा को नहीं छोड़ेगी। ये महज बातें ही नहीं हैं उसकी। मेरे खयाल में वह ऐसा करने का दम भी रखती है।"

"तो डुमरा ने भी बचने की कोई तैयारी कर ली होगी?" जगमोहन बोला।

"डुमरा के ऊपर पवित्र शक्तियों की छाया है। खुंबरी बेशक कितनी भी ताकतवर हो, डुमरा पर हाथ डालना उसके लिए आसान नहीं होगा। शक्तियां डुमरा को हमेशा सुरक्षित रखती हैं। डुमरा माध्यम है पवित्र शक्तियों का। डुमरा के द्वारा ही शक्तियां लोगों की तकलीफें दूर करती हैं। बुरी ताकतों को खत्म करती हैं। शक्तियों को कोई न कोई माध्यम चाहिए, जो कि समझदार हो और कामों को तेजी से पूरा कर सके। ये काम करते डुमरा को हजार वर्ष से भी ज्यादा हो गए हैं। शक्तियां डुमरा पर मेहरबान हैं और उसे खुंबरी के वारों से बचाकर रखेंगी।" बबूसा ने बताया।

"अगर डुमरा को कुछ हो जाता है तो?" नगीना ने पूछा।

"तो वो शक्तियां किसी और को माध्यम बनाएंगी। ये बातें मैं इसलिए जानता हूं कि मैं महापंडित के करीब रहा हूं। उसी से थोड़ी-थोड़ी जानकारी मुझे मिलती रही और बातों को समझ पाया कि उसके पिता क्या करते हैं।"

"तुम शायद भूल गए बबूसा कि डुमरा के बारे में मैं भी जानता हूं।" देवराज चौहान मुस्कराया।

"आपको डुमरा के बारे में ज्ञान क्यों नहीं होगा। आप डुमरा के बारे में महापंडित से जानकारी लिया करते थे।"

"परंतु मैंने डुमरा से मिलने की इच्छा कभी नहीं दिखाई थी। अब मिला डुमरा से।"

"लेकिन डुमरा हमें छोड़कर अचानक कहां चला गया?" रानी ताशा बेचैनी से कह उठी।

डुमरा तीसरी मंजिल के उसी कमरे में पहुंचा और पहले की तरह चक्र घुमाकर टेबल रूपी डायल का एक नम्बर घुमा दिया। मिनट भर बाद डायल और चक्री एक साथ रुकी तो तोखा की आवाज सुनाई दी।

"बहुत जल्दी उन लोगों के पास से आ गए।"

"तुमसे बात करना चाहता था।" डुमरा ने गम्भीर स्वर में कहा—"मेरे पास कुर्सी पर आकर बैठो तोखा।"

"क्या ऐसे बात नहीं हो सकती?"

"मैं चाहता हूं तुमसे आमने-सामने बात करूं।"

चंद पल बीते कि एकाएक कुर्सी पर बैठा एक व्यक्ति दिखने लगा। परंतु वो सामान्य व्यक्ति न लग कर, धुएं जैसा व्यक्तित्त्व लग रहा था, जिसके आर-पार काफी हद तक देखा जा सकता था।

"अब कहो डुमरा।" तोखा बोला।

"मैंने वजू से बात की थी। सलूरा से भी की। परंतु वो खुंबरी के मामले में मेरा साथ नहीं दे रहे।"

"मुझे मालूम है।"

"वो कहते हैं खुंबरी का मामला मुझे ही संभालना है, क्योंकि मैंने उनकी राय के बिना खुंबरी को श्राप दिया था।"

"ये भी जानता हूं। परंतु तुम चिंता क्यों करते हो डुमरा। तुम्हारे आदेश का पालन करने के लिए तुम्हारे पास पर्याप्त शक्तियां हैं। तुम किसी भी तरफ से, खुंबरी से कमजोर नहीं हो।" तोखा ने शांत स्वर में कहा।

"अगर सब मेरे साथ होते तो खुंबरी के बारे में फैसला लेने में मुझे आसानी होती।"

"खुंबरी का मामला सिर्फ तुम्हारा मामला बन चुका है, क्योंकि हमने देखा है कि खुंबरी के व्यक्तित्त्व में कोई बुराई नहीं है। वो हमारे लिए सिर्फ इसलिए बुरी है कि वो नागाथ की दी हुई ताकतों का इस्तेमाल करती है।"

"उसका व्यक्तित्त्व बुरा है। क्योंकि उसने अपने मतलब के लिए रानी ताशा और राजा देव को अलग कर दिया था।"

"इस बात को गलत नहीं माना जा सकता। खुंबरी को श्राप पूरा करने के बाद वापस भी तो आना था। वो अपना रास्ता तैयार कर सके इसलिए उसने ऐसा किया। इन छोटी बातों में न ही उलझो डुमरा तो बेहतर होगा।" तोखा के होंठ हिल रहे थे।

"तो तुम सलूरा या वजू से सहमत हो?"

"सलूरा को गलत नहीं कहा जा सकता। वो बड़ी शक्तियां हैं।" तोखा की धीमी, शांत आवाज सुनाई दे रही थी।

"मैं जानता हूं कि खुंबरी को अब मुझे ही सम्भालना होगा।"

"तुम अकेले नहीं हो। तुम्हारी सहायता के लिए हम तुम्हारे साथ हैं। बस, फैसले इस बार तुमने ही लेने हैं।"

डुमरा ने गहरी सांस ली और बोला।

"तुमने कहा कि इन लोगों से मुझे फायदा मिलेगा।"

"हां।"

"ये साधारण इंसान खुंबरी के मामले में मेरी क्या सहायता कर सकेंगे?" डुमरा ने उलझन-भरे स्वर में कहा।

"साधारण लोगों में ये सब असाधारण हैं। बेहतर जांबाज हैं। अगर इन्हें कुछ शक्तियां दे दी जाएं तो ये खुंबरी को उलझा देंगे।"

"ये तुम जानो। मेरा विचार है कि ये शक्तियों का इस्तेमाल खुंबरी को खिलाफ करेंगे।"

"तुम्हारा विचार है ये, विश्वास नहीं।"

"विश्वास भी कह सकते हो।" तोखा ने सिर हिलाकर कहा—"इसमें से एक खुंबरी के बहुत करीब पहुंच जाएगा।"

"करीब?"

"शायद उसे खुंबरी से प्यार होने वाला है।"

"खुंबरी से प्यार?" डुमरा हैरान हुआ—"पर जहां तक मैं जानता हूं। खुंबरी प्यार को नहीं मानती।"

"अब खुंबरी के विचार बदल जाएंगे।"

"वो कौन है जो खुंबरी से प्यार करने वाला है।"

"ये नहीं बताऊंगा।"

"क्यों?"

"इससे तुम्हें कोई फायदा नहीं होगा। जब ऐसा होगा तो इस बारे में तुमसे बात करूंगा।"

"खुंबरी कब तक मुझ पर वार करेगी?"

"बहुत जल्दी। तुम्हें अपनी तैयारी शुरू कर देनी चाहिए। मुझे हुक्म दो कि मैं क्या करूं। तुम कैसे काम करोगे।"

"खुंबरी का ठिकाना?"

"नहीं मालूम। उसकी ताकतों ने उस जगह पर अपने साये फैला रखे हैं और हमें नजर कुछ नहीं आता कि उसने कहां पर बसेरा डाल रखा है, लेकिन उसका ठिकाना पूर्व के जंगलों में कहीं है। जब-जब भी हमने खुंबरी का ठिकाना जानने की चेष्टा की, हमें पूर्व दिशा के जंगलों की तरफ के ही संकेत मिले। लेकिन ठिकाना नहीं ढूंढ़ पाए।

"तो अब खुंबरी का ठिकाना मुझे ढूंढ़ना होगा।"

"बेहतर होगा कि ये काम उन लोगों से कराओ, जो अभी तुम्हारे पास पहुंचे हैं। मुझे संकेत मिल रहे हैं कि वो बेहतर काम कर लेंगे। वो भी खुंबरी तक पहुंचना चाहते हैं। दिल से काम करेंगे। वो सब ही मेहनती हैं।" तोखा के होंठ हिलते स्पष्ट दिखाई दे रहे थे— "उन सबमें सोमाथ तुम्हारे बहुत काम आएगा।"

"सोमाथ? जिसका निर्माण मेरे बेटे ने किया है।"

"वो ही। वो नकली इंसान है। बैटरी से चलता है। उस पर खुंबरी की ताकतों का कुछ भी असर नहीं होगा। घिर जाने की स्थिति में वो सुरक्षित रहेगा। उसका सही जगह इस्तेमाल करना।"

"ये बात तुमने अच्छी बताई।"

"उस पर हमारी शक्तियां भी काम नहीं करेंगी। इसलिए सोच-समझकर उससे काम लेना। उसका दिमाग जो कहेगा, वो उसी हिसाब से काम करेगा। ये उसके नकली दिमाग पर है कि वो सोचता किस तरह है। महापंडित ने उसका दिमाग कैसा बनाया है।"

"मैं अपने बेटे से बात करूंगा।" डुमरा ने सोच भरे स्वर में कहा।

"अब अपनी तैयारी शुरू कर दो डुमरा। खुंबरी के वार का वक्त करीब आता जा रहा है।" तोखा ने कहा।

डुमरा ने सिर हिलाया।

"हम सबके लिए काम बताओ।"

"क्या पूर्व के जंगलों की दिशा बता सकते हो?" डुमरा बोला।

"लाल पत्थर के पहाड़ों को पार करके जो जंगल पड़ता है, वहीं के संकेत हमें मिलते रहते हैं।"

"ठीक है। अभी तुम्हारे या अन्यों के लिए कोई काम नहीं है। अभी ये मामला मैं ही संभालूंगा।"

"अपनी सुरक्षा का इंतजाम करके रखना।"

"उसके लिए तो मैं हमेशा ही इंतजाम करके रखता हूं।" डुमरा ने कठोर स्वर में कहा—"तो आने वाला वक्त दिलचस्प होने वाला है। क्योंकि सोमाथ पर खुंबरी की ताकतें असर नहीं करेंगी और इनमें से एक को खुंबरी से प्यार होने वाला है।"

"खुंबरी को भी उससे प्यार हो जाएगा।"

"क्या तब वो हमारी सहायता करेगा या खुंबरी की खूबसूरती में गुम हो जाएगा।" डुमरा ने पूछा।

तोखा मुस्कराया।

"मैं इस बारे में मौके पर ही बात करूंगा। इस सवाल का जवाब तुम सोचो डुमरा।"

"कहने को तुम मेरे साथ हो परंतु मेरी बातों का जवाब टाल रहे हो।" डुमरा ने चुभते स्वर में कहा।

"वक्त आने दो।" तोखा ने मुस्कराकर कहा और देखते-ही-देखते कुर्सी से उसका पारदर्शी व्यक्तित्व गायब हो गया।

▭ ▭
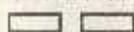
डुमरा ने बारी-बारी सबको देखा और गम्भीर स्वर में कह उठा।

"तुम लोग जिस राह पर चलने को कह रहे हो, वो आसान नहीं है। खुंबरी कोई साधारण युवती नहीं है कि जिसे फौरन कोई नुकसान पहुंचाया जा सकता है या जिसे आसानी से मारा जा सकता है। ये काम इतना आसान होता तो मैंने इसे कब का कर दिया होता। खुंबरी बुरी ताकतों की मालिक है। वो शैतान ताकतें किसी के बस में नहीं आतीं। वो ताकतें पुरानी हो चुकी हैं। जो ताकत जितनी पुरानी होगी, उतनी ही खतरनाक होगी। इस रास्ते पर चलने का मतलब मौत से कम नहीं है। ये हाथ-पांवों की लड़ाई कम और ताकतों-शक्तियों के वारों की ज्यादा है। इसमें...।"

"हम ये लड़ाई लड़ने को तैयार हैं।" देवराज चौहान ने कहा।

"जल्दी मत करो। अभी भी वक्त हाथ में है, सोच लो और...।"

"डुमरा।" रानी ताशा बेहद सख्त स्वर में कह उठी—"खुंबरी को किसने इस बात का हक दिया कि वो मेरे को राजा देव से अलग कर दे।"

"ऐसा हक किसी को भी नहीं दिया जा सकता कि दो प्यार करने वालों को अलग कर दिया जाए।"

"तो खुंबरी ने ऐसा क्यों किया था मेरे और देव के साथ?"

"ये काम खुंबरी का ताकतों ने, खुंबरी के भले के लिए किया...।"

"मतलब कि अपने भले के लिए खुंबरी की ताकतों ने मेरा प्यार तबाह कर दिया। क्या वो मेरी कसूरवार नहीं?"

"खुंबरी की ताकतों ने ये काम किया है तो इसका जवाब देने की जिम्मेवारी खुंबरी की बनती है।" डुमरा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"तो मेरा हक बनता है खुंबरी से बदला लेने का।"

"तुम खुंबरी का मुकाबला नहीं कर पाओगी। उसके पास ताकतें हैं।"

"तभी तो हम तुम्हारे पास आए हैं कि तुम हमें राह दिखाओ। तुम्हारे पास शक्तियां हैं। तुम हमारी सहायता कर सकते हो।"

"इसमें तुम लोगों की जान भी जा सकती है।"

"खुंबरी से मुकाबला करने में, मुझे मौत का डर नहीं।"

डुमरा की निगाह अन्यों पर जाने लगी।

सब डुमरा को ही देख रहे थे।

"तुम हमें परखो मत।" मोना चौधरी ने कहा—"हम सब एक साथ ही हैं।"

"मुझे हैरानी है कि सबके विचार एक जैसे हैं।" डुमरा ने कहा।

"क्या तुम हमें, खुंबरी तक पहुंचने की राह दिखाओगे?" जगमोहन बोला।

"कोशिश कर सकता हूं।" डुमरा ने सोच भरे स्वर में कहा—"डरता भी हूं कि तुम लोगों की जान न ले ले खुंबरी।"

"उसकी तुम फिक्र मत करो।"

"मुझे भी बड़ी शक्तियों को जवाब देना पड़ता है कि फलां कदम मैंने क्यों उठाया? तुम लोगों को लेकर मुझसे पूछा जा सकता है कि मैंने तुम सबको, ताकतों की मालिक खुंबरी के सामने क्यों उतार दिया।"

"हम अपनी इच्छा से खुंबरी को उसके किए की सजा देना चाहते हैं।" रानी ताशा ने दांत भींचकर कहा।

"खुंबरी वास्तव में सजा की हकदार है।" बबूसा बोला।

"आप भी तो खुंबरी को खत्म करना चाहते हैं।" सोमारा कह उठी।

"मेरी बेटी।" डुमरा सिर हिलाकर बोला—"मैं कभी भी खुंबरी का विरोधी नहीं रहा। उसे मारना नहीं चाहा। मेरा विरोध तो उन बुरी ताकतों के लिए है, जो खुंबरी को राह देती हैं, बुराई के रास्ते पर चलने के लिए। मैं उन बुरी ताकतों को खत्म करना चाहता हूं बेशक इस कोशिश में खुंबरी की जान चली जाए, परंतु मैं अपना काम पूरा करके रहूंगा।"

"मैं लूंगी खुंबरी की जान।" रानी ताशा कह उठी—"वो मेरी गुनहगार है। राजा देव को तो उसकी ताकतों ने ग्रह से बाहर फिंकवा दिया, परंतु मैं अपनी जगह पर स्थापित रही, इस बात का पश्चाताप करने के लिए, जो मैंने की ही नहीं थी। जन्मों तक मैं इस दुख में डूबी रही कि राजा देव को मैंने, धोमरा के चक्कर में पड़कर, ग्रह से बाहर फेंक दिया। क्यों मैं धोमरा की तरफ झुक गई थी। राजा देव से मैंने इतनी बड़ी धोखेबाजी कैसे कर ली। मैंने अपने को खत्म कर लिया होता अगर महापंडित ने मुझे फिर से राजा देव से मिलने की बात न कही होती। खुंबरी की ताकतों ने मेरे साथ बुरा किया जो...।"

"और खुंबरी को इस बात का जरा भी अफसोस नहीं है।" बबूसा गम्भीर स्वर में बोला—"वो मेरे को शान से बताती है कि अपनी वापसी का रास्ता तैयार करने के लिए, उसकी ताकतों ने रानी ताशा के द्वारा राजा देव को ग्रह से बाहर फिंकवा दिया था। डुमरा, तुम कहते हो कि खुंबरी बुरी नहीं है, उसकी ताकतें बुरी हैं, परंतु मेरे विचार से खुंबरी भी बुरी हो चुकी है, उन बुरी ताकतों के साथ रहते-रहते। मैं उसके रूप धरा को कुछ हद तक समझा हूं, वो खुश होती है अपनी बुरी ताकतों पर।"

"जरूर ऐसा ही होगा। बुरी ताकतों के साथ को ही वो अपना जीवन समझ बैठी है। मेरा अनुमान है कि उसे बुरी ताकतों के साथ की आदत हो चुकी है। लेकिन जब बुरी ताकतें नहीं होंगी उसके साथ, तो वो सुधर जाएगी।"

"क्या तुम उसे सुधारना चाहते हो डुमरा?" देवराज चौहान बोला।

"अवश्य। मेरी पहली चेष्टा तो ये ही है कि वो बुरी ताकतों का साथ छोड़ दे।"

"ऐसा न हुआ तो?"

"तो उसका जीवन खत्म करने की चेष्टा की जाएगी।" डुमरा बोला।

"ऐसे में बुरी ताकतें तो खत्म नहीं होंगी?"

"खत्म तो नहीं होंगी, परंतु ऊर्जा न मिलने से वो कमजोर हो जाएंगी और अपना नया मालिक ढूंढ़ेंगी।"

"नया मालिक?" देवराज चौहान बोला—"मतलब कि बुरी ताकतें नया मालिक मिलते ही फिर से सक्रिय हो जाएंगी।"

"अवश्य। लेकिन वो नया मालिक हमारी बात मानकर बुरी ताकतों को छोड़ने को तैयार हो जाएगा तो तब मैं उन ताकतों पर काबू पा लूंगा।"

"अब उन ताकतों पर काबू क्यों नहीं पा लेते?"

"कोशिश कर रहा हूं परंतु ताकतों के मालिक का साथ हो तो ये काम बहुत ही सरल हो जाएगा।"

"ताकतों के मालिक के साथ से तुम्हें क्या सहायता मिलेगी?"

"उन ताकतों के मालिक द्वारा मेरे बताए कुछ पवित्र मंत्र पढ़ने से, ताकतें बेहद कमजोर हो जाएंगी। फिर वो कभी भी ताकतें हासिल नहीं कर सकेंगी और मैं उन्हें पकड़कर कहीं भी बिठा दूंगा।" डुमरा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"इन ताकतों का जन्म कैसे हुआ?"

"नागाथ इन ताकतों का जन्मदाता है। कभी पवित्र शक्तियों ने नागाथ को अपना माध्यम बनाया था। नागाथ पक्के इरादों वाला एक मजबूत इंसान था। उसने पवित्र शक्तियों को धोखा देना शुरू कर दिया। वो शक्तियों को अपने फायदे के लिए इस्तेमाल करने लगा। उसने कई ऐसे गुप्त मंत्र जान लिए, जिनसे वो अपने मतलब हल कर सकता था। पवित्र शक्तियों को जब नागाथ के धोखे की खबर लगी तो उन्होंने नागाथ को सही रास्ते पर लाने की चेष्टा की। परंतु नागाथ अपनी इच्छा से उड़ान भरना चाहता था तो शक्तियों ने उससे स्पष्ट कहा कि अगर वो उसकी बात नहीं मानेगा तो छः सौ बरस बाद उसकी मृत्यु हो जाएगी। नागाथ ने ये बात स्वीकार कर ली और शक्तियों से अलग होकर, शक्तियों से हासिल ज्ञान के दम पर बुरी ताकतों को अपने सम्पर्क में लाने लगा। नागाथ बुरे रास्ते पर पड़ गया और

बुरी ताकतों का मालिक बनता चला गया। फिर जब उसकी मृत्यु का वक्त आया तो उसने अपनी ताकतें खुंबरी को सौंप दीं, जो कि तब सदूर की रानी बनने की कोशिश में, झगड़ों में फंसी थी और उन ताकतों ने खुंबरी का बहुत साथ दिया और उसे सदूर की रानी बना दिया। परंतु खुंबरी उन बुरी ताकतों के साथ पाकर बुरे रास्ते पर चल पड़ी। जनता को तकलीफें देने लगी। उनकी जान लेने लगी। लोग खुंबरी से परेशान होते चले गए, परंतु खुंबरी का खौफ ऐसा छा चुका था कि कोई सिर नहीं उठा पाता था। कई बार तो अपनी ताकतों को खुश करने के लिए खुंबरी खून बहाती थी तो कभी खुंबरी के माध्यम से ताकतें मासूम लोगों पर जुल्म करतीं और उन्हें मारती थीं।"

"तभी तुम खुंबरी के पीछे पड़े?"

"हां। शुरू-शुरू में तो अपनी शक्तियों द्वारा खुंबरी पर वार किए कि वो बुरा रास्ता छोड़ दे। परंतु बुरा कभी भी बुराई नहीं छोड़ सकता। खुंबरी की ताकतें मुझ पर वार करने लगीं। मैं किसी ऐसे मौके की तलाश में था कि 'बटाका' खुंबरी से अलग...।"

"बटाका क्या?" नगीना बोली।

"बटाका, खुंबरी की सुरक्षा कवच है, जो कि नग की तरह है। जिसे वो धागे में बांधकर गले में डाले रहती है। जब तक बटाका उसके शरीर के साथ रहेगा, कोई भी वार उस पर नहीं चल सकता। इसी कारण वो हमेशा मेरे वारों से सुरक्षित रही। लेकिन मैं धैर्य से उस वक्त का इंतजार करता रहा, जब बटाका उससे अलग हो जाए। बड़ी शक्तियों ने मुझे बता दिया था कि जल्दी ही वो वक्त आएगा, जब बटाका खुंबरी से अलग हो जाएगा। लम्बे इंतजार के बाद वो वक्त आया। अपने किले से बाहर, कर्मचारियों के जश्न में वो पहुंची और कारु (शराब) पीकर नाचने लगी और उसी नाचने में बटाका गिर गया।" डुमरा सारा हाल बताता चला गया कि कैसे उसने खुंबरी को श्राप दिया।

"तुम्हारे लिए अफसोस की बात रही कि खुंबरी फिर वापस आ गई।" जगमोहन गम्भीर स्वर में बोला।

"मैं एक बार फिर कोशिश करूंगा कि खुंबरी की बुरी ताकतों को जीत सकूं।" डुमरा ने कहा।

"हम तुम्हारा साथ देंगे डुमरा।" सोमाथ कह उठा।

डुमरा ने सोमाथ को गहरी निगाहों से देखा।

जवाब में सोमाथ मुस्कराया। फिर बोला।

"तुम मेरी ताकत पर भरोसा कर सकते हो।"

डुमरा जवाब में मुस्कराकर रह गया।

"अब बताओ कि हम किस रास्ते पर जाएं कि खुंबरी को पा लें।" नगीना ने कहा।

"खुंबरी को अपनी ताकतों का साया हासिल रहता है, ये ही वजह है कि शक्तियां उसे ढूंढ़ नहीं पा रहीं। परंतु तुम लोग उसे ढूंढ़ने की कोशिश कर सकते हो। शक्तियों को इतना ही पता है कि खुंबरी की ताकतें पूर्व की पहाड़ियों के पार डेरा जमाए हुए हैं, वहां घना जंगल है और आसानी से उन्हें नहीं ढूंढ़ा जा सकता।" डुमरा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"हम आज ही पूर्व की पहाड़ी के पीछे के जंगल में...।" जगमोहन ने कहना चाहा।

"जल्दी मत करो। ये जिंदगी और मौत का मामला है। खुंबरी की ताकतों को तुम लोगों की मंशा का एहसास हो जाएगा और वो तुम लोगों पर वार करके, तुम्हारी जान भी ले सकती हैं। उसकी ताकतें तुम लोगों पर असर न करें, इसके उपाय करने होंगे।"

"कैसे उपाय?"

"सुरक्षा के उपाय। मैं तुम लोगों को ऐसा कुछ दूंगा कि जिससे ताकतों के जानलेवा वार का किसी पर असर न हो। साथ ही रानी ताशा के कंधे पर एक शक्ति भी बिठा दूंगा कि जिससे रानी ताशा सलाह-मशवरा कर सके। वो शक्ति जरूरत पड़ने पर तुम लोगों की सहायता करेगी। तब मैं भी तुम लोगों से ज्यादा दूर नहीं रहूंगा। परंतु तुम लोगों के साथ नहीं चलूंगा।"

"साथ क्यों नहीं?"

"मैं अपने तौर पर ताकतों की जगह तलाश करूंगा। परंतु तुम लोग भी एक साथ नहीं रहोगे। वो जंगल बहुत बड़ा और घना है, सबको अलग-अलग होकर, या दो-दो के साथ में उस जंगल को छानना होगा।" डुमरा के चेहरे पर चिंता थी—"अगर तुममें से किसी को कुछ हो गया तो मुझे सबसे ज्यादा दुख होगा। सबको अपना खयाल खुद ही रखना...।"

"पर तुम तो हमें सुरक्षा कवच दोगे।" मोना चौधरी बोली—"जिससे हमें कुछ नहीं होगा।"

"सुरक्षा कवच पर निर्भर मत रहे कोई। पांच सौ साल बाद खुंबरी की ताकतें किस रूप में सामने आएंगी, नहीं कह सकता। हो सकता है कोई ताकत सुरक्षा कवच को भेद दे। इस बात का मुझे कोई अंदाजा नहीं है।" डुमरा व्याकुल दिखने लगा था।

"हमें जाना कब होगा?"

"कल। सबको घोड़े दे दिए जाएंगे। रास्ता लम्बा है।" डुमरा ने बबूसा को देखा—"तुम पूर्व के जंगलों का रास्ता जानते हो?"

"जानता हूं।" बबूसा ने कहा।

"फिर तो साथ में मार्गदर्शक की जरूरत नहीं पड़ेगी।" डुमरा बेहद गम्भीर और परेशान दिखने लगा था।

डुमरा रात के खाने के बाद सबके पास आया। तब वे बातें कर रहे थे। डुमरा ने हाथ में छोटी-सी ट्रे थाम रखी थी, जिसमें कुछ अंगूठियां और छोटा-सा हार पड़ा था। डुमरा ने सोमाथ और रानी ताशा के अलावा सबको पहनने को अंगूठियां दीं। फिर छोटा हार रानी ताशा को देते हुए कहा।

"इसे पहन लो।"

रानी ताशा ने वो हार गले में पहन लिया।

सबने अंगूठियां अपने हाथ की उंगली में पहन ली थीं।

"अब आप लोग खुंबरी की बुरी ताकतों से सुरक्षित हो। ताकतों का कोई वार तुम लोगों पर नहीं चलेगा। अगर खुंबरी के पास खास विशेष वाली ताकत हुई तो फिर आप लोग परेशानी में घिर सकते हैं।" डुमरा बोला।

"तुम्हें इस बात का ज्ञान नहीं कि खुंबरी के पास कोई विशेष ताकत है?" देवराज चौहान ने पूछा।

"मेरे ज्ञान में तो ऐसी कोई ताकत उसके पास नहीं है।" डुमरा गम्भीर दिखा—"परंतु पांच सौ सालों में उसकी ताकतों में क्या बदलाव आया है, ये जानने का मुझे अभी तक मौका नहीं मिला।"

"मतलब कि अगर तुम जानना चाहो तो जान सकते हो?"

"अवश्य। परंतु व्यस्तता की वजह से मैं इस तरफ ध्यान नहीं दे पाया।"

"अब तुम ये बात जान सकते हो।" देवराज चौहान की निगाह डुमरा पर थी।

"ये थोड़े पलों का काम नहीं है। इसमें दिनों का वक्त चाहिए। ज्यादा वक्त भी लग सकता है। इस काम को करने की क्रिया लम्बी है। इसलिए तुम लोगों को खतरा उठाना पड़ेगा अगर खुंबरी के पास विशेष ताकत हुई तो...।"

सब गम्भीर दिख रहे थे।

"हम तुम्हारी शक्तियों को देखना चाहते हैं।" मोना चौधरी ने कहा।

"नहीं देख सकते तुम लोग।"

"क्यों?"

"साधारण लोगों को शक्तियां नहीं दिखतीं, न ही वो इतनी फुर्सत में होती हैं कि वो हर किसी से मिलें। तुम लोगों की बात मेरे से ही होगी।" कहते हुए डुमरा ने रानी ताशा को देखा—"तुम्हें पहनने को जो हार दिया गया है, उस हार में एक शक्ति रहती है। हार तुम्हारे गले में पहुंचते ही वो शक्ति तुम्हारे कंधों पर सवार हो चुकी है। तुम उससे किसी भी तरह की बात कर सकती हो। बात गुप्त रहेगी और उसे सिर्फ हम ही जान पाएंगे, वो भी जरूरत पड़ने पर। मुसीबत के वक्त में वो शक्ति तुम लोगों की सहायता करेगी। उसे हर काम में अपनी सहायक मान सकती हो।"

"क्या वो शक्ति खुंबरी की ताकतों से भी लड़ेगी?" रानी ताशा ने पूछा।

"ये शक्ति की इच्छा पर निर्भर करता है। मैं इस बारे में कुछ कहना नहीं चाहता। यूं वो तुम्हारे अधीन होगी कि तुम उसे जो भी कहोगी, वो मानेगी। परंतु बेहद गलत बात मानने से वो इंकार कर सकती है। उसे इस बात की आजादी है कि तुम्हें किसी भी बात से इंकार कर सके और तुम्हें इस बात का ध्यान रखना होगा कि शक्ति का इस्तेमाल व्यक्तिगत फायदे के लिए न हो। अगर तुमने ऐसा करने की चेष्टा की तो शक्ति तुम्हें छोड़कर वापस अपनी जगह पर आ जाएगी।"

"मैं उसे खुंबरी और उसकी ताकतों के खिलाफ ही इस्तेमाल करूंगी।" रानी ताशा ने कहा।

"क्या शक्ति का साथ सबको नहीं मिल सकता?" नगीना ने पूछा।

"नहीं। रानी ताशा के लिए शक्ति जरूरी है क्योंकि ये खुंबरी की ताकतों की विशेष दुश्मन है। इन हालातों में एक शक्ति ही किसी को दे सकता था। आने वाले वक्त में जाने क्या हालात सामने आते हैं। कष्ट के वक्त में भी सबको विवेक से काम लेना है। खुंबरी की ताकतें कभी भी कुछ भी कर सकती हैं और वे इस बात को पहले ही जान जाएंगी कि तुम लोग किस प्रकार के विचारों के साथ पूर्व के जंगलों में आ रहे हो। तब...।"

"ऐसा नहीं हो सकता कि वो हमारे इरादों को न जान सकें।" जगमोहन बोला।

"ऐसा नहीं हो सकता। ताकतों की अपनी पहुंच है। उनका अपना जाल फैला है, जिससे उन्हें सूचनाएं मिलती हैं। जैसे शक्तियां कई बातें पहले ही जान लेती हैं, ऐसे ही ताकतें भी बातें पहले जान लेती हैं। कई मामलों में तो वो शक्तियों से ज्यादा ताकत रखती हैं, क्योंकि शक्तियों को नियम के हिसाब से चलना पड़ता है जबकि ताकतों को किसी भी तरह के नियम का पालन नहीं करना पड़ता। वो सिर्फ अपना काम पूरा करना जानती हैं और करके रहती हैं। नियम की वजह से शक्तियों को कई बार पीछे हटना पड़ता है और ताकतें अपने मकसद में कामयाब हो जाती हैं।"

"जरूरी तो नहीं है कि शक्तियां मुकाबले में भी नियम का पालन करें।" मोना चौधरी बोली।

"बहुत जरूरी है।" डुमरा सिर हिलाकर कह उठा—"शक्तियां कभी भी नियम के बाहर नहीं जातीं। नियमों के दायरे में रहकर ही उन्हें काम करना पड़ता है। परंतु बड़ी शक्तियां चाहें तो ऐसा हुक्म दे सकती हैं। बड़ी शक्ति के पास नियमों का दायरा ज्यादा बड़ा होता है, जिन्हें वे अपने पास ही रखती हैं, लेकिन बहुत जरूरत पड़ने पर, वो दायरे को पार करने का हुक्म देती हैं। हम लोग इंसान हैं, इंसानों की तरह सोचते हैं, परंतु उनका सोचने और देखने

का पैमाना हमसे बहुत ही जुदा होता है। वो शक्तियां हैं और हम साधारण इंसान। हर कोई अपने नियमों से बंधा है।"

"तो कल सुबह हम पूर्व के जंगल की तरफ जाएंगे?" जगमोहन ने पूछा।

"मेरी जिंदगी में ये पहली बार है कि अपने किसी काम में मैं इंसानों का साथ ले रहा हूं। ऐसा करने की पहली वजह तो मेरा बेटा (महापंडित) है। दूसरी वजह है कि रानी ताशा के साथ नाइंसाफी हुई है, इसलिए रानी ताशा को एक मौका दिया जा रहा है कि वो अपना और राजा देव का बदला ले सके। बाकी सब रानी ताशा और राजा देव के सहायक हैं। आप लोग जो भी काम करेंगे, रानी ताशा और राजा देव के हक में और खुंबरी और उसकी ताकतों के खिलाफ करेंगे। अगर ऐसा नहीं किया गया तो आप लोगों को दिया सुरक्षा कवच यानी कि अंगूठी अपना काम करना बंद कर देगी और आप खतरे में घिर जाएंगे।"

सब डुमरा को देख रहे थे।

"मुझे एक बात और पता चली है जो भविष्य में होने वाली है।" डुमरा बोला।

"क्या?" रानी ताशा के होंठों से निकला।

डुमरा की निगाह देवराज चौहान, जगमोहन और बबूसा पर गई।

"आपमें से किसी को खुंबरी से प्यार होने वाला है।"

देवराज चौहान, जगमोहन और बबूसा एक-दूसरे को देखने लगे।

सोमाथ मुस्कराकर उन तीनों को देखने लगा।

"ये बात कैसे सम्भव है?" मोना चौधरी कह उठी।

"सम्भव है। क्योंकि मेरी शक्तियां मुझे इस बारे में आगाह कर चुकी हैं और मैं आप लोगों को सतर्क कर देना चाहता हूं कि अपने पर काबू रखें और धैर्य से काम लें। ऐसा वक्त आए और आपको महसूस होते ही दिमाग की सोचों को बदलना होगा। खुंबरी बुरी ताकतों की मालिक है और किसी भी तरह के रिश्ते के काबिल नहीं है। खुंबरी का संग पाकर मुसीबतों के अलावा शक्तियों की दुश्मनी मिलेगी।"

"हममें से कोई भी खुंबरी के प्यार में नहीं पड़ना चाहेगा।" जगमोहन ने कहा।

सोमारा ने बबूसा को देखा।

"खुंबरी से बुरी ताकतें छीनना या खुंबरी को खत्म करना हमारा उद्देश्य है।" बबूसा कह उठा—"ऐसे में कोई आकर्षित क्यों होगा खुंबरी की तरफ। मुझे सम्भव नहीं लगता कि ऐसा हो जाए।"

"खुंबरी बहुत सुंदर है।" डुमरा ने गम्भीर स्वर में कहा—"साथ में खास

बात तो ये है कि आज तक उसने सहवास भी नहीं किया। वो बेशक सदूर पर रही या पृथ्वी ग्रह पर, परंतु मर्दों से दूर रही, अब...।"

"तुम्हें ये बात किसने कही?" देवराज चौहान ने पूछा।

"शक्तियों ने।"

"वो गलत भी हो सकती है।"

"नहीं। शक्तियां अपनी बात को कहने से पहले सौ बार तौलती हैं उसे। जब वो कोई बात कहती हैं तो पूरी तरह सत्य होती है। शक्तियों की कही बातों पर शंका नहीं की जा सकती। मैं फिर कहता हूं कि अपने मन को पक्का कर लें कि खुंबरी की सुंदरता पर मोहित नहीं होना है। खुंबरी के पास सिर्फ नर्क का रास्ता है। खुंबरी ऐसी नहीं कि उससे प्यार किया जा सके। बुरी ताकतें उसे गोद में लिए फिरती हैं। वो उन ताकतों में मदहोश है।"

"तुम सच कहते हो डुमरा।" बबूसा गम्भीर स्वर में बोला—"पोपा में धरा (खुंबरी) का मुझे जितना साथ मिला, उसे सामने रखते हुए मैं कह सकता हूं कि वो प्यार के काबिल नहीं। मुझे तो शक है कि वो प्यार करना जानती है।"

डुमरा के चेहरे पर गम्भीरता नाच रही थी।

"रात आप नींद लीजिए। सुबह आपको पूर्व के पहाड़ के पार जंगलों में जाना...।"

"डुमरा।" सोमाथ ने कहा—"तुमने मुझे अंगूठी क्यों नहीं दी?"

"तुम्हें अंगूठी की जरूरत नहीं है।" डुमरा ने सोमाथ को देखा—"खुंबरी की ताकतों का जादू तुम पर नहीं चल सकता क्योंकि तुम कृत्रिम इंसान हो। तुम मशीन भर हो और बैटरी से चलते हो। खुंबरी की ताकतों का जादू इंसानों पर ही चल सकता है। ऐसे में तुम निश्चिंत रहकर सब काम कर सकते हो सोमाथ।"

"ये तो तुमने मजेदार बात बताई डुमरा।" सोमाथ खुश हो गया।

▭ ▭
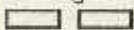
वो एक खुला कमरा था। जिसमें दरवाजे नहीं लगे थे। मशालों का तीव्र प्रकाश वहां फैला था। कमरे में मात्र चंद कुर्सियां और एक टेबल थी। कमरे की दीवारों पर कई रंगों का इस्तेमाल किया गया था। ये कमरा अन्य कमरों से हटकर लग रहा था। टेबल पर पारदर्शी शीशे जैसी वस्तु का जार रखा हुआ था जिसका मुंह नीचे टेबल पर टिका था। कमरे का फर्श भूरे पत्थरों को बिछाकर बनाया गया था। तभी कमरे में दोलाम ने भीतर प्रवेश किया और ठिठककर तसल्ली भरी निगाह हर तरफ डाली और ठीक है के अंदाज में सिर हिलाने लगा।

उसी पल कदमों की आहटें उठने लगीं और पहले खुंबरी ने फिर धरा

ने भीतर प्रवेश किया। दोनों ने गाऊन जैसा लबादा ओढ़ रखा था। धरा के बाल बंधे थे जबकि खुंबरी के खुले बाल पीठ से होते कूल्हों तक जा रहे थे। वो बहुत ही खूबसूरत लग रही थी और चेहरे पर कोई मेकअप नहीं था।

"दोलाम।" खुंबरी बोली—"हमारे कपड़े कहां हैं पहनने वाले?"

"संभाल रखे हैं महान खुंबरी।"

"वो मुझे देना। बाहर घूमने का मन हो रहा है।"

"जी।" दोलाम ने फौरन सिर हिलाया।

खुंबरी ने हाथ बढ़ाकर धरा के गले में पड़े 'बटाका' को छूकर बोली।

"ढोला।"

"हुक्म, महान खुंबरी।" ढोला की मध्यम-सी आवाज कानों के पास उभरी।

"ऊर्जा मिल गई ताकतों को?"

"पूरी तरह महान खुंबरी। सब ताकतें खुशी से नाच रही हैं। अब कोई भी ताकत कमजोर नहीं रही।"

"टोमाथ कहां है?"

"वो तो आपके बुलावे के इंतजार में बैठा है।"

"मैं तुम सबसे एक साथ बातें करना चाहती हूं।"

"हुक्म दीजिए महान खुंबरी।"

खुंबरी ने आगे बढ़कर उस कांच भरे उल्टे जार पर हाथ रखकर कहा।

"ढोला, गोमात, अमाली, टोमाथ।"

उसी पल कमरे में आवाज उभरी।

"महान खुंबरी का स्वागत करता है टोमाथ। मुझे तुम्हारे आ जाने की बहुत खुशी है।"

"मैं जानती हूं टोमाथ। सबसे ज्यादा खुश तुम ही हो।" खुंबरी मुस्करा पड़ी।

"आपके बिना कभी भी मेरा मन नहीं लगा। मैं अंधेरे से भरे कोने में बैठकर वक्त बिताता रहा।"

"मुझे दुख है टोमाथ।"

"तुम भी कहां खुश थीं। तुम्हें भी तो तकलीफें हुईं।"

"अमाली, गोमात और ढोला भी आ गए हैं?" खुंबरी ने पूछा।

"मेरे पास ही खड़े हैं।"

"तुम सबको सामने आ जाना चाहिए ताकि मैं देख सकूं।"

"पहले के रास्ते खराब हो चुके हैं। हमें अब नए रास्ते बनाने पड़ेंगे। सामने आने के लिए।"

"तो रास्ते तैयार कर लो।"

"अभी काम शुरु हो जाएगा।" टोमाथ की आवाज आई।
दोलाम एक तरफ खड़ा था।
धरा खुंबरी के पास मौजूद थी।
"डुमरा को खत्म करना है टोमाथ।" खुंबरी के चेहरे पर कठोरता नाच उठी।
"जानता था मुझे ये ही हुक्म मिलने वाला है।"
"डुमरा हमेशा सुरक्षा कवच में रहता है। कैसे कर पाओगे उसका इंतजाम।"
"मैं कोई रास्ता निकालूंगा। शक्तियां हर पल उसे घेरे रहती हैं। मोरगा से बात करूंगा।"
"मोरगा तो अब और भी बूढ़ी हो गई होगी।"
"वो पूरी तरह जवान है। ऊर्जा मिलते ही उसने अपने लिए नया शरीर बना लिया है।"
"खूब। मोरगा तो बहुत तेज निकली।" खुंबरी ने कहा—"मुझे डुमरा की मौत चाहिए।"
"ये काम आसान नहीं है टोमाथ।" गोमात की आवाज उभरी—"डुमरा का तुम कुछ नहीं बिगाड़ सकते।"
"मैं उसे मार डालूंगा महान खुंबरी के लिए।" अब टोमाथ की आवाज में गुर्राहट आ गई।
"गलत मत बोलो। तुम डुमरा का कभी भी कुछ नहीं बिगाड़ पाए।"
"अब मैं और भी ताकतवर हो गया हूं। डुमरा को मारने की युक्ति सोच लूंगा। मोरगा ने नया शरीर बना लिया है। हम दोनों हर वो काम कर सकते हैं, जो कोई नहीं कर सकता।"
"मुझे टोमाथ पर पूरा भरोसा है।" खुंबरी ने कहा।
"ये आपको बहला रहा है।" गोमात बोला—"ये डुमरा का कुछ नहीं बिगाड़ सकता।"
"गोमात ठीक कहता है।" ढोला की आवाज उभरी—"डुमरा को मारने के लिए टोमाथ की जगह कोई और हो तो अच्छा है।"
"तुम लोग मेरी ताकत पर संदेह कर रहे हो।" टोमाथ ने गुस्से से कहा।
"संदेह कायम है।" ढोला बोला—"तुम पहले भी डुमरा को नहीं मार सके थे।"
"वो सुरक्षा कवच में रहता है। मैं हमेशा ही कोशिश करता रहा कि मेरा वार उस पर चल जाए।" टोमाथ के स्वर में क्रोध था।
"सुरक्षा कवच में तो डुमरा अब भी होगा फिर कैसे मार सकोगे उसे।" गोमात बोला।

"महान खुंबरी। इनकी बातें बेकार हैं। मुझे मौका मिलना चाहिए डुमरा को मारने का।"

"दिया।" खुंबरी बोली—"मुझे डुमरा की मौत चाहिए।"

"वो मर जाएगा।"

"जा। तैयारी कर और मुझे खबर दे।"

उसके बाद टोमाथ की आवाज नहीं उभरी।

"टोमाथ गया, ढोला?"

"हां। परंतु वो डुमरा को मार नहीं सकेगा उसकी ताकत ज्यादा होकर भी ज्यादा नहीं।"

खुंबरी ने उसी पल कांच के जार पर हाथ रखा और बोला।

"मोरगा।"

"हुक्म महान खुंबरी।" तभी एक युवती की शांत आवाज उभरी।

"तूने अपना नया शरीर बना लिया?"

"क्या करती। वो शरीर अब खराब होने लगा था। पांच सौ साल बैठी जो रही।"

"टोमाथ की ताकतें कितनी बढ़ीं अब तक?"

"खास फर्क नहीं पड़ा।"

"डुमरा को मार सकेगा वो?"

"नहीं।" मोरगा की आवाज आई—"डुमरा के सुरक्षा कवच को टोमाथ नहीं भेद सकता।"

"तेरा अपने बारे में क्या खयाल है?"

"मेरी ताकतें काफी बढ़ गई हैं। मैं कोशिश करूं तो डुमरा के सुरक्षा कवच को भेद सकती हूं।"

"ढोला—गोमात।" खुंबरी बोली—"मेरा ये फैसला सही है?"

"हां। मोरगा की कोशिश रंग ला सकती है।"

"इसने कई खास ताकतें हासिल की हैं। श्राप के वक्त में ये खाली नहीं बैठी। यंत्रों पर ही काम करती रही।"

"तू तो बहुत आगे निकल गई मोरगा।" खुंबरी मुस्करा पड़ी।

"अभी तो मैं और भी आगे निकलूंगी।"

"डुमरा को मार तो मैं जानूं तुझे।"

"कोशिश करूंगी। पर मैं टोमाथ के साथ काम नहीं करूंगी। उसका साथ मेरे लिए अच्छा नहीं रहेगा।"

"पहले तो तू टोमाथ के साथ काम करना पसंद करती थी।"

"तब मेरी ताकत उसके बराबर थी। अब मेरे पास ज्यादा ताकतें हैं। टोमाथ आलसी हो गया है। पांच सौ सालों में वो कोठरी में ही बैठा

रहा। यंत्रों पर थोड़ा-बहुत ही काम किया। वो ज्यादा ताकत नहीं बढ़ा सका।"

"डुमरा को मार। मेरा बदला ले। मैं तेरे से खुश हो जाऊंगी।" खुंबरी के दांत भिंच गए।

"डुमरा को तो मैं जरूर मारूंगी। उसने श्राप देकर सबको ही बहुत दुख दिया। मैं तुमसे बहुत खुश हूं कि तुमने हमारा साथ नहीं छोड़ा और श्राप स्वीकार कर लिया। मैं तेरे लिए कुछ भी करूंगी। जाऊं मैं?"

"जा।"

उसके बाद मोरगा की आवाज नहीं आई।

"मोरगा की कोशिश कामयाब हो सकती है।" गोमात बोला—"इसने कई छिपी ताकतें हासिल कर ली हैं।"

धरा खामोश खड़ी थी।

तभी खुंबरी ने कांच जैसे गोले पर हाथ रखा और कह उठी।

"ओहारा।"

"कहो महान खुंबरी।" एक गम्भीर-सी आवाज सुनाई दी।

"मेरे आने पर खुश हो?" खुंबरी मुस्कराई।

"बहुत। ऊर्जा की जरूरत मुझे सबसे ज्यादा थी। मुझे तो ऊपरी ताकतों ने संभाल रखा था। तुम तो जानती हो कि मुझे ऊर्जा की जरूरत ज्यादा रहती है। औरतों पर मेरी बहुत ऊर्जा लग जाती है। मुझे तो बार-बार मंत्रों वाले पानी के कटोरे के पास जाकर डुबकी लगानी पड़ती है। औरतें मेरा पीछा नहीं छोड़तीं।" ओहारा का शांत स्वर कानों में पड़ रहा था।

खुंबरी की मुस्कान गहरी हो गई।

"औरतें तुम्हारा पीछा नहीं छोड़तीं या तुम औरतों से दूर नहीं रहते।"

"बात तो एक ही है खुंबरी। औरतों को भी तो खुश रखना पड़ता है। वो खुश तो मैं भी खुश हो जाता हूं।"

"औरतें काम की हैं या...।"

"सब काम की हैं खुंबरी।" ओहारा ने फौरन कहा—"सबके पास अपनी-अपनी ताकतें हैं। दोती की ताकत का तो मुकाबला ही नहीं है। वो हर काम को फौरन पूरा कर देती है। वो मेरी सबसे पसंदीदा है।"

"दोती का नाम पहले नहीं सुना।"

"पहले छोटी ताकतों का समूह में रहती थी। खूबसूरत लगी मुझे तो मैंने उसे अपने पास रख लिया और यंत्रों से खेलने का तरीका बताया। यंत्रों से खेलने में दोती जल्दी ही माहिर हो गई और ताकतें प्राप्त करती चली गई। मुझे पूरा भरोसा है कि दोती एक दिन बड़ी ताकत बन जाएगी। अब तक तो वो सबसे खतरनाक बन चुकी है।"

"तुम्हारी अपनी ताकतें क्या कर रही हैं?"

"पांच सौ बरसों से कोई काम ही नहीं था।"

"काम करने के लायक हो तुम?"

"पूरी तरह।" ओहारा की आवाज उभरी वहां।

"दोती को भी साथ ले लेना।"

"डुमरा को मारना है।" ओहारा की आवाज आई।

"तुमसे क्या छिपा है ओहारा।"

"डुमरा को अब मर ही जाना चाहिए। उसने हम सबमें बहुत उथल-पुथल कर दी थी। गलती तो तुमने भी की थी।"

"मैंने?"

"इतनी ज्यादा दारू पीने की क्या जरूरत थी कि 'बटाका' के गिर जाने का भी पता न लगा। अगर तुम उस जश्न में गई, दारू पी तो मस्त होकर नाचने की क्या जरूरत थी। तुम लापरवाह हो गई थी।"

"ये भूल मुझसे अवश्य हुई।"

"डुमरा ने तुम्हारे पहरे पर अपनी शक्तियां छोड़ रखी थीं। बटाका तुमसे अलग हुआ कि शक्तियों ने फौरन तुम्हें घेर लिया। हम कुछ भी न कर सके। क्योंकि सुरक्षा कवच तुमसे दूर पड़ा था। तुमने सावधानी नहीं बरती।"

खुंबरी का चेहरा क्रोध से दहक उठा।

धरा के भी दांत भिंच गए थे।

"अब ऐसी गलती नहीं होगी ओहारा।" खुंबरी एक-एक शब्द चबाकर कह उठी।

"अब ऐसी गलती हुई तो ताकतें तुम्हारा साथ नहीं देंगी। इस बार तो ताकतें तुम्हारे लिए रास्ते बनाती रहीं। तुम्हारे साथ रहीं, परंतु दोबारा ऐसा नहीं किया जाएगा। हम बार-बार तुम्हारी गलती का नतीजा नहीं भुगतेंगे। इस बार तो सबने ही तुम्हारा साथ दिल से दिया क्योंकि तुमने हमारा साथ छोड़ना नहीं स्वीकारा। श्राप स्वीकार कर...।"

"ओहारा।" खुंबरी बेहद कठोर स्वर में कह उठी—"अगर मुझसे दोबारा गलती होती है तो, तब भी सब ताकतें मेरा साथ देंगी।"

"ये तुम कैसे कह सकती हो?"

"तुम ताकतों को खुंबरी जैसा मालिक नहीं मिलेगा। मेरे बिना तुम सब खत्म हो जाओगी।"

"हम नया मालिक तलाश लेंगे।"

खुंबरी ठहाका लगा उठी।

धरा भी मुस्कराई।

"नया मालिक तलाशोगे। इतनी हिम्मत है तुममें?"

ओहारा की आवाज नहीं आई।
"जवाब दो ओहारा।"
"तुम जीतीं, मैं हारा।" ओहारा की आवाज आई।
"इतनी जल्दी हार मान ली। तुम तो नया मालिक तलाश करने को कह रहे थे।" खुंबरी के चेहरे पर कड़वी मुस्कान थी।
"मैं ज्यादा बड़ी ताकत नहीं हूं। ये फैसला तो बड़ी ताकतों के पास है।"
"क्या बड़ी ताकतों ने ऐसा कुछ कहा?"
"नहीं। ये तो मैंने अपने विचार कहे तुमसे।"
तभी धरा कह उठी।
"तुम्हारे इन विचारों के लिए तुम्हें सजा मिलेगी ओहारा।"
"अगर मैंने गलती की है तो मैं सजा जरूर स्वीकार करूंगा। मालिक का हर हुक्म मानूंगा।" ओहारा की आवाज आई।
"तुम अच्छी तरह जानते हो कि अगर किसी ताकत को स्वाहा करना है तो वो मंत्र मेरे पास ही है।" धरा ने पुनः कहा।
"मैंने इतनी बड़ी गलती तो नहीं की कि मेरा वजूद ही खत्म कर दिया जाए।" ओहारा के स्वर में बेचैनी के भाव आ गए।
"मुझे श्राप क्यों दिया गया। चाहती तो सदूर की रानी बनकर रह सकती थी अगर डुमरा की बात मान लेती।" धरा गुर्रा उठी।
"क्षमा महान खुंबरी।" ओहारा कह उठा।
तभी खुंबरी बोली।
"डुमरा को खत्म करने की शक्ति है तुममें?"
"अवश्य। मैं डुमरा को खत्म कर दूंगा। मैं तो पहले भी कहा करता था कि डुमरा को मारने का मौका मुझे दो।"
"ठीक है ओहारा।" खुंबरी ने सिर हिलाया—"तुम डुमरा को मारकर मुझे खबर दो।"
"ये काम इतनी भी जल्दी नहीं होगा, जितनी जल्दी तुम सोच रही हो।" ओहारा की आवाज सुनाई दी—"डुमरा की शक्तियों ने उसे खास सुरक्षा कवच दे रखा है। पहले तो मैं उसके सुरक्षा कवच को, उससे अलग करूंगा।"
"हो सकेगा तुमसे ये काम?"
"क्यों नहीं होगा। दोती मेरे साथ रहेगी। उसे भी परख लूंगा।"
"ढोला।" खुंबरी ने कहा—"ओहारा को ये काम देकर मैं गलती तो नहीं कर रही?"
"ये तो खुशी की बात होगी अगर ओहारा ये काम करना स्वीकार कर ले।" ढोला की आवाज आई।

"तो मेरे बारे में ढोला से सलाह ली जा रही है।" ओहारा ने नाराजगी से कहा—"ये तो मेरी बेइज्जती है।"

"ढोला बेहतर जानता है कि किसके पास ज्यादा ताकतें हैं।"

"तो मेरे बारे में ढोला से पहले पूछ लेती। मेरे सामने ही क्यों पूछा। ये मुझे अच्छा नहीं लगा।"

"ज्यादा बातें न बना। तेरे को डुमरा को खत्म करना है।"

"जान चुका हूं।"

"ये काम मैंने टोमाथ और मोरगा को भी दिया है।" खुंबरी बोली।

"मोरगा ने तो काफी शक्तियां हासिल कर ली हैं, परंतु टोमाथ तो किसी काम का नहीं है।"

"मैं डुमरा के गिर्द जाल फैला देना चाहती हूं कि किसी का वार तो उस पर चले। टोमाथ सफल नहीं हो सकता तो कम-से-कम उसे परेशान तो अवश्य कर देगा। जो काम कर देगा, वो मेरे सबसे करीब पहुंच जाएगा।"

"फिर तो ये काम मैं ही करूंगा।" ओहारा की आवाज आई—"मैं ही डुमरा की जान लूंगा। परंतु एक बात तुम्हें बताना चाहता हूं। मुझे अभी-अभी मेरी ताकतों ने बताया है कि डुमरा ने कुछ लोगों को इस तरफ तुम्हारी तलाश में भेजा है।"

"लोगों को?" खुंबरी के माथे पर बल पड़े।

धरा के होंठ सिकुड़ गए।

"हां खुंबरी।"

"शायद तुमने बात को समझने की भूल कर दी है ओहारा। डुमरा लोगों को हमारे मुकाबले पर उतारने की बेवकूफी नहीं करेगा।"

"ऐसा हो चुका है। वो सब लोग पोपा से सदूर पर तुम्हारे साथ ही पहुंचे हैं।"

"खुंबरी और धरा की नजरें मिलीं।

"उन लोगों का हमसे क्या मतलब?" खुंबरी कह उठी।

"ये तो अजीब बात हो गई।" धरा ने कहा।

"ये सम्भव नहीं लगता ओहारा। वो डुमरा के कहने पर हमारी तलाश में क्यों आएंगे। वो तो...।"

"उन्हें डुमरा ने सुरक्षा कवच देकर भेजा है।" ओहारा ने पुनः कहा—"वो तुम्हें मारने का इरादा रखते हैं या तुमसे, ताकतों को अलग कर देना चाहते हैं। रानी ताशा तुम्हारी जान लेने में सबसे आगे है।"

"रानी ताशा।" धरा के सिकुड़ चुके होंठ हिले।

खुंबरी ने धरा को देखकर जहरीले स्वर में कहा।

"बात समझी तू?"

"समझ गई।" धरा हंस पड़ी—"क्यों न समझूंगी। मेरी ताकतों ने, रास्ता बनाने के लिए, ढाई-तीन सौ साल पहले रानी ताशा और राजा देव को अलग करके, राजा देव को ग्रह से बाहर फेंक दिया था। ये बात मैंने ही बबूसा से कही थी और अब वो उस बात का बदला लेने आ रहे हैं; बेवकूफ लोग। उन्हें ये नहीं पता कि ताकतों का मुकाबला वे नहीं कर सकते।"

"डुमरा उनके साथ है।" खुंबरी मुस्कराई।

"उससे कोई फर्क नहीं पड़ता है हैं तो वो साधारण इंसान ही।"

"डुमरा ने उन्हें सुरक्षा कवच भी दिया है।"

"वो सुरक्षा कवच बेहतर किस्म का नहीं होगा। हमारी ताकतें उन पर काबू पा लेंगी।"

"डुमरा क्या इतना कमजोर हो गया कि हमारे खिलाफ साधारण लोगों का इस्तेमाल करे।" खुंबरी जहरीले स्वर में कह उठी।

"कोई बात तो है ही।" एकाएक धरा ने सोच भरे स्वर में कहा—"डुमरा इंसानों को हमारे खिलाफ इस्तेमाल नहीं कर सकता। उसकी शक्तियां इस बात की इजाजत नहीं देंगी, परंतु वो ऐसा कर रहा है।"

"क्यों ओहारा ?" खुंबरी बोली—"डुमरा पोपा से आए लोगों का इस्तेमाल क्यों कर रहा है?"

"रानी ताशा आपको मारना चाहती है। राजा देव उसे सहयोग दे रहे हैं और सब एक साथ...।"

"मैंने पूछा है डुमरा साधारण लोगों को मेरी ताकतों के खिलाफ क्यों इस्तेमाल कर रहा है?"

"ये मैं नहीं जानता। परंतु रानी ताशा के साथ डुमरा ने एक शक्ति भी कर दी है।" ओहारा की आवाज आई।

"ओह।" धरा ने खतरनाक स्वर में कहा—"डुमरा हमारे खिलाफ कोई चाल चलने की चेष्टा में है।"

"इन लोगों के साथ वो कोई चाल चलने में कामयाब नहीं हो सकता।" खुंबरी ने विश्वास भरे स्वर में कहा।

"लेकिन ये बात सच है कि डुमरा क्यों साधारण लोगों का इस्तेमाल कर रहा है।" ओहारा की गम्भीर आवाज सुनाई दी।

"रानी ताशा को ताकत देकर इस तरफ भेजना...दूसरे लोगों को...।" धरा ने कहना चाहा।

"इस तरह हमारा कुछ नहीं बिगड़ सकता।" खुंबरी ने हाथ हिलाकर कहा।

"बात बिगड़ने की नहीं है, चाल की है कि वो क्या चाल चलना चाहता है।" धरा बोली—"अगर हमें उसकी चाल समझ में आ जाए तो हम उसे करारा जवाब दे सकते हैं। उसे हार दे सकते हैं।"

"चाल जरूर समझ आएगी वक्त आने पर।" खुंबरी ने सिर हिलाया और सोच भरे स्वर में बोली—"ओहारा।"

"हुक्म महान खुंबरी?" ओहारा की आवाज गूंजी।

"उन साधारण लोगों के पास जो सुरक्षा कवच है क्या उन पर काबू पाया जा सकता है।"

"मुझे इन छोटे कामों में मत डालें। मैं अपना पूरा ध्यान डुमरा पर लगाना चाहता हूं। ये काम कोई और कर सकता है। लेकिन डुमरा ने उन्हें कमजोर सुरक्षा कवच नहीं दिया। बेहतर सुरक्षा कवच दिया है। रानी ताशा के पास जो शक्ति है, वो भी कमजोर नहीं है। उन पर बहुत सोच-समझकर वार करना होगा।" ओहारा की आवाज सुनाई दी—"उनके साथ एक नकली इंसान भी है—वो...।"

"नकली इंसान?" धरा कह उठी—"परंतु सोमाथ को तो बबूसा ने पोपा से बाहर आकाशगंगा में फेंक दिया था।"

"उसका नाम सोमाथ ही है। वो तारों से चलता है और उस पर ताकतों का कोई असर नहीं होगा।"

"ये तो बुरी बात है कि ताकतें उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकतीं।" खुंबरी के माथे पर बल दिखे।

"सोमाथ नाम के नकली इंसान से सावधान रहना होगा।" ओहारा ने कहा—"वो खतरनाक हो सकता है। अभी-अभी मुझे पता चला है कि डुमरा भी इसी दिशा की तरफ चल पड़ा है।"

"क्या?" खुंबरी का चेहरा क्रोध से भर गया—"डुमरा इसी तरफ आ रहा है?"

"उसने अपनी यात्रा की इसी तरफ की दिशा पकड़ी है। बीच में न रुका तो अवश्य वो इसी तरफ ही आएगा।"

"डुमरा का इरादा क्या है ओहारा?" एकाएक खुंबरी के दांत भिंच गए।

जबकि धरा की आंखों में चमक आ गई।

"इससे ज्यादा मैं नहीं जानता। अगर नई बात पता चली तो जरूर बताऊंगा। मैं डुमरा पर निगाह रखने के लिए कुछ काम करना चाहता हूं मुझे अभी जाना होगा। दोती को डुमरा की निगरानी पर लगा देता हूं।"

"तुम जाओ ओहारा।" खुंबरी खतरनाक स्वर में बोली—"ये हमारे लिए खुशी की बात है अगर डुमरा इसी तरफ आ रहा है तो।"

ओहारा की आवाज नहीं आई।

"हमें सतर्क रहना होगा।" धरा कह उठी।

"अवश्य।" खुंबरी जहरीले स्वर में बोली—"मेरा प्यारा दुश्मन, इसी तरफ आ रहा है तो सतर्कता की जरूरत उसे है।"

"गोमात।" धरा बोली—"डुमरा उधर ही आ रहा है क्या?"

"मुझे खबर नहीं है।" गोमात की आवाज सुनाई दी।

तभी अमाली की आवाज आई।

"मेरी भी तो सुनो। मैं कब तक चुप रहूंगी?"

"कह अमाली, क्या कहना है तुझे?" खुंबरी बोली।

"मुझे तेरी चिंता हो रही है। तेरे को प्यार जो होने जा रहा है।"

"बेवकूफ।" खुंबरी मुस्कराई—"खुंबरी को प्यार नहीं होगा।"

"मैंने पन्नों पर लिखा आया पढ़ लिया है। पृथ्वी से आए लोगों में से एक के साथ तू प्यार में पड़ जाएगी।"

"तू मजाक तो नहीं कर रही अमाली।" धरा ने कहा।

"मैं ऐसा मजाक क्यों करूंगी।"

"फिर तो हमें इस बात को गम्भीरता से लेना चाहिए।" धरा ने खुंबरी से कहा।

"तेरे को क्या लगता है मैं प्यार जैसी बातों में पड़ूंगी।" खुंबरी हंसी।

"अमाली की बात को तू इस तरह नहीं उड़ा सकती।"

"मेरी बात सही है।" अमाली की आवाज उभरी—"तभी तो मुझे चिंता हो रही है। पोपा में आने वाले लोग, इस तरफ आ पहुंचे हैं। उनमें पृथ्वी के लोग भी हैं। मैं इसी से सोच सकती हूं कि तू प्यार के करीब पहुंचती जा रही है।"

धरा और खुंबरी की नजरें मिलीं।

चंद कदमों के फासले पर खड़े दोलाम के चेहरे पर नाराजगी उभरी दिखाई देने लगी।

"यहां आने वाले लोग तो मारे जाएंगे।" खुंबरी बोली—"फिर प्यार कैसा?"

"ऐसा तो नहीं कि आने वाला वक्त उथल-पुथल मचा दे।" धरा ने सोच-भरे स्वर में कहा—"पोपा के लोग इसी तरफ आ चुके हैं। डुमरा भी इसी दिशा की तरफ चल पड़ा है। अमाली कहती है कि तुझे प्यार होने वाला है।"

"दिलचस्प बातें हैं ये सब। पृथ्वी के मर्द दो हैं, देवराज चौहान और जगमोहन।" खुंबरी बोली—"लेकिन देवराज चौहान की पत्नी नगीना है और पहले के जन्मों की पत्नी रानी ताशा है। वो तो मेरे से प्यार में नहीं पड़ेगा।"

"तू इन बातों को मजाक में ले रही है।"

"जगमोहन ही रह जाता है।" खुंबरी मुस्करा रही थी—"देखने में वो कम नहीं। शरीर भी अच्छा है।"

दोलाम उखड़ी नजरों से खुंबरी को देखने लगा।

"तू अमाली की बात को गम्भीरता से नहीं ले रही।" धरा ने कहा।

"मैं गम्भीर हूं। तभी तो सोच रही हूं कि पृथ्वी के किस मर्द से मुझे प्यार होगा।"

"पृथ्वी के मर्द ज्यादा अच्छे नहीं होते।" दोलाम बोल पड़ा—"वो कमजोर होते हैं।"

"अच्छा।" खुंबरी ने दोलाम को देखा—"ये बात तुझे कैसे पता है?"

"महान खुंबरी को अपने करीब के लोगों से प्यार करना चाहिए। जिन्होंने दिल से तुम्हारी सेवा की है।"

"जैसे कि तुम?" खुंबरी के होंठ सिकुड़े—"यही कहना चाहता है न दोलाम?"

"मैंने जी-जान से पांच सौ साल आपके शरीर का खयाल रखा है। उसे खराब नहीं होने दिया।"

"सुना तूने।" खुंबरी ने धरा से कहा।

"दोलाम।" धरा बोली—"सेवक, सिर्फ सेवा करने के लिए होते हैं। प्यार जैसी बातें उन्हें नहीं सोचनी चाहिए।"

दोलाम ने मुंह फेर लिया।

"ढोला।" खुंबरी बोली—"सब तरफ नजर रखो और ताजा हालातों की मुझे खबर देते रहना।"

"मैं ऐसा ही करूंगा खुंबरी।" ढोला की आवाज आई।

"एक 'बटाका' तैयार करके मुझे दे दे। जरूरत पड़ ही जाती है।" खुंबरी ने पुनः कहा।

"मैं अभी 'बटाका' तैयार करता हूं।"

"अब तुम लोग जाओ।" फिर खुंबरी ने दोलाम से कहा—"मेरे कपड़े निकाल। कबसे मैंने कपड़े नहीं पहने।"

दोलाम कमरे से चला गया।

खुंबरी हंसकर कह उठी।

"डुगरा बेवकूफ है, जो कहता है ताकतों का साथ छोड़ दूं। ताकतों के साथ जीने का मजा ही कुछ और है।"

"पर डुमरा का इस तरफ आना मुझे खटक रहा है।" धरा सोच भरे स्वर में बोली।

"उसे आने दे। वो खुद मेरे करीब आकर, मुझे मौका दे रहा है कि मेरी ताकतें उसे आसानी से खत्म कर दें।"

□ □

लम्बे सफर के बाद वे सब पहाड़ों के पार, पूर्व के जंगल में आ पहुंचे थे। ये सफर उन्होंने घोड़ों पर किया था। वे सब थके से लग रहे थे। जंगल के किनारे पर ही उन्होंने पड़ाव डाल लिया था। टाकोली की बनी रोटियां और सब्जी ढेर सारी साथ में थी। पानी की पर्याप्त मात्रा में बोतलें थीं। दिन निकलने के कुछ देर बाद ही वो यहां आ पहुंचे थे। बबूसा मार्गदर्शक बना था। सूर्य तीखी धूप फेंक रहा था। गर्मी बहुत थी। पसीना बह रहा था। परंतु वे इस वक्त पेड़ों की छांव में था।

देवराज चौहान सफर के दौरान नगीना के पास ही रहा था, जबकि रानी ताशा अकेली-अकेली-सी थी। वो कम बात कर रही थी और पूरे सफर के दौरान अजीब-से तनाव में घिरी दिखी थी। कई बार उसने देवराज चौहान को भी देखा था। जबकि नजरें मिलने पर देवराज चौहान हल्का सा मुस्करा देता था। सफर के दौरान जगमोहन ने अवश्य रानी ताशा का दिल लगाने की खातिर बार-बार उससे बात करनी चाही थी, लेकिन रानी ताशा ने ज्यादा बात नहीं की। उधर बबूसा और सोमारा ने हंसते-खेलते बातें करते सफर तय कर लिया था। मोना चौधरी, सोमाथ के साथ बातों में लगी रही। वो सदूर के बारे में ज्यादा-से-ज्यादा जानकारी सोमाथ से लेती रही थी और कई नई बातें उसे समझ में आई थीं। वो नए ग्रह पर आकर खुश थी, परंतु खुंबरी के रगड़े ने उसकी खुशी को कम कर दिया था, इस बारे में उसे तसल्ली थी कि देवराज चौहान ने रानी ताशा का साथ छोड़ दिया है। रानी ताशा के प्रति उसके दिल में जो नाराजगी थी, वो खत्म हो गई थी।

पेड़ों की छांव में रुकते ही बबूसा कह उठा।

"मुझे भूख लगी है। मैं तो कुछ खाऊंगा।"

"थोड़ा-सा मैं भी खा लूंगी। तेरे साथ।" सोमारा ने कहा।

दोनों ने सामान में से खाना निकाला और खाने लगे। तभी जगमोहन पास पहुंचा।

"मुझे भी खाने को कुछ दे दो।" वो पास में बैठ गया।

"तुम भी खाओ।" सोमारा बोली—"खुद ही ले लो।"

नगीना ने देवराज चौहान से पूछा।

"कुछ खाएंगे?"

"अभी मन नहीं है।" देवराज चौहान जंगल में नजरें घुमाता कह उठा—"तुम खा लो।"

"मैं आपके साथ ही खाऊंगी।"

सोमाथ, रानी ताशा के पास पहुंचकर बोला।

"रानी ताशा, तुम्हारे खाने को कुछ लाऊं?"

"नहीं सोमाथ।" रानी ताशा ने सख्त स्वर में कहा—"मुझे तो खुंबरी चाहिए।"

"वो एक बार मुझे मिल गई तो बच न सकेगी।" सोमाथ ने सिर हिलाकर कहा।

"तुम पहले से काफी बदले-बदले हो।"

"हां रानी ताशा। महापंडित ने मेरे स्वभाव में कुछ बदलाव किया है। पहले मैं चुप-चुप रहता था। अपने काम से मतलब रखता था, परंतु इस बार महापंडित ने मेरे दिमाग में जो प्रोग्राम डाला है, उसकी वजह से मैं हंसता-मुस्कराता भी हूं। दोस्तों की तरह बातें करता हूं। ऐसा करने से लोग मेरे से दूर नहीं भागेंगे।"

बबूसा वहां से चला गया तो रानी ताशा के कानों में स्त्री की मध्यम-सी आवाज पड़ी।

"मेरे से भी बात कर ले ताशा।"

"तू—कौन?" रानी ताशा चौंकी।

"भूल गई क्या। मैं डुमरा की शक्ति हूं जो तेरी सहायता के लिए तेरे कंधों पर बैठी हूं पर पूरे सफर के दौरान तूने मुझसे एक भी बात नहीं की। तेरे को मेरे से बात करनी चाहिए।"

"मैं भूल गई थी तुझे।"

"जब भी मुझसे बात करनी हो तो मुझे ओरी कहकर बुला लेना।" वो ही आवाज सुनाई दी।

"मैं ऐसा ही करूंगी।"

"तूने कुछ खाया क्यों नहीं? जबकि तेरे को भूख है।"

"मन नहीं है।"

"जिसके कंधों पर मैं सवार होती हूं, उसके मन का हाल मुझे पता रहता है। मैं जानती हूं तू क्या सोच रही है।"

रानी ताशा ने कुछ नहीं कहा।

"तेरा मन उदास है कि राजा देव तेरे पास नहीं है।" ओरी की आवाज पुनः आई।

"उदास तो होगा ही।" रानी ताशा बोली—"कितनी खुश थी मैं पोपा में राजा देव के साथ।" उसकी आंखें भर आई।

"वो सब खुंबरी की ताकतों की चालाकी थी। राजा देव ने तो तुझे इतने वक्त के लिए भी स्वीकार नहीं करना था। वो तो खुंबरी की ताकतों ने उसका दिमाग घुमा दिया और तेरा दीवाना होकर सदूर की तरफ चल पड़ा। यहां पहुंचे तो खुंबरी की ताकतों ने राजा देव पर से अपना साया उठाया तो उसे होश आया कि वो ये क्या कर रहा है।"

"राजा देव मेरे क्यों नहीं हो सकते।" रानी ताशा का स्वर भर्रा उठा।

"देख जब तक वो तेरा था, तेरा ही था। तेरा ही बनकर रहा। पर वो जन्म खत्म होते ही सब रिश्ते खत्म हो गए। तू सदूर पर जन्म लेती रही और वो पृथ्वी पर पहुंचकर जन्म लेने लगा। तू तो उसका इंतजार करती रही, क्योंकि महापंडित ने तेरे हर जन्म में, तेरे दिमाग का वो कोना सुरक्षित रखा, जहां राजा देव की यादें थीं। पर राजा देव तो पृथ्वी पर जन्म लेते ही पुरानी यादों को भूल चुका था और नए जन्म के संग-संग ही चलने लगा। अब उसकी पत्नी नगीना है और वो किसी भी हाल में नगीना को छोड़कर तेरा हाथ नहीं थामेगा। आगे जाकर वक्त बदल जाए तो दूसरी बात है।"

"मेरा हाथ थामा तो था।"

"वो खुंबरी की ताकतों ने उसका दिमाग घुमा दिया था कि खुंबरी तुम लोगों के संग सदूर पर पहुंच सके।"

"राजा देव पृथ्वी पर कैसे पहुंच गए?" रानी ताशा ने पूछा।

"वो लम्बी दास्तान है। कभी वक्त मिला तो तुझे बताऊंगी।" ओरी की आवाज कानों में पड़ रही थी—"जब ग्रह से बाहर निकलकर राजा देव आकाशगंगा में जिंदगी और मौत से जूझ रहे थे और बहुत दूर निकल गए थे, तभी पृथ्वी की एक शक्ति से मुलाकात हुई। वो पृथ्वी के लोगों का मृत्यु और जन्म का हिसाब रखती थी। उस शक्ति ने राजा देव के दिमाग को पढ़ लिया कि वो धोखे का शिकार होकर मृत्यु को प्राप्त होने जा रहा है। ऐसे में उस शक्ति ने राजा देव के शरीर से जान निकाली और अपने साथ ले गया और राजा देव का पृथ्वी पर जन्म कर दिया।"

"और राजा देव मुझे भूल गए।" रानी ताशा ने दुखी स्वर में कहा।

"हां। नया जन्म, नई यादें, नए लोग, पृथ्वी पर ऐसा ही होता है।"

"पृथ्वी की शक्तियां आकाशगंगा में घूमती रहती हैं?"

"अपने कार्य पूर्ण करने के लिए उन्हें दूर-दूर तक जाना पड़ता है।" ओरी ने कहा।

"तुम लोग भी जाती हो?"

"हां। काम बनाने के लिए हमें भी दूर-दूर तक जाना पड़ता है। तभी तो हम ताकतवर बनती हैं।"

"तो मैं राजा देव को नहीं पा सकती।" रानी ताशा ने गहरी सांस लेकर पूछा।

"नहीं। वो नगीना का है।"

"कोशिश करूं तो भी सफल नहीं होऊंगी?"

"पता नहीं। आने वाले वक्त में क्या होता है। अभी तक तो मेरा जवाब

नहीं में है। तू इस बारे में ज्यादा मत सोच और राजा देव की दोस्त बन जा। इससे तेरे को राजा देव का ज्यादा साथ मिलता रहेगा।"

"वो मेरी जान है और तुम उसे दोस्त बनाने को कह रही हो।"

"तू उसके लिए अपने मन में कैसे भी विचार रख, पर उसकी जान तेरे में नहीं बसती। उसे हमदर्दी है तेरे से।"

रानी ताशा चुप रही।

ओरी की भी आवाज नहीं आई।

"खुंबरी की ताकतों ने बहुत बुरा किया मेरे साथ। अपने मतलब के लिए मेरे देव को मेरे से अलग कर दिया।"

"बुरी ताकतें तो बुरा काम ही करेंगी।" ओरी की आवाज सुनाई दी।

"मैंने खुंबरी को मार देना है।"

"उसे मार दिया तो बहुत अच्छा होगा। सदूर के लोगों का जीवन चैन से बीतेगा। शक्तियों को भी चैन मिलेगा।"

"खुंबरी को मारने में मैं सफल हो जाऊंगी न?"

"मुझे क्या पता। तू कोशिश करना।"

"तू क्या करेगी तब?"

"तेरी सहायता करूंगी। तेरे को खतरे से बचाऊंगी। रास्ता दिखा तो खुंबरी को मारने का रास्ता बताऊंगी। अब सारी बातें छोड़ और खाना खा ले। पेट खाली रहेगा तो तू काम कैसे कर पाएगी।" ओरी ने कहा।

रानी ताशा उठी और देवराज चौहान और नगीना के पास जा पहुंची।

"मुझे भूख लगी है।" रानी ताशा ने शांत स्वर में कहा—"हम मिलकर खाना खाते हैं।"

"ये तो अच्छी बात है।" नगीना मुस्करा पड़ी—"मेरा भी खाने का मन है, बैठ जाओ। आप भी खाएंगे क्या?"

देवराज चौहान ने सिर हिला दिया।

▭ ▭
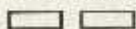
सब थोड़ा-थोड़ा नींद ले चुके थे। रात भर सफर में जागते रहने से, नींद लेना जरूरी हो गया था। इस दौरान सोमाथ पहरा देता रहा था। आधा दिन बीत चुका था। अब आगे जाने की तैयारियां शुरू हो गईं। दुमरा ने कहा था कि सबने अलग-अलग बढ़कर, जंगल में खुंबरी की जगह को तलाश करना है। ऐसे में तय किया गया कि दो-दो होकर जंगल में जाया जाए, इस तरह चार ग्रुप बन जाएंगे। परंतु इसमें समस्या ये दिखी कि अलग हो जाने बाद उन्हें एक-दूसरे की स्थिति का पता नहीं चलेगा। कोई यंत्र भी नहीं कि जिससे वे एक-दूसरे से सम्पर्क कर सकें।

"बबूसा।" सोमारा कह उठी—"मैं तो तेरे साथ रहूंगी।"

"मेरे साथ ही क्यों?"

"कहीं खुंबरी का दिल तेरे पर आ गया तो? डुमरा ने कहा था कि किसी को खुंबरी से प्यार...।"

"मुझसे नहीं, पृथ्वी से आए लोगों में से किसी के साथ होगा।" बबूसा ने सिर हिलाकर कहा।

पास खड़े जगमोहन ने बबूसा को देखा।

"तुम खुंबरी से सतर्क रहना।" बबूसा ने जगमोहन से कहा।

जगमोहन, देवराज चौहान के पास जाकर बोला।

"हम दोनों को खास सतर्क रहना होगा। डुमरा ने खुंबरी से प्यार हो जाने की बात कही थी।"

"अगर ऐसे हालात बनते हैं तो हमने अपने दिमाग को काबू में रखना होगा। इसी तरह बचा जा सकता है।" देवराज चौहान बोला।

उसके बाद जोड़ियां बनाई गई, जो कि इस प्रकार बनीं।

रानी ताशा और नगीना, जगमोहन और बबूसा, देवराज चौहान और मोना चौधरी चौथी जोड़ी सोमाथ और सोमारा की थी। इसके साथ ही, साथ लाए खाना-पानी को भी आधा बांट लिया गया। घोड़े वहीं छोड़ दिए गए कि पैदल चलेंगे तो उनकी निगाहों से खुंबरी की जगह छिप नहीं सकेगी।"

चलने से पहले रानी ताशा गुस्से भरे स्वर में कह उठी।

"हमने खुंबरी को खत्म करना है। उसने कभी मुझे और राजा देव को जुदा किया था। ये मेरा बदला है।"

"ये मेरा भी बदला है ताशा।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा।

"हम सब तुम लोगों के साथ हैं।" जगमोहन कह उठा।

"जो भी काम करना है हमें सोच-समझकर करना है।" मोना चौधरी ने गम्भीर स्वर में कहा। "हमारा मुकाबला बुरी ताकतों से है। ये हाथ-पांवों की लड़ाई जैसा नहीं होगा। हमें ये भी नहीं पता कि कोई सामने आ जाए तो उसके साथ क्या करना होगा। हमारे पास कोई हथियार भी नहीं है।"

उसी पल ओरी, रानी ताशा के कान में बोली।

"जरूरत पड़ने पर सुरक्षा कवच सबको हथियार देता रहेगा।"

रानी ताशा ने ये बात सबसे कह दी।

"सुरक्षा कवच?" जगमोहन ने हाथ की उंगली में पड़ी अंगूठी को देखा—"ये हमें कैसे हथियार देगा?"

"जब वक्त आएगा ऐसा तो पता चल जाएगा।" ओरी की बात, रानी ताशा ने पुनः सबसे कह दी।

"तुम्हें ये बातें कैसे पता है?" मोना चौधरी ने पूछा।

"जो शक्ति डुमरा ने मेरे कंधों पर बिठाई है, वो बता रही है मुझे।" रानी ताशा बोली।

"तुम्हारे पास तो शक्ति है, हमारे पास वो भी नहीं।"

रानी ताशा के पास इस बात का जवाब नहीं था।

फिर वे सब जंगल में आगे बढ़ गए। शुरू-शुरू में जंगल घना नहीं था। लेकिन कुछ आगे बढ़ने के बाद जंगल घना होने लगा और सब दो-दो के जोड़े में, अपनी-अपनी दिशा चुनकर अलग होते चले गए।

▭ ▭
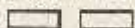
रानी ताशा और नगीना घने जंगल में सतर्कता से आगे बढ़ती जा रही थीं। पेड़ इतने घने थे कि सूर्य की रोशनी को जमीन पर नहीं पड़ने दे रहे थे। कहीं कहीं तो अंधेरा-सा महसूस होने लगता था। दोनों की पीठों पर पानी और खाने-पीने से लदे सामान के बैग जैसे थैले थे। उनकी नजरें हर तरफ जा रही थीं।

"पेड़ों के नीचे तो खुंबरी का ठिकाना नहीं होगा।" नगीना ने कहा।

"ये मुझे सम्भव नहीं लगता।" रानी ताशा बोली।

"तुम पहले इस जंगल में आई हो?"

"नहीं। यहां आने का मेरा कभी कोई काम नहीं रहा। परंतु बबूसा एक बार आ चुका है। वो कहता है बहुत घना जंगल है।"

"यहां जानवर वगैरह हो सकते हैं।"

"ऐसा कुछ होता तो बबूसा जरूर बताता।" रानी ताशा ने कुछ अजीब ढंग से कहा।

तभी रानी ताशा के कंधे पर बैठी ओरी की आवाज उभरी।

"यहां खतरनाक जानवर बहुत थे। परंतु खुंबरी की ताकतों ने उन्हें दूर भगा दिया।"

नगीना ने भी सुनी ये आवाज।

"खुंबरी की ताकतों को जानवरों का क्या डर?" नगीना बोली।

"जानवर, ताकतों का ध्यान भंग कर देते थे। वो आपस में ही लड़ते और बहुत शोर उठता था।" ओरी ने कहा।

"तुम शक्तियों ने यहां आकर खुंबरी की जगह क्यों नहीं ढूंढी?" रानी ताशा बोली।

"हमें खुंबरी की जगह नजर नहीं आएगी। क्योंकि वहां ताकतों ने अपने साये फैला रखे हैं।" ओरी ने बताया।

"इंसानों को वो जगह दिख जाएगी?"

"हां। तभी तो डुमरा ने तुम लोगों के साथ काम करने में एतराज नहीं दिखाया।"

"डुमरा ने ही क्यों न जगह ढूंढ ली?"

"ये घना जंगल है और बहुत बड़ा है। एक अकेला इंसान तो सालों लगा देता इस काम में। डुमरा को और भी तो काम करने पड़ते हैं। वो इधर आ जाता तो हमारे काम रुक जाते।" ओरी बोली।

"डुमरा ने कहा था कि वो हमारे पास ही रहेगा।" नगीना बोली।

"हां। डुमरा इधर आने को चल पड़ा है। अबकी बात और है, क्योंकि तुम लोग खुंबरी का ठिकाना खोजने की चेष्टा में हो। डुमरा को इस काम में नहीं लगना होगा और कुछ दिन में शायद सफलता मिल जाए।" ओरी ने कहा—"इस बार एक और बात नई होने वाली है। खुंबरी को यहां आए मर्दों में से किसी से प्यार होने वाला है। डुमरा को आशा है कि इस बार कुछ हो के रहेगा। खुंबरी को तभी प्यार होगा, जब हम लोग उसके ठिकाने पर पहुंच जाएंगे।"

"ये बात तो मैंने सोची नहीं थी।" रानी ताशा के होंठों से निकला—"इसका मतलब हम खुंबरी को ढूंढ लेंगे। मैं उसे किसी भी कीमत पर जिंदा नहीं छोडूंगी।" रानी ताशा के दांत भिंच गए—"मेरे देव से, उसने ही मुझे अलग किया था।"

"इस काम में मैं पूरी तरह तुम्हारे साथ हूं ताशा।" नगीना कह उठी।

चलते-चलते रानी ताशा ने नगीना के चेहरे पर नजर मारी।

"तू गलत बात सोच रही है।" एकाएक ओरी रानी ताशा से कह उठी। इस बार स्वर धीमा था।

"क्या मेरे विचार गलत हैं?" रानी ताशा ने कहा।

"वो नहीं मानेगी। वो भी राजा देव को तेरे जितना प्यार करती है।" ओरी ने बताया।

"कोशिश तो कर सकती हूं।"

"कर ले। मेरी बात पर नहीं भरोसा तो तसल्ली कर ले।"

कुछ पलों बाद रानी ताशा ने नगीना से कहा।

"किसी ग्रह की रानी बनना मामूली बात नहीं होती।"

"हां। नगीना ने कहा—"ये बड़ी बात है। गर्व की बात है।"

"तुम चाहो तो मैं तुम्हें सदूर की रानी बना सकती हूं।" रानी ताशा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"क्या मतलब?"

"इस सदूर की रानी बन जाओ और मुझे मेरा देव लौटा दो।"

नगीना ने अजीब-सी निगाहों से रानी ताशा को देखा।

दोनों तेजी से आगे बढ़ती जा रही थीं।

"ये तुम क्या कह रही हो?" नगीना के होंठों से निकला।

"सदूर की रानी बनना बहुत बड़ी बात है नगीना। मेरी मानो तो ये मौका हाथ से न निकलने दो।"

नगीना मुस्करा पड़ी। बोली।

"मुझे किसी भी ग्रह की रानी बनने की इच्छा नहीं है।"

"सबकी इच्छा होती है ग्रह की रानी बनने की। शायद तुम देव को मुझे वापस नहीं लौटाना चाहतीं।"

"देवराज चौहान कोई सामान तो है नहीं जो लौटा दूं।" नगीना गम्भीर हो गई—"ये प्यार है। वो मेरे को चाहते हैं। अगर मैं उसे तुम्हारे पास जाने को भी कहूं तो वो कभी नहीं मानेंगे। ये प्यार का खिंचाव होता है जो इंसान को बांधे रखता है।"

"तुम बीच में से हट जाओ तो राजा देव मेरे हो जाएंगे।"

"ये भूल है तुम्हारी। देवराज चौहान को तुम अभी समझी नहीं।"

"मैं देव को तुमसे भी अच्छी तरह जानती हूं। वो मेरे बिना नहीं रह सकते। परंतु तुम्हारी वजह से मेरी तरफ कदम नहीं उठा पा रहे। अगर तुम न होतीं तो उन्होंने कभी भी मेरा साथ नहीं छोड़ना था।"

"तुम मृगतृष्णा में भटक रही हो। जन्मों पुरानी बात को ताजा जिंदगी में डालने की चेष्टा कर रही हो, जो कि हो ही नहीं सकता। उस जन्म के बाद देवराज चौहान कई जन्म जी चुका है।"

"पर राजा देव को वो जन्म याद आ चुका है।"

"उससे कुछ होता तो देवराज चौहान ने अवश्य तुम्हारा हाथ थाम लिया होता। तुम्हारी सोचें गलत दिशा की तरफ जा रही हैं। ठीक तरह सोचो तो समझ जाओगी कि देवराज चौहान पर से तुम्हारा हक खत्म हो चुका है।"

"तुम्हें सुनहरी अवसर मिल रहा है सदूर की रानी बनने का।"

"इतना बड़ा ओहदा पाने की इच्छा मुझे कभी नहीं रही।"

"या तुम राजा देव को मेरे हवाले नहीं करना चाहतीं।" रानी ताशा का स्वर तीखा हो गया।

"देवराज चौहान मेरा पति है फिर भी उस पर बंदिश नहीं कि, वो मेरे साथ रहे। उसके लिए रास्ते खुले हैं कि वो जिस ओर भी जाना चाहे जा सकता है। तुम देवराज चौहान को ले सकती हो तो ले लो।"

"मैं चाहती हूं तुम राजा देव को मेरे हवाले करो।"

"मैं अपना पति किसी और को क्यों दूंगी। तुम्हारी मांग ही गलत है ताशा।" नगीना ने गम्भीर स्वर में कहा।

रानी ताशा खामोश हो गई।

तभी ओरी धीमे स्वर में बोली।

"अब तो गया भरोसा तुझे मेरी बात का।"

"मैं राजा देव को अपना बना के रहूंगी।" रानी ताशा दृढ़ स्वर में कह उठी।

"ये तू जान।"

घने जंगलों में नजरें घुमाती रानी ताशा और नगीना बढ़ती रहीं। पेड़ों के पत्तों की आवाजों को छोड़कर, जंगल में गहरी खामोशी थी। सूर्य की तपिश जमीन तक नहीं आ पा रही थी, परंतु कहीं-कहीं से सूर्य की धूप तीखी लकीर के रूप में दिखाई दे जाती थी। यदा-कदा उनके अपने ही कदमों की आवाजें सुनाई दे जाती थीं। दोनों के बीच कोई खास बात नहीं हो रही थी। रानी ताशा गम्भीर दिखाई दे रही थी। नगीना शांत थी।

"ओरी।" रानी ताशा बोली।

"हां।"

"खुंबरी इस घने जंगल में अपनी जरूरतें कैसी पूरी करती होगी?" रानी ताशा ने पूछा।

"उसकी ताकतें उसे हर चीज मुहैया करा देती हैं।"

"उन्हें पता चल गया होगा कि हम किस इरादे से यहां हैं, या वे अभी नहीं जानतीं हमारे बारे में?"

"ताकतों को पता चल गया होगा कब का। खुंबरी भी तुम सबके आने के बारे में जान चुकी होगी।"

"ओह तो अब वो क्या करेगी?"

"तुम सब पर काबू पाने का प्रयत्न करेगी।"

"क्या पता वो इस जंगल में हो ही नहीं।"

"खुंबरी इसी जंगल में रहती है ताशा। शक्तियों ने कब की ये बात जानी है कि उसका शरीर पांच सौ सालों से इसी जंगल में कहीं है लेकिन ताकतों की छाया ने उस जगह को शक्तियों से छिपा रखा है।"

"अगर खुंबरी मुझे मिल गई तो मैं उसकी जान ले लूंगी।" रानी ताशा गुर्रा पड़ी।

"आसान तो नहीं होगा। पर कोशिश करके देख लेना। मैं तब तेरे को बढ़िया-से-बढ़िया हथियार दूंगी।"

"उसने मुझे और देव को अलग किया था।" रानी ताशा का चेहरा दहक रहा था—"बहुत बुरी मौत दूंगी उसे। अपनी तड़प के एक-एक पल का हिसाब लूंगी। उसने मेरे कई जन्म तबाह कर दिए हैं।"

"ऐसा वक्त आए तो होश में मुकाबला करना।" नगीना ने कहा—"खुंबरी आसानी से काबू में नहीं आएगी।"

"नगीना ठीक कहती है ताशा। गलत ढंग से मुकाबला किया, तो वो तुम्हें मार देगी। उसकी ताकतें हमसे कम नहीं हैं। तब वो खुंबरी को

बढ़िया-से-बढ़िया हथियार देंगी लड़ने के लिए। खुंबरी भी लड़ने में कम नहीं है।"

उनके कदम आगे बढ़ते रहे।

दिन का उजाला, शाम में बदलने लगा। जंगल में तो शाम का वक्त, और भी गहरा दिखने लगा।

"अभी तक ऐसा कुछ भी नहीं दिखा कि वहां खुंबरी के टिके होने का शक हो सके।" नगीना ने कहा।

तभी रानी ताशा के कदम ठिठक गए।

"वो देखो।" रानी ताशा ने तेज स्वर में कहा।

नगीना भी रुकी और उस तरफ देखा।

बांई तरफ कुछ पेड़ों के पार, एक पेड़ के नीचे औरत के दो पांव दिख रहे थे। पैरों में पायल जैसी कोई चीज पड़ी थी। पैर बहुत सुंदर थे। गोरे और गुलाबी।

रानी ताशा की आंखों में खतरनाक चमक आ गई। नगीना से नजरें मिलीं।

"वो खुंबरी है।" रानी ताशा खतरनाक स्वर में कह उठी।

"हो भी सकती है, नहीं भी हो सकती।" नगीना ने सोच भरे स्वर में कहा—"ये जो भी है। इस घने जंगल में क्या कर रही है।"

"ओरी।" रानी ताशा बोली—"मुझे हथियार दो।"

उसी पल जमीन में जाने कहां से आकर तलवार धंस गई।

रानी ताशा ने तलवार थामी और झटके के साथ जमीन से निकाली फिर दबे पांव उस तरफ बढ़ी।

नगीना उसके साथ थी, परंतु उसके पास इस वक्त कोई हथियार नहीं था।

रानी ताशा और नगीना दबे पांव उस पेड़ के तने के पास पहुंचीं और वहां मौजूद युवती के करीब जा पहुंचीं। वो तेईस-चौबीस साल की युवती थी। चोली-घाघरा जैसे कपड़े पहन रखे थे, जो कि मैले हो चुके थे। पीठ के बल लेटी वो गहरी नींद में थी और मध्यम-से खुर्राटे ले रही थी। उसका सीना ऊपर-नीचे हो रहा था। वो खूबसूरत थी।

"ये खुंबरी नहीं है।" ओरी कह उठी।

"तो कौन है?" रानी ताशा का चेहरा कठोर हुआ पड़ा था।

"इसे जगा और पूछ ले। पर पहले तलवार छोड़ दे। अब तेरे को हथियार की जरूरत नहीं।"

"ऐसे ही छोड़ दूं?"

"हां।"

रानी ताशा ने तलवार छोड़ी। वो नीचे जा गिरी। उसी पल वो जाने कहां गायब हो गई।

नगीना ने पास पहुंचकर युवती को आवाज लगाई।

परंतु उसकी नींद नहीं टूटी।

नगीना ने झुककर, युवती को कंधे से पकड़कर हिलाया तो वो हड़बड़ाकर उठते हुए बोली।

"आज्ञा महान खुंबरी।"

खुंबरी का नाम सुनते ही रानी ताशा और नगीना चौंकी।

युवती ने जब दोनों को देखा तो फौरन खड़ी होते कह उठी।

"कौन हो तुम दोनों?"

"तुम यहां क्या कर रही हो?" रानी ताशा ने पूछा।

"मैं—मैं तो यहीं रहती हूं।" वो बोली।

"यहां कहां?"

"मैं क्यों बताऊं?" कहते हुए उसकी निगाह रानी ताशा के गले में पड़े हार पर टिक गई—"तुम्हारा हार तो बहुत सुंदर है।"

"तुमने अभी खुंबरी का नाम लिया।"

"नौकर-मालिक का नाम नहीं लेगा तो किसका लेगा।" उसने सामान्य स्वर में कहा, तब तक वो नगीना के हाथ में पड़ी अंगूठी को भी देख चुकी थी और कहा—"तुम्हारी अंगूठी बहुत अच्छी है। कितने बढ़िया गहने पहन रखे हैं तुम दोनों ने।"

"तुम जानती हो खुंबरी कहां रहती है?" रानी ताशा के होंठों से निकला।

"नौकर-मालिक का घर नहीं जानेगा तो कौन जानेगा। पर तुम लोग कौन हो?"

"हम खुंबरी की पहचान वाले हैं।" नगीना बोली—"उसी से मिलने आए हैं, पर रास्ता भटक गए।"

"तुम हमें खुंबरी के पास ले चलो।" रानी ताशा ने एकाएक मुस्कराकर कहा।

"नहीं-नहीं। मैं ऐसा नहीं कर सकती।" युवती फौरन कह उठी—"मैं नहीं ले जाऊंगी तुम्हें खुंबरी के पास।"

"क्यों?"

"खुंबरी ने अजनबी लोगों से बात करने को मना कर रखा है और तुम कहती हो कि मैं तुम्हें खुंबरी के पास ले जाऊं। खुंबरी मुझे चींटी बना देगी। आज सुबह ही उसने एक आलसी दासी को चींटी बना दिया था।" वो घबरा उठी।

"तुम्हारा नाम क्या है?"

"दोती।"

"दोती।" रानी ताशा बड़े प्यार से बोली—"तुम्हें मेरे गले में पड़ा हार पसंद है?"

"हां। ये तो बहुत अच्छा हार है।" दोती ने मुस्कराकर हार को देखा।

"अगर तुम हमें खुंबरी के रहने की जगह बता दो तो मैं ये हार तुम्हें दे दूंगी।"

"ऐसा मत करो।" ओरी कह उठी—"मैं हार की वजह से तुम्हारे साथ जुड़ी हूं। ये हार शक्तियों की निशानी है। इसे अपने से अलग भी मत करना, वरना तुम शक्तियों की सुरक्षा खो दोगी। ये लड़की ताकतों की कोई चाल भी हो सकती है।"

परंतु रानी ताशा ने ओरी की बात पर कोई ध्यान नहीं दिया।

"तुम मुझे खुंबरी का पता बताओ, मैं तुम्हें ये हार दे दूंगी।" रानी ताशा ने पुनः कहा।

"खुंबरी को तो न बताओगी कि मैंने तुम्हें रास्ता बताया है।" दोती लालच भरे स्वर में कह उठी।

"नहीं बताऊंगी। मेरा भरोसा करो।"

"मुझे ताकतों की 'बू' आ रही है इस लड़की से। ये ताकतों की भेजी हुई है ताशा।" ओरी बेचैनी भरे स्वर में कह उठी—"गले से हार मत उतारना। ताकतों ने अपना खेल दिखाना शुरू कर दिया है।"

"तुम चुप रहो ओरी।" रानी ताशा ने धीमे स्वर में कहा।

"ये क्या कह रही हो। मैं स्पष्ट तौर पर लड़की के शरीर से ताकतों की 'बू' सूंघ रही हूं। इसकी बातों में मत आओ। ये तुम्हें मुसीबत में डाल देगी। खुंबरी का चाल है ये।" ओरी ने परेशान स्वर में कहा—"हार मत उतारना।"

"वो अंगूठी भी लूंगी।" दोती ने नगीना के हाथ में पड़ी अंगूठी की तरफ इशारा करके कहा।

"क्यों नहीं।" रानी ताशा ने कहा—"वो अंगूठी भी तुम्हें दे देंगे, तुम रास्ता...।"

"पहले दो। फिर रास्ता बताऊंगी।" दोती मचलकर कह उठी।

"होश में आ ताशा। ये ताकतें खेल, खेल रही हैं।" ओरी गुस्से से कह उठी।

"मैं अंगूठी नहीं दूंगी।" नगीना दृढ़ स्वर में कह उठी।

"दे दो।" रानी ताशा ने कहा—"ये हमें खुंबरी तक पहुंचने का रास्ता बता रही है।"

"नहीं दूंगी। तुम जानती ही हो कि ये अंगूठी सुरक्षा कवच है। इसे मैं अपने से अलग नहीं करूंगी।" नगीना ने पक्के स्वर में कहा।

उसी पल रानी ताशा उछली और जबर्दस्त घूंसा नगीना के सिर पर मारा।

नगीना को रानी ताशा से ऐसी आशा नहीं थी। घूंसा पड़ते ही नगीना की आंखों के सामने लाल-पीले तारे नाचे और घुटने मुड़ते चले गए। वो जमीन पर गिरते ही बेहोश हो गई।

रानी ताशा ने होंठ भींचे, झुककर नगीना की उंगली से अंगूठी निकाल ली।

"तू पागल हो गई है क्या जो लड़की की बातें मान रही है।" ओरी बदहवास-सी कह उठी।

"चुपकर।" रानी ताशा ने कठोर स्वर में कहा—"मैं खुंबरी को मार दूंगी।"

"ये खुंबरी की भेजी ताकत है लड़की। ये क्यों नहीं सोचा कि ये घने जंगल में क्यों सो रही थी।"

"खुंबरी की दासी है ये।" रानी ताशा गुर्रा उठी—"अब खुंबरी मुझे मिलने वाली है, मैं उसे....।"

"डुमरा ने मुझे किस बेवकूफ के कंधे पर बैठा दिया।" ओरी गुस्से से कह उठी—"होश में आ जा। नहीं तो तू बहुत पछताएगी। ये खुंबरी की भेजी ताकत है। मुझे इससे ताकतों की 'बू' आ रही है। अंगूठी वापस नगीना की उंगली में...।"

उसी पल रानी ताशा ने अपने गले का हार उतार दिया और दोती की तरफ बढ़ाया।

"ये ले।"

"तूने तो मुझे खुश कर दिया।" दोती लालची स्वर में कह उठी—"मेरे हाथ गंदे हैं। धोकर ही इन गहनों को हाथ लगाऊंगी। इन्हें जमीन पर रख दे और खुंबरी तक जाने का रास्ता सुन ले।"

तभी ओरी का चिल्लाता मध्यम-सा स्वर उसके कानों में पड़ा।

"क्रोध में तू अपने होश गुम कर बैठी है। अभी भी वक्त है सम्भल जा, नहीं तो...।"

रानी ताशा ने ओरी के शब्दों की परवाह किए बगैर हार और अंगूठी नीचे रख दी।

दोती की आंखों में खतरनाक चमक लहरा उठी। उसने उसी पल अपने दोनों हाथ आपस में मिलाए और सिर के ऊपर ले जाकर हाथों को खोल दिया। ऐसा करते ही रानी ताशा को लगा जैसे उसके शरीर को लकवा मार गया हो। उसने हाथ हिलाना चाहा तो हाथ न हिला। पांव उठाना चाहा तो पांव नहीं हिल सका। रानी ताशा के मस्तिष्क को तीव्र झटका लगा। जैसे उसके होश वापस आते चले गए। क्रोध एकाएक गायब हो गया। चेहरे पर परेशानी नाची।

"ये मुझे क्या हो गया है।" रानी ताशा के होंठों से निकला—"त-तुम कौन हो?"

"दोती नाम है मेरा।" दोती ठहाका लगा उठी—"खुंबरी की ताकतों का मामूली-सा हिस्सा हूं। आजकल ओहारा की सेवा में हूं तुम तो क्रोध में अपने होश गंवा बैठी रानी ताशा। जरा भी न समझ सकी कि शक्तियों की निशानी हार और अंगूठी ही मैं क्यों मांग रही हूं। डुमरा ने बच्चों जैसा खेल खेला है तुम लोगों को खुंबरी के मुकाबले पर भेजकर।"

"ओह।" रानी ताशा का चेहरा फक्क पड़ गया—"मुझे ओरी की बात माननी चाहिए थी, मैं बहुत बड़ी भूल कर बैठी।"

तभी दोती मुस्कराते हुए आगे बढ़ी और हार, अंगूठी को उठाकर अपनी चोली में रखा और रानी ताशा का हाथ पकड़ा फिर झुककर बेहोश पड़ी नगीना का हाथ थामा।

"ये तुम क्या कर रही हो?" रानी ताशा बेचैन-सी कह उठी।

"चल तो।" दोती हंसी और होंठों-ही-होंठों में कुछ बुदबुदाई।

अगले ही पल दोती और रानी ताशा, नगीना इस तरह गायब हो गए, जैसे हवा में घुल गए हों। अब वहां कोई भी नहीं था। रात का अंधेरा घिरना आरम्भ हो गया था।

▭ ▭
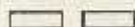
रात के अंधेरे में जंगल पूरी तरह काला स्याह हो चुका था। हाल ये था कि अपने हाथ-पांव भी न दिख रहे थे। देवराज चौहान और मोना चौधरी ने अंधेरा होने तक जंगल के भीतर का काफी लम्बा रास्ता तय कर लिया था, परंतु उन्हें ऐसा कुछ भी नहीं दिखा कि वे सोचते कि खुंबरी का ठिकाना हो।

पूरी तरह अंधेरा हो जाने पर उन्होंने अपने सामान से मशाल निकाली और जलाकर पेड़ों के झुंड के पास मुनासिब जगह तलाश की और वहीं रात बिताने के इरादे से रुक गए।

"तुम्हें भूख लगी है?" अपने थैले जैसे बैग से उन्होंने, नीचे बैठकर टेक लगा ली थी।

"नहीं।" देवराज चौहान बोला—"तुम खा लो।"

"अभी मुझे भी भूख नहीं लगी?" अपने थैले जैसे बैग से उन्होंने, नीचे बैठकर टेक लगा ली थी।

मशाल की रोशनी का प्रकाश खुले में ज्यादा दूर तक नहीं जा रहा था। पास बैठे उन दोनों के चेहरे मशाल के प्रकाश में चमक रहे थे। मशाल को उन्होंने जमीन में धंसाकर खड़ा कर दिया था।

"हमें खुंबरी का ठिकाना जल्दी ढूंढ़ना होगा।" देवराज चौहान ने

कहा— "ऐसे जंगल में ज्यादा रातें नहीं बिताई जा सकतीं। मशाल भी ज्यादा रातों का साथ नहीं देगी। अपने काम में हमें तेजी दिखानी होगी।"

"मेरे पास भी मशाल है।" मोना चौधरी ने थैले को थपथपाया।

"फिर भी, काम जल्दी पूरा कर लें तो ज्यादा ठीक होगा।" देवराज चौहान ने कहा।

"खुंबरी जानती है कि हम यहां हैं। वो भी जरूर कुछ करेगी।" मोना चौधरी बोली।

"हमने सुरक्षा कवच के रूप में डुमरा की दी अंगूठियां पहन रखी हैं। खुंबरी की ताकतें हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकतीं।"

"डुमरा ने कहा था कि शायद हमें नुकसान भी पहुंचाने में सफल रहें ताकतें।"

देवराज चौहान ने कुछ नहीं कहा।

"क्या तुम्हें इस बात का दुख है कि खुंबरी की ताकतों ने तुम्हें और रानी ताशा को कभी अलग किया था?" मोना चौधरी ने पूछा।

"कह नहीं सकता।"

"क्यों नहीं कह सकते?"

"उस जन्म के बाद मैं कई जन्म जी चुका हूं। और सब जन्मों का मुझे पता भी है।" देवराज चौहान का स्वर सोच से भरा था—"मैं उस जन्म में रानी ताशा के साथ बहुत खुश था। हम अच्छे से अपना जीवन बिता रहे थे। न तो ताशा के प्यार में कमी थी, न ही मेरे प्यार में। हमें एक-दूसरे से शिकायत नहीं थी। वो एक अच्छा वक्त था।"

"वो वक्त हाथ से निकल जाने से तुम्हें तकलीफ महसूस हो रही है आज?"

"ऐसी बातों का अब क्या फायदा?"

"मैं ये जानना चाहती हूं कि क्या तुम रानी ताशा का साथ इसलिए देने को तैयार हो गए कि खुंबरी ने तुम दोनों को अलग किया था। क्या आज भी तुम्हारे मन में रानी ताशा के लिए दिल में जगह है?"

देवराज चौहान ने मशाल की रोशनी में चमकते मोना चौधरी के चेहरे को देखा।

"ताशा से मेरा रिश्ता तो है ही। इस बात से तुम इंकार नहीं कर सकती।" देवराज चौहान बोला—"वो तब से आज तक मेरा इंतजार करती रही और आज जब मैं उसे मिला तो उसे स्वीकार करने की स्थिति में नहीं हूं।"

"इस बात का अफसोस है तुम्हें?"

"अफसोस तो नहीं, परंतु दुख है कि मैं ताशा को चैन नहीं दे सका।

क्योंकि मेरे जीवन की राहें पहले से ही नगीना के साथ तय हैं। ताशा के लिए इस जीवन में मेरे पास कोई जगह नहीं है। वो मात्र एक पुरानी घटना की तरह है।"

"अगर नगीना नहीं होती तो तुम रानी ताशा को स्वीकार कर लेते?" मोना चौधरी का स्वर शांत था।

"कह नहीं सकता, उस स्थिति में क्या होता। मैं सिर्फ इतना जानता हूं कि नगीना मेरे लिए पहले है। ताशा के साथ कभी मैंने प्यार किया था तो, आज मैं नगीना के साथ करता हूं। जीवन बदल गए हैं तो सोच भी तो बदलेगी। प्यार को छोड़कर ताशा के लिए आज भी मैं हर काम कर सकता हूं। उसने कहा खुंबरी से बदला लेना है तो मैंने तुरंत हामी भर दी, क्योंकि ताशा की ये सोच सही है कि खुंबरी हमारी गुनहगार है, उसने हमें अलग कर दिया था उस जन्म में।"

एकाएक मोना चौधरी सतर्क-सी हो गई। निगाहें आसपास के फैले अंधेरे में घूमीं।

"यहां कोई है।" मोना चौधरी के होंठों से निकला।

देवराज चौहान भी सतर्क दिखने लगा।

कई पल बीत गए।

"शायद कोई नहीं है।" देवराज चौहान बोला—"जंगल में भ्रम में डालने वाली आवाज उठती रहती है।"

मोना चौधरी की निगाह जंगल के अंधेरे की तरफ घूमती रही।

अगले ही पल नगीना की आवाज सुनकर दोनों चौंके।

"क्या तुम लोग मेरी आवाज पहचान रहे हो?"

"नगीना?" देवराज चौहान के होंठों से निकला फिर ऊंचे स्वर से बोला—"तुम कहां हो नगीना।"

चंद पल बीते कि सामने से कोई आता दिखा। फिर लगा, वो दो हैं।

देवराज चौहान और मोना चौधरी खड़े हो गए। नगीना के इस प्रकार मिल जाने से हैरान थे।

नगीना के साथ रानी ताशा थी। वे पास आ पहुंचे।

"बेला तुम, इस तरफ?" मोना चौधरी ने गहरी सांस लेकर कहा।

"जंगल नापते-नापते इस तरफ निकल आए।" नगीना ने मुस्कराकर कहा—"मशाल की रोशनी हमें दूर से नजर आई तो हम समझ गए कि ये अपने ही लोग होंगे और मेरा विचार सही निकला।"

ये चारों नीचे बैठ गए। नगीना और रानी ताशा ने पीठ पर लदे थैले रख दिए। मशाल की रोशनी में रानी ताशा के गले में पड़ा हार चमक रहा था। नगीना के हाथ की उंगली में भी अंगूठी पड़ी दिख रही थी।

"तो तुम लोगों की ऐसी कोई जगह नहीं दिखी, जो खुंबरी का ठिकाना होने का शक पैदा करे।" देवराज चौहान बोला।

"नहीं देव।" रानी ताशा ने कहा—"हमें ऐसा कुछ भी नहीं मिला। मैं खुंबरी को मार देने के लिए व्याकुल हूं। मैं इस बात को भूल नहीं पा रही कि उसने हमें अलग कर दिया था। मैं इस बात का बदला लेकर रहूंगी।"

"हां ताशा। हम सब इस काम को कर देना चाहते हैं।"

"आपको भी खुंबरी की कोई भनक नहीं मिली?" नगीना ने पूछा।

"नहीं अब दिन निकलने पर ही आगे बढ़ेंगे।" देवराज चौहान बोला।

"मैं तो चलते-चलते थक गई।" रानी ताशा बोली—"अब गहरी नींद लूंगी।"

"पर मुझे तो भूख लगने लगी है।" नगीना बोली—"क्यों न सोने से पहले कुछ खा लें।"

"मैं भी खाऊंगी।" मोना चौधरी कह उठी।

जब खाना खोला गया तो सब खाने लगे।

खाना रानी ताशा ने अपने थैले से निकाला था।

"कोई और तो नहीं मिला?" खाते-खाते नगीना ने पूछा—"जगमोहन, बबूसा या सोमाथ, सोमारा?"

"और कोई नहीं दिखा।"

"रात में किसी को ढूंढ़ना जंगल में आसान रहता है। मशाल की रोशनी दूर से ही दिख जाती है।" नगीना ने कहा।

"क्या पता उनमें से किसी को खुंबरी का ठिकाना दिख गया हो।" रानी ताशा कह उठी।

"ये भी सम्भव है।" मोना चौधरी ने सिर हिलाया—"जाने इस वक्त वे किस हाल में होंगे।"

"सोमाथ को खुंबरी का ठिकाना मिल जाए तो बढ़िया होगा। सोमाथ पर तो ताकतें अपना प्रभाव नहीं दिखा सकतीं।"

"जगमोहन और बबूसा भी कम नहीं हैं।" नगीना बोली—"उन्होंने सुरक्षा कवच पहन रखा है, वो खुंबरी को मार देंगे।"

ऐसी ही बातों में खाना खाया गया।

बचा खाना बांधकर थैले में वापस डाल लिया रानी ताशा ने और कहा।

"अब मैं नींद लूंगी।"

"मैं भी।" मोना चौधरी बोली।

"पहरे पर भी तो किसी को रहना चाहिए।" नगीना बोली—"सोए-सोए खुंबरी ने आकर हमारे गले काट दिए तो?"

"तुम तीनों नींद लो।" देवराज चौहान बोला—"मैं पहरा दूंगा।"

"कुछ देर बाद मुझे उठा देना।" मोना चौधरी ने कहा—"तब तुम सो जाना।"

इसके बाद तीनों थैलों को तकिया बनाए लेट गईं।

देवराज चौहान बैठा रहा। जागता रहा।

थोड़ा ही वक्त बीता कि देवराज चौहान का सिर चकराने लगा। उसे समझ नहीं आया कि उसके साथ क्या हो रहा है। अपने को उसने सम्भालने की भरसक चेष्टा की परंतु अंत में बेहोश होकर नीचे लुढ़क गया।

ऐसा होते ही नगीना उठ बैठी और रानी ताशा से कहा।

"उठ जा मूसी। बेहोशी की दवा का असर इन पर हो गया है।"

रानी ताशा तुरंत उठ बैठी।

उसी पल दोनों के रूप बदल गए और नगीना की जगह दोती दिखी और रानी ताशा की जगह एक अन्य युवती दिखने लगी। जिसे कि दोती ने मूसी कहा था।

"दोनों को कितनी आसानी से बेवकूफ बना दिया।" मूसी मुस्कराकर कह उठी।

"डुमरा ने बेवकूफों की फौज भेजी है खुंबरी के लिए।" दोती ठहाका लगा उठी और आगे होकर मोना चौधरी को जोरों से हिलाया, परंतु वो निढाल पड़ी रही—"दोनों बेहोश हो चुके हैं।" कहने के साथ दोती ने दोनों के हाथों की उंगलियों में पड़ी सुरक्षा कवच की अंगूठियां निकालकर अपनी चोली में रखीं और बोली—"ले चल इन्हें।" कहते हुए दोती ने मोना चौधरी का हाथ पकड़ लिया और मूसी को देखा।

मूसी देवराज चौहान का हाथ पकड़ चुकी थी। बोली।

"जानती है, ये कभी राजा देव हुआ करता था।

"चल-चल बातें मत बना।" दोती ने कहने के साथ ही होंठों-ही-होंठों में कुछ बुदबुदाई।

अगले ही पल दोती, मूसी, देवराज चौहान और मोना चौधरी जैसे हवा में घुल गए। अब उन चारों में से वहां कोई भी नहीं था।

जमीन में गड़ी मशाल जल रही थी।

▭ ▭

दिन का उजाला निकल आया था। जंगल का अंधेरा छंट चुका था। रात भर मशाल जलती रही थी। दिन होते ही बबूसा की आंख खुली तो उसने मशाल बुझा दी और जगमोहन को उठा दिया।

"रात बहुत जल्दी बीत गई।" उठते ही जगमोहन कह उठा।

"लम्बी रात थी पृथ्वी से।" बबूसा बोला—"नींद लेकर अच्छा लग रहा है।"

जगमोहन ने, बबूसा ने पानी के छींटे मारे चेहरे पर।

"पानी को इस तरह बर्बाद मत करो।" बबूसा बोला—"लगता नहीं कि जंगल में पानी मिलेगा।"

"सामान उठाओ, कंधे पर लादो और चलो यहां से।" जगमोहन जंगल में नजरें दौड़ाता कह उठा।

"कुछ खाओगे नहीं?"

"अभी नहीं। आगे बढ़ते हैं। जब भूख लगेगी तो खा लेंगे।"

बबूसा ने मशाल समान में रखी । थैले जैसी गठरी पीठ पर लादी और चल पड़े।

"तुम्हारा देखा हुआ है ये जंगल?"

"नहीं। इतने बड़े जंगल को किसी के लिए देख पाना सरल काम नहीं। यहां से मैं भी तुम्हारी तरह अंजान हूं।"

"हमें ऐसी जगह तलाशनी है, जहां खुंबरी के रहने का संभावना हो।"

दोनों के कदन तेजी से उठ रहे थे।

"खुंबरी मिल गई तो उसे कैसे मारेंगे?" बबूसा ने कहा।

"आसानी से उसे मार सकेंगे। सुरक्षा कवच हमारे पास है। उसकी ताकतों और वारों का हम पर कोई असर नहीं होगा। एक बार वो हमें दिख जाए, फिर वो बचने वाली नहीं।" जगमोहन की आवाज में सख्ती आ गई थी।

"इतने बड़े जंगल में से खुंबरी को ढूंढ़ पाना आसान भी तो नहीं।" बबूसा बोला।

चलते हुए दोनों की नजरें जंगल में हर तरफ जा रही थीं।

"बाकी लोग जाने किस हाल में होंगे।" बबूसा ने पुनः कहा।

"कम-से-कम तुम्हारी सोमारा तो सुरक्षित है क्योंकि वो सोमाथ के साथ है।" जगमोहन मुस्कराया।

"मुझे रानी ताशा की चिंता है।"

"किसी की चिंता करने की जरूरत नहीं। वो सब अपना काम पूरा करना जानते हैं।"

"लेकिन हमारा मुकाबला खुंबरी की ताकतों से है।"

"सुरक्षा कवच है हमारे पास।"

"डुमरा ने कहा था कि वो हमारे पीछे आएगा। परंतु हमें क्या पता कि डुमरा कहां है।" बबूसा ने कहा।

"क्या वो भी खुंबरी की जगह ढूंढ़ेगा?"

"मुझे क्या पता।"

जगमोहन और बबूसा तेज कदम उठाते चलते रहे। घने जंगल में पर्याप्त रोशनी थी सूर्य की और कहीं-कहीं से धूप की लकीरें पेड़ों में से होकर,

जमीन पर पड़ रही थी। जब वे कुछ थकने लगे तो एक जगह रुककर उन्होंने खाना खाया। उसके बाद वो पुनः आगे बढ़ गए।

"अभी तक हमें कुछ भी नजर नहीं आया।" बबूसा ने कहा।

"तुम्हें जंगल से बाहर निकलने का रास्ता पता है?" जगमोहन ने पूछा।

"किसी एक दिशा में चल पड़ो, कभी तो जंगल से बाहर निकल ही जाएंगे।" बबूसा मुस्कराया।

"ये तो मुझे भी पता है। कितना दिन बीत गया होगा?"

"आधे से कुछ कम।" बबूसा ने कहा—"इस तरह तो हम जंगल में भटकते रहेंगे। खाना-पानी भी समाप्त हो जाएगा।"

"क्या कहना चाहते हो तुम?"

"अगर हमारे पास जम्बरा का बनाया वाहन होता तो हम कम वक्त में ज्यादा जंगल छान लेते।"

"मेहनत करो, फल जरूर मिलेगा।" जगमोहन बोला—"तुम्हें पृथ्वी अच्छी लगती है या सदूर ग्रह?"

"सदूर ग्रह अच्छा लगता है, परंतु डोबू जाति के लोग मुझे याद आते हैं।" बबूसा ने बताया।

"वापस पृथ्वी पर जाना चाहते हो?"

"नहीं।" बबूसा ने इंकार में सिर हिलाया—"मुझे सदूर से प्यार है। वहां रहना मुझे अच्छा लगता है।"

"लेकिन मुझे पृथ्वी से प्यार...।" कहते-कहते जगमोहन ठिठका।

बबूसा ने रुकते हुए पूछा।

"क्या हुआ?"

जगमोहन उस युवती को देख रहा था, जो कि एक पेड़ के पास सोच भरी मुद्रा में खड़ी थी। उसने चोली-घाघरा पहन रखा था। वो कम-से-कम सौ कदम आगे दिख रही थी।

बबूसा की नजरों ने भी युवती को देख लिया था।

"ये कौन है?" बबूसा के होंठों से निकला।

"हमारे में से तो नहीं है।" जगमोहन ने कदम आगे बढ़ा दिए—"ये इस घने जंगल में क्या कर रही है।"

बबूसा भी साथ चलने लगा।

जगमोहन की नजरें जंगल में हर तरफ घूमी। परंतु और कोई भी नहीं दिखा। तब तक युवती की निगाह उन पर पड़ गई थी। वो इन्हें पास आते देखने लगी। वो और कोई नहीं पोती ही थी।

"तुम कौन हो?" पास पहुंचते ही बबूसा ने हैरानी से कहा—"इस घने जंगल में क्या कर रही हो?"

"मैं?" दोती के चेहरे पर मुस्कान बिखर गई—"मैं दोती हूं।"
"दोती कौन?"
जगमोहन उलझन से दोती को देख रहा था।
"दोती कौन, क्या? दोती तो दोती ही होती है न।" दोती इठलाकर बोली।
"पर—पर तुम यहां घने जंगल में क्यों हो?"
"मैं तो यहीं रहती हूं।" दोती ने भोलेपन से कहा।
"घने जंगल में?"
"हां तो, खुंबरी यहां रहेगी तो मुझे भी उसके साथ ही रहना पड़ेगा।"
"खुंबरी?" बबूसा चौंका—"तुम जानती हो खुंबरी कहां पर है?"
"मैं क्यों न जानूंगी। मैं तो खुंबरी की दासी हूं। मेरे बिना तो खुंबरी का दिल ही नहीं लगता। पहले अकेली ही रहा करती थी, अब पांच सौ सालों के बाद खुंबरी लौटी तो उसकी सेवा में मेरा दिल लगने लगा।" दोती ने गहरी सांस ली—"अगर तुम मुझे पहले मिल जाते तो मैं तुमसे जरूर ब्याह कर लेती। तुम कितने लम्बे-चौड़े हो।"
उसी पल जगमोहन चिहुंक उठा। जगमोहन आंखें हैरानी से फैल गई। वो दोती के गले में पड़े उस हार को देख रहा था जो डुमरा ने रानी ताशा को गले में पहनने को ये कहकर दिया था कि ये सुरक्षा कवच है और एक शक्ति भी तुम्हारे कंधों पर मौजूद रहेगी। वो ही हार अब वो सामने खड़ी दोती के गले में पड़ा देख रहा था। ये बात जगमोहन का सिर घुमाने के लिए काफी थी।
"बबूसा।" जगमोहन के होंठों से निकला—"इसके गले में पड़े हार को देख...।"
बबूसा की निगाह हार पर पड़ी तो वो भी बुरी तरह चौंका।
"ये हार...।" बबूसा ने कहना चाहा।
"अब तो ये मेरा है।" दोती ने उसी अंदाज में कहा।
"वो कहां है, जिसके गले में ये हार था।" जगमोहन ने पूछा।
"वो दोनों तो...।"
"दोनों, नगीना भाभी रानी ताशा के साथ थी। वो दोनों कहां हैं?" जगमोहन के स्वर में बेचैनी आ गई।
"वो खुंबरी के पास जाने का रास्ता पूछ रही थीं। दूसरी दासी उन्हें रास्ता दिखाने गई है। आती ही होगी मूसी।"
"मूसी कौन?"
"दूसरी दासी।" दोती ने हाथ हिलाकर कहा।
जगमोहन और बबूसा की नजरें मिलीं।
"तुम्हारा मतलब कि वो दोनों खुंबरी के ठिकाने की तरफ गई हैं।" जगमोहन बोला।

"हां। पर मुझे उसके गले में पड़ा ये हार बहुत अच्छा लगा तो मैंने कहा अगर खुंबरी तक जाने का रास्ता जानना है तो ये हार मुझे दे दो। उसने तुरंत हार मुझे दे दिया। अच्छा है न?" दोती मुस्कराई—"मूसी को दूसरी युवती के हाथ में पड़ी अंगूठी पसंद आई तो उसने अंगूठी की मांग रख दी। उसे अंगूठी मिल गई। वो अंगूठी भी कितनी सुंदर है। दिल तो चाहा कि वो अंगूठी भी मैं ले लूं, पर मूसी को भी तो कुछ लेना ही था, वो...ओह।" दोती एकाएक चौंकी। उसकी निगाह बबूसा, के हाथ में पड़ी अंगूठी पर जा टिकी—"तुम्हारे पास भी वैसी ही अंगूठी है। कितनी सुंदर है।" दोती खुश हो उठी।

तभी कदमों की आहटें गूंजी और सामने से मूसी आती दिखी।

"वो आ गई उन दोनों को खुंबरी तक पहुंचने का रास्ता बताकर।" दोती, मूसी को देखते ही कह उठी।

मूसी पास आई तो दोती कह उठी।

"रास्ता दिखा आई?"

"हां दोती।" मूसी ने अपना हाथ आगे करती कहा—"देख तो अंगूठी कितनी अच्छी है।"

"अंगूठी पर तो मेरा दिल है।"

"मैं नहीं दूंगी।" मूसी ने अपना हाथ पीठ पीछे कर लिया।

"देख तो, वैसी अंगूठी इसके हाथ में भी है।" दोती ने बबूसा की तरफ इशारा किया।

मूसी ने देखा तो फौरन कह उठी।

"ओह, इन दोनों के हाथों की उंगली में अंगूठी है।"

"सच में, दोनों के हाथों में।"

"वो दोनों खुंबरी के पास गई हैं?" बबूसा ने पूछा।

"अब तक तो खुंबरी से मिल भी लिया होगा उन्होंने।" मूसी ने कहा।

"हमें भी खुंबरी तक पहुंचने का रास्ता बता दो।" बबूसा ने कहा।

"तुम लोग भी खुंबरी के पास गए तो खुंबरी समझ जाएगी कि हमने ही तुम सबको रास्ता दिखाया है। क्यों दोती?"

"हां। उन्हें तो हमने समझा दिया था कि खुंबरी से मत कहना कि हमने उन्हें रास्ता बताया है।"

"हम भी खुंबरी को नहीं बताएंगे कि...।"

"कमाल है। हर कोई खुंबरी के पास जाना चाहता है।" मूसी ने कहा—"अब मैं रास्ता नहीं दिखाऊंगी। खुंबरी को पता चल गया तो वो मेरी जान ले लेगी। तुम दोनों जाओ यहां से।"

दोती बार-बार अपने गले में पड़े हार को खुशी से छू रही थी।

"चल दोती।" मूसी पलटते हुए कह उठी—"अभी हमने कितने काम करने हैं।"
दोनों जाने को हुई कि बबूसा कह उठा।
"हमें भी खुंबरी तक पहुंचने का रास्ता बता...।"
"तुम क्या चाहते हो कि खुंबरी हमारी जान ले ले।" मूसी तुनककर बोली।
"हम खुंबरी से नहीं कहेंगे कि तुमने हमें रास्ता दिखाया है।" बबूसा जल्दी-से बोला।
"न-ना। मैं तो खतरा नहीं ले सकती। मुझे अंगूठी मिल गई। इतना ही बहुत है।" मूसी ने अंगूठी वाला हाथ दिखाकर कहा।
"पर मुझे तो अंगूठी नहीं मिली न।" दोती मुंह लटकाकर बोली।
"तेरे पास हार जो है।"
"अंगूठी पर भी तो मेरा दिल है। तेरे हाथ में अंगूठी कितनी अच्छी लग रही है।"
"मैं तो नहीं दूंगी। ये अब मेरी है।" मूसी ने हाथ नचाकर कहा।
दोती ने बबूसा के हाथ की उंगली में पड़ी अंगूठी को देखा फिर बोली।
"तुम खुंबरी के पास जाना चाहते हो तो रास्ता दिखाने के बदले ये अंगूठी लूंगी।"
"अंगूठी?" बबूसा कुछ ठिठक सा गया।
"तुम दोनों को खुंबरी के पास जाना है तो दोनों को ही अंगूठी देनी होगी।" दोती ने कहा।
"दूसरी अंगूठी मैं लूंगी।" मूसी फौरन कह उठी—"तेरे को इतना खूबसूरत हार जो मिल गया।"
"दूसरी अंगूठी मेरी बहन पहनेगी।" दोती ने कहा।
"उसे अपना आधा हार दे देना। दूसरी अंगूठी तो मैं लूंगी।" मूसी ने जिद भरे स्वर में कहा।
"चुप रह। तूने कल खुंबरी का खाना बनाते वक्त बीच में उंगली डाली थी। ये बात खुंबरी को पता चल गई तो...।"
"वो तो मैं नमक का स्वाद देख रही थी कि ज्यादा तो नहीं पड़ गया।"
"खुंबरी तेरी एक न सुनेगी। जब उसे पता चलेगा कि उंगली डली सब्जी उसने खाई है तो...।"
"खुंबरी को पता ही नहीं चलेगा।"
"मैं बता दूंगी अगर तूने दूसरी अंगूठी भी मुझे न लेने दी तो।"
"तू चुगली करेगी।" मूसी ने गुस्से से कहा—"अब मैं तेरे से बात नहीं करूंगी।" मूसी पांव पटकते वहां से चली गई।
जगमोहन और बबूसा उन दोनों को देख-सुन रहे थे। परंतु जगमोहन का

दिमाग तेजी से दौड़ रहा था कि नगीना भाभी किसी भी हालत में अंगूठी नहीं उतार सकतीं। वो जानती हैं कि अंगूठी में सुरक्षा की शक्ति मौजूद है जो कि उसे खुंबरी की बुरी ताकतों से बचाएगी। फिर भाभी ने अंगूठी कैसे उतार दी।

दोती, मूसी को जाते देखती रही फिर दोनों को देखकर बोला।

"जब गुस्सा उतरेगा तो मूसी ठीक हो जाएगी। ये अक्सर ऐसे ही नाराज हो जाती है। बोलो, खुंबरी तक जाने का रास्ता बताऊं?"

"बताओ।"

"पहले अपनी अंगूठियां मुझे दे दो। एक मैं पहनूंगी, एक मेरी बहन पहन लेगी। मूसी के हाथ में पड़ी अंगूठी कितनी अच्छी लग रही थी। लाओ, जल्दी दो, इसे मैं पहनूंगी।" दोती ने हाथ आगे बढ़ाकर कहा।

बबूसा अंगूठी उतारने लगा कि जगमोहन तुरंत बोला।

"अंगूठी मत उतारना बबूसा।"

बबूसा ने ठिठककर जगमोहन को देखा।

जगमोहन ने दोती को देख, सोच भरे स्वर में कह उठा।

"खुंबरी किस तरफ रहती है?"

"उधर।" दोती ने एक तरफ इशारा करके कहा।

"कितनी दूर है वो जगह?" जगमोहन ने पूछा।

"पास ही।" दोती ने सिर हिलाया—"मूसी तो अब वहां पहुंचने ही वाली होगी।"

"हम खुद उस जगह को ढूंढ लेंगे।" जगमोहन ने गम्भीर स्वर में कहा।

बबूसा ने जगमोहन को देखा।

"तुम लोग नहीं ढूंढ सकोगे।" दोती गर्दन हिलाकर बोली।

"क्यों?"

"वो तो बड़ी गुप्त जगह है, जहां खुंबरी रहती है।" दोती ने आंखें नचाई—"उस जगह के पास से भी निकल जाओगे और पता भी नहीं चलेगा। बड़े चालाक बनते हो कि अंगूठी न देनी पड़े। पर अंगूठी तो मेरे दिल को भा गई है।"

"अंगूठी के बदले कुछ और ले लो।"

"तुम्हारे पास है ही क्या देने को। हार है तो हार दे दो।" दोती ने कहा।

"अंगूठी दे देते हैं।" बबूसा कह उठा—"हमें जल्दी करनी चाहिए। रानी ताशा और नगीना खुंबरी के पास हैं, वो...।"

"चुप रहो बबूसा।" जगमोहन की निगाह दोती पर थी।

"क्यों?" बबूसा उलझन भरे स्वर में बोला। नजरें जगमोहन पर थीं।

दोती मुस्कराते हुए जगमोहन को देख रही थी।

"तुम गड़बड़ को अभी तक भी नहीं समझे।"

"कैसी गड़बड़?"

"तुमने सोचा है कि रानी ताशा डुमरा के दिए हार को अपने गले से क्यों अलग करेंगी, जो कि खुंबरी की ताकतों के सामने सुरक्षा की गारंटी है। रानी ताशा के बारे में तो मैं ज्यादा नहीं कह सकता, परंतु नगीना भाभी कभी भी उस अंगूठी को अपने से अलग नहीं करेंगी। जबकि ये कहती है कि नगीना भाभी ने अंगूठी उतारकर इसे दे दी।"

"मुझे नहीं, मूसी को अंगूठी मिली। मुझे तो हार ही मिला है।" दोती भोलेपन से कह उठी।

"तुम हो कौन?" जगमोहन की आंखें सिकुड़ीं।

"इतनी जल्दी भूल गए। मेरा नाम दोती है और खुंबरी की दासी हूं मैं...।" दोती ने मुंह बिगाड़कर कहा।

"सच बोलो, नहीं तो तुम्हारे साथ सख्ती करनी पड़ेगी।" जगमोहन का स्वर कठोर हो गया।

"सच ही तो कह रही हूं खुंबरी से पूछ लो कि उसकी दासी हूं कि नहीं?"

"अंगूठी लिए बिना तुम हमें खुंबरी तक पहुंचने का रास्ता नहीं बताओगी।" जगमोहन के होंठ भिंच गए।

"दोनों अंगूठियां लूंगी। एक मेरे लिए, एक मेरी बहन के...।"

उसी पल जगमोहन दोती पर झपट पड़ा।

जगमोहन आशा कर रहा था कि दोती से टकराएगा। वो दोती का हाथ पकड़ने की चेष्टा में था, परंतु तब उसके मस्तिष्क को तीव्र झटका लगा, जब वो दोती को पार करता चला गया। इस तरह कि जैसे वो खड़ी ही न हो।

लेकिन दोती अपनी जगह खड़ी थी।

जगमोहन चौंककर पलटा।

ये देखकर बबूसा भी ठगा-सा रह गया।

दोती खिलखिलाकर हंस पड़ी।

जगमोहन फौरन पुनः दोती पर झपटा, परंतु हाथ कुछ नहीं आया। दोती की खिलखिलाहट और भी तेज हो गई। वो पास ही खड़ी थी। मानवीय आकार में थी। ठीक से दिख रही थी परंतु वो उस कोहरे की तरह थी, जिसे पार करके दूसरी तरफ आसानी से निकला जा सके। उसे छुआ या पकड़ा नहीं जा सकता था। उसके शरीर का भ्रम टूटते ही जगमोहन के चेहरे पर कड़वे भाव फैल गए। वो हंसती दोती को देखता रहा। जबकि बबूसा परेशान-सा कह उठा।

"ये क्या?"

"ये खुंबरी की भेजी ताकत है, जो हमसे अंगूठियां लेकर, हमें जकड़ लेना चाहती थी।" जगमोहन दांत भींचकर बोला।

"ओह।" बबूसा अब समझा सारी बात।
दोती ने हंसी रोकी और जगमोहन को देखते कह उठी।
"तू तो बहुत चालाक निकला। भांप गया मेरी चाल को।"
"हमें पकड़ने आई थी तू?"
"तुम दोनों की अंगूठियां उतरवाने आई थी।" दोती कड़वे स्वर में कह उठी—"अंगूठियां उतारते ही तुम हमारी कैद में पहुंच जाते। पर तेरी चालाकी तो मैं मान गई। कैसे शक हुआ तुझे मेरे पर।"
"क्यों पूछती है?" जगमोहन सतर्क था।
"उस बात से सबक लूंगी कि मैंने ऐसी क्या गलती कर दी जो तेरे को मेरे पर शक हुआ। दोबारा वो गलती नहीं करूंगी।"
जगमोहन, दोती को देखता रहा फिर बोला।
"जिसने वो अंगूठी पहनी थी वो अंगूठी को किसी भी हाल में उंगली से न उतारती और तुमने कहा कि खुंबरी तक का रास्ता जानने के लिए उसने अंगूठी दे दी। इसी बात ने तुम्हारी धोखेबाजी की कलाई खोल दी।"
"समझ गई। जाती हूं अब, पर तुझे न छोडूंगी। दोती इतनी आसानी से हार मानने वाली नहीं।"
"तो खुंबरी ने भेजा तुझे।"
"खुंबरी तक मेरी पहुंच कहां। मैं तो ओहारा के पास रहती हूं।" दोती ने जगमोहन को घूरा।
"कौन ओहारा?"
"खुंबरी की एक ताकत है ओहरा।" इसके साथ ही दोती का वो शरीर हवा में घुलता गायब होता चला गया।
"क्या मुसीबत है।" बबूसा कह उठा।
जबकि जगमोहन चिंतित दिखने लगा।
"खुंबरी के पास ऐसी ताकतें हैं तो हम इनका मुकाबला कैसे कर सकेंगे। ये तो हाथ में भी नहीं आतीं। देखने में उनका शरीर दिखता है जबकि छूने पर वो हवा के समान हैं।" बबूसा ने जगमोहन से कहा।
"हमें इनका मुकाबला करने की जरूरत भी नहीं है।" जगमोहन ने गम्भीर स्वर में कहा।
"क्यों?"
"ये ताकतें हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकतीं। जब तक कि डुमरा की दी अंगूठी के रूप में सुरक्षा कवच हमारे पास है। इसी वजह से ये हम पर काबू नहीं पा सकी और चालाकी से हमारी अंगूठियां मांगने लगी।"
"ओह। मैं उसकी चालाकी नहीं समझ सका। मैं तो उसे अंगूठी देने को तैयार हो गया था।" बबूसा बोला।

"अंगूठी कभी भी अपने से जुदा मत करना बबूसा। इससे बुरी ताकतें दूर रहेंगी।"

"नहीं करूंगा।" बबूसा ने हाथ की उंगली में पड़ी अंगूठी को देखा।

"मुझे नगीना भाभी और रानी ताशा की चिंता होने लगी है।" जगमोहन होंठ भींच कर कहा।

बबूसा ने जगमोहन को देखा।

"वो हार और अंगूठी उनके पास थी। इससे स्पष्ट है कि बुरी ताकतों ने किसी तरह उन्हें पकड़ लिया है। शायद उन्हें नुकसान पहुंचा दिया हो। समझ में नहीं आता कि वो किस हाल में होंगी।" जगमोहन के चेहरे पर परेशानी दिख रही थी।

"अगर हम दोती को पकड़ लेते तो उससे पता चल...।"

"वो खुंबरी की ताकतों में से एक है। उसे हम नहीं पकड़ सकते। परंतु उससे सतर्क रहना जरूरी है।"

"तो हमें कैसे पता चले कि रानी ताशा और नगीना के साथ उन्होंने क्या किया है।" बबूसा गम्भीर स्वर में बोला।

"जब तक खुंबरी को नहीं ढूंढ निकालते, तब तक हमें किसी बात का पता नहीं चल सकता।"

"तो हम जिस तरह खुंबरी का ठिकाना ढूंढ रहे हैं, वैसे ही हमें ढूंढते रहना होगा। आगे चलते हैं।" बबूसा ने कहा।

दोनों तेजी से पुनः आगे बढ़ने लगे।

"देवराज चौहान और मोना चौधरी पर भी इस तरह का खतरा आ सकता है।" जगमोहन ने कहा।

"राजा देव बहुत चालाक हैं, वो खतरे को भांप लेंगे।" बबूसा विश्वास भरे स्वर में बोला।

"इन हालातों में कुछ नहीं पता चलता कि क्या हो जाए। पर सोमाथ सुरक्षित रहेगा। उस पर खुंबरी की ताकतें असर नहीं कर सकतीं। क्योंकि वो कृत्रिम इंसान है। वो सोमारा को भी सुरक्षित रखेगा।"

"सोमारा के पास भी सुरक्षा कवच के रूप में अंगूठी है।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"डुमरा ने कहा था कि वो हमारे पीछे आएगा।" जगमोहन बोला—"पीछे रहकर वो क्या करेगा। हमारे साथ ही आता।"

"क्या पता डुमरा के मन में क्या है।" बबूसा ने कहा।

"वो...।" उसी पल जगमोहन कहते-कहते ठिठक गया।

"वो कौन है?" बबूसा की निगाह भी तब तक उस पर पड़ चुकी थी।

करीब दो-सौ कदम दूर पेड़ों के बीच उन्हें कोई दौड़ता जाता दिखाई दे

रहा था। दौड़ते-दौड़ते कभी वो पेड़ों के पीछे नजरों से ओझल हो जाता तो कभी दिखाई देने लगता। वो तेजी से दूसरी दिशा की तरफ दौड़ता जा रहा था।

"वो हमारा तो साथी नहीं लगता।" बबूसा ने पहचानने की कोशिश करते कहा।

"आओ।" जगमोहन भी उस दिशा की तरफ दौड़ा—"हमें देखना है कि यहां क्या हो रहा है। उसे पकड़ो।"

बबूसा भी जगमोहन के साथ दौड़ पड़ा।

जगमोहन और बबूसा तेजी से उस दिशा की तरफ दौड़ते चले गए जिस तरफ वो व्यक्ति दौड़ा जा रहा था। रह-रहकर वो नजरों से ओझल हो जाता, तो फिर दिखाई देने लगता। ऐसे घने पेड़ों के बीच उसके पीछे जाते रहना आसान नहीं था। फासला अभी भी बहुत था परंतु पहले से कम हो गया था। तभी बबूसा ने ऊंचे स्वर में उसे रुकने को कहा।

"आवाज मत लगाओ।" जगमोहन दौड़ते हुए चीखा—"हमने चुपके से देखना है कि वो किधर जा रहा है।"

दौड़ते-दौड़ते बबूसा आगे निकल आया था।

दोनों के कंधों पर थैले जैसे बैग लटके थे।

जिसके पीछे वो दौड़ रहे थे वो एकाएक उन्हें दिखना बंद हो गया।

बबूसा और जगमोहन दौड़ते हुए रुके वहां, जहां वो नजरों से ओझल हुआ था।

"कहां गया?" जगमोहन गहरी सांसें लेता कह उठा।

"इतने गहरे जंगल में किसी को ढूंढा नहीं जा सकता। वो बहुत तेज दौड़ रहा था जैसे फौरन कहीं पहुंच जाना चाहता हो।"

"समझ में नहीं आता वो कौन था और क्यों इस तरह भागे जा रहा था। वो मिल जाता तो कुछ नई बातें पता चलतीं।"

दोनों की निगाह घने जंगल में घूम रही थी।

"आओ बबूसा, उसे ढूंढते हैं।"

"अब तो वो बहुत आगे निकल गया होगा। वो मिलेगा नहीं।"

जगमोहन बबूसा की बात से मन-ही-मन सहमत था। उसकी उखड़ी सांसें संयत हो चुकी थीं।

"इसी तरफ आगे चलते हैं।" जगमोहन बोला—"शायद वो...।"

कहते-कहते जगमोहन ठिठका।

दूर से आती कोई आवाज उसके कानों में पड़ी जैसे कोई चिल्ला रहा हो। उसने बबूसा को देखा।

बबूसा भी सतर्क हो चुका था।

"उधर कोई है।" बबूसा के होंठों से निकला।

जगमोहन उसी पल तेजी से आगे बढ़ गया।

बबूसा उसके साथ आगे बढ़ता कह उठा।

"शायद वहां ज्यादा लोग हैं। तभी तो किसी की आवाजें कानों में पड़ रही हैं।"

"वो ही तो देखना है हमें कि ये सब क्या हो रहा है।" जगमोहन बोला।

दोनों तेजी से आगे बढ़े जा रहे थे कि उनके कानों में युवती की हंसी पड़ी।

"ये तो दोती की आवाज लगती है।" बबूसा ने कहा।

दोनों कुछ और आगे पहुंचे कि ठिठक गए। अब आवाजें स्पष्ट सुनाई दे रही थीं और कुछ आगे पेड़ों के पीछे किसी के खड़े होने की झलक मिल रही थी। मर्द की आवाजों के साथ उन्होंने दोती की आवाज को पहचान लिया। बेहद सावधानी से पेड़ों के तनों की ओट लेते वो आगे पहुंचे और छिपकर उन्हें देखने-सुनने लगे।

वो तीस बरस का युवक था। सेहतमंद था। उन्होंने पहचाना कि ये ही दौड़ रहा था। उससे पंद्रह कदमों की दूरी पर खड़ी दोती हंस रही थी। उसी पल वो व्यक्ति कठोर स्वर में कह उठा।

"तुम मेरे हाथों से खत्म हो जाओगी।"

"मुझे खत्म करने की ताकत तेरे में नहीं है। डुमरा खुद कहां छिप गया?" दोती ने हंसकर कहा।

"वो भी इसी जंगल में है।" उस व्यक्ति ने गुस्से से कहा।

"नाम क्या है तेरा?"

"मेरे नाम से तेरे को क्या लेना। मैं तो...।"

"नाम भी तो जानूं तेरा।"

"सोमाथ नाम है मेरा। सीधी तरह मुझे खुंबरी का ठिकाना बता, वरना तुझे अभी खत्म कर दूंगा।"

दोती के चेहरे पर जहरीली मुस्कान उभरी।

"मुझे खत्म करेगा। बहुत बहादुर है तू। ये जरा हाथ की उंगली में पड़ी अंगूठी तो उतार।"

"क्यों?"

"सुरक्षा कवच पहनकर बहादुरी दिखा रहा है। तू दोती का मुकाबला क्या करेगा। जाकर डुमरा को भेज। उसे मजा चखाऊंगी। डुमरा मेरा मुकाबला नहीं कर सकता तो खुंबरी का क्या बिगाड़ सकेगा।"

"अगर डुमरा यहां होता तो तू कबकी पकड़ी जा चुकी होती।"

"डुमरा की शक्तियों में वो दम नहीं, जो हम ताकतों में है।" दोती ने कड़वे स्वर में कहा—"डुमरा नियम से 'बंधा' हुआ है, उसे बार-बार पीछे

हटना पड़ता है, जबकि हम ताकतों का नियम है, काम को हर हाल में पूरा करके लौटो। अगर तू बहादुर है तो सुरक्षा कवच को फेंककर मेरे से बात कर।"

"मैं तेरी बातों में फंसने वाला नहीं। बता खुंबरी का ठिकाना कहां है?" टोमाथ गुस्से से कह उठा।

"भाग जा बेवकूफ। नहीं तो जान गंवा देगा।"

तभी टोमाथ का हाथ ऊपर उठा और सफेद चमकती लकीर की तरह बिजली, हाथ से निकलकर दोती की तरफ बढ़ी और देखते-ही-देखते दोती के शरीर से पार होकर जमीन से जा टकराई।

दोती ठहाकर हंस पड़ी।

"बस, इतनी ही शक्ति है तेरे में।"

"तो तू शरीर अपने साथ नहीं लाई।" टोमाथ गुर्रा उठा।

"क्यों लाऊं, उसके बिना ही मेरा काम बन रहा है। अब तू मेरे वार से बच।" कहने के साथ ही दोती ने अपनी उंगली टोमाथ की तरफ तान दी तो उसी पल मुट्ठी भर का चमकता गोला, बिजली की-सी रफ्तार से आगे बढ़ा और टोमाथ के सीने से जा टकराया। टोमाथ के पांव उखड़े और वो नीचे जा गिरा।

"बच गया तू।" दोती गुस्से से कह उठी।

टोमाथ उठ चुका था नीचे से और बोला।

"बस इतनी ही ताकत है।"

"अब तो नहीं बचेगा।" दोती गुर्राई और दोनों हाथ टोमाथ की तरफ किए।

उसी पल चमकते तीर दिखे जो टोमाथ की तरफ लपके।

टोमाथ ने दोनों बांहें उठाकर तीरों को इधर-उधर छितरा दिया और कहा।

"तू मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकती।"

"तेरी उंगली में सुरक्षा कवच मौजूद है। पर तू नहीं बचेगा। मैं और ताकत लेकर लौटती हूं।" इतना कहने के साथ ही दोती गायब हो गई।

जगमोहन और बबूसा पेड़ों के तनों की ओट से सब कुछ देख रहे थे।

दोनों की नजरें मिलीं।

"ये डुमरा का साथी है।" जगमोहन बोला—"डुमरा भी जंगल में आ चुका है।"

"ये किस तरह लड़ रहे थे?" बबूसा कह उठा।

"दोती अपनी ताकतों का इस्तेमाल कर रही थी, परंतु सुरक्षा कवच पहने होने से टोमाथ का कुछ नहीं बिगड़ा।"

"दोती अभी अपनी और ताकतों के साथ लौट आएगी।"

"आओ, टोमाथ से बात करते हैं।"

दोनों तनों की ओट से निकले और टोमाथ की तरफ बढ़ गए।

टोमाथ सोच-भरी मुद्रा में अपनी जगह पर खड़ा था कि कदमों की आहटें सुनकर उसने फौरन सिर घुमाया।

जगमोहन और बबूसा कुछ ही कदमों पर सामने थे।

"ओह।" टोमाथ गुर्रा उठा—"तो उसने तुम दोनों को भेज दिया मेरा मुकाबला करने...।"

"हम डुमरा के लोग हैं टोमाथ।" जगमोहन कह उठा।

"तो अब मेरे से चालें खेलने लगे, मैं सब समझता हूं कि...।"

"मैं बबूसा हूं।"

"बबूसा?"

तभी जगमोहन की नजर टोमाथ के हाथ की उंगली में पड़ी, सुरक्षा कवच वाली अंगूठी पर पड़ी।

"ये देखो।" जगमोहन ने अपना हाथ आगे किया—"हमारे पास डुमरा की दी अंगूठी है।"

टोमाथ ने अंगूठी को देखा।

बबूसा ने भी हाथ बढ़ा दिया।

"समझा।" टोमाथ ने सिर हिलाया—"तो तुम लोगों को डुमरा ने इधर भेजा है। इस जंगल में खुंबरी की ताकतों के धोखे बहुत हैं, इसलिए सतर्क रहना जरूरी है। खुंबरी की ताकतें हमें मारने का मौका ढूंढ़ रही हैं।"

"तुम जिससे लड़ रहे थे उसका नाम दोती है।"

"तुम्हें कैसे पता?"

"वो हमें भी मिली थी। हमारी अंगूठियां उतरवाना चाहती थी, परंतु हमने उसकी धोखेबाजी को पकड़ लिया।"

"फिर तो तुम दोनों समझदार हो।"

"डुमरा कहां है?" बबूसा ने पूछा।

"वो भी इसी जंगल में है और अपने काम में लगा है। अब खुंबरी की खैर नहीं।" टोमाथ बोला।

"डुमरा ने हमें नहीं बताया था कि वो तुम्हें भी जंगल में भेजेगा।"

"मैं डुमरा के साथ ही आया हूं। वो अपने काम में लग गया और मैं खुंबरी के ठिकाने की तलाश में लग गया कि तभी मेरी शक्ति ने मुझे बताया कि इस तरफ खुंबरी की ताकत मौजूद है तो मैं इधर ही दौड़ा चला आया।"

"हमने तुम्हें दौड़ते देखा तो पीछे आ गए? खुंबरी के ठिकाने का कुछ पता चला?"

"ये इतना भी आसान काम नहीं।" टोमाथ खीझ भरे स्वर में बोला।
"दोती के पास रानी ताशा का हार और नगीना भाभी की अंगूठी है।" जगमोहन ने कहा।
"ये तो गलत हो गया। इसका मतलब वो दोनों खुंबरी की ताकतों के कब्जे में पहुंच गई हैं।" टोमाथ कह उठा।
"अब क्या होगा?" जगमोहन ने व्याकुल स्वर में कहा।
"हौसला रखो। मैं जल्दी ही खुंबरी की जगह ढूंढ़ लूंगा। सबको बचा लूंगा। तुम लोग मेरे साथ रहो। यहां रुकने का कोई फायदा नहीं। उस दिशा में चलते हैं। हमने पूरा जंगल छानना है।" टोमाथ ने कहा।
वो तीनों एक दिशा में चल पड़े।
"क्या उन्होंने रानी ताशा और नगीना को मार दिया होगा?" बबूसा ने परेशान स्वर में पूछा।
"पता नहीं क्या किया होगा। मैं कैसे कुछ कहूं।" टोमाथ ने कहा।
"डुमरा क्या काम कर रहा है?"
"वो अपनी शक्तियों का इस्तेमाल करके, खुंबरी की जगह जानने की चेष्टा कर रहा है।"
"वो कामयाब होगा?"
"क्या पता। मेरा खयाल है कि कामयाब नहीं होगा। खुंबरी के ठिकाने पर, ताकतों ने अपनी काली छाया फैला रखी है, ऐसे में शक्तियां उस जगह को नहीं देख पाएंगी। उन्हें सब कुछ सामान्य ही दिखेगा।"
तीनों तेजी से आगे बढ़े जा रहे थे।
"दोती दिखने में तो शरीर के साथ ही होती है, परंतु वो सिर्फ आकृति में कैसे दिखती है।"
"ये काम वो अपनी ताकतों द्वारा करती है। इस तरह वो सुरक्षित रहती है। कोई वार उस पर नहीं चल पाता।"
"तुम ताकतों के बारे में काफी जानकारी रखते हो।" जगमोहन बोला।
"क्यों न रखूंगा। सारी उम्र इन्हीं कामों में लगा रहा। अब खुंबरी का ठिकाना मैं ढूंढ़ के ही रहूंगा।"
वो तीनों देर तक चलते रहे। जंगल बहुत घना हो चुका था।
"तुम्हें कुछ खाना हो तो बता दो।" बबूसा बोला—"तुम्हारे पास तो सामान का थैला भी नहीं है।"
"हां, भूख तो मुझे लग रही है।" टोमाथ बोला—"पर कुछ आगे जाकर खाएंगे।"
"तुम्हें थकान नहीं हुई?"

"हो रही है, पर खुंबरी तक पहुंचना जरूरी है। अभी तक हमें खुंबरी की जगह नहीं मिल सकी।"

"वो देखो, वो क्या...।" एकाएक जगमोहन चीखा।

वे ठिठक गए।

उन्होंने जगमोहन की बताई दिशा की तरफ देखा।

वहां पेड़ों के बीच एक खाली जगह पर बीस बरस की युवती बैठी हुई थी। वो बहुत खूबसूरत थी और बीस बरस की उम्र होगी। उसने साधारण कपड़े पहन रखे थे और उसके पास वैसा ही थैला रखा था जैसा जगमोहन और बबूसा के पास था। उसे देखते ही टोमाथ उस तरफ तेजी से बढ़ता कह उठा।

"वो तो मोरगा है। मोरगा इस तरह क्यों बैठी है।"

जगमोहन और बबूसा भी तेजी से उसके साथ बढ़े।

"मोरगा कौन? तुम इसे जानते हो?"

"ये भी मेरी तरह डुमरा के साथ काम करती है और खुंबरी के ठिकाने की तलाश पर निकली थी।"

तीनों वहां जा पहुंचे।

मोरगा दस कदम दूर थी कि आगे बढ़ते वे किसी अदृश्य दीवार से टकराकर रुक गए।

"ये क्या?" जगमोहन के होंठों से निकला।

"ओह, मोरगा, मुसीबत में है।" टोमाथ कह उठा।

तब तक मोरगा की निगाह भी उन पर पड़ चुकी थी।

"ओह टोमाथ।" मोरगा कहते हुए अपनी जगह से उठी, परंतु आगे न बढ़ी—"तुम आ गए। मैं तो सोच रही थी कि मुझे बचाने इस जंगल में कौन आएगा। खुंबरी की ताकतों ने मुझे यहां कैद कर लिया है।"

"तुम—तुम्हारी अंगूठी कहां है?" टोमाथ कह उठा।

"ये ही गलती तो मुझसे हो गई। दोती ने चालाकी से मेरी अंगूठी उतरवा ली। मैं उसकी धोखेबाजी को ना समझ सकी। उसने मुझसे अंगूठी लेकर, इस पत्थर के नीचे रख दी।" पास में चार फुट ऊंचा भारी पत्थर पड़ा था—"मुझे अदृश्य दीवारों के बीच कैद कर दिया और चली गई। मैं फंस गई टोमाथ। तुम मेरी सहायता करो।"

"तुम तो बहुत बड़ी बेवकूफ हो जो खुंबरी की ताकतों के जाल में फंस गई।"

"ये ही गलती मुझसे हो गई। अब पछता रही हूं।" मोरगा दुख भरे स्वर में कह उठी।

"तुम्हें अंगूठी नहीं उतारनी चाहिए थी।" टोमाथ ने नाराजगी से कहा।

"बाद में डांट लेना। पहले मुझे यहां से निकालो।"

"मैं तुम्हें कैसे निकाल सकता हूं?" टोमाथ बोला।

"दोती ने जाते-जाते कहा था कि तुम इस कैद से तभी निकल सकती हो, जब पत्थर के नीचे से डुमरा की दी सुरक्षा कवच वाली अंगूठी निकालकर पहन लूं। तब से इस पत्थर को हटाने की चेष्टा कर रही हूं लेकिन ये इतना भारी है कि मुझसे हिल भी नहीं रहा। तुम आकर इस पत्थर को हटा दो।"

"पर यहां तो अदृश्य दीवार है। मैं तुम्हारे पास कैसे आ सकता हूं।" टोमाथ ने कहा।

"आ सकते हो।" मोरगा बोली—"तुम्हारे हाथ की उंगली में सुरक्षा कवच वाली जो अंगूठी है, उसे उतारकर नीचे रख दो तो तब तुम अदृश्य दीवार को पार कर लोगे। जल्दी से इस पत्थर को हटाओ कि मैं अंगूठी पहनकर इस कैद से निकल सकूं।"

"तुम भी तो इस दीवार को पार कर सकती हो।" जगमोहन बोला।

"नहीं कर सकती। दोती ने बताया था कि अंगूठी पहनकर कोई बाहर से भीतर नहीं आ सकेगा और भीतर वाला तभी बाहर जा सकेगा, जब उसने अंगूठी पहनी हो। पर तुम दोनों कौन हो। मैंने तुम लोगों को पहले कभी नहीं देखा। ओह तुम दोनों ने भी सुरक्षा कवच वाली अंगूठियां पहन रखी हैं। तुम उन्हीं लोगों में से तो नहीं जो पोपा से सदूर पर आए हो।"

"हम वो ही लोग हैं।"

"समझ गई। तुम लोग खुंबरी के ठिकाने को ढूंढ रहे हो।" मोरगा ने सिर हिलाया—"ये वो ही लोग हैं न टोमाथ?"

"हां। दोती मुझे भी मिली थी।" टोमाथ बोला—"पर मेरे पर उसकी चाल नहीं चल सकी।"

"अब मुझे इस कैद से निकालो टोमाथ।"

"अभी निकालता हूं।" कहने के साथ ही टोमाथ हाथ की उंगली में डली अंगूठी निकालने लगा।

"ये क्या कर रहे हो।" जगमोहन बोला—"इस अंगूठी को मत निकालो। ये यहां पर हमारी सुरक्षा है।"

"तुमने मोरगा की बात नहीं सुनी। अंगूठी को उतारकर ही मैं अदृश्य दीवार के भीतर जा सकता हूं।"

"लेकिन इसमें खतरा है।"

"खतरा कैसा?" टोमाथ आस-पास नजरें घुमाकर बोला—"यहां तो खुंबरी की कोई ताकत नहीं है।"

"क्या पता दोती कहीं पास में ही छिपी हो और तुम्हारे अंगूठी उतारते ही तुम्हें भी कैद कर ले।"

"इस वक्त मोरगा को बचाना जरूरी है।" कहने के साथ ही टोमाथ

ने उंगली से अंगूठी निकालकर, नीचे जमीन पर रख दी और मोरगा से बोला—"मैं आ रहा हूं मोरगा।"

"जल्दी करो टोमाथ।" मोरगा परेशान हाल में बोली—"मुझे इस कैद से निकालो।"

टोमाथ आगे बढ़ता चला गया।

"इस बार किसी अदृश्य दीवार ने उसका रास्ता नहीं रोका और वो मोरगा के पास पहुंच गया।

मोरगा उठते हुए बोली।

"जल्दी-से इस पत्थर के नीचे से अंगूठी निकालो टोमाथ।"

टोमाथ पत्थर के पास पहुंचा और उसे हटाने लगा।

मोरगा व्यग्र भाव से खड़ी उसे देखती रही।

टोमाथ ने पत्थर को हटाने के लिए कई तरह से जोर लगाया, परंतु हटा नहीं सका।

"ये पत्थर तो बहुत भारी है।" टोमाथ थके स्वर में कह उठा।

"फिर कोशिश करो।" मोरगा बेचैनी से बोली।

"तुम भी मेरे साथ कोशिश करो।" टोमाथ ने कहा।

अब टोमाथ और मोरगा पत्थर को धकेलने की चेष्टा करने लगे। चार फुट ऊंचा और पांच फुट घेरे में पड़ा पत्थर, इस बार थोड़ा-सा हिला, परंतु हटा फिर भी नहीं।"

"ओह ये तो हमसे हट ही नहीं रहा।" मोरगा व्याकुल-सी कह उठी।

"दोती ने इस पत्थर को कैसे उठाया था?"

"उसने तो बड़ी आसानी से उठा लिया था।"

"दोती की ताकतों ने उसका साथ दिया होगा। पर हम कैसे पत्थर को हटाएं?" टोमाथ विचारपूर्ण स्वर में बोला।

"ये हमसे हिला तो था।" मोरगा बोली—"एक और आदमी होता तो...।" तभी मोरगा कहते-कहते ठिठकी और कुछ दूरी पर खड़े जगमोहन और बबूसा से कहा—"तुम लोग भी सहायता करो हमारी।"

जगमोहन और बबूसा की नजरें मिलीं।

"अजीब लोग हो तुम। मैं मुसीबत में हूं और तुम मेरी सहायता नहीं कर रहे।" मोरगा नाराजगी से बोली।

"टोमाथ।" एकाएक जगमोहन ने कहा—"तुम जरा हमारे पास आओ।"

"क्यों?"

"मैं देखना चाहता हूं कि क्या तुम वापस अपनी अंगूठी के पास आ पाते हो या नहीं?"

टोमाथ ने सिर हिलाया। आगे बढ़ा और उनके पास पहुंचकर, नीचे

पड़ी अपनी अंगूठी उठाई और पहन ली। जगमोहन को देखा फिर अंगूठी उतारकर वापस मोरगा के पास जा पहुंचा।

"सब ठीक है।" जगमोहन बोला—"तुम जाओ और पत्थर हटा दो।" जगमोहन ने बबूसा से कहा।

बबूसा ने सिर हिलाया और आगे बढ़ा।

"अंगूठी उतारकर जाना होगा।" जगमोहन ने कहा।

तब तक बबूसा अदृश्य दीवार से टकराकर रुक गया था। बबूसा पलटा और कुछ कदम पीछे आकर अंगूठी को उंगली से निकाला और नीचे जमीन पर रखकर आगे बढ़ गया।

टोमाथ और मोरगा उसे ही देख रहे थे।

इस बार बबूसा को अदृश्य दीवार ने नहीं रोका और वो टोमाथ-मोरगा के पास जा पहुंचा।

"चलो, पत्थर हटाते हैं।" मोरगा परेशान हाल में कह उठी।

फिर तीनों पत्थर के पास पहुंचे और उसे हटाने लगे।

इस बार पत्थर पहले से ज्यादा हिला, परंतु हटा फिर भी नहीं।

कई बार उन्होंने कोशिश की।

लगता था जैसे सफलता मिलते-मिलते रह जाती हो।

"तुम भी आ जाओ।" मोरगा हांफते हुए जगमोहन से कह उठी—"अब पत्थर काफी हिल रहा है। तुम्हारे हाथ लगते ही ये हट जाएगा। थोड़ी-सी ताकत कम पड़ रही है। जल्दी करो, देर मत लगाओ। अगर तुम पहले आ जाते तो अब तक सब ठीक हो गया होता।"

जगमोहन के माथे पर बल दिखे।

उसने परखने वाली नजरों से पत्थर को देखा। एक ही बात दिमाग में आई कि इस पत्थर को अकेले इंसान का जोर भी हटा सकता है तो ये तीन लोगों के हटाने पर भी, हट क्यों नहीं रहा?

"सोच क्या रहे हो।" टोमाथ बोला—"अंगूठी उतारो और आ जाओ।"

जगमोहन के दिमाग में खतरे की घंटी बजी। उसने टोमाथ और मोरगा को देखा। दोनों आशा भरी निगाहों से उसे देख रहे थे। जाने क्यों जगमोहन के चेहरे पर छोटी-सी मुस्कान उभरी।

"मेरे आने से कोई फायदा नहीं होगा। तुम तीनों से पत्थर नहीं हट रहा तो...।"

"तुम देखना, तुम्हारे आते ही हट जाएगा।" मोरगा कह उठी—"यहां आकर जरा हाथ तो लगाओ। हम तीनों के जोर से हिल रहा है। मामूली से काम के लिए तुम इतना क्यों सोच रहे हो।"

"बबूसा।" जगमोहन बोला—"तुम मेरे पास आ जाओ।"

"तुम नहीं आओगे?" बबूसा ने पूछा।

"नहीं।" जगमोहन ने इंकार में सिर हिलाया—"मुझे समझ में नहीं आ रहा कि तुम तीनों के जोर लगाने पर भी ये पत्थर हट क्यों नहीं रहा, जबकि दो लोग इसे आसानी से लुढ़का सकते हैं।"

"तुम कहना क्या चाहते हो?" बबूसा सतर्क हो गया।

"तुम इसी वक्त मेरे पास आजाओ।" जगमोहन बोला।

"ये कैसा अजीब इंसान है। हमारी सहायता को, आने को मना ही नहीं कर रहा, इसे भी बुला रहा है।" मोरगा बोली।

"तुम आ जाओ बबूसा।" जगमोहन ने पुनः कहा।

बबूसा ने आगे बढ़ने को कदम उठाया तो टोमाथ कह उठा।

"रुको-रुको। वो बेवकूफ है तुम तो समझदार बनो।"

मोरगा ने बबूसा का हाथ थामा।

बबूसा ने मोरगा को देखा। मोरगा मुस्कराई। फिर टोमाथ से कहा।

'एक ही सही। उसे फिर पकड़ लेंगे।' इसके साथ ही मोरगा होंठों-ही-होंठों में बड़बड़ाई।

अगले ही पल मोरगा बबूसा और टोमाथ ऐसे गायब हो गए जैसे वे वहां थे ही नहीं।

ये देखते ही जगमोहन हक्का-बक्का रह गया। ठगा-सा खड़ा रह गया।

"बबूसा।" जगमोहन के होंठों से हैरान-सा स्वर निकला।

परंतु बबूसा तो वहां था ही नहीं।

जगमोहन समझ गया कि टोमाथ, डुमरा का साथी नहीं था। वो खुंबरी की ताकत का ही हिस्सा था जो उसे धोखा देने के लिए, उससे आ मिला था और बबूसा उनके चंगुल में जा फंसा था।

जगमोहन मन-ही-मन झल्ला उठा कि उसके कहने पर ही बबूसा पत्थर हटाने के लिए गया था। वह टोमाथ और मोरगा की चाल को जरा भी नहीं समझ सका था। टोमाथ पर भरोसा कर लेना उसे महंगा पड़ा था। जगमोहन के होंठ भिंच गए। एकाएक वो आगे बढ़ा। परंतु किसी प्रकार की अदृश्य दीवार ने उसका रास्ता नहीं रोका और वो पत्थर के पास पहुंच गया। चेहरे पर कठोरता उभरी हुई थी। वो झुका और पत्थर को दोनों हाथों से जोर लगाकर पलटाना चाहा।

अगले ही पल पत्थर आसानी से एक तरफ जा लुढ़का।

पत्थर के नीचे कुछ भी नहीं था।

जगमोहन पहले ही समझ चुका था कि खुंबरी की ताकतें उसके साथ खेल खेल गई हैं। टोमाथ और मोरगा खुंबरी की ताकतें ही थीं और वो बबूसा को अपने साथ ले गईं। बहुत आसान-सी चाल चली उन्होंने और वे उस चाल

में फंस गए। जगमोहन को अपने ऊपर गुस्सा आने लगा कि वो टोमाथ की चाल को समझ क्यों नहीं सका?

तभी दोती की हंसी वहां गूंज उठी।

जगमोहन फौरन पलटकर देखा। कुछ कदमों की दूरी पर खड़ी दोती हंस रही थी। जगमोहन के चेहरे पर गुस्सा चमक उठा। दोती ने हंसी रोकी और कुछ कदम आगे बढ़कर नीचे पड़ी दोनों अंगूठियां उठा लीं।

"मैंने मोरगा को पहले ही बता दिया था कि तुम चालाक हो। मुश्किल से फंसोगे। पर नहीं फंसे।" दोती कह उठी।

"तो इस खेल के पीछे तुम थीं।"

"सब ही हैं। हम सब एक ही हैं। हमें काम पूरा करना होता है।"

"कैसा काम?"

"डुमरा के भेजे लोगों को पकड़कर कैद में डालना।"

"तो तुम हम लोगों को पकड़कर कैद में रख रहे हो।" जगमोहन ने मन-ही-मन राहत की सांस ली।

"हां। खुंबरी का ये ही हुक्म है। जब वो मारने का हुक्म देगी तो मार देंगे।"

"किस-किसको पकड़ा अभी तक?"

"पांच को।"

"पांच कौन?" जगमोहन के होंठ सिकुड़े।

"रानी ताशा, नगीना, देवराज चौहान और मोना चौधरी। बबूसा को तुम्हारे सामने ही पकड़ा है।"

"देवराज चौहान और मोना चौधरी पकड़े गए?" जगमोहन बोला।

"हां। तब वो मेरी चालाकी के धोखे में आ गए थे।" दोती ने कहा।

"वो दोनों आसानी से फंसने वालों में नहीं थे।" जगमोहन का स्वर सख्त था।

"उन पर चाल ही ऐसी फेंकी कि वो बच नहीं सकते थे। तुम अभी दोती को जानते ही कहां हो।"

"सोमाथ और सोमारा को नहीं पकड़ा?"

"उनके लिए भी चाल सोच रही हूं पर सोमाथ हमारी पकड़ में नहीं आएगा।"

"क्योंकि वो नकली इंसान है।"

"हां। हमारी ताकतें उस पर काम नहीं करेंगी। सोमारा को पकड़ने की कोशिश जरूर करूंगी। वैसे वो दोनों जंगल में भी भटकते रहे तो खुंबरी को कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकते। उनकी मुझे खास परवाह नहीं है।"

"ऐसा क्यों नहीं कहती कि सोमाथ की वजह से सोमारा पर हाथ नहीं डाल रही।"

"कुछ भी समझ ले।" दोती मुस्कराई—"पर तू कब तक बचेगा।"

जगमोहन के होंठ भिंच गए।

"तू भी जल्दी हमारी कैद में होगा। मोरगा कहती थी तुझे फंसा लेगी। कोई बात नहीं, बबूसा तो हाथ आ ही गया।"

"इन अंगूठियों को क्या करेगी?" जगमोहन ने पूछा।

दोती ने हथेली पर पड़ी दोनों अंगूठियों को देखकर कहा।

"ये हमारे काम की नहीं।"

"तो फिर उठाई क्यों?"

"इसलिए कि इसे कोई और पहनकर हमें परेशान न करे। इन्हें मैं मिट्टी में दबा दूंगी।"

"उस हार के साथ भी ऐसा ही किया?"

"वो हार तो खुंबरी ने रख लिया। कहने लगी डुमरा की निशानी समझकर इसे रखूंगी।" दोती मुस्कराई।

"बबूसा को कहां ले गए वो?" जगमोहन ने पूछा।

"चिंता मत कर। बबूसा कैद में अपने लोगों से मिल रहा है। रानी ताशा, नगीना, देवराज चौहान, मोना चौधरी से। उन सबके बीच पहुंचकर बबूसा खुश है। तू कहे तो तुझे भी वहां पहुंचा सकती हूं।"

जगमोहन, दोती को सोच भरी निगाहों से देखने लगा।

"तेरी मर्जी। पर तू बचेगा नहीं। तेरे को भी कैद में डालना है।" दोती बोली।

"सबको कैद में डालकर क्या करोगी?"

"खुंबरी के हुक्म से मार दिया जाएगा। पांच सौ साल बीत गए। हमने खून नहीं देखा। किसी को मारा नहीं। अब तुम लोगों का खून बहेगा तो हम सबको खुशी होगी। बड़ा मजा आएगा।" दोती एकाएक खुश हो गई—"एक खबर तो तेरे को बता दूं कि डुमरा भी इसी जंगल में आ गया है।"

जगमोहन के होंठ भिंच गए।

"मजा आएगा डुमरा के साथ।" दोती का स्वर कठोर हो गया—"उसे नहीं पकड़ा जा सकता। वो पूरी तरह शक्तियों की सुरक्षा में है। लेकिन ओहारा अपनी पूरी ताकत लगा देगा। डुमरा की जान लेने के लिए।"

"ओहारा कौन है?"

"खुंबरी की बड़ी ताकत है। डुमरा का मुकाबला वो ही कर सकता है। पर डुमरा तब तक 'वार' नहीं कर सकता। जब तक कि ताकतें पहला वार उस पर न कर दें। वो तो ताकतों के वार के इंतजार में बैठा है।"

"खुंबरी भी यहीं है, इसी जंगल में?"

"हां। वो तो अपनी जगह पर है।" दोती आंखें नचाई—"वो तो इन सब बातों का मजा ले रही है। पर अब तेरे पकड़े जाने की बारी है। तूने बहुत तंग कर दिया है मुझे। बच के रहना। अब पूरी तैयारी के साथ तेरे को पकड़ने आऊंगी। तेरी सारी की सारी चालाकी धरी रह जाएगी। ताकतों के पास तेरे जैसों का भी खूब इलाज है।" इसके साथ ही दोती एकाएक गायब हो गई।

जगमोहन के चेहरे पर गम्भीरता दिखने लगी। बबूसा का पास में न होना उसे परेशान कर रहा था। अब अकेला ही रह गया था। जगमोहन ने वहां रुकना मुनासिब नहीं समझा और आगे बढ़ गया। बेहद सतर्क था वो। परंतु देर तक चलते रहने के बाद भी उसके साथ कुछ नहीं हुआ। फिर थकान और भूख महसूस होने लगी। एक पेड़ के नीचे रुककर थैले से खाना निकालकर खाया और सुस्ताने के लिए थैले पर सिर रखकर लेट गया। जल्दी ही जगमोहन गहरी नींद में डूब गया था।

▭ ▭
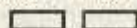
"मुझे समझ में नहीं आता कि जंगल में भटकने के लिए मेरी और बबूसा की जोड़ी क्यों नहीं बनी?" सोमारा ने उखड़ी निगाहों से सोमाथ को देखा—"वो होता तो उससे दो-चार बातें भी कर लेती।"

"तुम बातें मेरे से कर लो।" सोमाथ ने मुस्कराकर कहा।

"जो बात बबूसा से होती, वो तेरे से नहीं हो सकती। मुझे तो बबूसा की बहुत चिंता हो रही है।"

"उसकी चिंता क्यों—वो तो जगमोहन के साथ है।"

सोमारा ठिठककर सोमाथ को देखते बोली।

"डुमरा की बात भूल गए क्या। खुंबरी को किसी एक से प्यार होने वाला है। बबूसा से हो गया तो?"

"तो तुम्हें इस बात की चिंता हो रही है।" सोमाथ ने सिर हिलाया—"पर डुमरा ने तो कहा था पृथ्वी से आए किसी मर्द के साथ...।"

"बबूसा भी तो पृथ्वी से ही आया था। जन्म के बाद उसे पृथ्वी पर छोड़ दिया गया था।"

"पर बबूसा है तो सदूर का।"

"अब खुंबरी का क्या भरोसा कि उसे ही पृथ्वी से आया मान ले।" सोमारा ने खराब मन से कहा—"बबूसा, राजा देव और जगमोहन से अच्छा दिखता है। खूब सेहत है, बबूसा का शरीर तो देखो, खुंबरी का दिल बबूसा पर आ गया तो?"

"मेरे खयाल में वो इंसान बबूसा नहीं होगा।" सोमाथ ने गम्भीर स्वर में कहा—"राजा देव या जगमोहन में से कोई एक...।"

"तू औरत होता, हम इंसानों जैसा होता तो मेरे दिल का हाल समझ पाता।" सोमारा ने हाथ हिलाकर कहा—"बबूसा मेरे साथ होता तो उसका पूरा ध्यान रखती मैं। खुंबरी उस पर नजर डालती तो उसे भी देख लेती।" कहते हुए सोमारा एक पेड़ के नीचे जा बैठी—"थक गई हूं। खाना भी नहीं खाया सुबह से।"

सोमाथ तुरंत कंधे पर लटका थैला उतारते कह उठा।

"खा लो। मैं तुम्हें निकाल देता हूं।"

"रहने दे। मैं निकाल लूंगी।" सोमारा ने थैला अपनी तरफ खींच लिया।

सोमाथ भी नीचे बैठ गया।

"मुझे पूरी तरह तेरा ध्यान रखना है। मैं बबूसा को नाराज नहीं करना चाहता। एक बार उसे नाराज किया था तो उसने मुझे आकाशगंगा में फेंक दिया था, दूसरी बार नाराज हो गया तो मुझे ग्रह से बाहर फेंक देगा।"

"बहुत मुश्किल से तू बबूसा के काबू में आया था। नगीना ने हिम्मत न दिखाई होती तो शायद बबूसा भी अपने इरादे में सफल न हो पाता। पर जानती हूं अब तू बबूसा को नहीं जीतने देगा। एक बार हो गया तो हो गया।"

"अब महापंडित ने मेरे में कई बदलाव किए हैं। जैसे कि मेरे दिमाग में दोस्ताना व्यवहार डाला। पहले मैं सिर्फ रानी ताशा का हुक्म सुनता था, अब मेरे में जो दिमाग है, सब फैसले उसी से लेता हूं।"

"तेरा दिमाग कहां है?"

"ये मैं नहीं बताऊंगा।"

"बैटरी तो बता दे कि तेरे शरीर के किस हिस्से में लगती है।"

"ये भी नहीं बताऊंगा।" बबूसा मुस्कराया।

"क्यों?"

"मेरे दुश्मन ये जान गए तो इस बात का फायदा उठा सकते हैं। मुझे हरा देंगे, मेरे दिमाग को या बैटरी को निकालकर।"

सोमारा ने कुछ नहीं कहा और थैले से खाना-पानी निकाला और खाना खाने लगी।

सोमाथ की निगाह जंगल में घूमने लगी।

"समझ में नहीं आता कि खुंबरी इस जंगल में कहां रहती है।" सोमाथ बोला।

"वो ऐसे गुप्त ठिकाने पर रहती होगी कि जिसे कोई ढूंढ नहीं सकता।" सोमारा खाना खाते बोली—"डुमरा कहता है कि अपने ठिकाने पर खुंबरी की ताकतों ने साए फैला रखे हैं, जिससे कि डुमरा की शक्तियां उसे ढूंढ नहीं पा रहीं। परंतु सामान्य इंसान अगर वहां पहुंच जाए तो उस जगह को देख लेगा। तभी तो डुमरा हम लोगों को यहां भेजने को तैयार हो गया।"

"ये जंगल बहुत बड़ा और घना है। सफलता मिलनी आसान नहीं।" सोमाथ ने कहा।

"तेरे को खुंबरी मिल गई तो तू उसे मार देगा?" सोमारा ने पूछा।

"हां।"

"तेरी क्या दुश्मनी खुंबरी से?"

"महापंडित ने मुझे तुम लोगों की सहायता करने को कहा है। इसलिए मैं ये काम करूंगा।"

"अब तो तू बहुत शराफत से बात करता है। पोपा में तो तूने तूफान खड़ा कर रखा था।"

"बोला तो, अब महापंडित ने मेरे में कई बदलाव किए हैं।" सोमाथ ने मुस्कराकर कहा।

सोमारा खाना खाने के बाद बोली।

"मैं थोड़ी-सी नींद लूंगी। तेरे को थकान तो होती नहीं है।"

"मैं बैटरी से चलता हूं। मैं कभी नहीं थकता।"

सोमारा थैले पर सिर रखकर लेट गई। आंखें बंद कर लीं।

सोमाथ उठकर टहलने लगा। उसकी नजरें जंगल में दूर-दूर तक जा रही थीं। घने पेड़ों को पार करती कहीं-कहीं सूर्य की किरणें जमीन पर पड़ रही थीं। मध्यम-सी हवा चल रही थी। कुछ ही पल बीते कि सोमाथ एकाएक ठिठक गया। उसकी निगाह पचास कदम दूर एक पेड़ के नीचे बैठी युवती पर पड़ी। सोमाथ मन-ही-मन हैरान हुआ कि युवती पर उसकी निगाह पहले क्यों न पड़ी जबकि वो हर तरफ नजर रखे हुए था।

"सोमारा।" सोमाथ युवती पर निगाहें टिकाए कह उठा—"उठो, वो देखो कौन है।"

सोमारा ने फौरन आंखें खोलीं और उठ बैठी।

"उधर देखो।"

सोमारा उधर देखते ही हैरान हो उठी।

"वो कौन है, इस घने जंगल में क्या कर रही है?" सोमारा के होंठों से निकला।

"वो हममें से तो कोई नहीं लगती।"

"हमें उससे बात करनी चाहिए।" सोमारा खड़ी हो गई।

दोनों पेड़ के नीचे बैठी युवती की तरफ बढ़ गए।

"हम कब से यहां हैं, तुमने उसे पहले क्यों नहीं देखा?" सोमारा बोली।

"शायद वो अभी यहां आई है। पहले तो मुझे नहीं दिखी।"

दोनों युवती के पास पहुंचे तो उसे सुबकते पाया। आंसू गालों तक आए हुए थे। वो रोती थी। उसने दोनों को देखा तो जोर-जोर से रोने लगी।

"तुम कौन हो।" सोमारा उसके पास बैठती कह उठी—"रो क्यों रही हो और इस जंगल में कैसे आई?"

"खुंबरी बहुत बुरी है।" दोती ने रोते हुए कहा—"उसने मेरा दिल दुखाया है।"

"खुंबरी?" सोमारा चौंकी।

सोमाथ के होंठ सिकुड़ गए।

दोती रोती रही।

"तुम खुंबरी को जानती हो?"

"मैं उसकी दासी हूं। पर अब मैं उसकी सेवा नहीं करूंगी। वो बुरी है।"

"तुम उसकी दासी हो।" सोमारा की आंखें चमक उठीं—"फिर तो वो पास में ही कहीं रहती होगी।"

"हां।" रोते हुए दोती ने सोमारा को देखा—"अब मैं उसके काम नहीं किया करूंगी।"

सोमारा ने सोमाथ को देखा फिर दोती से कह उठी।

"ऐसी क्या नाराजगी हो गई खुंबरी से। वो तो बहुत अच्छी है।"

"उसे प्यार हो गया है।"

"प्यार हो गया है? तो इसमें कौन-सी बुरी बात है। सब ही प्यार करते हैं।"

"तो मुझसे क्यों कहा करती थी कि वो प्यार नहीं करेगी। अब तो वो मेरी भी परवाह नहीं कर रही।"

"दिल छोटा न कर—सब ठीक...।"

"जाने कहां से आ गया बबूसा और...।"

"बबूसा?" सोमारा चौंकी—"क्या हुआ बबूसा को?"

"उसी से तो खुंबरी को प्यार हुआ है।" दोती अब सुबक रही थी।

"क्या?" सोमारा हक्की-बक्की रह गई—"बबूसा ने खुंबरी से प्यार कर लिया।"

"वो ही तो कह रही हूं मैं। जाने कैसा प्यार हुआ है कि खुंबरी मेरी भी परवाह नहीं कर रही। पहले तो दोती-दोती कहकर मेरे आगे-पीछे घूमा करती थी अब कहती है मेरे कमरे में भी मत आना। बबूसा के साथ कमरे में बंद रहती है।"

"बबूसा के साथ?"

"और क्या...दोनों हर वक्त ही प्यार करते रहते हैं। मेरा दिल तोड़ दिया खुंबरी ने।"

सोमारा से कुछ कहते न बना।

सोमाथ पास खड़ा दोनों की बातें सुन रहा था।

"बबूसा भी बहुत बुरा है। मैंने उन दोनों की बातें छिपकर सुनी।" दोती कह उठी।

"बबूसा, खुंबरी से प्यार नहीं कर सकता।" सोमारा परेशान-सी बोला—"वो मेरे से प्यार करता है।"

"तुम्हारे से? तुम सोमारा हो क्या?"

"हां।"

दोती आंसुओं को साफ करते कह उठी।

"मैंने अभी बताया न कि मैंने छिपकर उनकी बातें सुनीं।"

"तुझे मेरा नाम कैसे पता चला?"

"उनकी बातें तेरे को बताऊंगी तो तू समझ जाएगी। अच्छा हुआ जो तू मिल गई।"

"क्या कहना चाहती है तू?"

"तू सतर्क रहना। बबूसा और खुंबरी तेरे को मारने की सोच रहे हैं।" दोती ने कहा।

"नहीं।" सोमारा के होंठों से निकला।

"तेरे को मेरे पे भरोसा तो है न?"

"हां, हां, भरोसा है। तू कह...।"

"बबूसा तो खुंबरी से प्यार करने को तैयार ही नहीं था। कहता था वो तो सोमारा से प्यार करता है।"

"ठीक ही तो कहा उसने।" सोमारा ने व्यग्र स्वर में कहा।

"पर खुंबरी ने अपनी सुंदरता का जादू उस पर चला दिया। बबूसा, खुंबरी की बांहों में चला गया।"

"ये तू क्या कह रही है।"

"मैंने खुद सब देखा-सुना। वो ही तेरे को बता रही हूं।"

"बता—बता...।" सोमारा बहुत ही ज्यादा व्याकुल दिख रही थी।"

"बबूसा ने खुंबरी से कहा कि अगर सोमारा को पता चल गया कि मैं तुमसे प्यार करने लगा हूं तो वो मुझे मार देगी।"

"ठीक ही तो कहा बबूसा ने—फिर?"

"बबूसा ने कहा कि सोमारा के होते वो किसी और से प्यार नहीं कर सकता।"

"वो तो मुझे पता ही है, बबूसा सिर्फ मेरे से प्यार करता है—फिर?"

"खुंबरी ने कहा कि उसे सोमारा से डरने की जरूरत नहीं, वो सोमारा को मार देगी।"

"ऐसा कहा खुंबरी ने, तब तो बबूसा ने खुंबरी का गला दबा दिया होगा।" सोमारा बोली।

दोती ने सोमारा को देखा फिर कह उठी।

"तू बहुत भोली है।"

"क्या मतलब?"

"बबूसा को खुंबरी जैसी औरत मिलेगी तो वो तेरी क्यों परवाह करेगा।"

"क्या कहना चाहती है तू?"

"बबूसा मान गया। उसने खुंबरी से कहा कि सोमारा की जान ले लेना। उसे जिंदा मत छोड़ना।"

"बबूसा ऐसा नहीं कह सकता।"

"उसने ऐसा कहा है। मैंने अपने कानों से सुना।" दोती बोली—"अब तो दोनों हर वक्त कमरे में बंद रहते हैं। खाना भी वक्त पर नहीं खाते। खुंबरी अब मेरी जरा भी परवाह नहीं करती। वो तो कहा करती थी कि मर्द से उसे प्यार नहीं होता। और अब बबूसा को एक पल के लिए भी नहीं छोड़ती। मेरा काम ही क्या है वहां पर। मैं खुंबरी की सेवा नहीं करूंगी।"

सोमारा का चेहरा मुर्झा गया।

"तो बबूसा खुंबरी से प्यार करने लगा है।" सोमारा ने थके स्वर में कहा।

"उसने तो तेरे को मार देने पर भी हामी भर दी है। तेरा बबूसा तो बेईमान निकला।"

सोमारा की आंखें भर आईं।

"खुंबरी और बबूसा, दोनों ही बुरे हैं। खुंबरी ने मेरा दिल तोड़ा, बबूसा ने तेरा दिल तोड़ दिया। कहां पहले मैं खुंबरी की मालिश किया करती थी। उसके हाथ-पैर दबाया करती थी। कितनी सेवा करती थी। मेरे बिना तो खुंबरी का दिल ही नहीं लगता था। अब तो वो मुझे भूल ही गई है। बबूसा-बबूसा करती रहती है बबूसा भी तो कितना तगड़ा है, खुंबरी फिर क्यों न उसके पीछे पागल होगी।"

सोमारा की आंखों से आंसू निकलकर गालों पर आ गए।

"कब मिला बबूसा खुंबरी को?" सोमाथ ने पूछा।

"कल रात को।" दोती ने कहा।

"मुझे नहीं लगता तुमने जो कहा है वो सच है।" सोमाथ ने कहा।

"लो जी।" दोती अपने माथे पर हाथ मारकर कह उठी—"भला मैं झूठ क्यों बोलूंगी?"

"बबूसा ऐसा इंसान नहीं है जो कि खुंबरी से प्यार करने लगे और सोमारा को मारने के लिए तैयार हो जाए।"

"बबूसा के बस में कुछ नहीं है। जादू जानती है खुंबरी। जिसे चाहे अपना दीवाना बना सकती है। उसने बबूसा पर जादू कर रखा है। बबूसा को होश ही कहां है कि खुंबरी के जादू को समझ सके। मेरी तो किस्मत ही

फूट गई है। जब से बबूसा खुंबरी को मिला है, मेरे पास कोई काम ही नहीं रहा करने को।"

"खुंबरी कहां रहती है, हमें बता।" सोमाथ ने सख्त स्वर में कहा।

"हाय री।" दोती उसी पल सोमारा से कह उठी—"तेरी अंगूठी कितनी अच्छी है। ऐसी ही अंगूठी बबूसा ने खुंबरी को दी है। उसे पहनकर खुंबरी बड़ा इतरा रही है, जरा मुझे तो दिखाना, मैं भी पहनकर देखूं।"

"तू मुझे बबूसा के पास ले चल।" सोमारा परेशान-सी कह उठी।

"अभी ले चलती हूं। एक बार अंगूठी तो दिखा दे। पहनकर देख लूं।"

"ये अंगूठी नहीं उतारूंगी।"

"तू तो बड़ी खराब है। मेरी जरा-सी बात नहीं मान रही।" दोती ने मुंह बनाकर कहा—"मैं अंगूठी लूंगी तो नहीं। उंगली में पहनकर एक बार देखनी है। खुंबरी ने भी ऐसी अंगूठी पहन रखी है, दिखा तो...।"

"तू मुझे बबूसा के पास ले जाएगी न?" सोमारा ने पूछा।

"अभी ले चलती हूं, उसमें क्या है।" दोती बोली—"एक बार अंगूठी तो पहनने दे मुझे।"

सोमारा सिर उठाकर पास खड़े सोमाथ से बोली।

"दे दूं इसे अंगूठी। पहनकर मुझे वापस दे देगी।"

सोमाथ ने जंगल में हर तरफ नजरें घुमाई फिर कहा।

"कोई हर्ज नहीं, एक बार पहन लेने दे इसे। ये हमें खुंबरी तक ले जाएगी।"

सोमारा ने अंगूठी निकाली उंगली से और दोती को दे दी।

दोती ने फौरन अंगूठी ली और अपने हाथ की उंगली में पहन ली।

"आह। ये तो मेरे हाथ में बहुत अच्छी लग रही है। ये तू मुझे ही दे दे।" दोती मुस्करा पड़ी।

"नहीं।" सोमारा बोली—"ये अंगूठी मेरे बड़े काम की है।"

"मैं सब समझती हूं कि तेरे किस काम की है।" दोती ने आंखें नचाई।

"अंगूठी मुझे दे और हमें बबूसा और खुंबरी के पास ले चल।"

"बहुत चिंता हो रही है बबूसा की?" दोती हंस पड़ी।

"वो मेरा है। खुंबरी उससे प्यार नहीं कर सकती।"

"मैंने तो सब कुछ तेरे से झूठ कहा था। खुंबरी क्या बबूसा से प्यार करेगी।"

"क्या मतलब?"

"मतलब अभी समझाती हूं जरा अपना हाथ तो मेरे हाथ में दे।"

उलझन में फंसी सोमारा ने अपना हाथ आगे बढ़ाया। दोती ने उसका हाथ थामा तो सोमारा को वो हाथ, हाथ न लगकर, बेहद कोमल-सा

स्पर्श महसूस हुआ। इस बारे में सोमारा कुछ कहती तभी उसने दोती को होंठों-ही-होंठों में कुछ बड़बड़ाते देखा कि उसी पल दोती और सोमारा ऐसे गायब हो गए, जैसे हवा में घुल गए हों।

पास खड़ा सोमाथ दोनों को इस तरह गायब पता होता पाकर भौंचक्का रह गया। उसने हैरानी की स्थिति में पड़कर जंगल में हर तरफ देखा परंतु कोई भी नजर नहीं आया।

"सोमारा।" सोमाथ ने ऊंचे स्वर में पुकारा।

परंतु जवाब में खामोशी छाई रही।

"तुम कहां हो सोमारा?" सोमाथ ने पुनः आवाज लगाई।

लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ।

"ये तो बुरा हो गया।" सोमाथ होंठ भींचे कह उठा—"वो दोती, खुंबरी की भेजी ताकत थी। पहले तो उसने बहाने से सोमारा की सुरक्षा कवच वाली अंगूठी ली फिर अपना जादू सोमारा पर चला दिया। मैं धोखा खा गया।"

▭ ▭

दिन का उजाला फैलते ही डुमरा की आंख खुल गई। लेटे ही लेटे डुमरा ने जंगल में इधर-उधर नजरें मारीं और उठ बैठा। चेहरे पर गम्भीरता नजर आ रही थी। लम्बे पलों तक वो सोच भरी मुद्रा में बैठा रहा। उसके पास सामान के दो थैले थे। घोड़े पर सवार होकर जंगल तक आया था और फिर घोड़ा छोड़कर ही जंगल में प्रवेश कर आया था। ये कल दोपहर की बात थी और दिन भर जंगल का रास्ता पैदल ही तय करता रहा और रात को यहां आ लेटा था। उसे अभी तक जंगल में ऐसा कुछ नहीं दिखा था कि जिस पर खुंबरी का ठिकाना होने का शक होता। डुमरा ने एक थैले में हाथ डाला और छोटी-सी कांटेदार बाल जैसी कोई चीज निकाली और उसका एक बाल तोड़कर सामने फेंका तो उसी पल आवाज उभरी।

"कहो डुमरा। क्या काम है?"

"नाम क्या है तेरा?" डुमरा बोला।

"खोमा।" वो आवाज पुनः सुनाई दी।

"खुंबरी का पता उन लोगों में से किसी को मिला?" डुमरा ने पूछा।

"नहीं। वो लोग खुंबरी की कैद में पहुंच गए हैं। जगमोहन और सोमाथ ही बचे हुए हैं।" खोमा का स्वर उभरा।

"ये कैसे हो सकता है कि वो खुंबरी की कैद में पहुंच जाएं?" डुमरा के माथे पर बल दिखने लगे।

"दोती नाम की ताकत ने चालाकी से सबको कैद में डाल दिया है। उनका सुरक्षा कवच पहले ही उतरवा लिया था।"

"तो खुंबरी की ताकतें हरकत में आ चुकी हैं।"

"हां। जगमोहन, बार बार उनकी चालाकी को मात दे रहा है।"

"इसका मतलब वो लोग फंस गए हैं। खुंबरी का ठिकाना नहीं ढूंढ पाएंगे। सोमाथ क्या कर रहा है?"

"वो जंगल में घूमता फिर रहा है। उस पर ताकतें असर नहीं कर सकतीं।"

डुमरा के चेहरे पर गम्भीरता दिख रही थी।

"ठीक है, तू जा।"

खोमा की फिर आवाज नहीं आई।

"तोखा।" डुमरा ने धीमे से पुकारा।

"मैं आ गया डुमरा। कल से तूने मुझे बुलाया ही नहीं।" तोखा की आवाज आई।

"मेरे यहां आने का कोई फायदा नहीं हुआ। खुंबरी की ताकतों ने जगमोहन और सोमाथ को छोड़कर सबको कैद में कर लिया है।"

"मैंने खोमा की बात सुन ली है।" तोखा का स्वर कानों में पड़ा।

"जगमोहन भी कहीं सबकी तरह खुंबरी की कैद में न पहुंच जाए। वैसे भी वह अकेला इतने बड़े जंगल में से खुंबरी का ठिकाना कैसे तलाश कर पाएगा। समस्या पैदा हो गई है।" डुमरा ने विचार भरे स्वर में कहा "मैंने तो सोचा था कि उनमें से कोई खुंबरी का ठिकाना ढूंढ लेगा और मुझे पता चल जाएगा।"

"तुम्हें यहां तक नहीं आना चाहिए था डुमरा। तुमने खतरा मोल लिया है।"

"खुंबरी की ताकतें मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकतीं। तुम जानते ही हो।"

"लेकिन इन जंगलों में खुंबरी रहती है। तुम्हें खतरा पैदा हो सकता है। उसकी किसी चाल में तुम फंस सकते हो।"

"मैं चाहता हूं कि खुंबरी की ताकतें मुझ पर वार कर दें, ताकि मुझे भी वार करने की आजादी मिल सके।"

"तो ये है तुम्हारा मकसद।"

"बड़ी शक्तियां सीधे तौर पर मेरा साथ नहीं दे रहीं। सब कुछ मुझे अपने विचारों से ही करना है। मैं खुंबरी पर वार करने से आजाद रहना चाहता हूं वो तभी हो सकता है, जब पहला वार खुंबरी मुझ पर कर दे।"

"क्या पता इसके लिए तुम्हें कितना इंतजार करना होगा।" तोखा की आवाज कानों में पड़ी—"परंतु तुम्हें अन्य लोगों की चिंता होनी चाहिए। वो सब खुंबरी की कैद में हैं। क्या पता उन्हें मार दिया गया हो।"

"कह नहीं सकता। खुंबरी के आसपास क्या हो रहा है, ये कोई शक्ति

नहीं जान पाती। ताकतों के साये फैले हैं खुंबरी के ठिकाने के गिर्द। परंतु मैं सोच रहा हूं कि खुंबरी खामोश बैठकर क्या कर रही होगी?"

"वो जरूर तुम्हारे लिए जाल बुन रही होगी।"

"फिर तो उसे मुझ पर वार करना चाहिए।"

"सतर्क रहकर मुझसे बात करो। इस जंगल में खुंबरी की ताकतों का जाल फैला हो सकता है। वो हमारी बातें सुन सकती है। उन्हें ये पता नहीं लगना चाहिए कि तुम्हें मायूसी हो रही है कि खुंबरी का ठिकाना नहीं जान पाए।"

"मैं जरा भी मायूस नहीं हुआ तोखा।" डुमरा बोला—"मुझे पता है इस काम में कितना भी वक्त लग सकता है। मैं तो उन लोगों के बारे में सोच रहा हूं जिन्हें मैंने भेजा और सुरक्षा कवच होते हुए भी वे ताकतों की चालों में फंस गए।"

"उन्हें कुछ हो गया तो जिम्मेवारी तुम पर आएगी।" तोखा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"मैं उनके लिए चिंतित हूं परंतु कुछ कर नहीं सकता। मुझे नहीं पता वो कहां हैं।" डुमरा उठते हुए बोला—"मुझे यहां से चलना चाहिए। खुंबरी के ठिकाने को तलाशने की चेष्टा करनी चाहिए।"

दोनों थैले उठाए डुमरा जंगल में आगे बढ़ गया। वो जानता था कि दूर तक फैले जंगल में खुंबरी की जगह को ढूंढ पाना आसान होता तो, इस तरफ पहले ही आ गया होता। ये काम आसान नहीं है। इंसानी आंखें ही जंगल में मौजूद खुंबरी के ठिकाने को देख सकती हैं, शक्तियां नहीं देख सकतीं। जबकि रानी ताशा, नगीना, देवराज चौहान, मोना चौधरी, सोमारा और बबूसा पर खुंबरी की ताकतें काबू पा चुकी हैं। ऐसे में अब कम ही आशा थी खुंबरी तक पहुंच पाने की। दो घंटे चलते रहने पर डुमरा को भूख लगी तो पेड़ के नीचे बैठकर खाना खाने लगा। सूर्य निकल आया था। किरणें पेड़ों के बीच में से अपनी जगह बनाती जमीन पर पड़ रही थीं लेकिन ये नजारा कहीं-कहीं ही था।

खाना खाने के बाद डुमरा ने पुनः चलने की तैयारी की तो दोती की खनकती आवाज कानों में पड़ी।

"तुम्हें देखकर बहुत खुशी हुई डुमरा। तुम तो बहुत कम उम्र के हो।"

डुमरा ने तुरंत आवाज की तरफ नजरें घुमाईं।

चंद कदमों के फासले पर दोती खड़ी दिखी। डुमरा ने थैले नीचे रखे और दोती को देखने लगा। फिर उसके चेहरे पर मुस्कान आ ठहरी। वो आगे बढ़ता कह उठा।

"तुम दोती हो न?"

"मैं जानती हूं तूने अपनी शक्तियों से मेरे बारे में जान लिया होगा। कैसी लगी मैं तुम्हें।"

आगे बढ़ता डुमरा दोती को इस तरह पार कर गया जैसे वो हवा हो।

दोती पलटकर डुमरा से कह उठी।

"शरीर साथ हो तो काम धीमे होता है। अपने आकार को लेकर ही हर जगह पहुंच जाती हूं।"

"तुम तो बहुत चालाक हो जो सबको कैद कर लिया।" डुमरा बोला।

"वो सब तो मेरे लिए छोटे बच्चे हैं।" दोती हंसी—"ये काम मेरे लिए कठिन नहीं रहा।"

"जगमोहन को नहीं पकड़ पाई।"

"वो जरा चालाक है। मेरी चाल को पहले ही समझ जाता है। पर वो भी पकड़ा जाएगा।"

"कहां ले गई सबको?"

"खुंबरी के पास कैद में।"

"मारा नहीं अभी तक उन्हें।"

"खुंबरी कहती है सबको एक साथ मारेंगे। ताकतें उनका खून देखकर बहुत खुश हो जाएंगी।"

"सोमाथ को तो तुम पकड़ ही नहीं सकतीं।"

"वो तो कृत्रिम इंसान है। उस पर ताकतों का असर नहीं होता। पर वो जंगल में ही भटकता रहेगा। उससे खुंबरी को कोई खतरा नहीं होगा। मैं तो तेरे लिए आई हूं डुमरा।" दोती ने प्यार से कहा—"मैंने तो सोचा था तू बूढ़ा होगा पर...।"

"मैंने नया शरीर पाया है। बूढ़ा शरीर छोड़ दिया।"

"खुंबरी को मारने आया है तू?" दोती ने होंठ सिकोड़े।

"तू क्यों आई मेरे पास?"

"मैं तेरे को भी कैद में पहुंचा देना चाहती हूं पर ऐसा मेरे से हो नहीं सकेगा।"

"तू मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकती।"

"जानती हूं।" दोती ने गहरी सांस ली—"तू भी मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता।"

"कोई और वक्त होता तो मैंने तेरे को जला दिया होता तू मेरे पास आती ही नहीं।" डुमरा ने शांत स्वर में कहा—"पर मैं अभी खुंबरी की ताकतों पर वार नहीं कर सकता। तेरे को सब पता है।"

"तभी तो मैं तेरे सामने आ गई कि तू मुझ पर वार नहीं करेगा। मेरी मान तो झगड़ा मत कर।"

"क्या मतलब?"

"खुंबरी से दोस्ती कर ले।"

"क्यों नहीं, मैं तो तैयार हूं खुंबरी के संग बैठने को।" डुमरा मुस्करा पड़ा—"पर उसे तुम बुरी ताकतों का साथ छोड़ना होगा।"

"हम इतनी तो बुरी नहीं।"

"तुम ताकतों ने ही खुंबरी को भटका रखा है तुम ताकतों के बिना वो चैन से जिंदगी बिताएगी।"

"तू हमारे पीछे क्यों पड़ा है डुमरा?"

"जब तुम सब नागाथ की सेवा में थीं तो तब शक्तियां नागाथ के पीछे थीं।"

"पर शक्तियां तो नागाथ का भी कुछ नहीं बिगाड़ सकी थीं।"

"शक्तियों की बात न मानने पर नागाथ को अपने शरीर का त्याग करना पड़ा था।"

"उससे ताकतों को क्या फर्क पड़ा, हमें खुंबरी जैसी मालकिन मिल गई। हमारा काम तो चल ही रहा है।" दोती हंसी।

"मैं तुम ताकतों को खत्म करके ही रहूंगा।" डुमरा ने सख्त स्वर में कहा।

"हम तेरे को खुंबरी के पास फटकने भी नहीं देंगे। तू थक जाएगा डुमरा।"

"डुमरा कभी नहीं थकता, तुम तो...।"

"तेरे को दुख तो बहुत हो रहा होगा कि खुंबरी पांच सौ सालों बाद वापस आ गई। तूने तो सोचा होगा कि खुंबरी से पीछा छूटा। पर हमने पांच सौ साल खुंबरी का खयाल रखा, तभी तो वो वापस आ पाई। नहीं तो जन्मों के फेर में भटक जाती।"

"अब क्यों आई है मेरे पास?"

"ओहारा ने कहा, तू डुमरा का हाल पूछ, मैं आ रहा हूं।" दोती गम्भीर होती दिखी।

"ओहारा?"

"जिसकी सेवा में मैं काम करती हूं। वो बड़ी ताकत है। वो तेरे पास अभी आने वाला है।"

डुमरा एकाएक सतर्क होता दिखा।

"डुमरा।" तोखा की मध्यम आवाज कानों में पड़ी—"ये ठीक कह रही है। मैंने किसी ताकत के आने का आभास पा लिया है।"

डुमरा चुप रहा।

"तेरे पर वार होने वाला है।" तोखा ने पुनः कहा।

"ये तो खुशी की बात है।" डुमरा ने कहा—"मैं तो कब से वार होने का इंतजार कर रहा हूं।"

"क्या कहा?" दोती कह उठी।

डुमरा खामोश खड़ा, दोती को देखता रहा।

"समझी, तू अपनी शक्तियों से बात कर रहा है।" दोती बोली—"पर ओहारा का मुकाबला तू नहीं कर सकता।"

जवाब में डुमरा मुस्करा पड़ा।

"ओहारा को गुस्सा मत दिलाना, वरना वो तेरे को छोड़ेगा नहीं।" दोती ने पुनः कहा।

डुमरा तब भी कुछ नहीं बोला।

उसी पल चंद कदमों पर जैसे बिजली-सी कौंधी और बड़ा-सा गोला दिखा कोहरे का जो कि धीरे-धीरे मानव आकृति में बदलकर, ओहारा के रूप में सामने दिखने लगा। वो पच्चीस बरस का खूबसूरत युवक था, जो कि डुमरा को देखते हुए मुस्करा रहा था। उसके शरीर पर कमीज-पैंट जैसे कपड़े दिख रहे थे। गले में लकड़ियों की छोटी-सी माला पड़ी थी। पांवों में कुछ नहीं पहना था। डुमरा को देखने के बाद उसने दोती को देखा तो दोती कह उठी।

"हुक्म ओहारा।"

ओहारा ने कुछ नहीं कहा और पुनः डुमरा को देखा।

"तेरा नाम बहुत सुना था डुमरा। तूने तो खुंबरी को खूब परेशान किया। अब वो तेरे को मारना चाहती है।"

"तो मुझे मार दो।"

"मैं तुझे मारने ही आया हूं।" ओहारा बोला—"तू मेरे वार से बच नहीं सकेगा।"

"तेरे जैसी ताकतें खुंबरी के पास हैं तो वो छिपती क्यों है। सामने क्यों नहीं आती?" डुमरा बोला।

"खुंबरी को छिपकर रहने की आदत नहीं है। दूसरे ग्रह से आकर वो आराम कर रही है।"

"मैं जानता हूं वो सामने नहीं आएगी।"

"तेरी शक्तियां तुझे, मेरे वार से बचा नहीं सकेंगी।" ओहारा मुस्कराया।

डुमरा ने गले में पड़े लॉकेट को मुट्ठी में जकड़ लिया। नजरें ओहारा पर थीं।

"इससे क्या तू बच जाएगा।" ओहारा हंसा।

"तेरे को एक ही वार करने का मौका मिलेगा। उसके बाद मुझे वार करने की छूट होगी।" डुमरा ने कहा—"तुम बुरी ताकतों ने खुंबरी को भटका रखा है। वो तुम सबको अपना समझती है जबकि...।"

"हम ताकतें खुंबरी का बहुत ध्यान रखती हैं और खुंबरी हमारा बहुत ध्यान रखती है। हम ऊर्जा के बिना मरने की हालात में पहुंच चुकी थीं कि

खुंबरी वक्त पर आ गई और हमें ऊर्जा दी। खुंबरी के बिना हम नहीं जी सकती।"

"मैं खुंबरी की जान लेने आया हूं।"

"ताकतों के होते तू खुंबरी का कुछ नहीं बिगाड़ सकता डुमरा। हम खुंबरी को कुछ नहीं होने देंगे। हमारा जीवन खुंबरी में ही बसता है। वो है तो हम हैं और वो रहेगी।" ओहारा का स्वर सख्त हुआ और अपना दायां हाथ उठाकर होंठों-ही-होंठों में कुछ बड़बड़ाया तो अगला पल हैरान कर देने के लिए काफी था।

ओहारा के उठे हाथों से जैसे छोटे-छोटे चमकीले असंख्य तीर निकलकर, डुमरा की तरफ बढ़े और उसके शरीर से टकराकर नीचे गिरते हुए लुप्त होने लगे।

डुमरा ने हाथ में लॉकेट को पकड़ रखा था।

ओहारा का हमला जारी था।

एकाएक ओहारा परेशान-सा दिखा। उसी पल उसने दूसरा हाथ ऊपर उठाया और होंठों-ही-होंठों में जाने क्या बड़बड़ाया कि तभी दूसरे हाथ से काले रंग के तीर निकलकर डुमरा पर बरसने लगे। परंतु उनका हाल भी पहले जैसे तीरों जैसा ही हुआ। तीर डुमरा के शरीर से टकराते रहे और नीचे गिरकर लुप्त होते रहे।

ये सब कुछ दो मिनट तक रहा।

इन दो मिनटों में ऐसा लगा जैसे छोटा-सा तूफान गुजर गया हो।

फिर ओहारा ने दोनों हाथ नीचे कर लिए। उसके चेहरे पर क्रोध नाच रहा था। जबकि डुमरा के होंठों पर मुस्कान थी। उसी पल दोनों अपनी जगह से गायब हो गई।

"शुक्रिया ओहारा। वार करके तूने मेरी बहुत बड़ी समस्या हल कर दी। अब मैं आजाद हूं खुंबरी पर और तुम ताकतों पर वार करने के लिए।" डुमरा ने मीठी मुस्कान के साथ कहा—"अब मेरे हाथ बंधे हुए नहीं हैं। वरना मैं तो मजबूर था कि खुंबरी पर वार नहीं कर सकता। तुमने मेरे लिए रास्ता बना दिया।"

"तू बचेगा नहीं डुमरा।" ओहारा गुर्रा उठा—"मैं फिर आऊंगा।"

"मैं चाहूं तो अभी तेरे पर वार कर सकता हूं परंतु तूने मेरी समस्या हल की है। ऐसे में इस बार मैं तेरे पर वार नहीं करूंगा परंतु अगली बार तुझे छोड़ूंगा भी नहीं।" डुमरा ने कहा।

उसी क्षण गुस्से में ओहारा ने अपने दोनों हाथ एक साथ ऊपर उठाए और बड़बड़ाया तो उसके हाथों से सतरंगी बड़े-बड़े छल्ले निकलने लगे और वो छल्ले डुमरा के सिर से होते, उसे घेरे में लेते उसके पैरों में गिरने लगे।

पांवों से छल्ले इकट्ठे होते ऊपर की तरफ उठने लगे। छल्लों की दीवार में डुमरा की टांगें छिपने लगीं। वो हर पल और ऊपर उठते जा रहे थे।

डुमरा ने लॉकेट को मुट्ठी में भींच रखा था और मुस्करा रहा था।

जल्दी ही वो वक्त आ गया जब छल्लों ने सिर से पांव तक डुमरा को अपने भीतर छिपा लिया। एकाएक छल्लों की बरसात रुक गई। ओहारा ने हाथ नीचे कर लिए और चमक भरी निगाहों से छल्लों को देखने लगा जिनके भीतर डुमरा कैद हो चुका था। परंतु ये पल ज्यादा देर तक कायम न रहे और तभी वो छल्ले चटक-चटककर टूटने लगे। गिरने लगे। कुछ ही क्षणों में सारे छल्ले चटककर बिखर चुके थे और फिर वे लुप्त हो गए। डुमरा सही सलामत सामने खड़ा था। होंठों के बीच मुस्कान फंसी थी।

"मैं फिर आऊंगा।" ओहारा चीखा—"देखता हूं तेरी शक्तियां तुझे कब तक बचाती हैं।" इसके साथ ही ओहारा का शरीर हवा में घुलता हुआ गायब होता चला गया।

डुमरा ने लॉकेट छोड़ा और गहरी सांस ली। चेहरे पर गम्भीरता आ गई।

"डुमरा।" तोखा की आवाज कानों में पड़ी—"उसके दूसरे वार से मैं तो घबरा ही गया था। छल्लों के बीच फंसाकर मेरा तो दम ही घुटने लगा था। बहुत जबर्दस्त वार किया था उसने तुम पर।"

"वो बड़ी ताकत थी। पर मेरी शक्तियों ने मुझे बचाए रखा।" डुमरा बोला।

"अब तो खुंबरी की तरफ से पहला वार तुझ पर हो गया। अब तू भी वार करने को आजाद है।"

"इस बात की मुझे खुशी है। मैं ऐसा ही चाहता था। मेरे लिए रास्ता साफ हो गया। खुंबरी खुलकर सामने आने को तैयार हो गई है। वो अपनी कई ताकतों को अब मेरे पास भेजेगी। वो हर हाल में मेरे से श्राप का बदला लेना चाहेगी। इस बार उसकी ताकतें मुझे मारने को पूरा जोर लगा देंगी।"

"फिर तो तुझे सतर्क रहना होगा, हो सकता है ताकतों का कोई वार तुम पर चल जाए।"

डुमरा उसी पल पीठ की तरफ घूम गया।

कुछ ही दूरी पर सोमाथ खड़ा था।

दोनों की नजरें मिलीं। सोमाथ मुस्कराकर बोला।

"ओहारा अपने को बहुत बड़ी ताकत समझता था। तुमने उसके वारों को असफल करके उसे अक्ल सिखा दी। कम-से-कम अब वो मेरे सामने अकड़ दिखाएगा तो मैं उसे कह तो सकूंगा कि पहले डुमरा को मारकर दिखाओ।"

डुमरा ने उसी पल अपना लॉकेट थाम लिया।

"मैं तुम पर वार करने नहीं आया।" सोमाथ कह उठा—"शक्तियों की

डोर को थामने की जरूरत नहीं। मैं तो तुमसे खुश हूं कि तुमने ओहारा को नीचा दिखा दिया। अब मेरे सामने अकड़ा तो नहीं करेगा।"

"तुम कौन हो?"

"मैं टोमाथ हूं। तुम कहो तो तुम्हें खुंबरी के पास ले जा सकता हूं। ज्यादा दूर तक नहीं चलना पड़ेगा। पास ही में है।"

डुमरा खुलकर मुस्कराया।

"तुम तो बहुत अच्छे इंसान लगते हो। खुंबरी ने तुम्हें खामखाह ही बदनाम कर रखा है।" टोमाथ भी मुस्कराया।

तभी तोखा ने धीमे स्वर में, कान में कहा।

"ये बहुत चालाक ताकत है। इसकी बातों में जरा भी नहीं आना।"

"मैं इन ताकतों की चालों को बाखूबी समझता हूं। ये सिर्फ खुंबरी की दोस्त हैं।" डुमरा बोला।

"तुमने मुझसे कुछ कहा। जरा ऊंचा बोलो।" टोमाथ ने कहा।

"मैंने कहा है कि खुंबरी कुछ देर पहले ही मुझे मिली थी।" डुमरा मीठे स्वर में बोला—"उसने मुझसे कहा था कि जल्दी ही वो टोमाथ को रास्ता दिखाने को भेजेगी। तुम तो बहुत जल्दी आ गए।"

टोमाथ ने पलकें झपकाईं और हंस पड़ा।

"मजाक मत करो। खुंबरी तो सुबह से ही गहरी नींद में है। वो शाम से पहले नहीं उठने वाली। अगर तुम खुंबरी से मिलना चाहो तो मैं तुम्हें ले चलता हूं। खुंबरी को भी जगा दूंगा। वो तुमसे मिलकर खुश होगी।" टोमाथ बोला।

"मैं खुंबरी से मिलने की इच्छा नहीं रखता।"

"तुम अच्छे इंसान हो। अभी तक मुझ पर वार नहीं किया। कोई और होता तो मुझे देखते ही वार करता।"

"मैं कभी भी तुम पर वार कर सकता हूं।"

"मजाक मत करो।" टोमाथ ने कहा—"आओ चलते चलते बातें करते हैं।"

"तुम्हें जो कहना है यहीं कहो। जब तक तुम मेरे सामने हो, मैं एक कदम से ज्यादा नहीं चलूंगा। तुम जैसी घटिया ताकतें मेरे पांव बांधने की चेष्टा कर सकती हैं। तुम में ज्यादा ताकत नहीं है, पर मुझे नुकसान तो पहुंचा सकते हो।"

टोमाथ एकाएक गम्भीर दिखने लगा और बोला।

"तुम ऐसी ही निगाहों से मुझे देखोगे डुमरा। मेरे पर शक भी करोगे। तुम हर उस चीज को शक की निगाहों से देखोगे, जिसके पास ताकत होकर गुजरती हो। परंतु मैं तुम्हें सच कह रहा हूं कि खुंबरी से मेरा मन भर चुका है। मैं आजाद होना चाहता हूं। इस बारे में मैंने खुंबरी से कई बार कहा पर

वो मुझे आजाद नहीं करती। मैं चाहता हूं कि तुम खुंबरी को मार दो। अभी वो गहरी नींद में है। मैं तुम्हें खुंबरी के पास ले चलता हूं, तुम उसकी गर्दन काट दो। तुम्हारा काम भी बन जाएगा और मेरा भी।"

"तो तुम खुंबरी की मौत चाहते हो?" डुमरा मुस्कराया।

"सच में। मैं उससे बहुत दुखी हूं। उसे मारकर मेरा भला करोगे।" टोमाथ ने थके स्वर में कहा—"तुम्हारे पास शक्तियां हैं कि तुम खुंबरी को मार सको। किसी से कहना नहीं कि मैंने ऐसा कहा है। बेशक सोच लो, मैं फिर आ जाऊंगा।"

तभी दोती की आवाज गूंजी।

"मैंने सब सुन लिया है टोमाथ। अब खुंबरी तेरी जान ले लेगी।"

कुछ फासले पर एकाएक दोती खड़ी नजर आने लगी थी।

"एक और आ गई।" तोखा बड़बड़ा उठा।

"अच्छा हुआ जो तूने सुन लिया। मैंने भी सुना था एक बार तो तू खुंबरी को गालियां दे रही थी।" टोमाथ बोला—"पर मैंने तो खुंबरी से नहीं कहा कि तू गालियां दे रही है उसे। तू भी तो खुंबरी से परेशान है।"

"पर तेरी तरह मैं किसी से कहती तो नहीं। तू दुश्मन डुमरा से सहायता मांग रहा है।" दोती ने कहा।

"जो मेरे काम आएगा, वो ही मेरा दोस्त है। डुमरा मेरी बात मानने जा रहा है।"

"कौन-सी बात?"

"ये अभी मेरे साथ खुंबरी के पास जाएगा और उसका गला काट देगा। डुमरा ने कहा है अभी।"

"सच?" दोती खुश हो उठी—"ये खुंबरी को मार देगा?"

"अभी पता चल जाएगा।" फिर टोमाथ ने डुमरा से कहा—"चल डुमरा आज खुंबरी की जान ले ले। मौका अच्छा है। वो गहरी नींद में है। सोने से पहले उसने खूब कारू (शराब) पी थी। उठ भी गई तो मुकाबला करने के काबिल नहीं होगी।"

"ये तो बहुत ही अच्छा मौका है खुंबरी का गला काटने का।" दोती ने पुनः खुशी से कहा।

तभी डुमरा ने होंठों ही होंठों में बुदबुदाना शुरू कर दिया। उसने ऐसा करते ही टोमाथ और दोती तुरंत गायब हो गए। डुमरा ने बुदबुदाना छोड़ा तो तोखा ने हंसकर कहा।

"भाग गए दोनों। तुमने इन पर वार क्यों नहीं किया?"

"ताकतें मुझे परेशान करने की कोशिश कर रही हैं। मैं इनकी चाल समझना चाहता हूं।"

"ओहारा फिर जरूर वार करेगा तुम पर। हो सकता है इस बार छिपकर धोखे से वार करे। वो तैयार होकर आएगा इस बार।"

"अब भी तो वो तैयार होकर आया था। मैं उसका मुकाबला कर लूंगा।" डुमरा बोला—"आगे चलते हैं।"

डुमरा ने थैले उठाए और चल पड़ा।

"एक शक्ति को फैलाकर चलो। कहीं भी तुम्हारे पांव बांधने के लिए ताकतों का जाल बिछा हो सकता है।"

डुमरा होंठो-ही-होंठों में कुछ बुदबुदाया। फिर चंद पल के बाद बोला।

"मैंने अपने आसपास शक्ति को फैला दिया है तोखा।"

"अब कोई खतरा नहीं। परंतु तुम्हें सतर्क रहना होगा। खुंबरी की ताकतों की नजर तुम पर टिक चुकी है डुमरा।"

▭ ▭
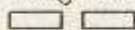
जगमोहन कंधे पर थैला डाले तेजी से आगे बढ़ा जा रहा था। कल, जब बबूसा, ताकतों के हाथों में पड़ गया था, उसके बाद उसके साथ कोई बात नहीं हुई थी। रात वो चैन से सोया था और सुबह उठा था। अब उसे महसूस होने लगा था कि खुंबरी को ढूंढ़ने का काम आसान नहीं है। जंगल बहुत ही घना और दूर-दूर तक फैला हुआ था। खुंबरी जाने कैसे ठिकाने में रह रही होगी। वो आसानी से नजर नहीं आने वाली। जगमोहन का खयाल था कि खुंबरी ने अपना ठिकाना जमीन के नीचे बना रखा होगा। जमीन के ऊपर ठिकाना बनाने की बेवकूफी वो नहीं करने वाली, जो कि सबको नजर आ जाएगा। जगमोहन नहीं जानता था कि वो किस दिशा में जा रहा है, बस वो आगे बढ़ता जा रहा था और उसकी नजरें हर तरफ जा रही थीं। पर ऐसा कुछ नहीं दिख रहा था जहां खुंबरी का ठिकाना होने की संभावना हो। देर तक चलते रहने से उसे थकान होने लगी थी, परंतु मन में था कि अभी और चलेगा। आराम नहीं करेगा।

एकाएक जगमोहन ठिठककर पलट गया।

पीछे से कदमों की आहटें आई थीं।

पीछे देखते ही जगमोहन चौंका। सोमाथ उसके पीछे आ रहा था। उसके रुकते वो भी रुक गया।

"तुम?" जगमोहन के दांत भिंच गए।

"मैंने सोचा तुम्हें बातें करने वाला कोई चाहिए होगा। अकेले में दिल नहीं लग रहा होगा।" सोमाथ मुस्कराकर बोला।

"बबूसा कहां है?"

"वो खुंबरी की कैद में है। कुछ देर पहले ही वो खाना खाकर हटा है। वो खुश है वहां। सोमारा भी उसके पास पहुंच गई है।"

"सोमारा?"

"हां। अब तो सिर्फ तुम और सोमाथ ही बचे हो। सोमाथ हमारे बस का नहीं है। वो कृत्रिम इंसान है। तुम सीधे-सीधे हमारे साथ क्यों नहीं चलते। हम तुम्हें छोड़ने वाले तो नहीं। अब नहीं तो कुछ देर बाद, पकड़े तो जाओगे ही।"

"तुमने मुझे धोखा दिया और बबूसा को पकड़ लिया।" जगमोहन गुस्से से कह उठा।

"उसमें मेरा कसूर नहीं था।" टोमाथ ने सिर हिलाया—"वो तो दोती की चालाकी थी। दोती ने ही कहा था कि ऐसा करते हैं। मैंने उसकी बात मान ली और तुम लोग दोती की चाल में फंस गए। दोती अब बहुत तेज हो गई है।"

जगमोहन खा जाने वाली निगाहों से टोमाथ को देखने लगा।

"अब तुम मुझसे नाराज हो तो मुझे माफ कर दो।" टोमाथ गम्भीर स्वर में बोला—"मैं तो खुद खुंबरी से परेशान हूं।"

"चले जाओ यहां से।"

"मैं जानता हूं कि एक बार धोखा खा लेने के पश्चात तुम मेरी बातों का भरोसा नहीं करोगे। लेकिन क्या करूं, खुंबरी का आदेश तो मानना ही पड़ेगा, जब तक वो जिंदा है। मैं तो चाहता हूं कि कोई उसे मार दे। मेरी बात मानो या न मानो, पर तुम जिस तरफ बढ़ रहे हो, उस तरफ खुंबरी नहीं मिलेगी। खुंबरी का ठिकाना तो उस तरफ है।" टोमाथ ने अन्य दिशा की तरफ इशारा किया—"एक बार मेरा कहना मानकर तो देखो, तुम्हें पता चलेगा कि टोमाथ कितना सच्चा है।"

"मुझे तुम्हारी सलाह की जरूरत नहीं है।" जगमोहन ने तीखे स्वर में कहा—"चले जाओ और दोबारा मत आना।"

उसी पल दोती की आवाज आई।

"बे-ईमान। तुम इसे खुंबरी तक पहुंचने का रास्ता बता रहे हो।"

दोनों की नजरें घूमीं। कुछ कदमों की दूरी पर, जाने कब दोती आ गई थी।

"मैंने कहां बताया है।" टोमाथ ने फौरन कहा—"पूछ लो।"

"मैंने खुद देखा है तुम इसे उस तरफ जाने को कह रहे थे।"

"मैं इसे रास्ता क्यों बताऊंगा। मैंने तो कहा है जिस तरफ बढ़ रहे हो, उसी तरफ बढ़ते रहो।"

"तुम झूठे हो। मैं खुंबरी को तुम्हारी बे-ईमानी बताऊंगी।"

"तुम इससे क्यों नहीं पूछतीं कि मैंने इसे किस तरफ जाने को कहा है। मुझ पर पर झूठा इलजाम मत लगाओ।" टोमाथ ने झल्लाकर कहा।

"मैं खुंबरी को बताने जा रही हूं तुम्हारी करतूत।" कहने के साथ ही दोती गायब हो गई।

"ओह। दोती को रोकना होगा। मैं जाता हूं। तुम उधर ही जाना जिधर मैंने जाने को कहा है। खुंबरी उधर ही मिलेगी। उसे देखते ही मार देना।" इतना कहने के साथ ही सोमाथ अपनी जगह से गायब हो गया।

जगमोहन ने अपने कदम उसी दिशा में बढ़ा दिए जिस तरफ वो पहले से ही जा रहा था।

देर तक चलता रहा। थकान सवार होने लगी तो एक पेड़ के नीचे डेरा जमा लिया। चलते-चलते पांवों में दर्द होने लगा था। कुछ देर थैले पर सिर रखे सुस्ताता रहा फिर पानी निकालकर पीया। नजरें हर तरफ जा रही थीं। जंगल सुनसान था। दूर-दूर तक कोई भी नजर नहीं आ रहा था। भूख महसूस हुई तो खाना निकाल लिया। खाना खाने के बाद वो लेट गया।

देखते ही देखते जगमोहन को नींद ने घेर लिया।

▭ ▭

दोलाम ने रास्ता खोला और बाहर आ गया। उसके पीछे खुंबरी और धरा भी बाहर आ गई। हर तरफ जंगल दिखा। खुंबरी के चेहरे पर खुशी नाच उठी। वो धरा से बोली।

"कितना अच्छा लग रहा है खुले में आना।"

"मैं तो खुले में ही रही हूं। पर तेरे को जरूर अच्छा लगेगा कि पांच सौ बरसों के बाद तू बाहर आई।"

"ठंडी हवा शरीर को बहुत अच्छी लग रही है। चल घूमें।" खुंबरी कहते हुए आगे बढ़ गई। धरा उसके साथ थी।

दोलाम उनके कई कदम पीछे चल रहा था।

खुंबरी के गले में भी अब 'बटाका' नजर आ रहा था।

"डुमरा को खत्म करने के बाद मैं सदूर की रानी बनूंगी। सदूर के अलग हो चुके सारे टुकड़े वापस सदूर से आ मिलेंगे। बहुत बड़ा हो जाएगा सदूर, जब मैं रानी बनूंगी। अपने लिए बहुत बड़ा किला बनाऊंगी।"

"ज्यादा खुश मत हो। पहले डुमरा को खत्म कर।" धरा बोली।

"वो जंगल में ही है। मेरी ताकतें उस पर काबू पाने की चेष्टा कर रही हैं। डुमरा बच नहीं सकेगा।"

"क्या हमारा इस तरह जंगल में घूमना ठीक है?" धरा ने कहा—"जबकि वो लोग जंगल में हमें ढूंढ़ रहे हैं।"

"मैं नहीं डरती इस बात से।"

"पर सतर्क तो रहना चाहिए। सोमाथ मिल गया तो खतरा पैदा हो जाएगा। उस पर ताकतों का जादू नहीं चल सकेगा। वो नकली इंसान है। वो ताकतवर है, उसका मुकाबला भी नहीं किया जा सकता। वो हमें मार सकता है।"

"ये बात तो तूने सही कही।" खुंबरी बोली—"पर क्या वो आस-पास है?"

"मैं क्या जानूं?"

दोनों बातें करते आगे बढ़ती जा रही थीं।

खुंबरी ने कहा—"डुमरा को मेरी ताकतें खत्म कर देंगी। वो तैयारी कर रही हैं डुमरा पर बड़ा वार करने की।"

"डुमरा अगर कमजोर होता तो वो इस जंगल में न आता।"

"वो अकेला नहीं है, उसके पास शक्तियां हैं।" खुंबरी बोली —"शक्तियों के दम पर ही वो यहां आया है।"

"वो शक्तियां उसे बचा लेंगी ताकतों के वार से।"

"इस बार नहीं बचा सकेंगी। ओहारा डुमरा को खत्म करके ही रहेगा।" खुंबरी ने दृढ़ स्वर में कहा।

"मुझे भरोसा नहीं कि डुमरा मारा जाएगा।" धरा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"तेरे को ज्यादा भरोसा है डुमरा पर।"

"बात भरोसे की नहीं। डुमरा जानता है कि उस पर बड़े से बड़ा वार करेंगी ताकतें। उसने खूब तैयारी कर रखी होगी बचने की, बल्कि वो अब जवाब में जबर्दस्त वार भी कर सकता है ताकतों पर।"

"ऐसा तो वो जरूर करेगा। परंतु ताकतें अब ज्यादा ताकत हासिल कर चुकी हैं। डुमरा के लिए बचना आसान नहीं होगा।"

तभी पीछे से दोलाम की आवाज आई।

"खुंबरी। यहां कोई है।"

दोनों फौरन पलटकर दोलाम की तरफ बढ़ीं।

"कहां?"

"वो देखो, उस पेड़ के नीचे कोई नींद में है।" दोलाम ने एक तरफ इशारा किया।

वो पेड़ कुछ दूर था परंतु साफ दिखा दिखा कि उसके नीचे कोई सोया पड़ा है।

"वो कहीं सोमाथ तो नहीं?" खुंबरी सतर्क भाव में कह उठी।

"वो सोमाथ नहीं हो सकता।" धरा बोली—"सोमाथ को नींद लेने की जरूरत नहीं पड़ती।"

दोलाम पास आ गया। बोला।

"तुम्हें वापस चले जाना चाहिए खुंबरी।"

"वो सोमाथ नहीं है। हमें डरने की जरूरत नहीं है।" खुंबरी बोली—"आओ उसे देखते हैं।"

तीनों उस तरफ बढ़ गए।

"वो जगमोहन हो सकता है।" धरा बोली—"या फिर डुमरा।"
"हमारे पास बटाका है। हमें डुमरा की परवाह करने की जरूरत नहीं।" खुंबरी ने कहा।
तीनों उसके पास जा पहुंचे।
"ये जगमोहन है।" धरा बोली।
जगमोहन गहरी नींद में था कि इनके पास आ जाने पर भी उसकी आंख न खुली। खुंबरी की निगाह जगमोहन पर पड़ी तो उसे देखती रह गई।
"आह, कितना खूबसूरत नौजवान है।" खुंबरी के होंठों से निकला।
धरा ने खुंबरी को फौरन देखा।
दोलाम के माथे पर बल पड़े।
"कितना मासूम, कितना अच्छा लग रहा है।" खुंबरी की नजरें जगमोहन के चेहरे पर टिकी थीं।
"ये तो सामान्य-सा इंसान है।" दोलाम कह उठा।
"मेरी नजरों से देखो दोलाम। आज तक कोई भी मुझे अच्छा नहीं लगा। परंतु ये एक ही नजर में भा गया। नाम भी कितना अच्छा है—जगमोहन।" कहते हुए खुंबरी जगमोहन के पास ही बैठ गई। जगमोहन का सिर थैले पर टिका था।
"तुम प्यार वाली बातें कर रही हो खुंबरी।" धरा गम्भीर स्वर में बोली।
"प्यार? हां, अमाली ने ठीक ही कहा था कि मुझे पृथ्वी के किसी आदमी से प्यार हो जाएगा।" खुंबरी ने गहरी सांस ली—"इसे देखते ही मुझे प्यार हो गया है। ये तो नजरों के जरिए मेरे दिल में जा बसा है।"
दोलाम के चेहरे पर नाराजगी के भाव उभरे।
"ये गलत बात है।" धरा बोली।
"गलत क्यों?"
"ये शक्तियों के साथ है। इसका-तेरा साथ नहीं बन सकता।"
"बन जाएगा। साथ मैं बना लूंगी।" खुंबरी का हाथ नींद में डूबे जगमोहन के चेहरे को छूने लगा—"ये भी मेरी तरह ताकतों का साथ देने लगेगा। मेरा प्यार इसे शक्तियों से दूर कर देगा।"
"ये खतरे वाली बात हो जाएगी।" धरा ने तेज स्वर में कहा।
"ये होना ही था।" खुंबरी के हाथ की उंगलियां जगमोहन के गालों पर फिर रही थीं—"तभी तो अमाली ने पहले ही कह दिया था। देख तो कितना अच्छा लग रहा है नींद में। मुझे तो इस पर प्यार आ रहा...।"
तभी जगमोहन हड़बड़ाकर नींद से उठा और फौरन ही खड़ा हो गया। उसने हैरानी भरी निगाहों से सबको देखा और धरा को देखते ही हैरान हो गया। धरा के होंठों पर मुस्कान उभरी।

"ध-धरा।" जगमोहन के होंठों से निकला—"तुम?" उसी पल खुंबरी को बैठे देखा—"तुम—तुम खुंबरी हो?"

"हां।" खुंबरी उठते हुए कह उठी—"मैं खुंबरी हूं।"

जगमोहन खुंबरी को देखने लगा।

खुंबरी के होंठों पर दिलकश मुस्कान उभरी।

"तुम—तुम दोनों एक जैसी ही दिखती हो। पर—पर तुम बहुत खूबसूरत हो।" जगमोहन खुंबरी से बोला।

"मैं खुंबरी का रूप हूं जो धरती पर जन्म ले रहा था।" धरा बोली।

"मतलब कि असली खुंबरी ये है।" जगमोहन की निगाह खुंबरी से हट न रही थी।

"तुम ऐसा भी कह सकते हो।" धरा मुस्कराई।

"तुम बहुत खूबसूरत हो।" जगमोहन खुंबरी से बोला—"रानी ताशा से भी ज्यादा खूबसूरत।"

खुंबरी खुलकर मुस्कराई।

"अगर तुम खुंबरी न होती तो मैं तुमसे शादी कर लेता।" जगमोहन ने गहरी सांस ली।

"खुंबरी होने में क्या बुराई है जगमोहन?" खुंबरी की मुस्कान गहरी हो गई।

"तुम मेरा नाम भी जानती हो।"

"मेरी बात का जवाब दो कि मेरे खुंबरी होने में क्या बुराई है।"

"तुम बुरी ताकतों की मालिक हो। मैं तुम्हारी जान लेने आया हूं।" जगमोहन ने कहा।

"मेरी जान लेना चाहते हो। मैंने क्या बिगाड़ा है तुम्हारा?"

"तुमने रानी ताशा और देवराज चौहान को अलग किया था।"

"ऐसा न करती तो मेरा सदूर पर आने का रास्ता नहीं बनता।" खुंबरी बोली—"मैंने तुम्हारा तो कुछ बुरा नहीं किया।"

"पर तुम बुरी हो।"

"कौन कहता है कि मैं बुरी हूं।" खुंबरी मुस्करा रही थी और प्यार से बात कर रही थी।

"डुमरा कहता है।"

"और तुमने डुमरा की बातों का भरोसा कर लिया। वो तो मेरा दुश्मन बना है। उल्टी बात ही बोलेगा। तुम ही कहो, क्या मैं तुम्हें बुरी लगी?"

"नहीं।"

"मैं बुरी हूं ही नहीं। मैं जैसी हूं वैसी ही दिखती हूं।" खुंबरी मुस्कराई तो निचला होंठ थोड़ा-सा टेढ़ा दिखने लगा। इससे वो और भी अच्छी दिखी।

"पर तुम बुरी ताकतें रखती हो।"

"तुम भी तो शक्तियों वाली अंगूठी पहने हो। क्या इससे तुम ज्यादा अच्छे हो गए?"

"नहीं।"

"इसी तरह बुरी ताकतों की मालकिन हूं मैं, परंतु बुरी तो नहीं हो गई। जैसे कि तुमने मुझे देखते ही शादी की बात कह दी, उसी तरह मैं भी तुम्हें देखते ही तुम्हें प्यार करने लगी। तब तुम नींद में थे। तुम मुझे अच्छे लगे।"

तभी दोलाम एक कदम आगे बढ़कर नाराजगी से कह उठा।

"महान खुंबरी। तुम कैसी बातें कर रही हो। ये डुमरा का भेजा व्यक्ति है। इसने पवित्र शक्तियों की दी अंगूठी पहन रखी है। ये हमारा दुश्मन है। इसे फौरन मारने का हुक्म दो या कैद कर लो।"

"नहीं दोलाम।" जगमोहन को देखती खुंबरी बोली—"ये मुझे प्यारा लगने लगा है।"

"ताकतों और शक्तियों का मिलना नहीं हो सकता खुंबरी।" दोलाम ने कहा।

"क्यों नहीं हो सकता। जगमोहन अंगूठी उतार देगा।" खुंबरी बोली।

"मैं अंगूठी नहीं उतारूंगा।" जगमोहन के होंठों से निकला।

"मेरे लिए भी नहीं?" खुंबरी बेहद प्यार से बोली।

"तुम मुझसे प्यार करने लगी हो?"

"सच में?"

"तो बुरी ताकतों को छोड़कर मेरे पास आ जाओ हमेशा के लिए। तुम्हारा साथ पाकर मुझे खुशी होगी। इतनी खूबसूरत खुंबरी को कौन अपनी पत्नी नहीं बनाना चाहेगा।" जगमोहन ने शांत स्वर में कहा।

"ताकतों ने ही तो मुझे जीवन दे रखा है। उन्हें कैसे छोड़ सकती हूं। जैसे तुम अंगूठी नहीं उतार रहे।"

"तुम चालाकी से मेरी अंगूठी उतार लेना चाहती हो कि दूसरों की तरह तुम मुझे भी कैद कर सको।"

"ये कैसा प्यार है तुम्हारा कि मुझ पर शक कर रहे हो।" खुंबरी बोली।

"तुम पर भरोसा नहीं मुझे।"

"प्यार भी करने को कहते हो और भरोसा भी नहीं करते।"

"खुंबरी पर भरोसा नहीं किया जा सकता। तुम चालाक हो और मेरा बुरा कर सकती हो।"

"ऐसा न कहो। मैंने पहली बार किसी मर्द को पसंद किया है। एक नजर में ही तुम पसंद आ गए। मेरे बारे में गलत खयाल अपने मन में न रखो।" खुंबरी ने जगमोहन की तरफ हाथ बढ़ाया—"मेरा हाथ थाम लो।"

"ये तुम्हारी नई चालाकी है।"

"नहीं जगमोहन। मेरा हाथ थामने का मतलब है कि हम दोनों एक-दूसरे को पसंद करने लगे हैं। मैंने हाथ बढ़ाया और तुमने थाम लिया। मतलब कि हम दोनों एक-दूसरे से प्यार...।"

"मैंने पहले ही कहा था कि अगर तुम खुंबरी न होती तो तुमसे शादी कर लेता।" जगमोहन गम्भीर दिखा—"तुम खुंबरी हो, इसलिए मजबूर हूं कि तुमसे प्यार नहीं कर सकता। मैं तुम्हारी जान लेने आया हूं।"

"मेरी जान लेना चाहते हो?" खुंबरी एकाएक गम्भीर हो गई।

"हां।"

"तुम्हारे हाथों जान गंवाकर मुझे चैन मिलेगा। क्योंकि तुम वो हो, जिसे मैंने पहली निगाह में पसंद कर लिया।" खुंबरी ने कहा और हाथ की उंगली से जमीन की तरफ इशारा किया।

उसी पल जमीन में लम्बा-सा खंजर धंसा दिखने लगा।

"खंजर को उठा लो।" कहने के साथ ही खुंबरी घुटनों के बल नीचे झुक गई—"खंजर से मेरी जान ले लो। मैं स्वयं तुम्हारे हाथों मरने को तैयार हूं। अगर तुम मुझसे प्यार नहीं कर सकते तो मेरी जान ले लो।" जगमोहन खुंबरी को देखता रहा।

धरा गम्भीर दिखने लगी थी।

"महान खुंबरी ये क्या कर रही हो तुम। तुम्हारी जान सिर्फ तुम्हारी नहीं, ताकतों का भी हक है तुम्हारी जान पर। तुम्हें कुछ हो गया तो ताकतों का ध्यान कौन रखेगा। उठ जाओ, ऐसा मत करो।"

"ताकतों के साथ मेरा ये रूप रहेगा।" खुंबरी ने धरा की तरफ इशारा किया।

"परंतु तुम्हारी हरकत गलत है।" दोलाम गुस्से से कह उठा—"पांच सौ सालों तक मैंने तुम्हारे शरीर की देखभाल की। इसलिए नहीं की कि इस तरह अपनी जान गंवा दो। ताकतों को तुम्हारी ये हरकत कभी पसंद नहीं आएगी।"

"दोलाम।" धरा ने तीखी नजरों से दोलाम को देखा—"तुम जरूरत से ज्यादा आगे बढ़ रहे हो।"

"लेकिन ये सब...।"

"इसे कुछ हो गया तो मैं हूं। इन बातों में तेरे बोलने की आवश्यकता नहीं है।" धरा ने कहा।

"क्या मेरा कोई अधिकार नहीं बनता?" दोलाम ने धरा को आंखें सिकोड़कर देखा।

"नहीं बनता। ये मेरा मामला है। मेरी जिंदगी है। तूने जो सेवा की, उसका फायदा तेरे को मिल जाएगा।"

दोलाम ने होंठ भींच लिए।

धरा ने जगमोहन को देखा, जो एकटक खुंबरी को देख रहा था।

"उठाओ खंजर और मुझे मार दो।"

"तुम सब इस तरह की बातें करके मुझे भटका रहे हो। दोती और टोमाथ भी ऐसी बातें करने लगते थे कि मेरे मस्तिष्क पर प्रभाव पड़े।" जगमोहन बोला—"मैं तुम लोगों की बातों में नहीं फंसने वाला।"

"मैं तुमसे खंजर उठाने को कह रही हूं।" खुंबरी बोली—"उस पुरुष के हाथों, मुझे मरने में खुशी होगी, जो पहली ही नजर में मुझे अच्छा लगा। तुम बेझिझक मेरी जान ले सकते हो। खुंबरी पर डुमरा काबू नहीं पा सका। उसकी शक्तियां काबू नहीं पा सकीं, परंतु जिसे एक ही नजर में मैंने चाहा, उसने खुंबरी पर काबू पा लिया। मैं तुम्हारे 'बस' में हूं। तुम मेरे साथ जो चाहो कर सकते हो। कसम से खुंबरी के होंठों से 'उफ' नहीं निकलेगी।"

जगमोहन की निगाह खुंबरी के खूबसूरत चेहरे पर थी।

"सोचो मत जगमोहन। मैं तुम्हें बेहतरीन अवसर दे रही हूं। मेरी जान ले लो।" खुंबरी बोली।

जगमोहन ने उसी पल झुककर खंजर उठा लिया।

"जाने क्यों, तुम्हारी जान लेने का मन नहीं कर रहा।" जगमोहन बेचैन स्वर में बोला।

"तुम मेरी जान लेने आए हो।" खुंबरी ने कहा।

"हां।" जगमोहन के होंठ भिंच गए।

"तो फिर सोचना कैसा।" खुंबरी मुस्कराई तो उसका निचला होंठ टेढ़ा हो गया।

जगमोहन खंजर थामे खुंबरी की तरफ बढ़ा।

उसी पल दोती की आवाज उभरी।

"महान खुंबरी। मैं दोती हूं। ओहारा ने मुझे आपके पास भेजा है। ओहारा कहता है कि ऐसा करके आप भूल कर रही हैं। ये डुमरा का भेजा इंसान है। इसके साथ प्यार करना गुनाह है।"

"ये गुनाह तो खुंबरी से हो चुका है।"

दोती दस कदमों के फासले पर खड़ी दिखी।

"ओहारा ने आपको ये कदम उठाने को मना किया है।" दोती ने पुनः कहा।

"ओहारा मुझे नहीं रोक सकता। अपनी मालिक मैं खुद हूं।" खुंबरी बोली।

"परंतु ओहारा...।" दोती ने कहना चाहा।

"तुम जाओ।" धरा गम्भीर स्वर में कह उठी—"ओहारा से कहो डुमरा को मारने की सोचे।"

दोती उसी पल गायब हो गई।

दोलाम नाराजगी से भरी तीखी नजरों से खुंबरी को देख रहा था।

"जगमोहन।" धरा बोली—"ये मत भूलना कि खुंबरी तुम्हें दिल दे बैठी है। ऐसा न होता तो वो तुम्हारे सामने झुकी न होती।"

"ये बुरी ताकतें छोड़ दे तो मैं इससे शादी कर लूंगा।" जगमोहन ने व्याकुल स्वर में कहा।

खुंबरी मुस्कराई तो निचला होंठ टेढ़ा हो गया। वो अभी तक घुटनों के बल बैठी थी।

"खुंबरी अपनी जान तो दे सकती है, लेकिन ताकतों को दूर नहीं कर सकती।" धरा बोली।

"क्यों?" जगमोहन ने धरा को देखा।

"क्योंकि मुझे ताकतों से प्यार है।" धरा ने कहा—"ताकतों के बिना जीने की मैं सोच भी नहीं सकती।"

जगमोहन ने कदम उठाया और खुंबरी के पास जा पहुंचा।

"तुम्हारे हाथों मरकर मुझे बहुत खुशी होगी।" खुंबरी ने कहा और दायां हाथ बढ़ाकर कहा—"मेरा हाथ थाम लो।"

"क्यों?"

"क्योंकि मुझे याद रहे कि जब मेरी जान निकली तो मेरा प्यार मेरे पास था।"

जगमोहन ने खुंबरी का हाथ थाम लिया।

खुंबरी ने प्यार भरी निगाहों से जगमोहन को देखा और मुस्कराकर बोली।

"विदा मेरे प्यारे जगमोहन। हम दोबारा जन्म लेने पर मिलेंगे। तब हम एक साथ रहेंगे।"

जगमोहन का खंजर वाला हाथ ऊपर उठा।

खुंबरी जगमोहन की आंखों में आंखें डाले घुटने के बल बैठी थी।

एकाएक विचलित हो उठा जगमोहन और खंजर एक तरफ फेंकते, होंठ भींचे कह उठा।

"मैं तुम्हारी जान नहीं ले सकता।"

धरा मुस्करा पड़ी।

जबकि दोलाम की नजरों में कहर के भाव आ गए।

"रुक क्यों गए जगमोहन।" खुंबरी गम्भीर स्वर में बोली।

"मैं—मैं तुम्हें नहीं मार सकता खुंबरी।"

"क्यों?" खुंबरी उठ खड़ी हुई। वो गम्भीर दिख रही थी।

"शायद—शायद मैं तुमसे प्यार करने लगा हूं। पहली नजर में ही तुम्हें प्यार कर बैठा।" जगमोहन बेचैनी से बोला।

"हम दोनों ने ही प्यार का इम्तिहान दे दिया। मैं जान देने को तैयार थी और तुमने खंजर उठाकर भी मेरी जान नहीं ली। ये हम दोनों का ही प्यार है। अब तुम्हें भरोसा हो गया होगा कि...।"

"मुझे मालूम है मैं तुमसे प्यार करने लगा हूं।" जगमोहन ने गहरी सांस ली।

"इसी तरह मुझे भी तुमसे प्यार हो गया है। ये हम दोनों के भाग्य में लिखा था कि जब भी हम सामने पड़ेंगे एक-दूसरे से प्यार कर बैठेंगे। वो ही हुआ। हमें इसी पल एक-दूसरे का हो जाना चाहिए।"

"मैं तुमसे शादी करने को तैयार हूं।" जगमोहन शांत स्वर में बोला—"तुम्हें मेरे लिए ताकतें छोड़ देनी होंगी।"

"ताकतों को जुदा नहीं कर सकती अपने से। तुम मेरे साथ रहो, मैं तुम्हारे साथ रहूंगी। जैसा हमारा प्यार होगा, वैसा ही आने वाले वक्त में हो जाएगा। अब तो तुम मुझे और भी प्यारे लगने लगे हो। चाहो तो अपनी अंगूठी उतार सकते हो।"

"तुम ताकतें नहीं छोड़ रहीं और मेरी अंगूठी उतरवाना चाहती हो।"

"ठीक है। मत उतारो। मैं तुम्हें मजबूर नहीं करूंगी। वो प्यार ही क्या जिसमें शर्तें लागू हों।" खुंबरी मुस्कराई तो उसका निचला होंठ टेढ़ा-सा दिखने लगा—"हम एक साथ रहेंगे। बाकी जो वक्त को मंजूर होगा, वो ही हमें मंजूर होगा। हो सकता है तुम ताकतों के साथ ही मुझे स्वीकार कर लो। खुंबरी का प्यार तुम पर भारी पड़ जाए।"

"या तुम ताकतें छोड़ दो। साधारण बनकर जीवन-भर मेरे साथ रहो।" जगमोहन भी मुस्कराया—"मुझे अपने प्यार पर पूरा भरोसा है कि मैं तुम्हें राह पर ले आऊंगा।"

"ये सम्भव नहीं कि मैं ताकतों को अपने से अलग कर दूं।" खुंबरी ने गम्भीर स्वर में कहा।

"क्या तुम्हें आने वाले वक्त के बारे में पता है? जगमोहन मुस्कराया।

"नहीं और तुम्हें भी नहीं पता जगमोहन।" एकाएक खुंबरी ने सिर को झटका दिया—"देखते हैं भविष्य में क्या छिपा है।"

"तुम्हारी ताकतें तुम्हें भविष्य के बारे में बता सकती हैं।" जगमोहन ने कहा।

"प्यार के मामले में मैं भविष्य को नहीं जानूंगी।" कहते हुए खुंबरी ने गले में मौजूद बटाका थामकर कहा—"ढोला।"

"हां खुंबरी?"

"सबसे कह दो कि मेरे और जगमोहन के प्यार के भविष्य में झांकने का प्रयत्न न करें। ये मेरा हुक्म है।"

"ठीक है खुंबरी।" ढोला की आवाज उभरी।

खुंबरी ने पटाक्ष छोड़ा और मुस्कराकर जगमोहन को देखा।

जगमोहन भी मुस्कराया।

दोनों आगे बढ़े और एक-दूसरे की बांहों में समा गए।

दोलाम ने होंठ भींचकर मुंह फेर लिया जबकि धरा के होंठों पर मीठी मुस्कान उभरी। देखते-ही-देखते जगमोहन और खुंबरी के होंठ सट गए। दोनों ने किस की और जगमोहन हंसकर अलग होता बोला।

"मुझे हैरानी है कि खुंबरी से मुझे प्यार हो गया है।"

"सच में।" खुंबरी हंसी—"मैं भी हैरान हूं कि मुझे किसी से प्यार हो गया है। मैंने आज तक प्यार नहीं किया। किसी को बांहों में नहीं लिया न ही कोई बांहें फैलाकर मेरे सामने आया। ये बातें मुझे अच्छी नहीं लगती थीं और अब तुम्हें देखते ही प्यार अच्छा लगने लगा। ये चमत्कार नहीं तो और क्या है। अब तुम मेरे साथ, मेरी जगह पर रहोगे।"

"तुम्हारी जगह पर?"

"ऐतराज है?" खुंबरी ने निगाहें टेढ़ी करके जगमोहन को देखा।

"नहीं तो, पर मैं तुम्हें पृथ्वी पर ले जाने की सोच रहा हूं।" जगमोहन ने कहा।

"मेरे साथ तुम्हें इतना अच्छा लगेगा कि तुम पृथ्वी को भूल जाओगे।" खुंबरी ने जगमोहन का हाथ थाम लिया—"डुमरा की मौत के बाद, मेरे कदम पुनः सदूर की रानी बनने की तरफ बढ़ेंगे। मेरा जगमोहन सदूर का राजा बनेगा। हम मजे में रहेंगे।"

"अगर मुझे तुम्हारे साथ यहां अच्छा न लगा तो?"

"मेरे साथ रहकर तो देखो। इसमें मेरा प्यार भी शामिल होगा। अभी तुमने मेरा प्यार देखा ही कहां है। हमने एक-दूसरे को जानना है, बहुत बातें करनी हैं। तुम्हारी खुंबरी बहुत अच्छी है, जल्दी ही ये बातें तुम्हें पता चल जाएंगी।"

"खुंबरी।" जगमोहन के चेहरे पर प्यार ही प्यार छलक रहा था।

खुंबरी जगमोहन का हाथ थामे, धरा से कह उठी।

"तेरे को जगमोहन पसंद आया?"

"क्यों न पसंद आएगा।" धरा ने खुशी से कहा।

"जगमोहन।" खुंबरी दोलाम की तरफ पलटते कह उठी—"ये मेरा सबसे खास सेवक है। दोलाम नाम है इसका। पांच सौ सालों तक इसने मेरा

शरीर संभाले रखा। इंसानी रूप में एकमात्र मेरा ये ही सेवक है। सेवक तो और भी बहुत हैं, परंतु दोलाम जैसा सेवक मिलना बहुत कठिन है। मैंने अभी अपनी ताकतों को इशारा नहीं किया, वरना ताकतें इंसानी सेवकों की भीड़ लगा देंती। सबसे पहले मैं डुमरा की मौत चाहती हूं। श्राप का बदला, उसे अपनी जान देकर गंवाना होगा।"

जगमोहन ने मुस्कराकर दोलाम को देखा।

दोलाम जबरन अपने चेहरे पर मुस्कान लाया और बोला।

"महान खुंबरी। मैं सिर्फ तुम्हारा सेवक ही बनकर रहना चाहता हूं। किसी और की सेवा करना कठिन होगा। आदत नहीं है किसी अन्य का हुक्म सुनने की। मेरी बात पसंद न आए तो क्षमा चाहूंगा।"

"ठीक है दोलाम। तुम मेरा ही हुक्म मानना।"

दोलाम शांत खड़ा रहा।

खुंबरी और जगमोहन ने एक-दूसरे का हाथ थाम रखा था।

"आओ जगमोहन।" खुंबरी ने कहा—"अपनी जगह पर चलते हैं। तुम देखोगे कि मैं कहां रहती हूं।" अचरज हो रहा है कि जब मैं वहां से बाहर निकली थी तो सोचा भी नहीं था कि अपने प्यार के साथ, वापस आऊंगी।"

"मैंने भी नहीं सोचा था कि सुदूर ग्रह पर खुंबरी से मुझे प्यार हो जाएगा।" जगमोहन ने खुंबरी का खूबसूरत चेहरा देखते हुए कहा।

दोनों वापस चल पड़े।

धरा उनके पीछे चली तो सबसे पीछे दोलाम।

दोलाम के चेहरे पर जहान भर की नाराजगी ठहरी नजर आ रही थी। वो नापसंदगी भरी निगाहों से जगमोहन की पीठ को देख रहा था फिर उसकी क्रोध भरी निगाह खुंबरी की पीठ पर जा टिकी।

▭ ▭

डुमरा के गले में पड़ा लॉकेट गर्म जैसा हो गया तो डुमरा ने तुरंत अपने कदम रोके और थैला नीचे रखकर उसमें से कांटेदार बाल निकाली और उसका एक कांटा तोड़कर सामने फेंक दिया। ऐसा करते ही लॉकेट से निकलने वाली गर्मी समाप्त हो गई और महीन-सी आवाज उसके कानों में पड़ी।

"मैं हाजिर हूं।"

"नाम क्या है तेरा?"

"टोजा।" वो ही धीमी-पतली आवाज पुनः उभरी।

"अभी-अभी कोई नई बात हुई है। उसके बारे में बता।" डुमरा ने कहा।

"जगमोहन और खुंबरी में प्यार हो गया है।"

"प्यार हो गया है। ये कैसे सम्भव हुआ?"

"दोनों ने एक-दूसरे को देखा और चाहने लगे।" वो ही महीन आवाज कानों में पड़ी।

डुमरा के चेहरे पर सोच के भाव उभरे।

"जगमोहन ने खुंबरी की जान नहीं ली। ऐसा कैसे हो गया?" डुमरा के माथे पर बल दिखने लगे थे।

"खुंबरी ने जगमोहन को मौका दिया कि उसे मार दे। परंतु जगमोहन को खुंबरी अच्छी लगी। उसने खुंबरी को नहीं मारा।"

"ये क्या कर दिया उस बेवकूफ ने। तू जा।" डुमरा ने कहा और लॉकेट मुट्ठी में दबाकर बोला—"वजू।"

"बोल डुमरा।" वजू की धीमी आवाज कान के पास सुनाई दी।

"जगमोहन खुंबरी से प्यार कर बैठा है।"

"ये तो होना ही था। मैंने तुझे पहले ही बता दिया था।" वजू का शांत स्वर कानों में पड़ा।

"खुंबरी को भी उससे प्यार हुआ है?"

"दोनों ही प्यार की राह पर चल पड़े हैं।"

"ताकतें खुंबरी को ऐसा करने से रोक देंगी। तब जगमोहन का क्या होगा?"

"ताकतें खुंबरी के अधीन हैं। वो खुंबरी को ऐसा आदेश नहीं दे सकतीं। उसके व्यक्तित्व में होने वाली हलचल में दखल नहीं दे सकतीं। ये खुंबरी का व्यक्तिगत मामला है। जरूरत पड़ने पर ताकतें खुंबरी से बात अवश्य कर सकती हैं।"

"अब जगमोहन कहां है?"

"खुंबरी की जगह पर। वो उसे अपने साथ ले गई है।"

"तुम जगह के बारे में जानते हो?"

"नहीं। वहां ताकतों के काले साये फैले हैं। लेकिन घटनाएं हमें देखने को मिल जाती हैं।"

"जगमोहन ने अंगूठी उतार दी है?"

"वो जगमोहन के हाथ की उंगली में है।" वजू की धीमी आवाज उसके कान में पड़ रही थी।

"जगमोहन, खुंबरी के साथ कोई चाल खेल रहा है?"

"उसे सच में खुंबरी बहुत अच्छी लगी है। उसने खुंबरी को बुरी ताकतें छोड़ देने को कहा, परंतु खुंबरी ने इस बात को आने वाले वक्त के हवाले करने को कह दिया और ताकतों को हुक्म दिया है कि उसके प्यार के भविष्य में न झांका जाए।"

"तुम तो भविष्य में झांक सकते हो कि इनके प्यार का क्या अंजाम होगा।"

"जगमोहन अब खुंबरी से जुड़ गया है और खुंबरी के भविष्य में हम नहीं झांक सकते।" वजू का स्वर सुनाई दिया।

"इसका मतलब, जो लोग भी जंगल में आए थे सोमाथ को छोड़कर, सब खुंबरी के पास पहुंच गए।"

"हां।"

"क्या खुंबरी जगमोहन के साथ चाल खेल रही है?" डुमरा ने पूछा।

"वो जगमोहन से सच्चा प्यार करने लगी है। इसमें कोई भी चाल नहीं है।"

"मुझे समझ में नहीं आता कि ये सब क्या हो रहा है।" डुमरा गम्भीर था—"अब मुझे क्या करना चाहिए?"

"जो तुम्हें ठीक लगे, वो ही करो।"

"तुम मुझे सलाह दो।"

"ये काम तुमने ही पूरा करना है। तुम जो कहोगे, हम वो कर देंगे। परंतु सब कुछ तुमने ही करना है।"

"ये तो गलत है, कम-से-कम मुझे सलाह तो मिलनी चाहिए।" डुमरा नाराजगी से कह उठा।

वजू की आवाज नहीं आई।

"वजू!" डुमरा ने पुकारा।

कोई जवाब नहीं मिला।

डुमरा ने लॉकेट छोड़ा और बड़बड़ा उठा।

"शक्तियां इस बारे में दृढ़ निश्चय कर चुकी हैं कि खुंबरी के मामले में मेरी सहायता नहीं करेंगी।"

"तो क्या अब तुम यहां से वापस जाओगे?" तोखा कानों के पास बोला।

"कभी नहीं।" डुमरा ने पक्के स्वर में कहा—"मैं उन लोगों को खुंबरी के पास छोड़कर नहीं जा सकता।"

"तुम पर अब जबर्दस्त वार होंगे। मुकाबला कर सकोगे ताकतों का।"

"करना ही होगा। ताकतें डुमरा को आसानी से नहीं मार सकतीं। अगर जगमोहन प्यार में न पड़ता तो खुंबरी की जान ले सकता था। जगमोहन ने गलत किया। वो खुंबरी की जान ले लेता तो ताकतें अकेली रह जातीं। उन्हें संभालने वाला कोई न रहता।"

"अब क्या होगा?" तोखा का गम्भीर स्वर कानों में पड़ा।

"पता नहीं।" डुमरा ने सोच भरे गम्भीर स्वर में कहा—"पर मैं इसी तरह खुंबरी की जगह तलाश करता रहूंगा। अब या तो मेरी जान जाएगी या खुंबरी की। खुंबरी को मेरे सामने आना ही होगा।"

□ □

दोलाम कमर पर हाथ बांधे एक कमरे में टहल रहा था। इधर से उधर चक्कर काट रहा था। उसका चेहरा गुस्से से भरा हुआ था। बार-बार वो होंठों को भींच लेता। उसके चेहरे से ही लग रहा था कि वो पागल हुआ पड़ा है। एकाएक वो ठिठका और कुर्सी पर बैठ गया फिर बड़बड़ाया।

'मैं ये नहीं होने दूंगा। खुंबरी इस तरह किसी और को नहीं चाह सकती। मैंने पांच सौ सालों तक खुंबरी के शरीर की देखभाल इसलिए नहीं की कि वापस आने पर वो अपना शरीर किसी और के हवाले कर दे। खुंबरी को प्यार करना ही था तो मुझसे करती। मेरे में क्या कमी है। मैं खुंबरी के काबिल हूं। पृथ्वी से आए मर्द के हवाले कर दिया खुद को। ये बात मुझे जरा भी अच्छी नहीं लगी। ये तूने ठीक नहीं किया खुंबरी। इससे मेरे अहम को बहुत बड़ी चोट लगी है।'

दहकने लगा था दोलाम का चेहरा।

वो पुनः उठा और टहलने लगा।

'मैं ये नहीं होने दूंगा। खुंबरी से स्पष्ट बात करनी होगी। वो मेरे साथ इस तरह का अन्याय नहीं कर सकती।' दोलाम पुनः बड़बड़ाया और कमरे से बाहर निकलकर आगे बढ़ता चला गया। उसके कदम तेजी से उठ रहे थे।

कई रास्तों को पार करने के बाद वो एक कमरे के सामने पहुंचा। कमरे का दरवाजा बंद था। दोलाम उस दरवाजे को घूरने लगा कि तभी भीतर से खुंबरी और जगमोहन की खिलखिलाहट, पिघले शीशे की तरह दोलाम के कानों से टकराई।

'खुंबरी खुद को उसके हवाले कर चुकी है। प्यार का स्वाद चख लिया है खुंबरी ने।' दोलाम दांत भींचकर बड़बड़ाया—'जिस शरीर का मैंने पांच सौ सालों तक ध्यान रखा, वो किसी और को सौंप दिया जबकि हक मेरा था। खुंबरी को ऐसा नहीं करना चाहिए था। सेवा मैंने की और ईनाम दूसरा ले गया। ये तूने क्या कर दिया खुंबरी।" इसके साथ ही दोलाम पांव पटकने के अंदाज में वहां से वापस चल पड़ा—'इसका अंजाम तो अब तुझे भुगतना ही होगा महान खुंबरी।' खतरनाक स्वर दोलाम के होंठों से निकला।

□ □

खुंबरी ने हंसी रोकी और बांह फैलाकर जगमोहन को अपने साथ सटा लिया। दोनों एक बड़े पलंग पर एक-दूसरे से लिपटे हुए थे। कपड़े के नाम पर उनके शरीर पर कुछ नहीं था।

"तुमने मुझे कितना मजा दिया जगमोहन।" खुंबरी की आवाज मस्ती में डूबी थी—"आज पहली बार मैंने जाना कि मर्द का प्यार कैसा होता है।

तुमने मुझे ऐसी दुनिया की सैर करा दी, जिसके बारे में मैं सुना करती थी। आज मैंने जाना कि प्यार क्या होता है और लोग क्यों प्यार करने में अपना जीवन लगा देते हैं। तुम्हारे साथ मैंने अब नई जिंदगी की शुरुआत की है। आज से पहले तो मैं जैसे बे-मतलब-सी जिंदगी जिया करती थी। तुमने मुझे आज नए सुख से परिचित कराया। शुक्रिया तुम्हारा।"

"तेरे को प्यार करना अच्छा लगा।" जगमोहन उसके बालों की लटों से खेलता कह उठा—"ये जानकर मुझे खुशी हुई।"

"प्यार करना कितना प्यारा होता है।"

"हां खुंबरी। प्यार से इंसान को एक नई शक्ति मिलती है। जीने का उत्साह मिलता है।"

"मैंने पहले कभी प्यार नहीं किया था। ये शरीर तो जैसे तुम्हारे लिए संभाले रखा था मैंने। अपने जगमोहन के लिए।"

"खुंबरी।" जगमोहन का स्वर कांपा।

"जगमोहन।"

दोनों पुनः एक-दूसरे से लिपट गए।

"कितना अच्छा लगता है।" खुंबरी प्यार में डूबी कह उठी।

"मुझे भी तुम्हारा साथ पाकर बहुत अच्छा लग रहा है। मैं तुमसे शादी करूंगा खुंबरी।"

"तुमसे शादी करके मुझे अच्छा लगेगा। तुम सदूर के राजा बनोगे जगमोहन।"

"लेकिन मैं तुम्हें वापस पृथ्वी ग्रह पर ले जाना चाहता हूं।" जगमोहन प्यार से बोला।

"नहीं जगमोहन। पृथ्वी पर जाकर मैं क्या करूंगी। यहां मेरे पास सब कुछ है, मैं...।"

"पृथ्वी पर मेरे पास सब कुछ है। बहुत दौलत है। वहां तुम रानी बनकर रहोगी।"

"पर मेरी ताकतें तो...।"

"उन्हें छोड़ दो।"

"ये क्या कह रहे हो?"

"ताकतों को छोड़ दो खुंबरी। मेरे लिए छोड़ दो। हम दोनों की जिंदगी प्यार में बहुत अच्छी बीतेगी।"

खुंबरी एकाएक उठ बैठी।

"क्या हुआ?" जगमोहन ने पूछा।

"जितना प्यार मैं तुमसे करने लगी हूं उतना ही प्यार मैं ताकतों से करती हूं। तुम्हारी तरह, ताकतें भी मेरी जान का हिस्सा हैं।"

"अब तुम्हें जीने के लिए ताकतों की जरूरत नहीं। मैं तुम्हारी ताकत हूं। प्यार में बहुत ताकत होती है।"

"ताकतों के बिना मैं खुद को अधूरा महसूस करती हूं।" खुंबरी गम्भीर दिखने लगी—"वो तो...।"

"मेरी खातिर तुम ताकतों को नहीं छोड़ सकती?"

"ताकतों की खातिर अब मैं तुम्हें भी नहीं छोड़ सकती जगमोहन। हर चीज अपनी जगह ठीक है।"

"ये कहकर तुम मेरा दिल तोड़ रही हो।"

खुंबरी मुस्कराई और गर्दन घुमाकर जगमोहन को देखा। निचला होंठ टेढ़ा दिखने लगा।

"अपने जगमोहन का दिल तोड़ने से पहले खुंबरी की जान न निकल जाए।"

"ऐसी बुरी बात मत कहो।"

"तुम क्या जानो कि मेरी नजरों में तुम क्या हो। मेरे राजा हो। मेरी जान हो। खुंबरी की धड़कन तुममें बसने लगी है। मैंने पहली बार किसी से प्यार किया है। खुंबरी का प्यार थोड़े वक्त के लिए नहीं है। तुम्हें देखते ही मैं तुम पर मर मिटी थी। तुम मेरे लिए कीमती हो।"

"तुम भी तो मेरे लिए बेशकीमती हो खुंबरी। मैं भी तुम पर मर मिटा हूं।"

"मुझे ऐसे ही प्यार करोगे न?"

"हां खुंबरी। हम दोनों ही एक-दूसरे को ऐसे ही प्यार करेंगे। हम प्यार की राहें दूर तक तय करेंगे।"

"तुम कितने अच्छे हो जगमोहन।" खुंबरी पुनः जगमोहन से जा लिपटी।

"अपने अच्छे जगमोहन के लिए तुम ताकतें नहीं छोड़ सकतीं।" जगमोहन ने प्यार से कहा।

खुंबरी पुनः अलग होकर जगमोहन को देखने लगी।

"तुम्हें ताकतें परेशान कर रही हैं?"

"मुझे? नहीं तो।"

"तो अभी ताकतें छोड़ने को क्यों कहते हो। मैं उन्हें नहीं छोड़ सकती, जैसे कि अब तुम्हें नहीं छोड़ सकती।" खुंबरी गम्भीर हो गई।

"मेरा ये मतलब नहीं कि तुम अभी जवाब दो। सोच लो कि...।"

"इस बारे में मुझे सोचना भी नहीं है।"

"छोड़ो। मैं प्यार का मजा खराब नहीं करना चाहता। आओ, एक बार फिर मेरी बांहों में आ जाओ। हम फिर प्यार करेंगे।"

खुंबरी उसी पल जगमोहन के शरीर से लिपटती चली गई।

खुंबरी और जगमोहन एक कमरे में बैठे खाना खा रहे थे। टेबल पर ढेर सारे व्यंजन मौजूद थे। लगता था जैसे दावत हो रही हो। परंतु खाने वाले दो ही थे। कुछ कदमों के फासले पर सेवक की भांति खड़ा दोलाम सुलगती आंखों से खुंबरी और जगमोहन को देख रहा था। परंतु वे दोनों इस बात से अंजान थे।

"इतना बढ़िया खाना दोलाम ने बनाया है?" जगमोहन ने खुंबरी से पूछा।

"मेरे लिए खाना ताकतें लाकर देती हैं।" खुंबरी ने बताया।

"वो कैसे?"

"मेरी ताकतें हमेशा मेरे आस-पास नजर रखती हैं कि खुंबरी को किसी चीज की जरूरत तो नहीं। जब मैंने दोलाम से खाने के लिए कहा तो, खाने का एक खास कमरा है, जहां बर्तन मौजूद रहते हैं, मेरी इच्छा होते ही वो खाने से भर जाते हैं।"

"ये तो अच्छी बात है।"

"तुम देखोगे कि ताकतों का कितना फायदा है। वो मेरा कितना ध्यान रखती हैं।" खुंबरी खाते-खाते मुस्कराई—"जल्दी ही तुम भी ताकतों को चाहने लगोगे। एक बार ताकतों के साथ जीने की आदत पड़ जाए तो फिर उनके बिना जीने में मजा नहीं आता।"

जगमोहन ने मुस्कराकर खुंबरी को देखा।

"आज मैं अपनी ताकतों की वजह से ही जिंदा हूं। डुमरा ने कोई कसर नहीं छोड़ी थी कि मेरा वजूद खत्म कर सके। परंतु ताकतों ने मुझे बचाया। बचाया ही नहीं, वापस सदूर तक फिर ले आईं मुझे।"

"मैं अभी ताकतों के बारे में ज्यादा नहीं जानता।"

"अब तुम मेरे साथ रहोगे ही, तो सब जानते चले जाओगे।" खुंबरी ने मुस्कराकर कहा।

दोलाम होंठ भींचे शांत खड़ा था।

तभी धरा ने वहां प्रवेश करते हुए कहा।

"अमाली से बात करो। तुमसे बात करने के लिए मुझे तंग कर रही है।"

"बोल अमाली।" खुंबरी कह उठी।

उसी पल खुंबरी के कानों के पास अमाली की आवाज उभरी।

"मेरी बात सही निकली न कि तुझे पृथ्वी से आए मर्द के साथ प्यार हो जाएगा।"

"हां।" खुंबरी मुस्कराई—"सच में तूने सही कहा था।"

"कैसा है तेरा सपनों का राजा?"

"बहुत अच्छा।"

"प्यार करके मजा आया?"

"बहुत।" कहते हुए खुंबरी ने जगमोहन पर नजर मारी।

जगमोहन मुस्कराया।

धरा हौले-से हंस पड़ी।

जबकि दोलाम के तन-बदन में आग लग गई। उसके होंठ और भी भिंच गए।

"वो तो तेरे को देखकर ही पता चल रहा है कि खुंबरी मस्ती में है। एक बात तो बता तूने सबको रोका क्यों कि तेरे प्यार का भविष्य कोई न देखे। ऐसा हुक्म देने की जरूरत क्या थी। ये बात मुझे तो अच्छी नहीं लगी।"

"मेरे और जगमोहन के प्यार का भविष्य देखने की कोई जरूरत है ही नहीं। हम एक-दूसरे को चाहते हैं, क्यों जगमोहन।"

"सच्चे मन से चाहते हैं।" जगमोहन बोला।

"वो तो ठीक है खुंबरी। पर मुझे प्यार का भविष्य देखने दे। अगर कहीं थोड़ी-बहुत ऊंच-नीच हुई तो मैं ठीक कर दूंगी।"

"नहीं अमाली। मेरे और जगमोहन का प्यार ठीक चलेगा। कोई ऊंच-नीच नहीं होगी। मुझे जगमोहन पर पूरा भरोसा है।"

बातें सुनता दोलाम मन-ही-मन सुलग रहा था।

"वक्त का कुछ पता नहीं चलता महान खुंबरी। तू कहे तो तेरे प्यार के रास्ते पर एक नजर डाल लूं?"

"बिल्कुल नहीं। मुझे जगमोहन पर पूरा भरोसा है।"

"जो तेरी इच्छा। मैं तो तेरे भले के लिए कह रही थी।" अमाली की आवाज कान के पास उभरी।

"अब तू जा।"

"हां-हां अब तेरे पास फुर्सत ही कहां है मेरे से बात करने की। नया नया मर्द का प्यार जो मिल गया है।"

खुंबरी मुस्कराई। फिर अमाली की आवाज नहीं आई।

"तू भी खाना खा ले।" खुंबरी ने धरा से कहा।

"अभी मन नहीं है।" धरा ने कहा फिर जगमोहन से बोली—"ये बात मुझे नहीं पता थी कि खुंबरी तेरे को दिल दे बैठेगी।"

"मैंने भी नहीं सोचा था कि खुंबरी से मुझे प्यार हो जाएगा।" जगमोहन मुस्कराया।

"अब दिल लगा के रखना इसका।" धरा शरारत भरे स्वर में कह उठी।

"मुझे अपना काम करना अच्छी तरह आता है।" जगमोहन ने प्यार भरी नजरों से खुंबरी को देखा।

"मर्दों पर पूरा भरोसा नहीं करते।" धरा ने हंसकर खुंबरी से कहा।

"इस मर्द पर मुझे पूरा भरोसा है।" खुंबरी के चेहरे पर मधुर मुस्कान थी—"दोलाम।"

"हुक्म।" दोलाम अपने मन के भावों को दबाकर फौरन बोला।

"पानी खत्म हो गया, तेरा ध्यान अपने काम की तरफ नहीं है क्या?"

दोलाम फौरन बाहर निकल गया।

"खुंबरी।" जगमोहन बोला—"मेरे साथी किधर हैं?"

"वो सब कैद में हैं।" खुंबरी ने जगमोहन को देखा।

"मैं उनसे मिलना चाहता हूं।"

"जरूर जगमोहन। हम अभी खाना खाकर उसी तरफ चलते हैं।"

तभी दोलाम पानी ले आया।

▭ ▭

खुंबरी और जगमोहन एक साथ आगे बढ़ रहे थे। धरा और दोलाम उनके पीछे थे। कई रास्तों को पार करके वे एक लम्बे रास्ते पर चलने लगे थे। कुछ देर चलते रहने के बाद बाईं तरफ एक दरवाजे जैसी खाली जगह नजर आई तो खुंबरी जगमोहन के साथ उस खुले दरवाजे के भीतर प्रवेश कर गई।

पीछे-पीछे धरा और दोलाम भी आ गए।

भीतर प्रवेश करते ही जगमोहन ठिठका। चेहरे पर रौनक आ गई।

ये एक बहुत बड़ा हाल कमरा था। कई पलंग बिछे हुए थे और बैठने के लिए कुर्सियां भी थीं। देवराज चौहान, मोना चौधरी, बबूसा, नगीना, रानी ताशा, सोमारा सब यहां मौजूद थे। कोई पलंग पर लेटा था तो कोई कुर्सियों पर बैठा था। सब ठीक हालत में था। जगमोहन तेजी से उन सबकी तरफ लपका।

"मुझे तुम सबकी चिंता हो रही थी।"

"तुम यहां।" मोना चौधरी ने कहा और खुंबरी, धरा और दोलाम को देखने लगी।

जगमोहन देवराज चौहान के पास पहुंचा।

"तुम ठीक हो न?"

"हां।" देवराज चौहान ने कुछ कदमों दूर खुंबरी पर निगाह मारकर कहा—"मुझे तो तुम्हारी चिंता हो रही थी।"

"मैं ठीक हूं।"

बाकी सब भी पास आ पहुंचे थे।

"पर तुम इन लोगों के साथ...?"

"ये खुंबरी है।" जगमोहन ने प्रसन्नता भरे लहजे में कहा—"वो दोलाम सेवक है। धरा को तो तुम सब पहचानते ही हो।"

"तुम इन लोगों के साथ कैसे?"

"मुझे खुंबरी से प्यार हो गया है।" जगमोहन ने खुशी भरे लहजे में कहा—"खुंबरी भी मुझे प्यार करने लगी है। हम...।"

तभी रानी ताशा दांत पीसकर खुंबरी की तरफ दौड़ी, उस पर झपटने के लिए।

"मैं तेरी जान ले लूंगी खुंबरी। तूने मुझे मेरे देव से अलग किया...।"

रानी ताशा अपनी बात पूरी न कर सकी और इस तरह लड़खड़ाकर नीचे जा गिरी, जैसे पांवों में कुछ अटक गया हो। जबकि वहां कुछ भी नहीं था। रानी ताशा के होंठों से कराह निकल गई।

खुंबरी के चेहरे पर जहरीले भाव उभरे और रानी ताशा से कह उठी।

"दोबारा मुझ पर झपटने की कोशिश मत करना। तुम मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकती। अपनी जान की फिक्र करो।"

रानी ताशा ने उठने की कोशिश की, परंतु वो हिल भी न सकी। उसे ऐसा लगा जैसे किसी ने उसे फर्श पर ही दबा रखा हो। वो मन-ही-मन छटपटाकर रह गई।

"खुंबरी हमारी दुश्मन है जगमोहन।" देवराज चौहान गम्भीर स्वर में बोला—"और तुम उससे प्यार करने...।"

"डुमरा ने कहा था कि हममें से किसी को खुंबरी से प्यार होगा। उसने सच कहा था। खुंबरी बहुत अच्छी है, तुम उसे ठीक से जानते नहीं। डुमरा ने खुंबरी के बारे में जरूरत से ज्यादा बुरा कह दिया...।"

"खुंबरी बुरी ताकतों की मालिक है।" देवराज चौहान गम्भीर स्वर में बोला।

"उससे क्या फर्क पड़ता है। वो मन की बहुत अच्छी है। बिल्कुल बच्चों की तरह...।" जगमोहन के चेहरे पर खुशी के भाव उभरे हुए थे—"मैंने खुंबरी के साथ वक्त बिताया है। मुझे वो जरा भी बुरी नहीं लगी।"

देवराज चौहान ने नीचे गिरी रानी ताशा पर नजर मारकर कहा।

"खुंबरी ने कभी मुझे और ताशा को अलग किया था। महज अपने मतलब की खातिर। हम उसी बात का बदला लेने आए हैं।"

जगमोहन के चेहरे पर व्याकुल भाव आ गए।

"पर अब खुंबरी मुझे प्यारी है।" अचानक ही जगमोहन के होंठों से निकला।

"वो मेरी और रानी ताशा की मुजरिम है।"

"ऐसा न कहो। मैं सच में खुंबरी से प्यार करता हूं। उसमें मेरी जान बसने लगी है।" जगमोहन गम्भीर स्वर में बोला।

देवराज चौहान भी गम्भीर दिखने लगा।

कई कदम दूर खड़ी खुंबरी उनकी बातें सुन रही थी।

"तुम गलत हो जगमोहन।" नगीना कह उठी—"खुंबरी से हम दुश्मनी निकालने निकले थे और तुम...।"

"भाभी, मुझे क्या पता था कि खुंबरी मुझे इतनी अच्छी लगने लगेगी कि मैं उससे प्यार कर बैठूंगा।"

"इस काम में तुम देवराज चौहान का साथ दे रहे थे।" मोना चौधरी ने कहा।

"मैं जानता हूं पर मन पर मेरा बस नहीं रहा।" जगमोहन ने गहरी सांस ली—"मैं खुंबरी के साथ खुश हूं।"

"राजा देव।" तभी बबूसा कह उठा—"ये प्यार का मामला है, आप तो प्यार को सबसे ऊपर रखा करते थे।"

"तब उसी प्यार को खुंबरी ने तबाह किया था। तभी तो अब हम...।"

"आपको जगमोहन के प्यार का भी ध्यान रखना चाहिए। प्यार तो प्यार ही होता है। क्यों सोमारा?"

"तुम ठीक कहते हो बबूसा।"

देवराज चौहान के चेहरे पर गम्भीरता छाई हुई थी। वो बोला।

"इस बारे में ताशा का फैसला ही अंतिम होगा।"

उसी पल रानी ताशा को लगा जैसे वो आजाद हो गई हो। वो फौरन न उठी तो खुंबरी कठोर स्वर में कह उठी।

"फिर कभी बुरे इरादे से मेरी तरफ मत बढ़ना।"

रानी ताशा ने अपने दांत भींचकर, सुलगती हुई आंखों से खुंबरी को देखा।

"तुमने मुझे और देव को अलग किया था। तब मैं धोखे में रही कि ये सब मैंने किया है। मैं तुम्हारी जान लेकर ही रहूंगी।"

"तुम मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकती। मेरे इशारे पर ताकतें तुम्हें बर्बाद कर देंगी। वैसे भी तुम सब इस वक्त मेरे कब्जे में हो। तुम्हारी जान मेरी मुट्ठी में है। जब चाहूं तभी ले लूं।" खुंबरी जहरीले स्वर में कह उठी।

"मैं तुम्हें छोड़ूंगी नहीं।" गुस्से में कांपती रानी ताशा ने पुनः खुंबरी पर झपटना चाहा।

परंतु उसी पल रानी ताशा के कदम चिपककर रह गए। वो उठे ही नहीं।

"तो तुम मानोगी नहीं।" खुंबरी का स्वर खतरनाक हो गया।

तभी बबूसा पास आकर रानी ताशा से बोला।

"रानी ताशा। ये सब कोशिशें मैंने पोपा में ही करके देख ली थी। इससे कोई फायदा नहीं होगा। आप अपने पर काबू रखिए। इस तरह आप खुंबरी का मुकाबला नहीं कर सकतीं।" बबूसा ने धरा को देखा तो धरा मुस्करा पड़ी।

उसी पल रानी ताशा के पांव आजाद हो गए। लेकिन रानी ताशा की क्रोध भरी नजरें खुंबरी पर थीं।

"इन सबको हमने कैद करके क्यों रखा है।" धरा पास आते बोली—"इन्हें मार देना ही बेहतर होगा।"

"जगमोहन को ये बात पसंद नहीं आएगी। ये सब हैं तो जगमोहन के साथी ही।" खुंबरी कह उठी।

"इस बारे में जगमोहन से बात की?"

"अभी नहीं।" खुंबरी की निगाह सामने खड़ी रानी ताशा पर थी।

"आपको राजा देव बुला रहे हैं।" बबूसा बोला।

रानी ताशा पलटकर सबके पास पहुंचीं तो मोना चौधरी कह उठी।

"जगमोहन को खुंबरी से प्यार हो गया है ताशा। अगर तुम चाहो तो खुंबरी को माफ कर दो, ताकि हम खुंबरी की जान लेना छोड़ दें।"

"ये नहीं होगा। खुंबरी मेरी और देव की गुनाहगार है।" रानी ताशा दांत भींचे कह उठी—"देव, तुम जगमोहन को समझा दो कि इसने गलत राह चुनी है। खुंबरी को अपने मन से निकाल दे। वो हमारी दुश्मन है।"

देवराज चौहान ने जगमोहन को देखा।

"तुमने आज तक जो भी राह चुनी, मैंने हमेशा तुम्हारा साथ दिया।" जगमोहन गम्भीर स्वर में, देवराज चौहान से बोला—"अगर साथ देने का मन न हो तो, चुप रहो। आज मुझे तुम्हारी जरूरत है। खुंबरी मेरे दिल में आ बसी है। मैं सच में उसे चाहने लगा हूं। वो उतनी भी बुरी नहीं, जितना कि डुमरा कहता था। हम दोनों खुशी से जीवन बिता लेंगे। अगर कभी खुंबरी की ताकतों ने गलत किया था तुम दोनों के साथ तो उसे भूल जाओ। वो सब कुछ बहुत पुराना हो चुका...।"

"नहीं।" रानी ताशा गुर्रा उठी—"कुछ भी पुराना नहीं हुआ। मेरे लिए तो जैसे आज ही की बात है। इसी कारण आज भी देव मुझे स्वीकार नहीं कर पा रहे। खुंबरी मेरे और देव के प्यार की, बिना वजह दुश्मन बन गई थी। मैं उसकी जान लेकर रहूंगी।"

जगमोहन गम्भीर दिखने लगा।

"तुम खुंबरी का साथ छोड़ दो जगमोहन।" मोना चौधरी बोली—"ये ही ठीक रहेगा।"

"मैं खुंबरी से सच्चा प्यार करने लगा हूं। कैसे छोड़ दूं मोना चौधरी। क्या रानी ताशा, देवराज चौहान को छोड़ सकी है अब तक?"

मोना चौधरी ने देवराज चौहान को देखा।

देवराज चौहान ने कुछ नहीं कहा।

"रानी ताशा।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा—"मेरा यकीन मानिए, हम खुंबरी का कुछ नहीं बिगाड़ सकते।"

"ये तुम कह रहे हो बबूसा।" एकाएक रानी ताशा दांत भींचकर बबूसा से बोली।

"हां।" बबूसा ने सिर हिलाया—"मैंने पोपा में धरा का मुकाबला करने की कोशिश की, परंतु नाकाम रहा था। उसकी ताकतें उसे घेरे रहती हैं। बुरे इरादे के साथ कोई भी उसकी तरफ बढ़े तो ताकतें उसे रोक देती हैं। अभी आप खुंबरी की तरफ झपटीं तो ताकतों ने ही आपके कदम रोके थे। वो खुंबरी का बुरा नहीं होने देतीं।"

"तो क्या चाहते हो तुम?"

"आप खुंबरी को क्षमा कर दें।"

"मैं उसे सिर्फ मौत दूंगी। बेशक कोई मेरे साथ न रहे, पर मेरा अंत तक ये ही इरादा रहेगा।" रानी ताशा ने दृढ़ स्वर में कहा और कई कदम दूर खड़ी खुंबरी को भस्म कर देने वाली निगाहों से देखा।

शांत खड़ी, खुंबरी के होंठों के बीच मुस्कान नाच रही थी।

"तुम्हें जो करना है, तुम वो ही करो जगमोहन।" नगीना गम्भीर स्वर में बोली।

"और आप सब?" जगमोहन की निगाह सब पर गई।

"हम अपने मन की करेंगे।" नगीना ने कहा।

जगमोहन ने देवराज चौहान को देखा तो देवराज चौहान सिर्फ मुस्कराकर रह गया।

जगमोहन पलटा और वापस खुंबरी के पास पहुंचा।

"तुम उदास हो जगमोहन।" खुंबरी कह उठी—"रानी ताशा की बात को गम्भीरता से न लो।"

"क्या तुम्हें इस बात की चिंता नहीं है कि रानी ताशा तुम्हारी दुश्मन बनी बैठी है।" जगमोहन बोला।

"मुझे क्यों चिंता होगी।" खुंबरी हंसी—"ताकतों के होते मुझे किसी भी बात के लिए व्याकुल होने की आवश्यकता नहीं है। जो भी मेरा दुश्मन बनेगा, ताकतें उसे खुद संभाल लेंगी। ताकतें मेरा नुकसान नहीं होने देंगी।"

"इस कमरे का दरवाजा भी नहीं है फिर भी ये लोग भीतर क्यों बैठे हुए हैं। ये तो रुकने वाले नहीं।"

"ये देख चुके हैं कि ये बाहर नहीं निकल सकते। दरवाजे की जगह पर ताकतों का पहरा है। ये बाहर निकलना चाहें तो ताकतें इन्हें वापस धकेल देती हैं। इन्हें कमरे में ही रहना होगा।" खुंबरी ने बताया।

"इनका खाना-पीना?"

"ताकतें वक्त पर इन्हें हर चीज दे देती हैं। तुम किसी भी बात की चिंता न करो जगमोहन।" खुंबरी ने कहा।

"मैं इन्हें आजाद कराना चाहता हूं।"

"ये नहीं हो सकता। ये मेरे लिए मन में दुश्मनी रखते हैं। इन्हें कैद में ही रखा जाएगा।"

"क्या तुम मेरी बात भी नहीं मानोगी।" जगमोहन ने शिकायती अंदाज में कहा—"मैं हक से तुम्हें कह रहा हूं।"

"ऐसी बात है तो मैं बबूसा को आजाद कर सकती हूं जो जंगल में तुम्हारे साथ था।"

"ठीक है। बबूसा हमारे साथ ही रहेगा।" जगमोहन ने सिर हिलाया।

"जैसा तुम चाहो। परंतु उसे समझा देना कि मेरे खिलाफ एक कदम भी उठाया तो उसे कैद में डाल दिया जाएगा।"

जगमोहन ने इशारे से बबूसा को पास बुलाकर कहा।

"क्या तुम मेरे साथ रहने की आजादी चाहते हो?"

"क्यों नहीं, इससे मुझे खुशी होगी।" बबूसा ने तुरंत कहा।

"खुंबरी के खिलाफ कोई भी कदम उठाने की मत सोचना, वरना आजादी खत्म हो जाएगी।"

"मैं जानता हूं कि खुंबरी का कोई भी कुछ नहीं बिगाड़ सकता। मैं ऐसी बेवकूफी नहीं करूंगा।" बबूसा मुस्कराकर बोला।

"तुम पोपा में मेरा गला दबाने की कोशिश में आगे बढ़े थे।" धरा कह उठी।

"तब मैं खुंबरी को बेहतर ढंग से नहीं जानता था। जब जाना तो पीछे ही रहा।"

"तो अब जंगल में खुंबरी को मारने क्यों आ गए?" धरा पुनः बोली।

"राजा देव का सेवक हूं। हुक्म के आगे गर्दन तो हिलानी ही पड़ती है। जबकि मैं पहले से ही जानता हूं कि खुंबरी का डुमरा के अलावा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।" बबूसा ने सरल स्वर में कहा।

"डुमरा भी कुछ नहीं बिगाड़ सकता।" धरा हंसी—"दो ताकतों से ही उलझकर रह जाएगा।"

तभी सोमारा की आवाज आई।

"तू इनके साथ जा रहा है बबूसा?"

"हां, पर तेरे से मिलने आते रहूंगा।" बबूसा ने सोमारा से कहा और खुंबरी से बोला—"सोमारा से मिलने आ सकता हूं न?"

"बेशक आ सकते हो। लेकिन खुंबरी के खिलाफ कुछ किया तो, तुम्हारी जान चली जाएगी।" धरा सख्त स्वर में कह उठी।

"मैं ऐसा कुछ भी नहीं करूंगा।" बबूसा ने दृढ़ स्वर में कहा।

"आओ चलें।" खुंबरी ने हाथ के इशारे से कहा और पलटकर बाहर निकल गई। जगमोहन साथ था उसके और बबूसा धरा भी उसके साथ बाहर निकलते चले गए। जबकि दोलाम वहीं खड़ा रानी ताशा को देखता रहा। उसके चेहरे पर कहर भरी मुस्कान नाच रही थी। वो आगे बढ़ा और रानी ताशा के पास जा पहुंचा।

सबकी निगाह दोलाम पर थी।

"रानी ताशा।" मुस्कराते हुए दोलाम ने जहरीले स्वर में कहा—"मेरे खयाल में खुंबरी का बुरा वक्त तब से ही शुरू हो चुका है जब उसे जगमोहन से प्यार हुआ। इसका अंजाम तो अब खुंबरी को भुगतना ही होगा। हो सकता है तुम्हारी दुश्मनी का कष्ट मैं ही दूर कर दूं। क्योंकि जगमोहन से प्यार करके खुंबरी ने मेरा दिल दुखा दिया है।"

"तुम ऐसा नहीं कर सकते।" सोमारा कह उठी—"तुम्हारी बात खुंबरी की ताकतों ने सुन ली होंगी, वो तुम्हें...।"

"कभी नहीं।" दोलाम हाथ की उंगली हिलाते जहर भरे अंदाज में हंसा—"मेरी बातें ताकतें सुन ही नहीं सकतीं। क्योंकि वो जानती हैं कि मैं खुंबरी का सबसे वफादार सेवक हूं। ताकतों ने मुझे आजाद छोड़ रखा है।"

"तुम खुंबरी की जान ले लोगे।" रानी ताशा कह उठी—"सच में ले लोगे, न? ये ही कहा तुमने।"

"मैं फिर आऊंगा रानी ताशा। सिर्फ तुमसे मिलने।" दोलाम ने कहा और पलटकर वहां से बाहर निकलता चला गया।

खुंबरी उस कमरे में पहुंचकर कुर्सी पर बैठी और मुस्कराकर जगमोहन को देखा।

जगमोहन भी मुस्कराया और खुंबरी के पास ही कुर्सी पर बैठकर, खुंबरी का हाथ पकड़ लिया। दोनों की नजरों में प्यार भरा था। तभी धरा कह उठी।

"डुमरा का ध्यान है। वो हमारे लिए जंगल में भटक रहा है।"

"डुमरा को कैसे भूल सकती हूं।" खुंबरी ने कहा और उसी पल बटाका छूकर पुकारा—"ओहारा।"

"बोल खुंबरी।" कानों के पास ओहारा की आवाज उभरी—"तूने सबको परेशान कर दिया है।"

"ऐसा क्या किया मैंने?"

"तेरे को मर्द से प्यार जो हो गया है।" ओहारा की आवाज आई।

"क्या तू नहीं प्यार करता। मैंने किया तो सब परेशान हो गए।" खुंबरी के माथे पर बल पड़े।

"तूने अपनी जान जगमोहन के हवाले जो कर दी। तब ये क्यों भूल गई कि हम ताकतें भी तेरे साथ जुड़ी हुई हैं। जगमोहन तेरे को मार देता तो हमारा क्या होता। हमें सम्भालने वाला तो कोई नहीं था।" ओहारा के स्वर में भरपूर शिकायत के भाव थे।

"मरी तो नहीं। जिंदा हूं न।" खुंबरी ने अपने लहजे को तीखा करते हुए कहा।

"ठोरा को भी ये बात पसंद नहीं आई। उसने मुझे संदेश भेजा कि खुंबरी ने गलत हरकत की है।"

खुंबरी के चेहरे पर गम्भीरता उभरी।

"ठोरा ने नाराजगी दिखाई मेरी बात पर?"

"हां। तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था। अपनी जान जगमोहन के हवाले करके तुमने गुनाह किया है हमारी नजरों में।"

"फिर से मैं ऐसा नहीं करूंगी।" खुंबरी ने बेहद शांत स्वर में कहा।

"तूने अपने प्यार का भविष्य देखने को क्यों मना किया?"

"मुझे अपने जगमोहन पर पूरा भरोसा है।" खुंबरी मुस्कराई—"मेरे प्यार का भविष्य सुख से भरा है।"

पास में ही बैठा जगमोहन, खुंबरी की तरफ देखता प्यार से मुस्कराया।

खुंबरी भी उसे देखकर मुस्कराई।

"अच्छा तो ये ही होता कि अमाली एक बार तुम्हारे प्यार के भविष्य पर नजर डाल लेती।"

"मैं ऐसा हुक्म नहीं दूंगी। हम बहुत जल्दी शादी करेंगे। हमारे बच्चे भी होंगे ओहारा।"

"ये तो खुशी की बात है। बता मुझे क्यों बुलाया?"

"डुमरा को कब खत्म करेगा। तेरे वार तैयार हैं या अभी...।" खुंबरी ने कहा।

"कल डुमरा पर ऐसा वार होगा कि उसका अंत हो जाएगा।" ओहारा की आवाज सुनाई दी।

"ओह।" खुंबरी की आंखें चमकने लगीं—"सच में, तूने तो मुझे खुश कर दिया ओहारा।"

"मोरगा ने भी अपने वार तैयार किए हैं। उसने भी डुमरा पर वार करने के लिए कल का दिन चुना है।"

"फिर तो डुमरा जिंदा नहीं बचेगा।" खुंबरी खुश हो गई—"मेरा दुश्मन कल खत्म हो जाएगा।"

"जरूर होगा महान खुंबरी।"

"जा ओहारा। कल की तैयारी कर।" खुंबरी ने खुशी के अंदाज में कहा।

फिर ओहारा की आवाज नहीं आई।

"तुम्हें खुश देखकर, मुझे बहुत खुशी मिलती है खुंबरी।" जगमोहन प्यार से बोला।

"ये ही तो प्यार है।" फिर खुंबरी, धरा से बोली—"कल मजा आएगा। हमारा दुश्मन अपनी जान गंवा बैठेगा।"

"मुझे यकीन है कि ओहारा और मोरगा जरूर डुमरा को मार देंगे।" धरा ने कहा।

"ठोरा कौन है?" जगमोहन ने पूछा।

"ठोरा मेरी ताकतों में, सबसे बड़ी ताकत है। आज तक ठोरा को कोई हुक्म देने की जरूरत नहीं पड़ी क्योंकि मेरे काम उससे छोटी ताकतें ही पूरा कर देती हैं।" खुंबरी ने बताया फिर कहा—"हम कमरे में चलते हैं जगमोहन।"

जगमोहन फौरन उठ खड़ा हुआ।

धरा के चेहरे पर मीठी मुस्कान उभरी।

खुंबरी और जगमोहन अपने कमरे में पहुंचे, दरवाजा बंद किया और एक दूसरे के आगोश में समा गए।

दोलाम उसी कमरे में कुर्सी पर बैठा था, दोनों कुर्सियां टेबल पर टिकी थीं और दोनों हाथों से अपना सिर थाम रखा था। काफी देर से वो इसी मुद्रा में बैठा था कि एकाएक खड़ा हो गया। चेहरा कठोर हुआ पड़ा था उसका और आंखें सुर्ख-सी महसूस हो रही थीं। वो कमरे से निकला और तेज-तेज कदमों से आगे बढ़ गया। मशाल के प्रकाश के पास से ही निकलता तो चेहरे के भाव स्पष्ट नजर आते। आगे बढ़ता तो भाव दिखने मध्यम हो जाते। तभी सामने से धरा आती दिखी तो दोलाम ने तुरंत अपने चेहरे के भावों पर काबू पाने की चेष्टा की। जहां दोनों मिले, वहां मशाल का बेहद मध्यम प्रकाश आ रहा था।

"दोलाम।" धरा बोली—"अब तो सदूर में दूसरी तरह की रोशनी इस्तेमाल की जाती है। तुम भी वो रोशनी क्यों नहीं ले आते। उससे प्रकाश अच्छा होता है। दूर तक वो रोशनी रास्ता दिखाती है।"

"जरूर महान खुंबरी।" दोलाम बेहद सामान्य स्वर में बोला—"मैं जल्द ही वैसी रोशनी का इंतजाम करूंगा।"

"बबूसा कहां है?"

"उसे एक कमरा दे दिया है।" दोलाम बोला—"वो वहीं आराम कर रहा है।"

धरा आगे बढ़ गई। दोलाम पुनः अपने रास्ते पर चलने लगा। मशाल की रोशनी में अब पुनः उसके जबड़े भिंचे हुए दिखने लगे थे। उन रास्तों को पार करके वो खुंबरी के कमरे के बंद दरवाजे पर जा रुका और सुलगती निगाहों से दरवाजे को देखने लगा कि उसी पल भीतर से जगमोहन की हंसी सुनाई दी फिर खुंबरी की अस्पष्ट-सी आवाज दोलाम के कानों में पड़ी।

"उफ—धीरे करो। मेरी जान तो मत लो।"

दोलाम ने क्रोध से जमीन पर पांव पटका और आगे रास्ते पर बढ़ता कह उठा—"आज तो फैसला होकर ही रहेगा। मैं ऐसा नहीं होने दूंगा। खुंबरी पर सिर्फ मेरा हक है।"

लम्बे-लम्बे कदम उठाकर, कुछ रास्ता तय करने के बाद दोलाम ने उस कमरे में प्रवेश किया जिसमें मंत्रों वाला कटोरा रखा था और दिन में दो बार वो कटोरे में पानी डालने आता था। परंतु इस वक्त वो कटोरे में पानी डालने नहीं आया था। कटोरे के पास पहुंचकर चंद क्षण होंठ भींचे वो कटोरे के पानी को घूरता रहा फिर तुरंत दायां हाथ उस पानी में डाल दिया।

उसी पल वहां दहाड़ती आवाज उभरी—"डोरा के सिर में हाथ मारने की हिम्मत किसने की। कौन है जिसकी मौत आई है।"

"ठोरा।" दोलाम का स्वर पल भर के लिए लड़खड़ाया—"मैं दोलाम हूं।"

"दोलाम? तूने मेरे सिर में हाथ मारा। जानता है तेरी इस गलती की वजह से मैं तेरी जान ले सकता हूं।"

"क्षमा चाहता हूं ठोरा। पर मैं जानता हूं कि ठोरा मेरी जान नहीं लेगा। मैंने हमेशा ही खुंबरी की सेवा दिल से की है।"

"क्या चाहता है तू?"

"मैं खुंबरी से नाराज हूं।"

"वजह बता।" ठोरा का तेज स्वर उभरा।

"मैंने खुंबरी की हमेशा दिल से सेवा की। उसके शरीर की पांच सौ सालों तक देखभाल करता रहा। मैंने क्या कुछ नहीं किया खुंबरी के लिए और खुंबरी जगमोहन से प्यार करने लगी। उसे मर्द की चाहत थी तो वो मेरे से भी तो प्यार कर सकती थी। क्या मैं खुंबरी के प्यार का हकदार नहीं। वो शादी करना चाहती है तो मेरे से अच्छा आदमी उसे कहां मिलेगा। जिस शरीर की मैंने देखभाल की, उसका सुख पृथ्वी से आया मर्द ले रहा है, ये देखकर मुझे आग लग रही है। मैं तुमसे इंसाफ चाहता हूं ठोरा।"

"तो ये बात है।" ठोरा का स्वर अब कुछ सामान्य हुआ।

"क्या मेरा हक नहीं बनता खुंबरी पर?"

"जरूर बनता है दोलाम।" ठोरा की आवाज आई—"खुंबरी को चाहिए था कि वो तेरे को अपना शरीर ईनाम में देती।"

"तो उसने ऐसा क्यों नहीं किया ठोरा। जगमोहन ही क्यों—मैं क्यों नहीं? क्या खुंबरी की निगाहों में मेरी कोई कीमत नहीं।"

"गलत बात मत कह दोलाम। खुंबरी तेरे को बहुत मानती है।"

"तो फिर खुंबरी को, प्यार करने के लिए मैं क्यों नहीं दिखा, जगमोहन कैसे दिख गया।"

"ये तो खुंबरी के मन की बात है दोलाम, वो ही जाने। हम उसके मन में दखल नहीं देते।"

"मैं तुम्हारे पास इंसाफ के लिए आया हूं ठोरा।" दोलाम ने तेज स्वर में कहा।

"कैसा इंसाफ? मेरी नजरों में तो कुछ भी गलत नहीं हुआ। खुंबरी ने तुम्हें नहीं चुना अपने शरीर की प्यास बुझाने के लिए तो किसी और को चुन लिया। खुंबरी के मन की बात है, जो उसे अच्छी लगी।"

"मैं क्यों नहीं अच्छा लगा?"

"ये तो खुंबरी ही जाने। पर तेरे को मैं रास्ता दिखा सकता हूं कि तेरा काम बन जाएगा।"

"बता ठोरा।"

"तू खुंबरी के रूप (धरा) की बांह थाम ले। है तो वो भी खुंबरी ही फिर...।"

"नहीं ठोरा।" दोलाम ने दांत भींचकर कहा—"मुझे रूप नहीं, असली खुंबरी का शरीर चाहिए, जिस शरीर की मैं सेवा करता रहा। उसी पर मेरा हक बनता है।"

"खुंबरी पर हम ताकतों का बस नहीं दोलाम।"

"क्या मतलब?"

"तू अच्छी तरह जानता है कि खुंबरी के व्यक्तिगत जीवन में हम दखल नहीं दे सकते। खुंबरी कुछ भी करे, हम उस पर ऐतराज नहीं करते। फिर जब मामला चाहने का हो तो हमें इस बात से जरा भी मतलब नहीं।"

"मैंने बहुत लम्बे वक्त तक खुंबरी की सेवा की है। मुझे मेरा हक मिलना चाहिए।"

"ये बात मैं स्वीकार करता हूं।"

"पर तू मेरे लिए कुछ कर नहीं सकता?"

"नहीं कर सकता। तेरी इच्छा को खुंबरी से कह भी नहीं सकता। ये मेरा काम नहीं।"

"खुंबरी तुम ताकतों की मालिक बनी हुई है जबकि उसने अपनी जान जगमोहन के हवाले कर दी थी। जगमोहन को खंजर दिया और अपनी गर्दन आगे कर दी कि वो खुंबरी की गर्दन काट दे।"

"ये गलत किया खुंबरी ने। अगर खुंबरी की जान चली जाती तो हमें अंधेरे में छिपना पड़ता। लेकिन खुंबरी ओहारा से कह चुकी है कि दोबारा वो ऐसा नहीं करेगी। तुम्हारा इन बातों से कोई मतलब नहीं दोलाम।"

"अगर खुंबरी मुझे न मिली तो जगमोहन को भी नहीं मिल सकेगी।" दोलाम गुर्रा उठा।

"स्पष्ट कह।"

"मैं खुंबरी की जान ले लूंगा।"

"ये तू कैसे कर सकता है। हम ताकतें खुंबरी के सहारे तो जिंदा हैं। उसे कुछ हो गया तो हम अंधेरे में...।"

"मैं ताकतों को अंधेरे में नहीं खोने दूंगा। मैं तुम ताकतों का मालिक बन जाऊंगा।"

ठोरा की तरफ से खामोशी रही।

"ठोरा।" एकाएक दोलाम ने दांत भींचकर पुकारा—"तू चुप क्यों हो गया?"

"मैं तुझे इस बात की इजाजत नहीं दूंगा।"

"क्यों?"

"हमें खुंबरी से कोई शिकायत नहीं है।"

"जब मैं खुंबरी को मार दूंगा, तब तो तुम ताकतों को मुझे ही अपना मालिक बनाना होगा।" दोलाम दांत भींचकर बोला।

कुछ चुप्पी के बाद ढोरा की आवाज आई—"तेरे में और खुंबरी में क्या होता है, ताकतों को इसमें कोई समस्या नहीं है। अगर खुंबरी की तरफ से शिकायत मिली तो ताकतें तेरे को छोड़ने वाली नहीं, क्योंकि खुंबरी हमारी मालिक है। मेरे ख्याल में बात इतनी नहीं है जितनी कि तू बता रहा है। खुंबरी से बात कर, वो अपना शरीर जरूर तेरे हवाले करके, तुझे ईनाम देगी।"

"उसने इंकार किया तो फिर मैं खुंबरी की जान लेने का मौका तलाश करूंगा ढोरा।" दोलाम का चेहरा क्रोध से दहक रहा था। ये कहने के साथ दोलाम ने मंत्रों वाले पानी से अपना हाथ निकाला और सुलगते अंदाज में पलटा कि थम से खड़ा का खड़ा रह गया।

दरवाजे पर बबूसा खड़ा शांत निगाहों से उसे देख रहा था।

▭ ▭ ▭

राजा पॉकेट बुक्स
की तरफ से
अनिल मोहन
के देवराज चौहान सीरीज के 'बबूसा' शृंखला के उपन्यासों पर
1,00,000
रुपयों से अधिक की बम्पर ईनामी प्रतियोगिता!!
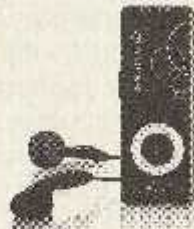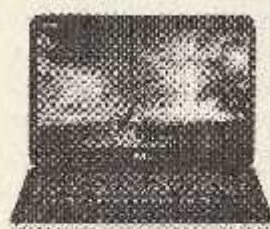
पहला ईनाम : 1 लेपटॉप (डैल 1540)
दूसरा ईनाम : पांच विजेताओं को सेमसंग गैलक्सी मोबाइल (Galaxy-Y)
तृतीय ईनाम : 10 विजेताओं को एम.पी. 3 प्लेयर (ट्रान्सेंड MP300 4 GB)
चतुर्थ ईनाम : 300 विजेताओं को (12" × 18") अनिल मोहन का हस्ताक्षरयुक्त पोस्टर।

इस ईनामी प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए आपको क्या करना है, ये बात आप फिर जान लें। इस शृंखला का पहला भाग था **'बबूसा'** उसके बाद क्रमशः—**'बबूसा और राजा देव'**, **'बबूसा खतरे में'** और **'बबूसा का चक्रव्यूह'** प्रकाशित हो चुके हैं, अगर अब भी आप इन्हें नहीं पढ़ पाए हैं तो आज ही खरीदें। इनके बिना न तो आपको कहानी का मजा आएगा और न ही आप इस प्रतियोगिता में भाग ले पाएंगे। अब इस शृंखला का पांचवां उपन्यास प्रस्तुत है—**'बबूसा और सोमाथ'** देवराज चौहान के पूर्व से भी पूर्व जन्म की कहानी अब एक नए मोड़ पर आ खड़ी हुई है। ताकतों का जादू अपने सबाब पर है तो शक्तियां डुमरा पर भरोसा करके उसे बुराई से निबटने के लिए आगे बढ़ा रही हैं। इनके बीच में फंसे हैं—देवराज चौहान, मोना चौधरी, बबूसा आदि। यह शृंखला अब

उस मोड़ पर आ गई है जहां भयानक जलजले अट्टहास कर रहे हैं। रक्तिम संघर्ष का एक ऐसा दौर शुरू हो रहा है जो उपन्यास के इतिहास में शायद ही देखने को मिला होगा। इस शृंखला का आगामी उपन्यास **'बबूसा और खुंबरी'** है। जैसा कि आप जानते हैं कि बबूसा शृंखला एक प्रतियोगी शृंखला है जिसमें आपसे दस सवाल पूछे जा रहे हैं। जिनमें छः सवालों के सही होने पर आपकी प्रविष्टि इस प्रतियोगिता में सम्मिलित मानी जाएगी और लकी ड्रॉ द्वारा विजेता की घोषणा की जाएगी, जिसका वितरण आपके चहेते लेखक अनिल मोहन द्वारा किया जाएगा।

'राजा पॉकेट बुक्स' का वादा है कि देवराज चौहान सीरीज के **'बबूसा'** उपन्यासों की शृंखला के समाप्त होने पर 60 दिन के भीतर विजेता पाठकों के नामों की घोषणा कर दी जाएगी और अगले 30 दिन में ईनाम वितरित कर दिए जाएंगे। इस प्रतियोगिता में जो भी पाठक हिस्सा लेंगे, उनके नाम-पते, अनिल मोहन के **'बबूसा'** शृंखला के अंतिम उपन्यास के बाद के नए उपन्यास में प्रकाशित किए जाएंगे। प्रतियोगिता में शामिल होने के लिए संक्षिप्त नियमावली इस प्रकार है—

प्रतियोगिता के नियम

1. जो भी पाठक हमें कूपन भेजेंगे वे ओरिजनल कॉपी होनी चाहिए। फोटो स्टेट कॉपी स्वीकृत नहीं की जाएगी।
2. प्रतियोगिता में भाग लेने वाले पाठकों से विशेष निवेदन है कि वे अपने नाम का कूपन केवल एक ही बार भेजेंगे, एक ही नाम-पते के कई कूपन भेजने पर निर्णायक कमेटी कूपन को निरस्त कर सकती है।
3. प्रत्येक स्थिति में निर्णायक मंडल का निर्णय मान्य होगा।

तंत्र-मंत्र-यंत्र के प्राचीन अनुभवी लेखक

तांत्रिक बहल

द्वारा लिखित अत्यंत दुर्लभ ग्रंथ
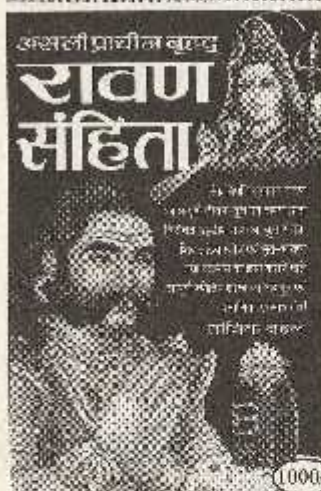
रावण संहिता नामक इस महाग्रंथ को आठ खंडों में विभक्त किया गया है। 'रावण संहिता' के **प्रथम खंड** में रावण के पूर्वजों व रावण के जन्म से लेकर उनकी मृत्यु तक के सभी पहलुओं पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला गया है। साथ ही रावण की मृत्यु के समय उनकी अंतिम इच्छा क्या थी जैसे गूढ़ तथ्यों की भी पूर्ण जानकारी दी गई है। पुस्तक के **द्वितीय खंड** में ग्रह-राशिनुसार जातक के द्वादश भावों के फलादेश का पूर्ण विवरण दिया गया है। **तृतीय खंड** में राशि-नक्षत्रानुसार फलादेश की विस्तार से जानकारी दी गई है। **चतुर्थ खंड** में रावण द्वारा विरचित गुप्त तंत्र का उल्लेख किया गया है साथ ही दस महाविधाएं और उनकी साधनाएं तथा रावण की दस बुराइयों का उल्लेख किया गया है। **पंचम खंड** में रावण विरचित प्रसिद्ध रचना उड्डीश तंत्र क समावेश किया गया है। **षष्ठम खंड** में शिव-पार्वती संवाद पर आधारित क्रियोड्डीश तंत्र का उल्लेख किया गया है। साथ ही महामृत्युंजय उपासना पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है। **सप्तम खंड** मे रावण द्वारा विरचित कुमार तंत्र की व्याख्या की गई है। पुस्तक के **अष्ठम खंड** में रावण द्वारा रचित प्रसिद्ध ग्रंथ 'अर्कप्रकाश' के दसों शतकों की विस्तारपूर्वक विवेचना की गई है। वह ग्रंथ शरीर के समस्त रोगों के उपचार पर आधारित है। पुस्तक के अंत में रावण विरचित शिव तांडव स्तोत्र को दिया गया है। कुल मिलाकर यह पुस्तक गागर में सागर भर देने वाली शैली के अनुसार लिखी गई है जिसमें रावण से सम्बंधित सभी तथ्यों व ग्रंथों की पूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। अगर आपने इस ग्रंथ को नहीं पढ़ा है तो अवश्य पढ़ें।

राजा पॉकेट बुक्स

330/1, बुराड़ी, दिल्ली—110084, फोन : 27611410, 27612036

सरदार सुरेंद्र सिंह सोहल उर्फ विमल की तिकड़ी के नए उपन्यास

चेम्बूर का दाता

* * *

लाल निशान

* * *

सदा नगारा कूच का

एवं सुधीर कोहली सीरीज का

चोरों की बारात

व सुनील सीरीज का

डबल गेम

की अपार सफलता के बाद

राजा पॉकेट बुक्स में

नया थ्रिलर उपन्यास

सीक्रेट एजेंट

प्रकाशित हो चुका है! सम्पूर्ण भारत में उपलब्ध!

आज ही अपनी प्रति शहर के पुस्तक विक्रेता के पास सुरक्षित करवाएं

राजा पॉकेट बुक्स की गौरवशाली भेंट!

धरा का बबूसा से कहना था कि हकीकत में देवराज चौहान रानी ताशा का दीवाना नहीं है। वो कभी भी उसका दीवाना न होता अगर रानी ताशा की ताकतों ने देवराज चौहान पर काबू न पाया होता। उसके लिए ऐसा करना इसलिए जरूरी हो गया कि उसे हर हाल में सुदूर ग्रह पर पहुंचना था और यह तभी हो सकता था जब देवराज चौहान और रानी ताशा के सम्बंध मधुर रहें, परंतु अब सदूर की जमीन पर पांव रखते ही उसकी ताकतें देवराज चौहान के सिर से हट जाएंगी और देवराज चौहान रानी ताशा का हाथ छोड़कर नगीना का हाथ थाम लेगा।

बबूसा और सोमाथ

बबूसा शृंखला की 1,00,000 ईनामी प्रतियोगिता की छठी अंतिम कड़ी!

बबूसा और खुंबरी

जुलाई 2013 से सर्वत्र उपलब्ध